CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओंकार राही

नाभिकुंड

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गृहस्थ जीवन के शुरू के दस वर्षों को आधार बनाकर लिखा गया एक ऐसा उपन्यास, जिसमें भोगोपभोग से उपजती अतृप्त आकांक्षा के तीखे-मीठे, गोपन-अगोपन अनुभव दर्ज हैं। चन्दर इसी अतृप्त आकांक्षा का प्रतीक बन गया है। चादर की तरह बदलती स्त्रियाँ उसकी नियति हैं। वह सिर्फ भोग चाहता है स्त्रियाँ सुरक्षा। भोग और सुरक्षा की तलाश में भटकते पात्रों की मन:स्थितियों के गहन अन्तर्द्वन्द्व को ओंकार राही ने इस उपन्यास में समूचे रचनात्मक ताप के साथ व्यक्त किया है, अन्तर्विरोधों की पर्तों को उधेड़ा है। परिवेश की चमक और भाषा की आत्मीयता के कारण उपन्यास पाठक को बाँध रखने में समर्थ है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सद्भावनाओं सहित

ओंकार राही

27.1.2005

सौजन्य से –
डॉ० शशिप्रभा कुमार
'अभ्युदय', 295/सेक्टर–15 A
नौएडा (उ० प्र०)-201301

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नाभिकुण्ड

(उपन्यास)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अंकुर प्रकाशन
दिल्ली-110032

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नाभिकुण्ड

ओंकार 'राही'

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya * Bharatiya Vidya
1306

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Bhavan's Sri Sanka... Vidya ... Mahavi...
1306

मूल्य : 60.00 रुपए

प्रकाशक : अंकुर प्रकाशन
1/3017, रामनगर, मंडोली रोड
शाहदरा, दिल्ली-110032

प्रथम संस्करण : 1986
आवरण : गोविन्द प्रसाद

मुद्रक : अशोक कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा
विशाल प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032
में मुद्रित

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रिय भाई दर्शन और भाभी परमजीत को
सस्नेह

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya * Bharatiya Vidya
1306

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शब्द और अर्थ

यह उपन्यास गृहस्थ आश्रम के शुरू के दस वर्षों के कुछ विशेष व्यक्तियों के जीवन से सम्बन्ध रख सकता है। नाभिकुण्ड में सर्वत्र अमृत नहीं, और हो भी तो उसे धारण करनेवाला व्यक्ति अवश्य रावण ही हो यह भी आवश्यक नहीं प्रतीत होता। उस कुण्ड को बाण विद्धत कर सुखाने की चेष्टा किसी राम को करनी पड़े, आज के परिवेश में यह भी अधिक उचित नहीं होगा।

नाभिकुण्ड पवित्र हो, अपवित्र हो, क्या फर्क पड़ेगा ? क्योंकि, 'जीर्यतो या न जीर्यंते' अर्थात् तृष्णा नहीं हम जीर्ण हो जाते हैं इसका कारण यह है कि—

न जातु कामः कामनामुप भोगेन शाम्यति
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।

अर्थात्

'विषयों का उपयोग करते रहने से कामवासना तृप्त या शांत नहीं होती किन्तु जैसे अग्नि को घी की आहुति और भड़काती है, वैसे ही वासना उग्र हो जाती है। भोगोपभोग से वासना अधिकाधिक बढ़ती जाती है।'

इस उपन्यास में मेरा नायक चन्द्र (चन्दर) नामक एक आदमी है, उसके अपने परिवेश से सम्बन्ध हैं, वह अपनी जिन्दगी अपनी इच्छानुसार जीता है, उस जिन्दगी में उसे जो पसन्द है उसे पाता है, स्त्री, पद, स्थान, घर, देश-विदेश सब एक ही अर्थ रखते हैं—जीना। वह जिस तरह भी जीता है, उसे आज के भारत में सामान्य मानना होगा क्योंकि जिन्दगी अनेकार्थी है, बहुआयामी है। आयाम को पकड़कर जीना बहुत मुश्किल होता है। इस उपन्यास में कहानी है भी, नहीं भी। सच्चाई और बेबाक जिन्दगी के खाके मैं खींचता गया हूँ। भद्दा, गन्दा, अस्वीकार्य, अयथार्थ

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं नहीं घसीटता हूँ। एक प्रसिद्ध फिल्मी अभिनेत्री विदेशी होकर भी इस उपन्यास में जी गई है और बहुत से भारतीय भी मेरे इर्द-गिर्द होते हुए लाहौर की धौंकनी से साँस लेने के कारण कटते गए हैं।

यौनाचरण यौनाचार नहीं है। पुस्तक लिखते हुए एक उद्देश्य रहा है, गुप्त, गोपनीय और हमारे भीतर मौजूद भाव-स्थितियों को शब्दों में लिख गया हूँ और एक नाभिकुण्ड बनाकर मैं पाठकों तक उसे ले आया हूँ। इसमें अमृत इसलिए नहीं भरा कि दूसरे लालचवश इसे वेध न लें। वैसे पुस्तक एक मासूम उपन्यास है, बहुकोणीय नद है जिसका बहाव अनेक दिशाओं में बहता है, उस नद में मैं, आप या कोई भी शब्द, अर्थ, प्रत्यर्थ, भावना, परिवेश, मोहदर्प कुछ भी बनकर उपस्थित हुए होंगे तो वह अनायास नहीं है क्योंकि मुझे उपन्यास के विषय पर बाकायदा अनुसंधान करना पड़ा है, इतना अनुसंधान कि सुगमता से विदेशी विश्वविद्यालय से डाक्टरेट पा लेता, पर मैं सिर्फ एक उपन्यास से संतुष्ट हूँ।

ओंकार 'राही'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिमला का माल रोड लोगों से भरा हुआ है, दो सिपाही कदम-से-कदम मिलाकर गश्त कर रहे हैं। सैलानियों की उमड़ती भीड़ और यहाँ के निवासियों के मिश्रण से यह सड़क हाईकोर्ट की ओर के उतार और लोयर रोड की लिफ्ट के ऊपरी ठहराय के स्थान पर टूट जाती है और कदम फिर लौटकर गेटी थियेटरकी ओर मुड़ जाते हैं, फिर रिज़ की ओर मुड़ जाते हैं या ऊपर की सड़क से होकर पुलिस हैड क्वार्टर की ओर जाने वाली सड़क की ओर चले जाते हैं, या रामबाजार की ओर उतरने वाली सड़क पर बने इण्डिया कॉफ़ी हाउस और पान वाले की दुकान तक आते हैं। फिर लौटकर वही प्रक्रिया बन जाती है, पुलिस हैड क्वार्टर से पुलिस कन्ट्रोल, माल रोड से वाया गेटी थियेटर फिर लिफ्ट प्वाइंट—फिर वापिस रिज़ या···। खैर ! यह भीड़ रिज़ के नीचे बने स्केटिंग रिंग की ओर कभी-कभी देखती है, फिर रिज़ रोड पर बनी मार्केट या सिनेमाहाल तक भी पहुँच सकती है। पोस्ट आफिस से होकर कालीबाड़ी भी जा सकती है, ग्रांड होटल तक भी पहुँचती है या पश्चिमी कमान की इमारत के पास कदम रुककर रेलिंग्ज़ के सहारे भीड़ के टुकड़े खड़े भी रह सकते हैं। सँकरी सड़क नीचे बस स्टेण्ड तक जाती है। कभी-कभी शार्प मोड़ों वाली इस सड़क पर जीपें या वन टन्नर गाड़ियाँ कमाण्ड तक आ जाती हैं या ऊपर रेलिंग्ज़ के नीचे रामबाजार के बुशेर हाउस के पास से कतारबद्ध पार्किंग में खड़ी भी हो जाती हैं। कुछ सरकारी अफसर यहाँ बने दफ्तरों में जाते हुए भी सड़क के साथ गाड़ियाँ पार्क कर देते हैं।

नीचे की सड़क कालका रोड की ओर भी जाती है। फर हिल को

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छूती हुई, दूसरी ओर हाई कोर्ट से छोटा शिमला, सचिवालय, जुनगा या सैंट पाल स्कूल तक भी सड़क जाती है। बस स्टेण्ड से नीचे है रेलवे पथ, शिमला—नीचे की ओर पहला स्टेशन समर हिल पड़ता है, इस स्टेशन से युनिवर्सिटी और वायस रीगल लॉज की ओर रास्ता जाता है। यह इलाका खाली-खाली-सा लगता है। वायस रीगल लाज पर राष्ट्रपति भवन के नामपट का जो पत्थर लगाया गया है, वह बड़ा है, पर बेमेल है। मैं वीणा से शादी से पहले, मतलब कि अपनी शादी से पहले जब उन्मुक्त था तो वायस रीगल लाज तक आता था। समर हिल से पैदल म्युजियम और वायस रीगल लाज तक—अकेला, बेमतलब। कैल या देवदार या शायद उसी तरह के पेड़ों से होकर ठण्डी एकान्त सड़क पर पैदल चलने में जो आनन्द है, वह घर-संसार-परिवार में कहाँ।

अंग्रेज वायसराय इस भवन में रहे हैं, आजकल यह भवन एडवांस्ड स्टडीज़ सैंटर बन गया है। सिर्फ दो विद्वान इसका उपयोग सरकारी वजीफे की मजबूरी से करते हैं, करते थे तब। पर जब भी मैं वहाँ पहुँचा, जब-जब पहुँचा इमारत बन्द थी। लाज को साफ करने वाले मजदूर, भंगी-जमादार या मालियों के अतिरिक्त कहाँ कोई नहीं मिलता था, कोई टूरिस्ट भी नहीं।

इमारत के पीछे दालान है। उसकी मेड़ के किनारे पश्चिमी हिमालय की ओर देखता हुआ भारत का एक मैटल का मानचित्र दीवार पर सोया है। उसे कोई नहीं देखता। हिमधवल उत्तंग शिखर और उन तक फैली पर्वत श्रेणियाँ एकान्त, सुखी, गुमसुम कोई गीत गुनगुनाती खड़ी हैं। इस नक्शे को छूता हूँ। फिर पीछे मुड़कर बाईं ओर नीचे की ओर उतरती एक कच्ची पथरीली सड़क की तरफ मुड़ता हूँ। वहाँ सफेद फूलों की बेलें हैं। माली से पूछता हूँ, 'क्या इस फूल की कटिंग लग जाती है ?'

'जनाव, लगती है।' वह मेरे बिना अनुरोध के मेरे लिए कलमें तोड़ देता है। फिर मैं उसके साथ बगीचे में घूमता हूँ। नारसिसिज़ यानी नरगस फूलों के कुछ वल्ब लेता हूँ। एक ओरैंज कलर की लिलि खिली है। सामान्य से बड़े आकार की, उसकी गाँठें माँग लेता हूँ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फिर वायस रीगल लाज के सामने के आँगन में आकर पत्थर से बने इस भव्य भवन को देखता हूँ। लान में घास पर बैठा हूँ। सोच रहा हूँ··· कभी इसी लान में भारत के सम्राटों के सम्राट वायसराय बहादुर बैठा करते थे। तब मेरे जैसे साधारण आदमी को अपनी हैसियत में यहाँ बैठने की पात्रता नहीं थी। आज···बदला हुआ युग है। मैं ही अपने को शहनशाहों का शहनशाह कह सकता हूँ। पत्थरों का यह भव्य भवन एक अतीत है।

मैं सोचता हूँ अगर यह घर मुझे मिल जाए तो मैं इसका क्या उपयोग करूँगा। शेखचिल्ली बनकर क्या मिलेगा। इस समय तो मैं इस भव्य इमारत के सौन्दर्य को देख रहा हूँ और इतने खुले, उन्मुक्त वातावरण को देख रहा हूँ। बन्द इमारत के भीतर क्या है, क्या-क्या है ? शायद सारा अतीत हो, शायद अतीत न भी हो। जवाहरलाल नेहरू और माउन्टबेटन इस लान में बैठते थे, आजादी को लेकर उनकी चर्चाएँ किस कमरे में होती थीं ? हिन्दुस्तान में सब शहनशाहों के लिए बना है। राज-भवन, मुख्यमन्त्री आवास, राष्ट्रपति भवन सब शहनशाहों के लिए हैं। इन भवनों के भीतर रहने वाले इन्सान भव्य हो जाते हैं। सूरज सदन ने सन् 1961 में तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसादजी का पोर्टट्रेट बनाया था, उसके छोटे भाई वेद ने मुझे आमंत्रित करवाया था। चुने हुए दो सौ मेहमानों के सामने बड़े-बड़े कलाकार, प्रधानमन्त्री, अन्य प्रमुख मन्त्री सब थे वहाँ। समारोह की भव्यता के पश्चात् पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की पुत्री, बारहवर्षीय पुत्री ने भरतनाट्यम किया था। सबने सराहा था। सूरज ने राष्ट्रपति महोदय के साथ फोटो खिचवाई थी। कार्यक्रम के बाद पर्दों के पीछे से साफ-सुथरे लिबासों में सजे कर्म-चारी ट्रे में शर्बत के गिलास लेकर उपस्थिन हुए थे, राजमहलों के भीतर मैं पहली बार गया था। परन्तु मुझे इस भव्यता से नफरत हो गई थी— अकारण। इसके बाद अनेक भव्य राजभवन देखे, भव्य पदों पर बैठे मामूली आदमियों से मिला, उनसे लम्बे सम्पर्क रखे, परन्तु भवनों की भव्यता के अतिरिक्त मुझे किसी में चरित्र की भव्यता नहीं मिली।

मैं एक भव्य देश का नागरिक हूँ। सोने की चिड़िया भारत, मन्दिरों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और राजप्रासादों का देश भारत। परन्तु सचाई यह है कि बचपन में राजारानियों की समस्त सुनी हुई कथाएँ असत्य लगती हैं। मेरी एक धोबिन की लड़की को पटियाला के राजमहलों में पहुँचाया गया था, उसकी माँ उमर भर हमारे घर कपड़े धोती रही। हमारे ननिहाल की एक साधारण राजपूत सुन्दरी काश्मीर की महारानी बनी थी, देवास जूनियर महाराजा की पत्नी श्रीमती मेनकाराजे पंवार महारानी गायत्री देवी की बहन थीं—इन सबसे मिलकर, इनके साथ सम्पर्क बढ़ाकर मुझे जो भी देखने को मिला वह साधारण था। बड़े घरों में बैठे सामान्य लोग थे···इस वायस रीगल लाज की भी वही कहानी है—वही प्रेमकथाएँ हैं, वही लोग हैं। लार्ड होकर कोई बड़ा नहीं हो जाता या इस भव्य भवन के बगीचे का माली होकर कोई छोटा नहीं हो जाता। मैं सोचता हूँ—नहीं चाहिए मुझे यह वायस रीगल लाज···यह भव्यता सोने की चिड़िया गरीब भारत देश के लिए अभिशाप है। इस त्रास को आज भी भव्य कहलाने की इच्छा से सब ढो रहे हैं। राष्ट्रपति व्यक्ति नहीं वरन् राष्ट्रपति भवन के भीतर रहने वाला आदमी है।

मैं माल रोड की बाईं ओर, हाई कोर्ट से आते हुए बाईं ओर नीचे उतरने वाली सीढ़ियों के किनारे बनीं हलवाई की दुकान से समोसे, टिकिया और आलू-छोले लेकर खा रहा हूँ। सड़क के नीचे खड़े होकर खाने में क्या आनन्द है। चिकनाई को हाथों में महसूस करने में क्या आनन्द है?

इस माल रोड पर सभी पैदल चलते हैं, परन्तु कभी-कभी किसी अति विशिष्ट व्यक्ति का वाहन यहाँ आ सकता है। किसी भव्य घर में रहने वाले व्यक्ति का वाहन, मेरा, इसका, या उसका नहीं। प्रजातन्त्र के मालियों की जमात एक राजभोगी जमात है, वह बादशाहों की जमात है। जनसेवक पूंजीपति गरीबी के भूतों की जमात है।

तब की बात है। मैं बीस वर्ष का हो गया हूँ। नया-गया इन्जीनियरिंग ग्रेजुएट हुआ हूँ। शिमला में अपनी मौसी के यहाँ आया हूँ। मौसी के घर मेरा हमउमर कोई नहीं है, इसीलिए अकेला घूम रहा हूँ। रोज माल रोड की सैर करता हूँ। अंग्रेजों ने अपने शासनकाल में हर शहर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में माल रोड बनाए थे···शिमला का माल रोड भी उन्हीं का है, उन्हीं की देन है। सब कुछ उन्हीं का दिया हुआ है इस देश को, सिर्फ छोले-भटूरे छोड़कर। हमारी संस्कृति में यही छोले-भटूरे शेष हैं। बीस साल का आदमी और सोच भी क्या सकता है? सोच सकता भी है तो कर ही क्या सकता है?···

इस वार की गर्मियों में अकेला घूमने में मजा आया। दस वर्ष बाद दिसम्बर में शिमला आया था। वीणा के साथ। उसे वह सब जगहें दिखाता हूँ जो मैं अकेले देख चुका था। कुफरी के रेस्ट हाउस में एक रात का रेजरवेशन लिया है। मौसी ने एक जीप का प्रबन्ध कर दिया है। कुफरी से नारकण्डा जाने का कार्यक्रम है। नारकण्डा कुफरी से लगभग सौ किलोमीटर दूर है—हिन्दोस्तान-तिब्बत रोड पर। कुफरी के खूबसूरत गेस्ट रूम में चिमनी से धुआँ उठते दूर से देखा था। चारों तरफ बर्फ है। छत पर मनों बर्फ जमी है। बर्फ को रौंदे बिना एक कदम चलना भी मुश्किल है। पाँव बर्फ में धँस जाते हैं। भीतर कक्ष में अँगीठी में आग जली है। दरवाजे बन्द कर देने पर ठण्ड कम लग रही है। आग की गर्मी से कमरा सुखद है। वीणा के गम्भीर चेहरे पर बहुत दिनों बाद मुस्कान लौटी है। कहती है, "बचपन में पप्पा के साथ मैं कई बार कुफरी में आकर ठहरी हूँ। ममा को यह जगह बहुत पसन्द थी। ममा के पापा यानि हमारे नाना यहाँ कन्जरवेटर ऑफ फारेस्ट्स थे। खूब घूमते थे। कभी चैल, कभी नारकण्डा, कभी कसौली, कभी मनाली।' मैं सोचता हूँ यदि वीणा प्रकृति के इतना समीप रही है तो वह प्रकृति की तरह खुलकर जिन्दगी क्यों बसर नहीं करती?

रेस्ट हाउस में खानसामा है, हम अपने साथ केनड फूड लाए हैं, उसे गर्म करने को दे दिया है। उसने हमें बहुत बढ़िया चाय पिलाई है। वीणा पूछती है, 'कौन-सी चाय है?'

वह कहता है, 'हिमाचल की है, पालमपुर की बंदला टी इस्टेट की, अपने लिए रखी है। सरकारी चाय आज ही खत्म हुई है। कल ले आऊँगा।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'बहुत अच्छी चाय है···एक कप और पीएँगे थोड़ी देर बाद।'

बूढ़ा खानसामा खुश है, कहता है, 'साहब, चाय का शौक तो अंग्रेज लोगों को था ! बंदला, सुंगल, सुलह···कहाँ-कहाँ की चाय आती थी तब···!'

'अब यह चाय क्यों नहीं आती ?'

'साहब, हम लोग अपनी चाय अमृतसर मार्केट बेचते हैं !'

'तुम भी ?'

'मेरा भी छोटा-सा चाय का बगीचा है, पाँच-छः एकड़ का। हम सब बीड़ कोपरेटिव को चाय देते हैं, वे अमृतसर ले जाते हैं, फिर सारी चाय अफगानिस्तान जाती है। हमारी चाय 'ग्रीन टी' कहलाती है।'

'तुम कहाँ के हो ?' वीणा उसे पूछती है।

'पालमपुर से इधर का, सलियाणा गांव का—पट्टी सलियाणा !'

'हाँ, वह गाँव मैंने देखा है !' वीणा कहती है।

खानसामा चला जाता है। वीणा अपने बचपन में लौट जाती है। वह खूब बातें करती है ! 'हम नानाजी के साथ खूब घूमते थे···चम्बा, खजियार डलहौजी, धर्मशाला। बनूरी एक सुन्दर गाँव है। वहाँ मेरे रिश्ते में एक नानी माँ का परिवार रहता है। वे भी चायबागान के मालिक हैं। उनकी टी एस्टेट काफी बड़ी है। चाय की पत्ती पौधों से तोड़ने में खूब मजा आता है। ताजी पत्ती तोड़कर उसे तवे पर गर्म करके उसकी चाय बनाओ, क्या नशीली चाय बनती है।' मैं कहता हूँ, 'अगले साल तुम्हारी इच्छानुसार एक माह घूमेंगे।'

कुफरी में हम रेस्ट हाउस प्रांगण में कुछ देर बर्फ पर चलते रहे। बर्फ का एक गोला बनाकर मैंने वीणा की ओर फेंका, उसे नहीं लगा। उसने कुछ बर्फ अपनी मुट्ठियों में बन्द की और फिर मेरे पास आकर कालर के पीछे गर्दन से नीचे खिसका दी। उस एकान्त में वीणा को मैंने अपनी ओर खींच लिया था, बार-बार चुम्बित किया था। वह विरोध करती रही, उसके बावजूद मैं उसे परेशान करता रहा। हम भीतर आ गए और फिर जैसे शादी के शुरू के दिनों की जिन्दगी थी, उसी तरह वह दोपहर गुजरी। हमें नींद आ गई थी। करीब पाँच बजे उठे। बाहर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बर्फ पड़ रही थी। बरामदे में बैठकर मैंने खानसामा को बुलाकर कुछ गर्म पानी भेजने को कहा। पानी आ जाने पर स्ट्रांग पैग ब्रांडी में गर्म पानी डालकर एक पैग अपने लिए बनाया और कुछ हलका पैग वीणा के लिए। शादी के शुरू में मसूरी में हनीमून पर भी यही सिलसिला चला था वीणा के साथ। उस अतीत की याद में वीणा कहती है, 'मसूरी के वे दिन फिर याद आ रहे हैं।'

'हाँ, वहाँ तुमने कहा था तुम्हें इतनी जल्दी बच्चा नहीं चाहिए।'

'हाँ, और अब जब मैं चाहती हूँ...'

'इसमें प्रकृति का दोष है, तुम्हारा क्या है ?'

'मैं बाँझ हूँ,' वह रो पड़ती है।

'प्लीज वीणा, चुप करो, तुम ऐसा क्यों सोचती हो ? क्या बिना बच्चों के जिन्दा नहीं रहा जा सकता !'

वह चुप रहती है। ब्रांडी का दूसरा पैग गर्म पानी के साथ हम पी रहे हैं। खानसामा सासेज का डिब्बा गर्म करके ले आया है। बर्फ तेजी से गिर रही है, सफेद चादर से ढकी जमीन पर हमारे कदमों के निशान मिट गए हैं। सरु और देवदार के पेड़ों पर बर्फ की पर्तें लटकी हैं। बादलों से अँधेरा घिर आया है, रात उतर आई है। डिनर पर हमें टूना फ्रायड फिश और रोस्ट मटन मिला है। खानसामा ने कहीं से अण्डों की व्यवस्था कर एगकरी बना दी है। चावल के साथ एगकरी टेस्टी लग रही है। चपाती किचन से आते ही ठण्डी हो रही है। वीणा खाना खूब शौक से खाती है। मन भरकर। रात वह बिस्तर में फिर रोने लग गई थी। फिर बच्चा न होने की कहानी, फिर सेल्फ पिटि, बाँझपन, अतीत... पर इस रात के प्यार के बावजूद अगर वह माँ नहीं बन सकी तो मैं दोषी कहाँ हूँ ? मैं पहले भी दोषी नहीं था। वीणा के साथ आज तक की एक जिन्दगी में जीता चला आया हूँ परन्तु वह अपनी त्रुटियों के यादाश्त या अपनी अभावगत कटुता को बेमौके, बेवक्त क्यों व्यक्त करती है। कुफ्री जैसी खूबसूरत जगह, बाहर पड़ती हुई बर्फ, पत्नी का गर्म शरीर... सब एक वातवरण हैं—पर मैं जैसे निर्जीव हो रहा हूँ। वीणा को सपने में बोलने की, नींद में बोलने की आदत है ! वह अनाप-शनाप प्रलाप

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करती है। मैं उसका उसकी छाती पर रखा हाथ हटा देता हूँ। उसके गहरे साँस लेने और करवट बदलने का भी एक तरीका है, मैं उसे कितना प्यार करता हूँ ! प्यार, डाक्टरों के जवाबों के बाद भी प्यार ! मुझे नींद नहीं आ रही है। मैं बिस्तर से उठकर कम्बल ओढ़कर कुर्सी पर बैठ जाता हूँ। ब्रांडी का एक लार्ज पैग बनाकर पीता हूँ। सिगरेट पर सिगरेट फूंक रहा हूँ। वीणा बेखबर सो रही है, एक मासूम नींद, एक बेपनाह दर्द लिये। मुझे सन्तान का अभाव कभी नहीं खटका। अपनी जिन्दगी को कभी बोझ नहीं माना। रात गहरा गई है···घड़ी देखता हूँ, रात के सिर्फ दस बजे हैं। जल्दी है, फिर भी मुझे सोना चाहिए। कल बर्फ से भरी सड़क से होकर नारकण्डा पहुँचना है। सुना है नारकण्डा स्वीटजरलैण्ड के सुन्दर से सुन्दर गाँवों से भी सुन्दर है···उस सौन्दर्य को देखूंगा। वीणा का सौन्दर्य अथाह है, उसकी अनुभूति अदम्य है···मैं फिर बिस्तर में हूँ···मुझे नींद आ गई है। मुझे लग रहा है मैं बर्फ में बाहर खड़ा हूँ और गले-गले तक मैं बर्फ में दब गया हूँ। बर्फ की चादर बर्फ का पहाड़ बन रही है।

सुबह नींद कुछ देर से खुली। बाहर बर्फ की सफेद चादर उगे हुए सूरज के हल्के स्पर्श से रेशमी हो रही थी, मखमली धूप···बाहर आते ही चेहरे पर खुशी आ गई है। ऐसा लगता है जैसे जिन्दगी में इससे पहले कभी सुबह देखी ही न हो। वीणा के साथ कुफ्री की यह गुदगुदी भरी सुबह एक सिनेमाई रोमांस से मुझे भर रही है। उसके गदराए हुए शरीर, लम्बी बाँहों, सामान्य औरतों से लम्बे कद और सुन्दर मोटे अध-खिले गुलाबों के ओठों से सुबह महक गई है, बर्फ सहमी-सी उसे देखती है, धूप बहककर वीणा को छू लेने को आतुर है। मुझे लगता है मैं एक गहरे सागर के बीच खड़ा हूँ। सागर जमकर बर्फ हो गया है, युगों से युग-युगान्तरों से यह सफेदी इसी तरह रही है। इसी तरह रही है वीणा मेरे साथ। इस औरत के साथ से जिन्दगी आस्थाओं का एक कोश बन गई है। इसके हँसने, मुस्कराने, बात करने में झरनों की खिलखिलाहट है, पानी की खामोश बूंदों का आकाश से उतरकर जमीन पर मुझे छूने का प्रयास है, मुझे नहीं, नहीं···इसे···इस सुन्दर औरत को छूने का।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वीणा कहती है, 'मुझे बर्फ में घूमना बहुत अच्छा लगता है। जी होता है दिल्ली छोड़कर यहीं आ जाऊँ।'

'अच्छा तो मुझे भी लगता है, पर सब इच्छाएँ पूरी ही कब होती हैं।'

'जानते हो बचपन में मैं अकेली घण्टों बर्फ पर चलती थी, जंगलों में घूमती थी। न कहीं खोने का भय न किसी आश्रय की तलाश। हमेशा अकेली रही। नानाजी मुझे बहुत चाहते थे। अपने साथ दौरों पर ले जाते थे, वे अपने काम में मशगूल हो जाते थे, मैं घूमती थी, उनके अधीन अधिकारी मुझे सुन्दर-सुन्दर फूल ला देते थे। रंग-बिरंगे पत्थर देते थे, नाना आकारों की लकड़ियों की जड़ें लाकर देते थे, उनमें प्रकृति की विचित्रताएँ अनुपम आकृतियाँ बनाती थीं। बर्फ के बूट और बर्फ में पहनने के चश्मे लगाए मैं एक परी की तरह टहलती थी। तब न किसी राजकुमार की प्रतीक्षा थी, न किसी की चाह। दस-बारह वर्ष की होते-होते मैं प्रकृति में रम गई थी। तितलियाँ पकड़ना, पताजी (ड्रैगन फ्लाई) पकड़कर उनकी पूँछ धागों से बाँधकर उन्हें उड़ाना, घण्टों पेड़ों की छाया में बैठे रहना। चाय के बगीचों में टहलना। जंगली फूलों के बीज इकट्ठे करना, बहुत मजा आता था! नानाजी मुझे ब्रह्मी बूटी घोलकर पिलाते थे। पहाड़ी नदियों के किनारों पर उगती है यह बूटी। बुद्धि की तीक्ष्णता के लिए आयुर्वेद में इसे काफी अच्छा माना है। नानाजी हमेशा कहते थे, 'मेरी वीणा जीनियस बनेगी। शी विल वन डे वी द ग्रेटेस्ट वाटेनिस्ट इन दिस पार्ट आफ द वर्ल्ड।' मुझे पेड़ों के, झाड़-झंखाड़ों के वोटेनीकल नाम खूब याद कराए गए। हर पौधे को पहचानती थी, उनकी जातियाँ, उप-जातियाँ समझती थी।' मुझे वीणा की ये सब बातें नई लग रही थीं। मैं उसे सुनते रहना चाहता था। पर वह चुप हो गई··· आकाश पर उभरे बादलों को देखकर कहती है, "फिर बर्फ पड़ने वाली है···आज नारकण्डा नहीं जाएँगे, यहीं रहेंगे!"

मैं उसके चेहरे पर के भावों को पढ़ता हूँ। रिक्त। माथे पर लगी हल्के रंग की बिन्दी अदृश्य हो गई है या उसका रंग और फीका हो गया है। वीणा को गहरे रंग की बिन्दी से न जाने किस कारण नफरत है? बादल घने हो गए हैं। बादलों के साए में बर्फ का रंग मला पड़ रहा है,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसकी सफेदी मध्यम हो गई है। वीणा एक पेड़ के पास जाकर उसे हिलाती है। पेड़ का बर्फ उसके ऊपर गिरता है। कुफ्री के ये पेड़ दम्भी हैं, झुकते नहीं हैं। वीणा के चेहरे पर फिर गम्भीरता आ गई है। वह चुप हो गई है। हम बरामदे में राकिंग कुर्सियों पर बैठे हैं। बर्फ गिरना शुरू हो गई है। रुई के फाहों जैसी, बर्फ की सफेदी फिर उभर आई है। वीणा कहती है, 'नानाजी को राकिंग चेयर बहुत पसन्द थी।'

'जंगलात की अपनी जिन्दगी भी, उसके अफसरान की भी अलग जिन्दगी है। मूक पेड़ों की ज़ुबान समझना, उनसे रिश्ता गाँठना, उनके स्पर्श, उनकी सख्सीयत अलग चीजें हैं।''

'मुझे जंगलों से बहुत प्यार है। नानाजी तीतर, बटेर, जंगली मुरगाबी बहुत खिलाते थे। खुम्ब···खुम्बजानी मशरूम खाने में बहुत मजा आता था। लाल रंग के आखे, बहुत छोटे रसबैरी, गरने, क़ैंथ, काफल, जंगली चैरी, स्ट्राबेरी ढूंढ़-ढूंढ़कर खाने में क्या मजा आता था। एक पेड़ से चीड़नू तोड़कर उसमें से न्योजे निकालकर भी मैंने खाए थे। पिज जिसे यहाँ कक्कड़ कहते हैं, का मांस बहुत स्वादिष्ट लगता है। बाम्बू शूट और मशरूम की सब्जी इतनी बढ़िया बनती है कि क्या कहूँ।'

'हाँ वीणा, शहरों की जिन्दगी में यह सब नसीब में नहीं होता। वैसे टिन्ड, मशरूम, इत्यादि मिलते हैं, पर ताजे मशरूम खाने में आनन्द ही अलग है। मैंने काश्मीर में कच्ची गुच्छी की सब्जी खाई है।'

'शिमला में भी कभी-कभी मिल जाती है, मौसी से कहेंगे। अगर मिला तो तुम्हें लुंगड़ू की सब्जी और घूनली का साग खिलाऊँगी। ये दोनों चीजें धर्मशाला, कांगड़ा की तरफ होती हैं।'

बर्फ बहुत ज्यादा गिर रही है। मैं खानसामा को बुलाता हूँ। चाय मँगवाते हैं, नाश्ते के लिए प्रोन्ज और चीज़ है। उसे मैं प्रोन्ज़ गर्म करने को कहता हूँ। वह लंच के लिए पूछता है।

वीणा कहती है, 'चिकनकरी और भात मिल जाएगा ?'

'हाँ, साहब, मुर्गे तो मैं रखता हूँ, ताजा काट दूंगा। दो तरह का चिकन खिलाऊँगा। खटाई डालकर चिकन बढ़िया बनता है !'

Funding by IKS-MoE

'ठीक है, नाश्ते में अंडे वगैरह ले आना।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'कैसा खाएँगे ?'

'डब्वल फ्राई ।'

'बना दूँगा साहब...'

'सुनो, यहाँ नरगिस के फूलों के बल्ब मिलेंगे !'

'मिल जाएँगे । ढूंढने पड़ेंगे, बर्फ हटाकर, आप नारकण्डा से लौटते में ले जाइएगा !'

खानसामा के जाने के बाद हम दोनों रांकिंग चेयर्ज़ पर बैठ गिरती हुई बर्फ का दृश्य देख रहे हैं ।

गर्म पानी से नहा-धोकर हम नाश्ता लेते हैं और फिर भीतर जाकर अँगीठी जलाकर काफी देर बातचीत करते हैं । भीतर का मौसम गर्म-गर्म खुशनुमा है । फिर हम बिस्तर में दुबक जाते हैं । वीणा का यह रूप सौन्दर्य का एक उत्कृष्ट स्वरूप है । प्यार तो वैसे भी हर औरत को सुन्दर बना देता है ।

दोपहर खानसामा के दरवाजा खटखटाने के कारण हमारी नींद खुलती है । मैं दरवाजा खोलता हूँ । बाहर की ठण्डी हवा का बर्फानी झोंका भीतर आने को उतावला हो रहा है । खानसामा कहता है, 'साब, खाना तैयार है !'

'यहीं इसी कमरे में ले आओ ।' मैं वीणा को उठा देता हूँ । कहती है, 'अच्छी भली नींद आ रही थी, क्यों उठा दिया ?'

'मैडम आपका पुराना प्रेमी खानसामा भोजन ला रहा है, इसीलिए उठा दिया !'

'ओह !' वह केज्युअल-सा उत्तर देती है, उठकर बाथरूम में जाती है । भीतर से आवाज देती है, 'नल में पानी जम गया है, मुंह कैसे धोऊँगी ?'

'इधर आ जाओ, शेरों के मुंह हमेशा धुले ही रहते हैं ।' वह लौट आती है, कहती है, 'तुम्हें मैं शेर दिखती हूँ ?'

'शेर नहीं, शेरनी ।' मैं उसे छूना चाहता हूँ—वह मुझे हल्का-सा धक्का देकर कहती है, 'चलो हटो, ज्यादा हीरो बन रहे हो ।'

'तुम्हारी खातिर कुछ भी बन सकता हूँ ।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'अधिक रोमांटिक होने के लिए कुछ और प्यार-व्यार क्यों नहीं कर लेते। पत्नी के साथ रोमांस क्यों ?'

'पत्नी, प्रकृति का पल-पल परिवर्तित वेश है,' यह प्रकृतिप्रेमी कवि सुमित्रानन्दन पन्तजी ने कहा है।

'जानते हो पन्तजी उमर भर शादी नहीं कर पाए !'

'बेचारे, औरत की वास्तविकता से अपरिचित रह गए !'

'वास्तविकता ?'

'हाँ, माने पारिवारिक जीवन, रोज-रोज के झगड़े-टांटे। सैक्स-वैक्स, रोना-धोना, सब वास्तविकताएँ ही तो हैं।'

वीणा हँसती है। कहती है, 'कालेज में मैं भी कविताएँ लिखती थी !'

'सुनाओ कोई कविता !'

'याद नहीं है ?'

'कुछ देर सोचो, याद आ जाएगी।' वह सोचने लगती है। फिर कहती है—'कुछ याद नहीं आ रहा। पूरी कविता कोई याद नहीं आ रही।'

'तुम अधूरी ही सुनाओ !'

वह एक क्षण चुप रहती है। फिर कहती है, 'हँसना नहीं, सुनाती हूँ।' वह कहती है, 'सुनो···मुश्किलों में जो दिखाता रास्ता
वह नहीं कुछ और केवल प्यार है',

फिर रुक जाती है, कहती है, 'याद नहीं आ रही, बहुत पुरानी बात है, फिर कभी सोचकर सुनाऊँगी, चलो, तुम्हें गीत सुनाती हूँ।'

'गीत ?' मैं चौंकता हूँ, 'तुम कह रही हो यह···तुम गीत सुनाओगी वीणा तुम ?'

वह हँसती है। कहती है, 'पहली बार तुम्हें सुना रही हूँ—कालेज में गाती थी। पहाड़ी गीत है—

नाले वाले जांदा मुआ लकड़ू चुगादां
संझा जो गलादां लाड़ी मेरी बेलिया।
अला बेल्युआ हो···अला बेल्यआ हो।
खाने जो नीं दिदा मोआ लाण जो नीं दिदा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रातो जो गलादां लाड़ी मेरीवेलिया ।
अला बेल्युआ हो···अला बेल्युआ हो ।'

वीणा का स्वर बहुत मधुर है । पहले कभी-कभी उसके गुनगुनाने की आवाज बाथरूम से आती थी । मैंने कई बार उसे गीत गाने को, सुनाने को कहा, हमेशा उसने एक ही उत्तर दिया, 'मुझे गाना नहीं आता !' उसके इस उत्तर की रटन के कारण गत तीन वर्षों से कभी मैंने उसे गाने को या कुछ बात करने या सुनाने को नहीं कहा । वीणा से मेरा प्रेम-सम्बन्ध के कारण विवाह हुआ था । उसकी एक मित्र थी, वह हमारे शहर की थी, उस घर में हमारे पारिवारिक सम्बन्ध थे । वीणा की मित्र का नाम अरुणा था । एक शाम मैं उनके घर गया था तो अरुणा और वीणा वहाँ थीं, वहीं परिचय हुआ, फिर वीणा के साथ फोन पर बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ, फिर मिलना-जुलना शुरू हुआ। । भरी दोपहर में घूमना-फिरना, रेस्तोराँ और चाय का रिश्ता कायम हुआ । मैं इस मुलाकात के समय इन्जीनियरिंग फाइनल की परीक्षा देकर आया था । फिर रिजल्ट आते ही दिल्ली में नौकरी मिल गई, फिर वीणा के पिता ने हमें साथ घूमते देखा कनाट प्लेस में । हमारे पास आए तो वीणा ने कहा था, 'पप्पा या चन्दर है ।' मैंने हाथ जोड़े थे । वे बोले, 'कम यंग पीपल लेट अस सिट एण्ड हैव ए कप आव टी समवेयर ।' वे हमें वोल्गा रेस्तोराँ ले गए । वहाँ काफी खुलकर बातचीत हुई । कहने लगे, 'वीणा ने तुम्हारा जिक्र पहले भी किया था, कल शाम घर आओ, साथ खाना खाएंगे, घर के और लोगों से भी मुलाकात हो जाएगी ।'

'पर पप्पा मम्मी नाराज हुईं तो ?'

'अरे यार मेरे बेटे, छोड़, तेरी मम्मी सिर्फ साड़ी खरीदने, न खरीदने के लिए नाराज होती हैं, इतना अच्छा बेटा देखकर खुश होंगी !'

मैं चुप हूँ । वे कहते हैं, 'बर्खुरदार, यह लुक-छिपकर मिलना बेकार है, घर पर मिला करो । पर सुनो शर्त यह है कि तुम्हें वीणा से शादी जरूर करनी पड़ेगी !'

'पर पप्पा···' वीणा बीच में रोकती है ।

'तुम्हारी सुनेगा कौन वीणा ? मैं और चन्दर एक तरफ हैं इस मामले

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में !'

'मेरे माँ-बाप···' मैं कुछ कहना चाहता हूँ।

'देख बेटे, मुझे अरुणा की माताजी ने सब बता दिया है। तुम एक उद्देश्ययुक्त महत्त्वाकांक्षी युवक हो, शादी करना चाहो तो फर्स्ट प्रोवोजल मेरा।'

'पप्पा आप भी···' वीणा कुछ कहना चाहती है।

'देख वीणा, तू मेरी सबसे ज्यादा लाड़ली पुत्री है, होगा वही जो तुम कहोगी। तुम्हें चन्दर पसन्द नहीं है तो अलग बात। पर नापसन्दगी के लिए कारण बताने होंगे।'

पप्पा ने हमसे बिना पूछे मटन शामी कबाब, पनीर के पकौड़े और तीन कॉफ़ी का आर्डर दे दिया। पप्पा के घुँघराले बाल, सुन्दर चेहरा। गोल्ड फ्लैक की सिगरेट, चुस्त कपड़े और उन्मुक्त हँसी सब अच्छा लगने योग्य था। 'सिगरेट पीते हो ?' उन्होंने मुझे पूछा।

'नहीं पप्पा।' मैं कहता हूँ।

'अच्छी बात है। सिगरेट से कैंसर और हार्ट ट्रबल होता है। नहीं पीना चाहिए।'

'फिर पप्पा आप क्यों पीते हैं ?' मैं पूछता हूँ।

'छोड़ पुत्तर, सिगरेट कई लोग पीते हैं, हम भी पीते हैं। तुम नहीं पीते तो अच्छा करते हो। और फिर कैंसर या हार्ट ट्रबल कहीं हंड्रड परसैंट लोगों को होता है ?

खाने-पीने का सामान आ गया है। पप्पा लगातार मुझ पर निगाह रखे हैं। बीच में कभी-कभी कुछ बातचीत का सिलसिला चलता है। मेरा उनके घर आना-जाना शुरू हो गया। वीणा के भाई से दोस्ती हो गई, उसकी बहनों का मैं आदर्श बन गया। उसकी माँ का बेटा। मेरे बिना उस घर का खाने का टेबल अधूरा लगता था। हर शाम मुझे वहाँ खाना खाना लाजमी था, मेरी पसन्द-नापसन्द उस घर में सबकी पसन्द ना पसन्द थी। वीणा विजातीय थी अत: मेरे घर वाले शादी के लिए सहमत नहीं हुए और वीणा के पापा ने मेरी बारात का भी प्रबन्ध कर दिया। मेरे परिवार के एक भी व्यक्ति के विवाह में शामिल हुए बिना विवाह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्पन्न हो गया। वीणा मेरी बीवी बन गई। उसका घर मेरा घर हो गया, उसका परिवार मेरा परिवार बन गया।

हनीमून और सैर-सपाटे खत्म हुए, हमारी अपनी गृहस्थी जमी। मुझे और अच्छी नौकरी मिलती गई। पप्पा के सम्पर्क से मुझे बड़ी कम्पनी में छोटी आयु में बड़ा वेतन मिलने लगा। फिर वीणा के परिवार के लिए मैं पुराना होता गया, नये जामाता आते गए, हमारी सालियों के विवाह हुए। इस प्रकार मैं और वीणा स्वतन्त्र जीवन के भागीदार हो गए।

वीणा आज कुफ्री में पहाड़ी गीत गा रही है, यह कितना बड़ा सत्य है। बर्फ हल्की हो गई है, कुहरा छा गया है, रेस्ट हाउस में कमरे के शीशों से कुहरा टकराकर लौट न सकने से घनीभूत होता जा रहा है। शीशों पर कुहरे की पर्तों से बाहर कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा है। खानसामा लंच लगा गया है। दोनों प्रकार का चिकन लाजवाब बना है। मैं खाने के बाद एक छोटा पैग ब्रांडी लेता हूँ। वीणा ब्रांडी नहीं लेना चाहती है, मैंने उसे जबरदस्ती एक बूंद ओठ में लगा दी है। उसके चेहरे पर एक परिचित मुस्कान आ गई है। खाने के बाद कुछ मीठा खाने का मन हो रहा है। वीणा कभी-कभी टौफी छिपाकर रखती थी। पूछता हूँ तो कहती है, 'अटैची में शायद थोड़ी मिश्री होगी।' उठकर निकाल लाती है। मैं कहता हूँ, 'हमारी मेम साहब एक सम्पूर्ण व्यक्ति हैं, जब जो चाहो निकाल लाती हैं।'

'तुम कोई पुरानी बात क्यों नहीं सुनाते।'

'मैं क्या सुनाऊँ, होश आने से पहले जवान हो गया। फिर नौकरी कर ली, शादी हो गई, अतीत शुरू हुआ भी और नहीं भी, बचपन के प्यार याद भी हैं, नहीं भी। बहुत-सी सारहीन बातें भूल गया हूँ, बहुत-सी गर्भयुक्त बातें याद रखते-रखते भूल बैठा हूँ। तुम्हारे पप्पा अच्छे दोस्त थे, अब वे भी बदल गए हैं।'

'जानते हो पप्पा को कई वर्ष पहले मुँह का कैंसर हुआ था, इलाज करके ठीक हो गया। पुरानी बात है। हम आज तक उनकी भावी मौत के भय को मन से नहीं निकाल पाए हैं।'

'क्या डाक्टर अब उन्हें सिगरेट पीना मना नहीं करते ?'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'करते हैं, पर पप्पा मानते कब हैं। उनकी जो इच्छा होती है करते हैं। कैंसर के बाद से वे अधिक मस्तमौला हो गए हैं। पन्द्रह वर्ष पूर्व का वह कैंसर जड़ से उखड़ने के बावजूद हम लोगों के लिए एक डर है, स्थायी डर है। मुझे तो लगता है कभी मुझे भी कैंसर हो जाएगा !'

'वीणा तुम कहती क्या हो ? कैंसर कोई परिवारगत बीमारी है ? यू शट अॅप नाऊ। इतनी खूबसूरत जगह में तुम मनहूस विचार उगल रही हो। पप्पा अब ठीक हैं। क्यों सोचती हो तुम !'

'हाँ, तुम ठीक कहते हो। मैं मनहूस हूँ।'

'नहीं वीणा, तुम अपने को हमेशा गलत कम्पार्टमेंट में रख लेती हो !'

'जानते हो मैं जी भरकर गाना चाहती हूँ। जी भरकर रोना चाहती हूँ। पूरी उमर तुम्हारी सेवा करती रहना चाहती हूँ।'

'आओ, बिस्तर में आराम करो।' मैं उसे बाँहों में भर लेता हूँ। उसकी आँखों से टपटप आँसू बह रहे हैं। अकारण, अनायास। मैं जिसे प्यार कहता हूँ, वीणा के लिए वह एक विवशता है। शायद उसके लिए प्यार का अर्थ कुछ और है। है भी या नहीं ?

शाम चाय लेकर हम घूमते रहे। बर्फ की गहरी पर्त्तों पर अपने पग-चिह्नों से एक रास्ता बनाते गए। पेड़ों की सुनसान शाखों पर खामोशी है। एक कौआ बर्फ झाड़ता-सा उड़ रहा है•••किसी एकान्त से दूसरे एकान्त की खोज में या किसी परिवार के लिए दायित्व निभाने। वीणा पौधों, वृक्षों और घास के तिनकों को किस तरह अपना समझती है, मानो वह धरती है और इन सबकी जननी है।

रात खाने पर वीणा ने मुझे ब्लैक एण्ड व्हाइट स्कॉच खुद पैग बना-कर दी और अपने लिए सिर्फ थोड़ी-सी ब्रांडी बनाई। ठण्डी बढ़ती रही, दो पैग पीने के बाद वीणा ने मुझे पीने से रोका और खाना खाने का हुकुम दिया। भोजन के बाद प्यार का सिलसिला, नींद और फिर अगली सुबह सब अपने-अपने क्रम से आ गए।

सुबह चाय और नाश्ते के पश्चात् जीप स्टार्ट की। गर्म पानी डाल-कर किसी तरह रेडियेटर में पानी भरा और कार्बोरेटर में पैट्रोल डाल-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर चौक देकर गाड़ी स्टार्ट कर दी। खानसामा को बीस रुपये टिप के खाने के पैसों के अतिरिक्त दिए। जाते हुए उसने कहा, 'साहब, लौटकर इधर से निकलें, आपके लिए नारसिसिज के बल्ब तैयार रखूंगा।'

रास्ते में सड़क के दोनों ओर बर्फ के ढेर थे। पिघला हुआ पानी सड़क को रतिक्रीड़ित-सा करके सुनसान छोड़ गया था। बहुत धीमी स्पीड में गाड़ी चलानी पड़ रही थी। नारकण्डा 81 किलोमीटर···रास्ते में दो बार रुककर चाय पी।

लगभग पाँच घण्टे की यात्रा के बाद नारकण्डा पहुँचे। रेस्ट हाउस सड़क की दाहिनी ओर करीब चालीस गज दूर था, चढ़ाई थी। दाहिनी ओर एक खूबसूरत रैस्तोराँ था। यह टूरिस्ट विभाग का था। बर्फ लदी यह दोनों इमारतें, वहाँ से ढलान की ओर जाती हुई सड़क···दूर तक कहीं हरियाली का नामोनिशान नहीं। पेड़ों पर लदी बर्फ। इस दृश्य ने मेरा मन मोह लिया। हम रैस्तोराँ के पास जीप खड़ी करके भीतर गए। ठंड में बीयर पीने का मन नहीं था। जिन और रम मिलाकर एक स्ट्रांग पैग बन पाया है। वीणा सिर्फ जिन पीती है। हम गर्म लंच का आर्डर देते हैं और इसी बीच रेस्ट हाउस में सामान रखवाकर लौट आए हैं। रेस्ट हाउस तक जाने वाली पक्की सड़क बर्फ से दलदली हो रही है। चौकीदार को बुखारीनुमा अँगीठी गर्म करने का आदेश दे दिया है। फिर लौटकर रेस्ट हाउस में आ गए हैं। वीणा ने कस्तूरी के मद का सैंट लगाया है। सारे कमरे में खुशबू बिखर रही है। मैं ड्रिंक का एक स्ट्रांग पैग और लेता हूँ, वीणा आधा पैग जिन लेती है, उसमें कुछ बूंद ब्रांडी मैं जबर्दस्ती डालने को कहता हूँ। नीचे हिन्दुस्तान तिब्बत रोड घुमावदार उतराई से कुमार सेन की ओर बढ़ रहा है। सामने की पहाड़ियाँ कोट खाई के सेब उगाने के क्षेत्र से लगी हैं, वहाँ बहुत उम्दा और अच्छा सेब होता है। बर्फ की बनी एक बड़ी-सी पेंटिंग नारकण्डा से नीचे तक, दूर पहाड़ियों तक ईश्वर ने बना दी है, उसका सौन्दर्य, उसकी भव्यता अक्षुण्ण है। इसी सौन्दर्य को देखने की प्रतीक्षा में मैं दो रात कुफ्री रुका था। वीणा शायद रैस्तोराँ के किसी को जानती है। बैरा से पूछती है, 'प्रीतजी कहाँ हैं ?'

बैरा कहता है, 'साहब तो शिमला चला गया है। आप कौन

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेम साहव हैं ?'

मैं खोया हूँ उस विस्तृत सौन्दर्य में। दूर कहीं एक पहाड़ी नदी शायद बहुत दूर एक लकीर-सी बनी सिकुड़ी है। रैस्तोराँ में दो-तीन लोग और हैं, वे टूरिस्ट लाज में ठहरे हैं। हमारे रेस्ट हाउस में रुकने का कारण सिर्फ सर्द एकान्त की खूबसूरती का आकर्षण है। लंच अच्छा है। लंच के बाद हम कॉफ़ी पीते हैं। जीप चलाने से मैं काफी थक गया हूँ। नारकण्डा हमें सिर्फ एक रात रुकना होगा क्योंकि मूल प्रोग्राम की एक रात कुफ्री में कट गई थी।

वीणा कहती है, 'यह जगह हमेशा खूबसूरत लगती है। पाँच हजार फुट नीचे तक सड़क के घुमाव यहाँ खिड़की में बैठकर मीलों तक देखे जा सकते हैं। बर्फ की पर्तें नीचे जाकर पतली या अदृश्य होती जा रही हैं। परन्तु ऊँचाइयों पर भयंकर बर्फ है। नारकण्डा दस हजार फुट की ऊँचाई पर है। रेस्ट हाउस दस हजार इक्कीस फुट पर है। रेस्ट हाउस के नीचे एक बहुत बड़ा बोर्ड लगा है। उस पर लिखा है, गोल्डन ईगल बीयर रु० 3.50, ब्लैक नाइट ह्विस्की 23.75 रुपये! खाना खाकर हम रेस्ट हाउस तक पैदल जाते हैं, पैर जैसे जम-से गए हैं। वैसे हम यहाँ सर्दियों में आने की तैयारी करके आए थे इसलिए ग्रेटकोट से लेकर गर्म मोजे तक सब पहन रखे हैं। मेरे पास एक चाँदी की फ्लास्क है, इस फ्लास्क में ब्रांडी भरी है, कभी घूमते-घूमते नीट एक घूंट पीने में जो मजा है, वह इस प्रकार के बर्फानी रोमांस में अद्‌भुत हो जाता है। रेस्ट हाउस बहुत छोटा है, बरामदे में बैठकर चारों तरफ नजर दौड़ाता हूँ। सब तरफ बर्फ से ढकी ऊँची-नीची पहाड़ियाँ हैं। बीच-बीच में बर्फ की सफेद छतों वाले घर दीख जाते हैं। कहीं-कहीं किसी सरकारी इमारत की लाल टीन या हरी टीन का कोई पैंच बर्फ के भीतर से तकली खोपड़ी की तरह दिख जाता है। घरों में चुप्पी है, दिल्ली की खामोशी में रुदन और चीत्कार ध्वनित होता है, यहाँ के शोर-शराबे में सिर्फ सुनने को मिलती है कोई अकेली आवाज जो किसी को पुकार रही हो। या अपनी ही साँस खामोशी में भीड़ का अहसास देने लगती है। इस खामोशी, इस नीरव सौन्दर्य के आगे जयशंकर प्रसादजी की कविता याद आती है, 'ले

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक धीरे-धीरे।' यह वह गन्तव्य है जहाँ इन्सान धोखे से आना चाहता है। यहीं पलायन का मूर्त सौन्दर्य है, यहीं है जिन्दगी का वह विश्वास जो बर्फ पर पड़ती धूप से बर्फ के बदलते रंगों से प्यार करने का साहस जुटा पाने पर मजबूर कर देता है। भूलकर यहाँ आकर मन लौटने को नहीं है। शाम यहाँ जल्दी ढल जाएगी, या बर्फ का तूफान अचानक आकर सारी खामोशी को चीर देगा। मुझे एक गीत याद आता है—

यह बहारों का समाँ
चाँद तारों का समाँ
खो न जाए आ भी जा—यह बहारों का समाँ
जिन्दगानी दर्द बन जाए कहीं ऐसा न हो
यह नजारों का समाँ, खो न जाए आ भी जा
यह बहारों का समाँ !

शायद यह किसी फिल्म का गीत है। वर्षों से इस गीत की यही पंक्तियाँ मैं दोहराता रहा हूँ। किसे बुलाता हूँ, किसे पुकारता हूँ···इस सौन्दर्य के आगे, प्रकृति की इस अभूतपूर्व चित्रिति के आगे दर्द का प्रश्न ही क्या ? वीणा मस्त है, गुनगुना रही है। कहती है, 'चन्दर, क्या तुम नहीं चाहते कि इस तरह की जगह में रहा जाए, जिन्दगी के सब गम भूलकर, सारी सरहदें तोड़कर, सिर्फ आदिपुरुष मनु की तरह एक श्रद्धा पालकर, इस असीम प्रकृति में रहा जाए, वह श्रद्धा विश्वास भी हो, अनुभूति भी, चाह भी, प्राप्य भी, अप्राप्य भी। यहाँ आकर क्या तुम्हें नहीं लगता कि यहीं से सारी सृष्टि शुरू हुई है, चारों तरफ यही प्रकृति है, हम, तुम सब सम्भूत हैं। उपत्यिका में बर्फ के पहाड़ों की चोटियाँ हम तक आने को व्याकुल हो रही हैं। फूटते हुए झरने, सोते हमारे कदमों को छूना चाहते हैं। पत्तों में, पेड़ों में, सरसर की आवाज हमारे गीत गुन-गुनाती है। बर्फ आकाश कुसुम है, स्वर्ग की अप्सराएँ हमारे स्वागत में पुष्प या खीलों की वर्षा कर रही हों। सारी प्रकृति हमारे और सिर्फ हमारे लिए है···पर सुनो तुम्हें मालूम है···पप्पा को इस प्रकार की जगहों में

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आने की मनाही है।'

'वीणा, तुम रात-दिन पप्पा, पप्पा, पप्पा की रट लगाए रहती हो। क्या हुआ अगर उन्हें कभी कैंसर हो गया था···हजारों लोगों को होता है, प्रकृति के इस अनछुए रूप में हम सब कैंसर हैं। कभी तुमने धरती से पूछा है कि उसका दर्द क्या है ? हम हैं उसका दर्द। वह अपना दर्द पालती है !' तभी पक्षियों का एक झुण्ड शोर करता हुआ रेस्ट हाउस के पास से उड़ता हुआ चला गया। मैं देखना चाहता हूँ उन्हें, उन्हें जो हमसे हजार गुना अधिक स्वतन्त्र हैं, जो उड़ते हैं, हमें देखते हैं और अपनी मैत्री के लिए हमें अयोग्य मानकर बहुत दूर चले जाते हैं।

आसमान पर बादल आ गए हैं। तभी तेज बिजली चमकती है, गड़गड़ाहट के बीच ऐसा लगता है कि कहीं बादल फट गया है, या कहीं तड़ित प्रक्षेप हुआ है। वीणा डरकर मुझसे लिपट जाती है। तभी रेस्ट हाउस के नीचे शोर होता है। मैं बाहर आता हूँ। सड़क पर पड़े साइन बोर्ड पर वज्रपात हुआ है, वह बीच में से कट गया है। रेस्ट हाउस के थोड़ा दाहिने बने टी स्टाल पर गाज़ गिरी है और एक झुलसा हुआ शरीर बैंच पर मृत है। मैं नीचे जाता हूँ। वीणा भी साथ आती है। टूरिस्ट रैस्तोरां का मालिक कहता है, 'साहब बड़ी भयंकर बिजली गिरी, हमें तो लगा रेस्ट हाउस पर गिरी है···शुक्र है ईश्वर का···यह जो मरा है, यह पास के गाँव का पोस्टमैन है, इसके घर में पिछले छः सालों में पाँच मौतें बिजली गिरने से हुई हैं।'

'क्यों ?'

'ईश्वर का अभिशाप है।'

वीणा कहती है, 'होल्टा टी एस्टेट की मालिक राजकुमारी साहिबा से भी वज्रपात की एक कहानी जुड़ी है। कुल्लू के मेखली देवी मन्दिर में कोई स्त्री प्रवेश नहीं कर सकती। राजकुमारी सन् 1952 में उस मन्दिर में गईं। वे हमेशा पुरुषों के कपड़े, पैंट-शर्ट पहनती थीं। अन्धविश्वासों पर हँसती थीं। उन्होंने मन्दिर की देहरी में पाँव रखा ही था कि अदृश्य बादलों से गाज़ गिरी, मन्दिर की चौखट पर राजकुमारी को झुलसकर वह दैवी आग क्षण मात्र में अदृश्य हो गई। इस पोस्टमैन पर भी कोई

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभिशाप होगा।'

उस सूने गाँव में, नीरव प्रकृति के रम्य प्रांगण में मौत का ताण्डव हमारी आँखों के सामने था, शाम साढ़े चार का समय है। हम रेस्ट हाउस में लौट आते हैं। मुझे अत्यधिक थकावट हो गई है, मैं सोना चाहता हूँ। वीणा अँगीठी में और कोयले डलवाती है फिर मेरे पास बिस्तर में लेट जाती है, निश्चेष्ट।

बिजली गिरने के हादसे के बाद नारकण्डा में जो सौन्दर्य देखने आए थे वह खत्म हो गया। जब शाम छः के लगभग उठे तो बाहर बर्फ पड़ रही थी। हम रेस्ट हाउस में चाय पीना चाहते थे पर चौकीदार ने कहा, 'साब, सामान नहीं है, चाय नीचे से लानी पड़ेगी।' हम बर्फ़ में घूमना चाहते थे पर मन और दिल दोनों पर बोझ था। रैंस्तोराँ से फ्लास्क में चाय लेकर चौकीदार के साथ बैरा आया था। रात के खाने के लिए उसने पूछा तो अनमने मन से कुछ भी लाने को कहना चाह रहा था कि वीणा बोली, 'हम वहीं आकर खाना लेंगे। बढ़िया पीज़ सूप विद् टमाटो सॉस एग्ड बटर, गुच्छी का पुलाओ और साथ में कोई भी तरी वाली सब्जी बनवा देना।'

'साब, गुच्छी फ्रेश नहीं है, ड्राई गुच्छी बहुत महँगी पड़ेगी। आप कहेंगे तो बनवा दूँगा।'

'हाँ बनवा देना!' वीणा ने कहा। घर में रहने वाली वीणा मुखर हो गई। अपने अतीत की बातें सुनाती रही। कह रही थी, 'नानाजी होते तो घूमने का मजा आ जाता।'

'उन्हें गुजरे कितने वर्ष हो गए!'

बहुत वर्ष, वे जीप एक्सीडैंट में मरे थे, पर क्यों?'

'नहीं, मैं यूँ ही पूछ रहा था···पुरानी जगहें सब तुम्हारी परिचित हैं, प्रकृति के नजदीक रहकर तुम प्रकृतिमयी हो गई हो! दिल्ली में तुम्हें क्या हो जाता है?'

'चन्दर, तुम मेरा दर्द नहीं समझते। मैं माँ न बन सकी। तुम इस बात को इतना नान सीरियसली लेते हो, तुम मेरे दिल में देखो। एक बार गर्भ धारण करने का सुख तो अनुभव करती? कितनी बदकिस्मत

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हूँ। तुम्हें भी अपने साथ बाँध लिया है।'

'वीणा, तुम व्यर्थ की बातें करती हो। जो नहीं हो सकता, उसे हो जाना जरूरी नहीं। मातृत्व एक चाहना है। पत्नी के रूप में पति के प्रति तुम भावों में कोमलता ले आओ तो यह सुख अनुभूत किया जा सके। तकदीर और तदबीर हमारे अपने नियन्त्रण में नहीं होतीं। एक स्थिति विशेष इन्हें बिगाड़ सकती है, दूसरी स्थिति इन्हें सँवार सकती है।'

'इसीलिए जीने का साहस मुझमें है। तुम मेरे पति हो, यही मुझे काफी है। पर मैं तुम्हारे दर्द की बात करती हूँ।'

'मेरा दर्द ? कैसा दर्द ?'

'तुम जानते हो !' वीणा बहुत धीमे स्वर में कहती है।

'मैं नहीं जानता कि मुझे कोई दर्द भी है। सन्तान की इच्छा सभी में रहती है। मुझमें भी होगी, पर वह इतनी महत्वपूर्ण हो कि एक खाई रास्ते में आ जाए, उसे कूद पाना मुश्किल होता है। तकदीर को मानो। अगर तुम तकदीर से समझौता नहीं करोगी तो टूट जाओगी।'

'पहले से ही टूटा आदमी और टूट जाए तो क्या फर्क पड़ता है ?'

'वीणा, सुनो, यह जो बर्फ पड़ रही है न, यह यहीं पहाड़ों में ठण्डी जगहों में पड़ती है। दिल्ली में या बम्बई में नहीं। हर वर्ष ऐसा ही होता है ! यह प्रकृति का विधान है। यही विधान मानव पर भी लागू होता है, मनुष्य बर्फ के पहाड़ों में घर बनाकर अपने लिए सुरक्षा जुटाता है। मानव शरीर भी इलाज इत्यादि से ठीक हो सकता है, बीमारी सुधर भी सकती है। नहीं भी सुधरती है। मोटर खराब हो तो उसे बदला जा सकता है, सुधारा जा सकता है। परन्तु शरीर के भीतर कुछ ऐसे भी भाग हैं जो अपने रहस्य प्रकट नहीं करने देते। उस पर हमारा-तुम्हारा बस नहीं। बाँझ जैसे शब्द पुराने हैं, घिस गए हैं, तुम सुन्दर हो, तुममें गर्मजोशी है—और अगर तुम बच्चा चाहती ही हो तो कोई बच्चा गोद लिया जा सकता है !'

वीणा चुप है। आकाश से गिरती बर्फ खामोश है, नहीं खामोशी से जमीन पर उतरती जा रही है। यह बर्फ पिघलकर पानी बन जाएगी, फिर बुखारात बनेंगे, बादल बनेंगे, बर्फ बनेगी, प्रक्रिया चलती रहेगी,

Funding by IKS-MoE

BVBSSMV
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वीणा और मैं भी जन्म-जन्मान्तर में ऐसे ही उगे हैं, ऐसे ही बढ़े हैं, खत्म हुए हैं। फिर उगे हैं। यह है खामोशी का एक अदम्य, अविरल सिलसिला; चलेगा, चलता रहेगा, चलने दिया जाएगा। न वहाँ प्रतिबन्ध होते हैं, न वहाँ सीमाएँ हैं, सब निर्धारित है इन सिलसिलों में। मेरा अपना आकाश है, वीणा या दूसरों का अपना-अपना आकाश, उसकी विशदता किसी विवाद का कारण नहीं। देशों के ऊपर के आकाश के कुछ हजार फुट तक हवाई सीमाएँ धरती के टुकड़ों की वजह से हैं, व्यक्तियों के लिए आकाश है एक पूर्ण सत्य, अनावंटित। मेरे आकाश की सीमा में कोई भी मन के आधार पर आ जाए क्या फर्क पड़ेगा। कल्पना को अन्तश्चेतना में निवसित असीम भव्य फलक पर उतरते विचारों की ब्रेनवाशिंग नहीं होती।

बर्फ थम नहीं रही है। अँधेरा बढ़ गया है। बिजली फेल हो गई है। चौकीदार लालटेन जलाकर रख गया है। वीणा भीतर जाकर अपने लिए ब्रांडी और मेरे लिए ह्विस्की ले आती है। ठंडे पानी में कड़वे घूंट मुझे मुखर बना देते हैं। मैं कहता हूँ, 'वीणा, तुम मेरे साथ कभी दिल्ली में उन जगहों पर फिर चलना जहाँ हम मिलते थे। सरोजनी नगर का बस स्टेण्ड, लोधी टूम्ब के बाहर का लेम्प पोस्ट। कृष्णामेनन लेन के कोने पर बनी चाय की गुमटी, कार्ल्टन रैंस्तोराँ का दाहिने कोने का आखरी टेबल, साहबसिंह की दुकान की वजन की मशीन का कोना, रीगल सिनेमा के ऊपर बने स्टेण्डर्ड रैंस्तोराँ की दोपहर, जनपथ की अन्नपूर्णा का टी कौंटर, सब जगह तुम्हें फिर अहसास होगा कि वहाँ हम मिलते थे तो सिर्फ प्यार के लिए, एक-दूसरे को देख-भर लेने के लिए, कुछ क्षण साथ गुजारने के लिए मिलते थे, तब न तुम्हें बच्चा पाने की लालसा थी और न ही मैं इतना महत्वाकांक्षी था। अब सिर्फ शादी के कारण जगी इस लालसा को क्यों बढ़ाती हो ? तुम जानती हो तुम माँ नहीं बनोगी, मैं भी मानता हूँ, तो फिर हम क्यों अपने अतीत और भविष्य को वर्तमान में घसीट रहे हैं।' दूसरा पैग ! तीसरा पैग !

मैं कह रहा हूँ, "वीणा, तुम मुझे भीतर तक झकझोरकर क्यों देखना चाहती हो ? देख—तू एक औरत है—खूबसूरत औरत ! तू विवाहित

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। तू मेरी बीवी है। हमने एक-दूसरे को चाहकर, पसन्द कर शादी की है। उस वक्त बच्चा होने की शर्त न तुमने रखी थी न मैंने। जिन्दगी साथ गुजारने की कसमें खाईं थीं, वे कसमें आज भी अहमियत रखती हैं। जिन्दगी साथ काटने की कसमें, जिन्दगी को घसीटने की कसमें नहीं थीं। फिर अब यह सब नई और असंगत बातें क्यों ?'

वीणा कहती है, 'चन्दर, तुम्हारी बातें अच्छी हैं। समझदारी की हैं। तुम्हें मैं कभी-कभी गलत बातें कह देती हूँ—तुम मुझे कोसते भी नहीं, शायद यही जिन्दगी का बहाव है। चलो, जब तक हो सके चलते चलो। सब तुम पर है।'

रात निकल गई। सुबह घने बादलों से आसमान भरा था। हम कुछ देर घूमते हैं। बर्फ की सफेद चादर अब एक तम्बू की तरह लग रही है। विशाल तम्बू की तरह। जैसे प्लेनेटेरियम का आकाश छत तोड़-कर वास्तविक आकाश बन गया हो ठीक वैसे ही बर्फ पर चलना जमीन से बहुत ऊपर चलना प्रतीत हो रहा था। दाहिनी ओर को घने जंगल हैं सब बर्फ से ढके। एक खामोशी है जो जिन्दगी को बुला रही है। वीणा कहती है—'मैं मरने के लिए तैयार हूं अगर तुम मुझे इस जगह दफना दो !'

'छोड़ यार, क्या सुबह-सुबह मर्सिया बयान कर रही हो ?'

'सच कहती हूँ चन्दर। जीने की ताकत मुझमें नहीं रह गई है। बहुत पहले मैंने बाबू रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक तस्वीर देखी थी। पेड़ों के बीच सफेद दाढ़ी वाले टैगोर बेंत की कुर्सी पर बैठे हैं। मुझे लगा था टैगोर कविता नहीं लिख रहे हैं, कुछ सोच रहे हैं। कागज-पैंसिल उठा-कर उसी तस्वीर पर मैंने लिखा था—

मेरा घट भरने ही वाला है,
शब्द अभी भी शेष बना है।
तेरी प्रीति में मूक रहूँ मैं,
यह क्यों प्रिय कैसे सहूँ मैं ?'

वीणा की ये चार पंक्तियाँ मुझे बहुत पसन्द आई थीं। नारकण्डा में सुनाई ये पंक्तियाँ एक सचाई है—छटपटाहट लिये हुए। अपूर्णता

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिये हुए, पूर्णता के प्रति आस्थायुक्त—यह एक सत्य है। एक धमकी, मजबूरी, प्यार में चुप न रहने के लिए प्रतिक्रिया।

नारकण्डा से निकलते-निकलतें साढ़े दस बज गए। नाश्ता भरपेट कर लिया था क्योंकि तीन-साढ़े तीन से पूर्व शिमला पहुँचने की उम्मीद नहीं थी। सर्दियों में जीप का सफर। सब अनिश्चित। लगभग तीन बजे कुफ्री पहुँचे, रेस्ट हाउस से नरगिस के फूलों के बल्ब लिये। शिमला कमाण्ड हाउस तक जीप ठीक तीन छप्पन पर पहुँच पाई। शिमला तो बर्फ में ढककर वैसे भी सुन्दर लगता है।

स्पॉट लाइट की रोशनी में दूर से देखने पर वर्षा के कतरे फव्वारों की तरह दिखाई देते हैं और बर्फ के कण एक स्क्रीन से बनकर स्वर्णिम रोशनी से बाहर निकलते हैं या एक निर्झर की तरह झरते हैं। शिमला में मौसी के घर के सामने रीगल सिनेमा के बाहर लगी स्पॉट लाइट में ऐसा ही होता है, ऐसा लगता है। मौसी के यहाँ पहुँचकर हम सकुशल वनपीस शहर में आ गए हैं। बर्फ में नारकण्डा से लौटना भी लम्बी विदेश यात्रा से कम जोखिम भरा नहीं था।

मौसी ने कच्ची गुच्छी की तरकारी और आलू-मटर का मदरा बनाया है चावल के साथ। मौसाजी के साथ बैठकर, गप्प सुनाते हुए दो-तीन पैग ह्विस्की लेने के वाद डिनर का आनन्द आ गया। मौसी खाना लाजवाब बनाती हैं। मौसी और मौसा दोनों घर में दो विरोधी खेमे बनाकर जीते हैं। विरोध और शब्दवाणों का सिलसिला निरन्तर चलता है। शायद जिन्दगी चलाने के लिए यह आवश्यक है या कदाचित जिन्दगी में उगे हुए सवाल या काई को खरोंचकर बाहर निकाल देने का यही रास्ता है।

अभी तक मैं वीणा के साथ एक विशेष प्रकार की दोस्ती निभा रहा था, पति के अतिरिक्त एक हमदर्द दोस्त बना रहने की कोशिश कर रहा था। पहाड़ों में आकर वह कितनी बदल गई है, क्या उसकी खुशी के लिए मुझे दिल्ली छोड़नी होगी। दिल्ली में वह एक बेजान वस्तु बन जाती है, उसके भीतर की औरत कहीं दिखाई नहीं देती। वह अपने हर अभाव का विस्तार करती है, अपनी हर अपूर्णता को और ज्यादा अपूर्ण बना देती

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। उसे क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए, वह इसका निर्णय नहीं कर पाती। विवाहित जीवन के पाँच वर्षों में मैं उसे समझ नहीं पाया। प्यार रिश्ते से बढ़ता है या रिश्ता प्यार से—दो अलग-अलग तथ्य हैं, वीणा शादी के बाद एक निराश आशावादी औरत बन गई है। सन्तान की स्पृहा जिन्दगी की हर जरूरत से ऊपर हो गई है। एक अस्तित्वहीन अस्तित्व कोई मायने नहीं रखता। वीणा जिस असम्भव की कल्पना करती है, जिसे पाना चाहती है, उसके लिए मुझे बार-बार याद दिलाती है—सिर्फ इसीलिए वह मुझे प्यार करती है कि मैं उसके अभाव को हमेशा बाँटता रहूँ, उसका भागीदार रहूँ।

शिमला की सर्दी के बाद हम दिल्ली आ गए हैं। वही दफ्तर, वही कार, वही घर, वही वीणा—परन्तु मेरे विचारों में एक अनिच्छा का रूप आ गया है। यह औरत मेरी जिन्दगी का सहारा नहीं है मैं हूँ इसका सहारा, इस अपाहिज की क्रचेज। बैसाखी की लकड़ी-सा मैं अपने लिए वीणा में वर्षों से देखता आया था, सन्तान की उसकी रटन ने मुझे खोखला कर दिया। बैसाखी बनने की क्षमता मुझ मृत इन्सान में कहाँ? मैं बदलना चाहता हूँ। अपने चरित्र को तोड़ना चाहता हूँ।

यहीं से शुरू हुई थी मेरी कहानी। यही कहानी है जो मुझे तूफान के बाद की बर्फ की तरह ठंडा, जड़ और···और···हाँ मुझे अलग आदमी बना गई।

सूखी गुच्छी का पुलाव कीमती है, ताजी गुच्छी की सब्जी सस्ती। मैं ताजगी की ओर जाने लगा हूँ। मुझे अपने भीतर की खोख को भरना है, वीणा उसे और पोपला कर देगी।

वीणा मेरी टीस को और सालती है। मेरे दर्द को और जख्म देती है। यह अहसासे मौत है जो जंगल की शिकस्ता इमारत को देखकर गुज-रते हुए रहरों को सिर्फ देखने भर की फुर्सत देती है। न पाने का एह-सास, न खोने का गम, न किसी की वफा की गर्ज न किसी का बेवफाई का रंज, बस एक शुरुआत की शुरुआत है—रुकी हुई शुरुआत—गैर जज्वाती शुरुआत। जिन्दगी की डायरी के हाशिए की तारीखें बाकी हैं,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

डायरी के वाक्यात्, हादसे नजरअन्दाज हो सकते हैं, हो जाते हैं, वीणा मेरी खुशी है, हाशिए की तारीख है, किताव का मज़मून है—और मैं उसे पीछे छोड़कर बर्फ की चादर पर लेटा हूँ, ठण्डक की चुभन नहीं है, वस एक रूह की हविश है, वह रूह जो मुझे बाँधकर, जकड़कर रखे रहे—मैं फरिश्तों की नगरी में सिर्फ एक इन्सान रहूँ···पर भाग्य ऐसा नहीं है, भाग्य ने मेरी नार्मलसी को नजरअन्दाज कर दिया है मुझे चिढ़ने के लिए, अपने आपसे जूझने से लिए छोड़ दिया है। वीणा मुझे और चिढ़ा रही है, और कचोट रही है।

मेरा अपनी प्रथम पत्नी के साथ तलाक हुआ था। भारत में तलाक-जैसा काम करना अपने को पापी कहलाने के बराबर है। तलाक का कारण मैं स्वयं था। अपनी पत्नी के प्रति मैं वफादार नहीं था, या वह मेरे प्रति वेवफा थी।

विवाह के बाहर दूसरी औरतों के साथ रिश्ते कायम कर बैठना मेरी विवशता थी। इसका कोई कारण नहीं था। एक घण्टे के रोमांस के आनन्द में मुझे सब भूल जाने की आदत है। वासना, ईर्ष्या, निराशा और पाप भावना पर मुझे विश्वास नहीं है। अवैध सम्बन्ध भी सम्बन्ध है, कानूनी या सामाजिक मान्यता कोई अर्थ नहीं रखती। प्यार और वासना का संगम होते हैं ये रिश्ते। विवाह भी वही है, उसमें सिर्फ कुछ सहूलियतें अतिरिक्त रहती हैं। मैं अपनी प्रथम पत्नी वीणा से खुश नहीं था। एक जिद्द पाल ली उसे छोड़ने की। अवैध रिश्तों में मैं अपने विवाहित जीवन का रूप बदलने लगा। वीणा वफादार नहीं थी, बस रिश्ते में दरार आ गई। मेरी अनेक त्रुटियाँ थीं परन्तु जब मुझे वीणा के एकमात्र गुप्त रिश्ते का पता चला तो मेरी जिन्दगी में नया जोश आया। कभी ठंडे दिमाग से कुछ नहीं सोचा।

वीणा कुछ दिनों से भयभीत रहती थी। उसके चेहरे पर तनाव था, वह अपनी भावनाओं को मुझसे छिपा रखने की कोशिश करती थी और

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमेशा उसे भय रहता था कि उसका भेद खुल जाएगा। वह मेरे साथ एक मृत औरत की तरह सोती थी, बेबाक, खौफ से भरी हुई। उस रात मैंने ही चुप्पी तोड़ी थी, 'वीणा, तुम इतनी निष्क्रिय क्यों हो ? क्या तुम मुझे गलत नहीं समझती हो, तुम कुछ भी तो प्रतिक्रिया नहीं करतीं ?'

वह फिर भी चुप रही। करवट बदलकर सो गई। इधर मैं था जो अपने सब सम्बन्धों का सार वीणा को बता देता था। कभी-कभी वह बड़ी खुशदिल होकर मेरे सम्बन्धों के प्रति उत्सुकता दिखाती थी। मेरे जीवन की सब कह देने की त्रुटि ने मुझे अनेक बार नीचा देखने पर विवश किया है। अपने घर से बाहर आधी रात के बाद का समय शायद ही कहीं अन्यत्र बिताया हो।

वीणा के जीवन की अनेक गुत्थियों में मैं उलझा रहा। उसका सजना-सँवरना या मेरे घर आने पर अत्यधिक चुप रहना एक मूक गवाह था हमारे सिलसिले के उदासी से घिरने का। अखुशी और गम्भीरता मुझे पसन्द नहीं। मैं चाहता था कि वीणा अपने सम्बन्धों के बारे में मुझसे चर्चा करती, हमारी भावनाओं पर बोझ था, मन में अशान्ति थी, तनाव था। अगर वह अपने रहस्य मुझे बता देती तो शायद मैं उसे समझने की कोशिश करता।

अवैध सम्बन्ध रिश्तों में नासमझी या मूर्खता के कारण भी उत्पन्न होते हैं। परन्तु इन सम्बन्धों के मूल में जाने की न मुझे चिन्ता थी न वीणा में शक्ति। वह अपराध-भावना से पीड़ित थी। वीणा के अतीत को मैं जानना नहीं चाहता था, पर उसके वर्तमान पर मेरा हक था। यदि वह अतिबौद्धिकता के कारण दूसरे सम्बन्धों में उलझी होती तो भी रिश्ते को बनाए रखने की बात सोची जाती। उसने कभी मुझे सुधरने का भी संकेत नहीं दिया।

मेरे प्रति वीणा का उजड्ड ठण्डापन मेरे अतिरिक्त सम्बन्धों की पृष्ठ-भूमि में था। वह मुझे खुले दिल से प्यार नहीं करती थी। हमारे सम्बन्ध उद्देश्यहीन, एकांगी और जड़ होते जा रहे थे। वह अपरिपक्व थी, पाँच मिनट के दमघोंटू सम्बन्ध को बनाए रखना या उसके कारण स्थायी रिश्ते में दरार आ जाना व्यक्तिगत कारणों से होता है। जब मुझे वीणा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की स्थिति का पता चला तो एक क्षण मेरे दिल में आया कि सारी स्थिति को हँसकर टाल दूं। पर वह मेरा पराजय स्वीकार करना होता। हमारी दोनों की इच्छा विवाह को समाप्त करने की थी। हमारा आपसी रिश्ता पोला हो गया था। हमारे विवाह का उद्देश्य खत्म हो गया था। सहवास की इच्छा मर रही थी।

पर मैं चाहता जरूर था कि वीणा मुझसे क्षमा माँगे। कुछ भी कहकर विवाह को चलने दे। मैं उस समय किसी भी दूसरी औरत से गम्भीरता से कहीं जुड़ा था। प्यार नाम की गहराई के कारण नहीं जुड़ा था। वीणा के प्रति मेरे मन में द्वेष भी नहीं था। हमारे जीवन की विडम्बना थी कि कभी हम एक-दूसरे को समझ ही नहीं पाए। वीणा अपराध या पाप भावना से भरकर भी मूक बनी हुई थी। स्वयं अपने जीवन को तबाह करना चाहती थी। उसने महसूस नहीं किया कि वह मुझे दर्द दे रही है। मैं हर रिश्ते के साथ दर्द महसूस करता हूँ। हमारे दोनों रूप एक-दूसरे के सामने स्पष्ट थे, खुली किताब के पृष्ठ विशेष की तरह। हमारे अपने छोटे-छोटे पापों को वड़ा बनाकर, मेगनीफाई करके देखने लगे थे, प्यार, सैक्स और विवाह को हम अलग-अलग देखने के आदी नहीं हो पाए थे। हम वस्तुत: दो पृथक् युनिट थे, उनका संचालन पृथक्-पृथक् था, उनका उत्पादन पृथक्-पृथक् था, हमारी साँसें एक-दूसरे से पृथक् थीं। दिल-दिमाग असहमत थे। प्यार के नाम पर किए गए पापों में वीणा के साथ शादी भी एक पाप थी। एक प्यार के लिए हमें विवाह करना पड़ा था दूसरे के लिए परित्याग…नहीं मैं कभी भी इस वाक्य के दूसरे भाग से सहमत नहीं होता।

वीणा ने विवाह को एक जूआ कहा था एक बार। धर्म के नाम पर सात फेरे और भंवर एक अजीब-सा समझौता है, धर्म और समाज के नाम पर किया गया समझौता क्या कानून से भी ऊपर है? क्या हमारे अन्तर्मन से भी ऊपर है। कानून में डायवोर्स का प्रावधान होने से कुछ राहत हुई जरूर है परन्तु शादी फिर भी एक अँधेरा कदम है।

वीणा का कहना था कि उसे मुझ पर भरोसा नहीं था। वह मुझे सन्देह की दृष्टि से देखती थी। मुझे खो देने का भय था। वह जब कभी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भी मेरे साथ किसी उत्सव, विवाह, शादी, समारोह में गई, हमेशा उसने मुझ पर नजर रखी। किसी सुन्दर औरत से बात करते हुए अगर मुझे देखती थी तो जलभुन जाती थी। घर आकर चुप्पी और ठण्डेपन में मर्सिया पढ़ने के मूड में दिखती थी। उसने कभी मेरे लिए अपने हाथ से खाना नहीं बनाया, एक आमलेट तक भी नहीं। कभी मधुर मुस्कान लिये दरवाजे पर खड़े होकर मेरे दफ्तर से लौटने पर गलबकड़ी नहीं डाली। दरअसल वह एक पत्नी बन ही न सकी।

यह विवाह पाँच वर्ष से अधिक नहीं चल सकता था। मुझे गुलाब पसन्द थे उसे प्लास्टिक के फूल। मैं खाने का शौकीन था, वह सिर्फ पेट भरने में सन्तुष्ट थी। मुझे बच्चे चाहिए थे, वह फेमिली प्लानिंग और फिगर के चक्कर में थी। घर को सजाना, सँवारना, सहेजना उसे पसन्द नहीं था। किताबों को करीने से लगाना, उनकी धूल झाड़ना सिर्फ मेरा काम था।

उसे सुन्दर सहेलियों से नफरत थी। मेरे दोस्तों की पत्नियों को वह हमेशा शक की नजर से देखती थी। मेरी आशाओं के विपरीत वह सब कह सकती थी, कर सकती थी। मुझे हमेशा उसने ताने दिए कि मैं कंजूस हूँ, उसकी मैरिज एनीवर्सरी पर कभी उसे कुछ नहीं दिया। ठीक होगा, यह सब अपनी जगह ठीक होगा, पर सचाई और भी है। मुझे अब याद आता है कि उसने कभी मुझे याद ही नहीं दिलाई कि उसकी आँखों में इस तरह के दिनों का महत्त्व है। पाँच वर्ष गाँठों में एक बार भी उसने मुझसे मुस्कराकर नहीं देखा। मैं शुरू-शुरू में सब करने के सपने देखता था परन्तु उस औरत की एक-एक हरकत मुझे काटती रही, भीतर तक सालती रही।

सुहागरात की याद है मुझे। उसने रटे-रटाए प्रश्न पूछे थे। 'आपने किसी से और किसी से प्यार किया !' प्रेम विवाह होने के बावजूद भी मुझे इन सवालों से घेरना मूर्खता नहीं तो और क्या था। उसके माँ-बाप ने शादी के नाम पर अपनी बेटी के दिमाग में भूसा भर दिया था। वीणा गहनों के डिब्बों को खोलकर गहनों से खेलती थी, उन्हें पहनने का शौक उसे नहीं था। मैं उसे कुछ भी लाकर देता तो वह नापसन्द कर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देती। मैं मिठाई खाना चाहता था तो वह नमकीन सामने रखती थी। उसके चेहरे पर एक ही भाव—खिचाव का भाव था, हमेशा।

इटली से लौटकर मैंने जो देखा उसमें मेरा दोष नहीं था। सारहीन रिश्तों को तोड़ देना बेहतर है। उस सुबह अचानक उसका भाई और उसके पिता मेरे घर आए। वीणा के साथ मेरी बोलचाल तक बन्द थी अतः इन दोनों ने भी मेरे ही घर में मेरे साथ बोलना उचित नहीं समझा। वीणा ने उन्हें बैठाया और अपना सामान बाँधने लगी। दो घण्टे में सारा सामान बँध गया और मुझे चाबियों का गुच्छा देकर उनके साथ चली गई। वह अपने साथ मेरे द्वारा दिए गए गहने-कपड़े सब ले गई। इन छोटी-छोटी चीजों पर मैं सोचता तो नहीं हूँ पर औरत के भौतिकतावादी होने और कुछ विशेष चीजों के प्रति लगाव होने के कारण कभी-कभी लगता है कि हमें सोचना चाहिए। सबसे बढ़कर मुझे जो अच्छा लगा वह था रिश्ता तोड़ने की वीणा द्वारा की गई पहल। मैं चाहता भी यही था। कानून को अवैध सम्बन्धों के साथ घर त्याग का प्रमाण भी दिया जा सकता था।

परन्तु वीणा ने जिस रिश्ते के लिए मुझे छोड़ा या मेरे साथ जिसके लिए रिश्ता तोड़ा वह आदमी एक मृगतृष्णा बनकर उसे कुछ समय ललचाता रहा और ओयसिस के भ्रम में उस घोर असीम मरुस्थल के बीच जाकर वीणा को अकेला छोड़ गया। शायद उस आदमी को एक विवाहिता औरत का अवैध सम्बन्ध प्रिय था, एक परित्यक्ता के साथ जीवन जीने की कल्पना उसने नहीं की थी। वीणा मेरे साथ न्यायालय में डायवोर्स लेने के लिए जिस सहज ढंग से सहमत हो गई थी मुझे और शायद न्यायालय को भी इससे आश्चर्य हुआ था। जज के साथ बातचीत के समय वीणा और मैं आमने-सामने थे। वीणा ने कहा कि इनका अवैध सम्बन्धों का चार्ज गलत है, पर एक अवैध सम्बन्ध मैं स्वीकारती हूँ। घर भी, उसने कहा, अपनी इच्छा से छोड़ा है। उसने यह भी कहा कि तलाक लेकर वह शादी करेगी। उसका यह भी कहना था, 'इनके दिल को मैं ठेस नहीं पहुँचाना चाहती थी, इन्हें सुधारने के लिए अवैध सम्बन्ध स्थापित किया था, बदला लेने के लिए नहीं, पर मैं यह भी नहीं कहूँगी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कि मैंने कोई गलत काम किया !' आर्थिक निर्भरता पर कहने लगी, 'जब जिन्दगी में दूसरा आदमी है तो प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।'

वीणा का यह भी कहना था कि 'इन पर मेरा कोई आरोप नहीं है। मैं अपनी त्रुटियों के कारण इनका घर छोड़कर आई थी, इन्हें यातना देना भी मेरा उद्देश्य नहीं था। इनके लिए इतने वर्षों में मैं सन्तान भी नहीं दे पाई जिसके लिए मेरे निजी कारण हैं।'

वीणा जिस तरह खुलकर बात कर रही थी, अगर वह मेरे साथ रहते हुए करती तो कभी इस तरह की ग्रन्थि उत्पन्न ही नहीं होती। वीणा कह रही थी 'इनकी जिन्दगी में दूसरी औरतें आईं या नहीं कह नहीं सकती। पर इनके साथ जो व्यवहार मैं करती रही वह सही नहीं था, उसकी वजह से अगर दूसरी औरतें इनके आसपास रही हों तो मैं इन्हें दोष नहीं दूंगी। मेरा आउटलुक इतना संकीर्ण भी नहीं है।'

मैं कुछ भी कह सकने में असमर्थ था। जज साहब भी समझा सकने या समझौता करवाने की स्थिति में दिखाई नहीं दे रहे थे। वीणा हर साधारण प्रश्न का स्पष्ट और दृढ़ उत्तर दे रही थी ताकि उन प्रश्नों की गुंजाइश न रहे। वह कह रही थी 'जज साहब, मैं इनसे क्षमा माँगती हूँ और निवेदन करती हूँ कि इन्हें तलाक दे दीजिए, इन्हें अपने जीवन को सफल बनाने का अवसर मिले यह मेरी मनोकामना है।'

मैं पूछता हूँ, 'जज साहब, इन्हें अवैध सम्बन्ध की आवश्यकता क्यों पड़ी, मैं उदार दिल आदमी हूँ, शायद कहीं सहमति का रास्ता मिल जाता।'

वह कहती है, 'नहीं, रास्ता होता तो मैं इन्हें छोड़ती ही क्यों ? अवैध या जैसा भी समझिए, सम्बन्ध मेरा निजी और अपना मामला है। इनके साथ विवाह से पूर्व मेरा सम्बन्ध था, वह भी सहज नहीं था, शादी करना विवशता थी, की, अब इनके साथ जरूरी नहीं समझा तो चली आई, हाँ...'

जज साहब बीच में टोकते हैं, 'जब आप इतनी समझदार हैं तो एक बार और इनके साथ रहकर क्यों नहीं देख लेतीं।'

मैं कहता हूँ, 'हाँ एक आध महीने साथ रहा जा सकता है !'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'नहीं, मैं अब इनके साथ नहीं रहूँगी। रहना होता तो सामान बाँधने से पहले मैं इस पर सोच रही थी ! हमारा रिश्ता बहुत पहले टूट गया था। मैं रोमांटिक नहीं हूँ। मेरे अपने विचार हैं, इस शादी को एक केजुअल अफेचर मानकर भूल जाऊँगी।'

जज साहब कहते हैं, 'आप दोनों कुछ देर अकेले चेम्बर में बात कीजिए, मैं कोर्ट में हूँ। आधे घण्टे तक आप एक बार गम्भीरता से सोच लीजिए। एक माह तक शादी को और आजमाने का सुझाव बुरा नहीं, सोच लीजिए।' वे उठकर चल दिए। मैं इस इन्तजार में चुप हूँ कि वीणा कुछ कहेगी। वह शून्य में या दीवार में नजर गड़ाए कुछ ढूँढ़ रही है। सिगरेट मैं जलाता हूँ। कुछ कश लेता हूँ और फिर कहता हूँ, 'सो दिस इज़ द एण्ड !'

वह कहती है, 'दिस इज़ द एण्ड।'

मैं कहता हूँ, 'और कुछ ?'

वह कहती है, 'कुछ और नहीं।'

मैं सिगरेट पीता हूँ, वह सहज बैठी है। मैं कहता हूँ, 'चलें, जज साहब का टाइम क्यों बर्बाद करें।'

'हाँ,' वह उठती है, हम दोनों बाहर आ जाते हैं। जज साहब के पास शायद शब्दों का अभाव हो गया है। वे हमें हाथ के इशारे से बैठने को कहते हैं। कोर्ट में काफी भीड़ है। उसका प्रेमी, एकमात्र प्रेमी भी उस भीड़ में है, मेरे मित्र और उनकी पत्नियाँ भी हैं। वे हम दोनों के पास आते हैं, बैठते हैं, बात करने की किसी की हिम्मत नहीं है। हमारे वकील भी आते हैं। वीणा अपने वकील से और मैं अपने वकील से बात करता हूँ। वीणा ने मुझे शादी पर जो अँगूठी दी थी, उसे मैं खोलकर वीणा को देता हूँ। वीणा चुपचाप मेरे चेहरे पर देखती है। अपने भीतर, बहुत भीतर खोई-सी वह अँगूठी ले लेती है। मेरी दी हुई अँगूठी उसके दाहिने हाथ की अनामिका में है। मेरी आशा के विपरीत वह, वह अँगूठी नहीं खोलती।

जज साहब वकीलों को बुलाते हैं, हम दोनों को बुलाते हैं, फिर कहते हैं, "चेम्बर में बात करें या यहीं !"

Funding by IKS-MoE

'मुझे तलाक चाहिए !' वीणा कहती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'हूँ' जज साहब नजरें ऊपर उठाते हैं और कहते हैं, "रीडर कृपया इन्हें अगले माह की 13 तारीख दे दीजिए !" वह दिन खत्म हो गया। अगली पेशी पर वीणा नहीं आई, उसका वकील आया था। दोनों पक्षों की व्यक्तिगत सहमति के लिए वीणा का आना जरूरी था, पेशी एक माह बाद फिर लगी। उस दिन सहमति से तलाक हो गया। खुली कोर्ट में दोनों पक्षों की इच्छा, समझाने और समझौते के उचित अवसर देने और अपने-अपने कोर्ट खर्च से प्रकरण का फैसला हो गया। मैं एक उन्मुक्त प्राणी, स्वच्छन्द पक्षी और एक बदली हुई जिन्दगी तथा मनःस्थिति लेकर बाहर आया। परन्तु दिल में कुछ बुरा भी लगा, क्या था वह, कह नहीं सकता। जिन्दगी को बदलने के लिए क्या यह आवश्यक था ? घर आकर दो बोतल बीयर पीकर, खाना खाकर सो गया। शाम छः बजे नींद खुली, उठकर लान में केन चेयर डलवाकर, बैठकर सिगरेट पर सिगरेट फूंकता रहा। अगस्त सन् 1966 की वह शाम खामोश थी, चुपचाप सर-सराती-सी, रेंगती-सी हवा पत्तों और वृक्षों को थिरकन दे रही थी, शायद वीणा भी यह थिरकन महसूस करती हो ? पर मैं एक बात जरूर महसूस करता था कि दो वर्ष बाद किस प्रकार नई जिन्दगी शुरू करूँगा। वर्तमान में चल रहे सभी सम्बन्ध विवाहित औरतों से थे। उनके पति दब्बू और जिन्दगी में उलझे हुए थे, उन्हें विवाह सम्बन्धों को जोड़ने, तोड़ने, सँभालने-सँवारने की आवश्यकता ही नहीं थी। जो चल रहा है, उसे चलते रहने देने की स्थायी इच्छा से वे बुझे हुए जिन्दगी की धधकती आग को राख के अंगारों में दबे रहने देना ही अच्छा मानते थे, या शायद उनकी कोई प्रतिक्रिया ही नहीं थी।

जब जिन्दगी बदलती नहीं है तो उसमें एक विशेष प्रकार का ठहराव आ जाता है, बदलने की इच्छा मर जाती है। पर बदलने की इच्छा सबमें होती ही होगी। वीणा अतीत थी, वह अब लुप्त हो गई है। उसकी उपस्थिति में मैं स्वतंत्र महसूस नहीं कर सकता था, अपने सम्बन्धों को इस घर में आगे नहीं बढ़ा सकता था। अब, फिलहाल आज मुझे किसी रिश्ते, किसी मित्र की आवश्यकता है जिसे मैं अपने राज़ बता सकूँ, यह कह सकूँ कि वीणा चरित्रहीन नहीं थी, वह एक बोल्ड औरत थी,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परिस्थिति से समझौता न करना चाहते हुए भी अटल थी। स्वयं अपना आधार थी। मेरी आँखें शायद नम हो गई हैं। नहीं, मैं द्रवित हूँ।

वीणा के जाने के बाद घर का भीतरी भाग खाली-सा लगता था। सर्वप्रथम मैंने सारे घर को नये सिरे से अरेंज किया। डबलबैंड पर नई चादर बिछवाई, दिशा बदलवाई। कमरे की टेबल, अलमारी, कार्पेट सब नये तरीकों से लगवाए। इसी प्रकार ड्राइंगरूम व डायनिंग रूम भी बदल दिया। वीणा को अच्छे लगने वाले टी-पाट, डिनरसेट पैक कर दिए, दूसरा सामान निकाल लिया। काफी की जगह चाय ने ली। तले हुए ब्रेकफास्ट के साथ अधिकतर अंडों को छोड़कर सब सामान बाजार का बना होता था या टोस्ट आमलेट में बदल दिया। तली पकौड़ी या बड़े या मालपुए, आलू वोण्डे सब गायब हो गए। दूध की जगह बाजार का बना दही, पनीर आने लगा। ताजे दूध का स्थान 'मिल्कमेड' के डिब्बों ने ले लिया। भोजन में डिशिज की संख्या कम हो गई। सर्वेंट के पास अधिक खाली समय हो गया।

बगीचे में केकटसों की ऊबड़-खाबड़ खेती काट डाली। राकरी तोड़ दी गई। गुलाब के अनेक पौधे बाजार से आ गए। लान में दूब का रख-रखाव खराब था, उसे ठीक किया। चारों तरफ सफाई अभियान चल पड़ा। वीणा को जो भी अच्छा लगता था, उसे घर से बाहर फेंका। पर जो घर के भीतर था और जिसे मैं फेंक नहीं सका, वह था वीणा का भूत, उसका साया।

वीणा इसी शहर में है। इस शहर का नाम दिल्ली है। घटनास्थल है मेरा ग्रेटर कैलाश का घर। अस्सी बाई साठ फीट के प्लाट पर बना यह छोटा-सा घर। टी० वी० ड्राइंग रूम से निकल बैडरूम में आ गया। पर जिसे मैं हर कमरे में मौजूद पा रहा था, वह था वीणा का साया मुझे हमेशा घूरता हुआ, हमेशा मेरा पीछा करता हुआ। उस साए के चेहरे पर मुस्कान नहीं थी, जीवन्तता नहीं थी···गति भी सिर्फ मेरी गति के कारण थी। खाने के टेबल पर उस खाली कुर्सी को किसी भी कोने में रखता, वह मुझे घूरती थी।

Funding by IKS-MoE

मेरी प्रेमिकाएँ अब भी उतनी ही थीं, वे आती थीं, एक नया सम्बन्ध

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भी बना डाला, परन्तु उनके मेरे घर से जाते ही फिर वही खालीपन, फिर वीयर, ह्विस्की का दौर, फिर औरत, फिर खालीपन, फिर वीणा। पत्थर की मूर्ति वीणा—हल्के रंग की साड़ियों में लिपटी, गम्भीर, मद्धम गति की एक औरत।

कई बार सोचा उसे फोन करूँ। दूसरी औरतें जब मेरे साथ होतीं तो उनकी जगह मुझे वीणा दीखती। वे मेरे साथ सोतीं, उनकी जगह वीणा की शक्ल देखता। रोमांस में उलझता, तो फिर गम्भीरता आ जाती।

प्रेमिकाएँ पूछतीं, 'दूसरी शादी कब करोगे ?'

'दूसरी शादी नहीं करूँगा।'

'क्यों नहीं करोगे ?'

'तुम्हारे प्यार के लिए।'

'वह तो फिर भी रहेगा। पर शादी कर लो तो हमें दिन की रोशनी में तुम्हारे घर आने में शर्म नहीं आएगी।'

'प्यार करने में शर्म, क्यों, यह शर्म क्या है ?'

'लोगों की नजरें हमें घूरती हैं !'

'मुझे भी घूरती हैं।'

'फिर नया सिलसिला शुरू कर दो !'

'उससे क्या होगा ? तुम तो नहीं बदलोगी। तुम मुझसे क्यों शादी नहीं करतीं ?'

'मेरे बच्चों को कौन पालेगा ?'

'बच्चों को साथ रख लेंगे।' मैं अगम्भीर हूँ।

'मेरे मियाँ का क्या होगा ?'

'पर तुम तो मुझे प्यार करती हो, वह तो तुम्हारा पति है—तुम मेरी खातिर उसे धोखा दे रही हो !'

'यह गलत है। वह हमारा परिवार चलाता है, उसका काम हमें सुख-सुविधा देना है। तुम्हें मैं प्यार अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए करती हूँ। तुम्हारे प्रति कोई प्रतिबद्धता नहीं है, कमिटमैंट नहीं है, सिर्फ एक अफेयर है।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'वह तो है ही पर मुझे···'

'आपको ? आपको जो चाहिए वह हमेशा मिलेगा आपको, हमेशा। वीणा थी तो भी मैं आपको चाहती थी, आपके पास आती थी, अब भी आऊँगी। एक्स्ट्रा सैक्स जरूरी है इसीलिए आती हूँ।'

'तुम जैसा समझो !' मैं सिगरेट पीता हूँ, वह ड्रैसअप करके चल देती है।

दूसरी औरत : दूसरा दिन। वही सिलसिला, वही किस्से, वही उलझनें। 'तुम्हारे ओठों पर मेरी लिपस्टिक लग गई है, आओ, साफ कर दूं !'

'अब वीणा तो है नहीं जो देख लेगी।'

'और लगा दूं' वह कहती है।

'तुम्हारी मर्जी है' मैं कहता हूँ।

'अरे मेरी हरी बिन्दी तुम्हारी भौंहों पर चिपक गई है।'

'इसे भी लगा रहने दो।'

'वीणा होती तो बड़ा मजा आता !'

'हाँ शायद, शायद हाँ।'

'घर में कुछ खाने को है ?'

'कह नहीं सकता।'

'चलो देखते हैं !'

'घण्टी लगाओ, नौकर आ जाएगा।'

'हम चलेंगे !' वह किचन में मेरे साथ जाती है। भजिए तलने का सामान जुटाती है। गर्म-गर्म भजिए हम बनाते-बनाते ही खाते हैं। मुझे लगता है यह औरत एक अच्छी पत्नी है—इसे कहूँ साथ रहने को ? वह चाय का पानी उबालती है। उसके हर अन्दाज से ऐसा लगता है कि वह वर्षों से यहीं रही है, इसी घर में। हम चाय पीते हैं।

वह कहती है, 'वीणा होती तो क्या कहती ?'

'कुछ नहीं कहती, उसे किचन में जाना पसन्द नहीं है !'

'दूसरी जगह वह कैसे करेगी !'

'वह जाने।'

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'तुम उसे कभी याद भी करते हो !'

'नहीं करता !' मैं दृढ़ता से कहता हूँ। यह कहते हुए भी मैं महसूस करता हूँ कि वीणा सामने खड़ी है। सब सुन रही है। फिर मुझे इस औरत की जगह वीणा दिखाई देती है, सब-कुछ सब काम यन्त्रवत् करते हुए।

एक और प्रेमिका है। डायवोर्स के बाद का पाँचवाँ दिन…नहीं पाँचवीं रात है। इस प्रेमिका का काम समाज-सेवा है। दिनभर घूमती है। बच्चे हैं, दो लड़के, दोनों दून स्कूल देहरादून में पढ़ते हैं। पति दौरे पर अधिक रहते हैं। यह प्रेमिका बड़ी गम्भीर और कम बोलने वाली है। सिर्फ अपनी समाज-सेवा की बात करती है। इश्क-मुहब्बत जिन्दगी की अनिवार्यता के कारण करती है। कभी टाइम फिक्स किए बिना नहीं आती। अपने घर में प्रेमी को नहीं बुलाती। नाम है…पुष्पा अग्रवाल। रूप है, रंग कुछ श्यामल है। मेकअप अच्छा करती है। फिगर अच्छी है। नोन वेजिटेरियन खाना खाने का शौक है, घर में बना नहीं सकती। सास-ससुर साथ रहते हैं, इसी कारण।

पुष्पा आई है। कहती है 'पहले डिनर की व्यवस्था करो। चाँदनी चौक के पास सैंट्रल लाइब्रेरी के सामने तली हुई मछली और सींख-कबाब अच्छे मिलते हैं।' नौकर को वहाँ जाने का आदेश भी देती है और पैसे भी। आते ही कहती है, 'मैं पाँच दिन से तुम्हें मुबारक देने के लिए तड़प रही थी—अच्छा हुआ उस सड़मुंही से छुटकारा हुआ। मुझे वह औरत अच्छी नहीं लगती थी।'

'क्यों गाली देती हो यार। रिश्ता खत्म हुआ, भूल जाओ !'

'अब तुम्हारे यहाँ आने का मजा रहेगा। मेरा तो टाइम नहीं निकलता। दिन भर समाज-सेवा, रातें खाली। कब तक सहूँ। क्यों सहूँ। बच्चे हैं, पति है, घर है, पर फिर भी मैं एकाकी हूँ।'

'हाँ एकाकीपन भीतर तक छूता है।'

'तुम अपनी ह्विस्की शुरू करो, तब तक मैं एक सिगरेट पीती हूँ।' वह अपना पर्स खोलती है। न० 555 का सिगरेट निकालकर पीती है। कहती है, 'डनहिल नहीं मिलता। कहीं से दो-चार पैकेट मारो न !'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'किसी को पूछूँगा।'

बैडरूम में आते ही वह असामान्य हो जाती है। विदेशी भाषा के समस्त 'फोर-लैटर वर्ड्स' बोलती है। निर्वस्त्र हो जाती है। 'नौकर को आने में दो घण्टे लगेंगे।' मैं कहता हूं।

'नहीं, मैंने उसे स्कूटर से आने को कहा है, एक घण्टे में आ जाएगा, काफी टाइम है।' वह पलंग पर बैठकर पूरी सिगरेट पी लेती है। पुष्पा में दानवी हविश है। वह भूखी है। जो भटका प्यार पाने को तड़पती है। कहती है—'कभी-कभी तो अकेले होने से मन की तड़प इतनी बढ़ जाती है कि आधी रात उठकर बाथरूम में घुसकर टब में लोट जाती हूँ...।' मैं ह्विस्की और औरत में से औरत को ज्यादा पसन्द करता हूँ। पुष्पा को शराब की खुशबू अच्छी लगती है। एक पैग पीकर उसे उस खुशबू में वहकने देता हूँ। 'जानते हो मैं क्या सोचती हूँ तुम्हारे बारे में ?'

'क्या ?'

'कि तुम भी क्या हस्ती हो। इतनी बड़ी फर्म के एम० जी० और इतना खाली वक्त—तुम क्लब नहीं जाते। पिक्चर नहीं देखते। खाने-पीने का तुम्हें शौक नहीं। क्या वजह है—तुम जीने के लिए अपना समय अकेलेपन में क्यों गुजारना चाहते हो !'

'पुष्पा, असलियत यह है कि मैं हास्टलों में, होटलों में और विदेशों में रहकर पढ़ा, बड़ा हुआ। वहाँ एक आध गेम खेलता था, अन्य चीजों में रुचि नहीं थी। पढ़ना जरूरी था। जब अपने घर से विदेश गया था तो उमर छोटी थी, पढ़ाई के बोझ में दब गया। ग्लासगो विश्वविद्यालय में यू० के० में पाँच वर्ष पढ़ा, दो वर्ष यू० एस० ए० में कोलिन युनि-वर्सिटी में रहा। सात वर्ष में किसी औरत का साहचर्य नहीं किया !'

'अब तो तुम औरतों से अलग नहीं रहते। अब क्यों नहीं खुली जिन्दगी जीते। ऐश करो। मैं तो ऐश करती हूँ। बच्चे नहीं होते तो शायद पति को छोड़ तुम्हारे जैसे किसी प्रेमी के पास रहती। दुनिया की आलोचना सुनने में भी आनन्द आता है। फिर तुम्हारे जैसे आदमी को छोड़ किसी और की हो जाती।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'तुम अब भी तो वही हो।'

'देखो, तुम्हें अपने बारे में मुगालता है। मैं अभी वह नहीं हूँ जो हो सकती थी। मस्ती करो यार।'

'मैं आज थका हुआ हूँ···' तभी नौकर आ गया है, वह कबाब और मछली गर्म-गर्म लाया है परन्तु मेरे खाने योग्य गर्म न होने से पुन: गर्म करने का आदेश दे दिया है। पुष्पा कहती है, 'चार पराँठे बना लाओ··· कुछ प्याज, टमाटर, नींबू लाओ। मैं सलाद लाती हूँ।'

'बीबीजी मछली वाले से सलाद लाया हूँ—बस अभी दस मिनट में खाना लगाता हूँ। दही भी है, क्या लगाऊँ ?'

'मछली के साथ दही नहीं खाते हैं।' पुष्पा कहती है। खाना खाते हुए आज तीन महीने बाद लगा कि मेरी जिन्दगी में इतना अकेलापन नहीं है। मिसेज अग्रवाल एक रोचक और स्नेही औरत हैं।

खाने के बाद हम लान में आ गए हैं। अँधेरे में लान में बैठकर मैं पुष्पा के ओठ चूम लेता हूँ। उसके भरे हुए शरीर के स्पर्श में एक ढाढ़स-सा मिलता है। आश्रय-सा प्राप्त होता है। हम एक-दूसरे का हाथ थामे काफी देर बैठे रहे। पुष्पा उठकर भीतर जाती है। मैं उस अँधेरे कोने में बैठा, भूत-भविष्यत् और वर्तमान की बात सोचता हूँ। थोड़ी देर में वह आती है और कहती है, "मैंने सासू को फोन कर दिया है कि नाइट शो की पिक्चर देखकर एक बजे लौटूँगी। सासू कह रही थी अग्रवाल साहब का मद्रास से फोन आया है, वे ठीक-ठाक पहुँच गए हैं। मद्रास से बीस किलोमीटर दूर 'फिशरमैन कोव' होटल में ठहरे हैं। वहीं अन्य लोग भी ठहरे हैं···अन्य लोग यानी व्यापारी·· सो आज एक बजे तक मैं पिक्चर तुम्हारे घर में देखूंगी···चलो भीतर चलें।'

'पुष्पा, तुम कुछ पहले ब्ल्यू फिल्म दिखाने की बात कर रही थीं।'

'शौक है, कल प्रोजैक्टर और फिल्में ले आऊँगी, यहीं देखेंगे। मजा आएगा।'

'उन्हीं के घर में देखने में क्या हर्ज है ?'

'हर्ज है, तभी तो यहाँ ला रही हूँ। हर्ज यह है कि वे साहब कन्फर्म्ड बेचुलर हैं, दो मर्द मुझे एक साथ बर्दाश्त नहीं होते।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'तो उधर भी चल रहा है ?'

'यह मैंने कब कहा ? सुनो, तुम मेरे साथ ब्ल्यू फिल्म बनवाना चाहोगे।'

'क्या ?' मैं अवाक्-सा उसे देखते हुए कहता हूँ।

'ठीक कह रही हूँ। जिन्दगी का मजा आ जाए। मेरी तो अपनी एक फिल्म है !'

'कहां है ?'

'मेरे घर में, बहुत पहले की है, मेरे अग्रवाल साहब को शौक था, उन्हीं के साथ है। कल लाऊँगी !'

'यू आर ए डेम्ड बिच !'

'यह भी सही।'

आज मुझे वस्तुतः घर खाली नहीं लगा। पुष्पा के कारण, उसकी जिन्दादिली के कारण, उसके कदमों की आवाज के कारण एक टूटी खामोशी अब मुझे काट नहीं रही है। पुष्पा बाथरूम में नहाने घुस गई। नौकर चला गया है। वह बाथरूम से सीधे बिस्तर में आ गई है। स्त्री का सद्यःस्नाता रूप कमनीय है, प्रथम स्पर्श का हल्का ठण्डक देता हुआ शरीर धीरे-धीरे खून की गर्मी से एक योग्य आनन्द देता है।

रात एक बजे वह अपनी कार से अकेली चली जाती है। रात के सन्नाटे में उसे किसी चीज का डर नहीं है। समाज-सेवी व्यक्ति कितने निर्भीक होते हैं। पुष्पा के जाने के बाद मैं गहरी नींद में सो गया हूँ। सपने में मुझे एक हवाई जहाज दिखा जिस पर तिरंगा झण्डा लहरा रहा था, वह जहाज एक जंगल के बीचोंबीच रेत में एक सूखी नदी के तट पर सहज ही उतर गया। उस जहाज पर भारत का राष्ट्रीय चिह्न मुद्रित या शायद चित्रित था। शायद यह भारतीय वायुसेना का जहाज था।

सुबह नींद खुली तो सूरज को बढ़कर बिस्तर तक खिड़की के रास्ते प्रवेश करते हुए देखा, यानी नौ बज गए थे।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'मीलों की खामोशी, वर्षों की तनहाई से मैं लड़ती रही हूँ। तुम उस तनहाई में खामोशी तोड़ने क्यों आए ?' शोभा ने कहा था।

'यह तुम बार-बार कह चुकी हो, हमेशा तनहाई की बात करती हो। तुम्हें जिस कारण से आज तक विवाहित जीवन में असन्तोष मिला, उसके लिए कुछ सीमा तक तुम भी जिम्मेदार हो। विवाह एक दुर्गम क्रीड़ा है, इसमें न कोई जीतता है, न हारता है, और कोई बराबर भी नहीं रहता।'

शोभा मेरे साथ मसूरी के सेवाय होटल में एक रात के लिए ठहरी है। मैं अब्बू को स्कूल छोड़ने आया था अक्तूबर ब्रेक के बाद। शोभा अलग से मसूरी आई थी, मैं प्राय: अपने कार्यक्रम इसी तरह आयोजित करता हूँ। सेवाय में बाररूम और डिनर हाल इकट्ठा है। अक्तूबर की सर्दी के कारण मुझे सर्दी लग रही है। हम दोनों सैंडी हालैण्ड का कैबरे देख रहे हैं, शोभा शेरी पी रही है, मैं स्कॉच। सैंडी अधेड़ आयु की लग रही है। शोभा कहती है, 'ये भौंडे नृत्य क्या वास्तविक मनोरंजन करते हैं ? कितनी भद्दी लग रही है। मुर्द सिंगी से जैसे सारा चेहरा पेंट कर लिया हो।' वह सचमुच भोंडी लग रही है, पर नृत्य देखने वाले दर्शक भी भौंडे हैं, बेतरतीब हैं, वृद्धप्राय या अधेड़ भी हैं। एक टेबल पर एक युवक दम्पत्ति है। नृत्य के साथ अंग्रेजी गीत भी है। नर्त्तकी चमकदार कपड़े पहने है, हर नृत्य के बाद वह तीव्रता से कपड़े बदलती है। पाश्चात्य वेशभूषा में नृत्य देखने का हम भारतीयों को आनन्द आता है। पर-स्त्री, पर-संस्कृति दोनों आनन्द देती हैं।

डिनर में मुझे याद नहीं हमने क्या खाया। शोभा लगातार बातें करती जा रही है। बे-सिर पैर की। कहती है, 'यहाँ कोई छोटा-सा हट खरीदा जाए, अच्छा रहेगा।'

'खरीद लो, तुम्हारे पति को जरूरत होगी। मैं तो अपनी जिन्दगी दिल्ली में जीना पसन्द करता हूँ।'

कमरे में पहुँचकर शोभा बिस्तर में आते ही सक्रिय हो गई। मैं भी पर-स्त्री का आनन्द भोग रहा हूँ। आनन्द भोग, क्या यह आनन्द भोग ही है या कुछ और ? क्या यह अपराध नहीं है ? यह एडल्ट्री नहीं है ?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। फिर चन्द्र यार, मैं अपने से कहता हूँ, यार क्यों ये सब झंझट पालते हो, तुम्हारे बीवी-बच्चे हैं, घर है, जाओ, लौट जाओ। एक शरीफ आदमी की जिन्दगी बसर करो। तुम शरीर से चुक जाओगे तो फिर यही शोभा तुम्हारी तरफ देखेगी भी नहीं। मैं शरीर से क्यों चुक जाऊँगा ? पुरुष कभी बूढ़ा नहीं होता। न होता, तो न सही पर क्या जो यह सब तुम किए जाते हो सही है ? मैं नहीं जानता। जानो कोशिश करके जानो। अब बताओ जो तुमने शोभा के साथ रिश्ता रखा उसके बाद क्या हुआ ? कुछ नहीं, मैं सो गया। अगर स्निग्धा यहाँ होती तो क्या यही नहीं होता ? होता। उसके बाद क्या तुम जागते रहते ? नहीं, सो जाता। फिर क्या फर्क है दोनों में ? फर्क है भी, नहीं भी। तो तुम क्या सोचते हो। अभी सोचा कहाँ ? जूठी पत्तल चाटते तुम्हें बुरा नहीं लगता ? जूठी कहाँ है ? गंगा का जल कभी जूठा होता है ? किसी भी नदी का जल जूठा होता है ? नहीं ! तब किसी भी और की जूठी पत्तल होना क्यों कहा ? कहा, मुझे लगा कहना चाहिए, कह दिया। यह बताओ तुम इस प्रकार अपने को दूषित क्यों कर रहे हो ? मैं कहाँ दूषित कर रहा हूँ ? मैं तो वही हूँ। दूषित तुम्हारे विचार हैं। मेरे विचार ? मेरे विचार क्यों दूषित होने लगे ? तुम नहीं समझोगे ! मैं समझना भी नहीं चाहता। सुनो तुम अब बदल जाओ ? नहीं बदला तो तुम मेरा क्या करोगे ? मैं कुछ भी नहीं करूँगा। फिर धमकी क्यों देते हो ? धमकी भी नहीं देता, पर यह सुन लो अगर मैं कुछ भी नहीं करूँगा तो तुम्हारा नुकसान होगा ! कैसे ? कह दूं ? हाँ, कह दो। तुम आधे रह जाओगे, वही रहोगे जो तुम्हें ये शोभाएँ बना रही हैं, जो तुम्हें मैं बना चुका हूँ, तुम्हारा वह रूप लुप्त हो जाएगा ! क्या बकते हो ? ठीक कह रहा हूँ। फिर भी अकारण क्यों बोल रहे हो ? अकारण तो नहीं बोल रहा हूँ पर तुम्हें कारण बता दूं, यह जरूरी नहीं। फिर भी ? तुमने वीणा को छोड़ा, ठीक ? ठीक। तुम नन्दिता शोभा, निर्मल, शामा सबके साथ लीलाएं रचाते रहे ? ठीक। तुम स्निग्धा से भी शादी के बाद वीणा जैसा व्यवहार कर रहे हो ? यह गलत है ! चलो, छोड़ो, यह बताओ तुम स्निग्धा को धोखा दे रहे हो यह ठीक है ? ठीक है भी,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं भी है। तुम अपने बच्चे को स्कूल छोड़ने आए थे और अब यहाँ इश्क फरमा रहे हो, यह सही है ? है। तुम्हारा पिछला बीस-बाईस साल का पूरा समय इसी तरह बीता है ? नहीं ! नहीं कहकर तुम अपने को धोखा दे रहे हो ? तुम्हें क्या ? मुझे सबसे सरोकार है, मैं तुम्हारी प्रत्येक स्थिति से जुड़ा हूँ। झूठ है यह ? तुम शोभा से पूछो, इस समय उसके साथ मैं सो रहा हूँ, तू नहीं। बकवास बन्द करो। बकवास नहीं यह हकीकत की हकीकत है, तुम रैस्तोरां में शोभा के साथ थे, छिपकर, मैं सामने बैठा था। मतलब ? तू कुछ देर पहले शोभा के साथ सोया था, तू अश्लील नंगा, और अनैतिक था, मैं अब सोया हूँ, सवस्त्र। फिर मैं कौन हूँ ? तू कोई है जरूर अन्यथा मैं यह सब नहीं कहता। तू और कुछ कहना चाहता है ? सब कहना चाहता हूँ, जैसे तुम ताजमहल होटल में निर्मल के साथ थे ? उस समय तुम कहाँ थे ? मैं वहीं था, तुम्हारा मन बनकर वहाँ भटकता रहा था। तुमने सब सुना होगा ? हाँ, पर तुम्हारे प्रति मेरा कोई आदर नहीं है ? क्यों नहीं ? तुम निर्मल से शादी करने की बात कर रहे थे ? हाँ। पर जब तुम्हें अपने मित्र सी० एन० सिंह की कहानी याद आई तो उसके बाद तुमने इरादा बदल लिया ? मैं और क्या करता ? तुम बुजदिल हो, तुम्हें कुछ करना था। मेरी जगह तुम होते तो तुम क्या करते ? मैं स्निग्धा से चर्चा करता, उसे स्थिति समझने का मौका देता। फिर ? फिर देखा जाता, हालात या परिस्थिति पर सब छोड़ देता ! यह कायरता होती, पलायन होता ! तुम जिस चीज को गहराई से जानना नहीं चाहते उसमें ऊपरी अनुरक्ति क्यों ? मुझे निर्मल की चिन्ता है ! क्यों है ? वह मेरे अतीत से जुड़ी है। सरासर झूठ, तू जुड़ा है, जुड़ने का अभिनय कर रहा है। नहीं मेरे दोस्त की वह मंगेतर थी। फिर शोभा—शोभा भी तेरे किसी दोस्त की मंगेतर है ? नहीं है। तू इसे प्यार करता है ? नहीं। तू उसे दोस्त मानता है ? कुछ हद तक। किस हद तक ? कह नहीं सकता। सोच लो। सोचूंगा, पर तुम मुझे ऐसा करने के लिए विवश क्यों कर रहे हो ? विवश तू मुझे कर रहा है, मैं कहता हूँ अगर स्निग्धा तुम्हें छोड़कर वास्तव में चली जाए, फिर लौटकर न आने को चली जाए, तब तुम क्या करोगे ?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तब सोचूंगा। अब क्यों नहीं ? अब वह स्थिति नहीं है। अगर शोभा अपने पति को छोड़कर तुम्हारे साथ रहना चाहे तो तुम क्या स्निग्धा को घर से निकाल दोगे ? नहीं ! क्यों नहीं ? क्योंकि शोभा ऐसा करेगी नहीं। अगर वह ऐसा करे तब ? तब भी स्निग्धा को नहीं छोड़ूंगा ! यह मोहमाया है या कुछ और ? कुछ और भी, मोहमाया भी। शोभा, अगर तुम्हें तीसरा पति बनाने की सोचे तब ? चुप रहो। ठीक है, मैं चुप हो रहा हूँ पर एक बात पूछूंगा ! पूछो। अगर तुम दोनों की मैं हत्या कर दूं तो ? तुम एक चींटी भी नहीं मार सकते, मैं तुम्हें वर्षों से जानता हूँ। मेरे अन्दर, मेरे मन में रहकर तू मुझे धमकाता है। फिर भी एक क्षण सोचो ! शट अॅप।

मैं उठकर बैठ जाता हूँ, टेबल लैम्प जलाकर एक मेग्जीन उठाता हूँ। 'फार मैन आनली', पन्ने उलटना चाहता हूँ। शोभा कहती है—बत्ती बुझा दो, मुझे नींद नहीं आ रही। चलो बिस्तर में आओ नहीं तो निमोनियाँ हो जाएगा। मैं उठकर लाइट बन्द कर देता हूँ। बिस्तर में आ जाता हूँ। शोभा मेरी तरह मुँह करके लेट गई है। मुझे नींद नहीं आ रही है। शोभा के हल्के खुर्राटे सुनाई दे रहे हैं। मैं सोचता हूँ मेरी पूरी जिन्दगी एक कहानी बनती जा रही है।

फिर वही ख्यालात। तुम अपने अतीत को छिपाने के लिए वर्त्तमान का फरेब-जाल बिछा रहे हो। यह झूठ है। झूठ होता तो मैं ऐसा नहीं कहता ! फिर तुम इसे कहाँ तक सच मानते हो ? ओह, वह हँसता है, कहता है—कहाँ तक···इसके सम्पूर्ण में। आज तक तुमने अपना सब कुछ दूसरों से छिपाया है। पर दूसरों को सब सुना देना, उजागर कर देना भी उचित नहीं। इसलिए कि लोग हँसेंगे ? नहीं, इसलिए कि वह सब संगत नहीं है, दूसरों से उसका कोई ताल्लुक नहीं है। तुम पैदा हुए थे ? हाँ। तुम माँ-बाप के घर बड़े बढ़े थे ? हाँ ! तुम्हारे माँ-बाप भी संगत नहीं ? आज तो नहीं, मेरी जी जाती हुई जिन्दगी में तो नहीं। तुम उन्हें नकारते हो ? मैंने तो नहीं कहा, नकारने का क्या मायने ? मायने ये कि तुम अपना अतीत अपने आज के अस्तित्व के साथ क्यों नहीं देखते ? यह बेकार बात है। तुम अपने संस्कार भी बनाए नहीं रख सके। यह दकिया-

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नूसी बात है, संस्कार जन्मजात हैं, वे बनते-बिगड़ते नहीं। लोग तो ऐसा कहते हैं ? कहते होंगे, मेरे संस्कारों का उनसे क्या वास्ता। यह रात ठण्डी है, तुम्हारे साथ जवान औरत सो रही है, तुम दोनों नशे में हो। हो सकता है तुम सही हो—पर नशे और औरत में क्या ताल्लुक ? तुम्हारे चालचलन से ताल्लुक है। मेरे ही क्यों, औरों के चालचलन में क्यों नहीं ? इसलिए कि मैं तुम्हारे भीतर हूँ, तुम्हारा तुम हूँ, तुम्हारा भला चाहता हूँ ! तुम तो आखरी बात कट कर जाना चाहते थे। वह तो यूं ही कह दिया था ! तुम फ्राड मानते हो ? क्यों नहीं—तुम अगर मेरा तुम हो तो तुम फ्राड हो। सोच लो, मैं तुम्हारी वास्तविकता हूँ, तुम्हारा जेन्यु-अन रूप हूँ। हो ही नहीं सकता। जब मैं स्वयं अपने लिए जिम्मेदार हूँ—जो भी हूं खुद हूँ, तुम मुझ पर लद रहे हो, बोझ बन रहे हो। मैं तुम्हारे साथ पला, बढ़ा, जीआ हूँ, तुम्हारा साया हूँ, तुम्हारी साँस हूँ, गति हूँ, गीत हूँ, छन्द हूँ। बुझारतें न बुझाओ, तुम जो भी हो मेरे रूप में दूसरों को छल रहे हो। ऐसा मैं पहली बार सुन रहा हूँ। पहले तुम मुझसे घब-राते थे। असत्य! नहीं तुम विचलित हो रहे हो—जरूर घबराते थे, जो भी मैं करता था उसे तुम रोकना नहीं चाहते थे। कुछ हद तक हो सकता है, मैं तुम्हें स्वतंत्रता देना चाहता था। क्यों ? तुम्हारा विकास हो सके इसलिए। विकास हुआ ? यही मैं भी देखने का उत्सुक हूँ। तो मुझसे सुनना चाहते हो ? नहीं, स्वयं खोज लूंगा। मैं तुम्हें अपने से अलग फेंकूंगा, तुम मुझे जो नैतिकता का पाठ पढ़ा रहे हो, वह लबादा कागजी है। होगा, तुम्हारे लिए, मैं नैतिकता का पक्षपाती हूँ। हुँ, मेरे साथ हमेशा रहकर, मेरे भीतर रहकर तुम अनैतिक नहीं हो गए हो क्या ? नहीं हो पाया, हो भी नहीं पाऊँगा, मेरे सामने उद्देश्य है ! क्या उद्देश्य है ? तुम्हें बदलना, तुम्हारे रास्ते बदल देना, तुम्हें अपना रूप देना ! जो तुम अपना आकार देकर नहीं कर सके वह रूप देकर कर लोगे ? सम्भव तो है ! सम्भव तो यह भी है कि तुम मेरी तरह हो जाओ, अनाम न रहो, भले ही दुर्नाम हो जाओ ! यह तुम्हारा थोथा अहं है। अहं थोथा नहीं होता ! और अहं का अर्थ ही क्या है, उसकी सच्चाई क्या है ? अहं तो जीवन-दर्शन है, वह अपने में सब समेट लेता है। तुम स्वकेन्द्रित हो। क्या फरक

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पड़ता है। तुम दम्भी हो। इससे भी क्या होगा, मैं जो भी हूँ तुम्हें वही बना दूँगा। मैं भी यही सोचता हूँ। ट्राई क्यों नहीं करते ? कहीं से शुरुआत करने की आवश्यकता है। आओ शोभा से शुरू करो, यह जान ही नहीं पाएगी कि तुम मुझसे पृथक् हो ! तुम नासमझ हो। नहीं, मैं तुम्हें अपनी तरह सुधारने की कोशिश करूँगा। मान लो मैं तुम्हारी बात मानकर शोभा के साथ कुकर्म कर लूँ तो तुम्हें ग्लानि नहीं होगी ? यही तो फर्क है मुझमें और तुममें—काहे की भेद-भावना, ग्लानि, पीड़ा, जब यह सुख पाओगे न एक बार तो जीवन भर इसकी तलाश में भटकोगे। ठीक है, मैं भटकना पसन्द करूँगा। तुम बदकिस्मत हो। मुझे पढ़ाने की कोशिश मत करो ! सुबह उठोगे न तो सच्चाई जान जाओगे। वर्षों से सच्चाई जानता हूँ। यह एक चस्का है, नशा है। तुम मोरारजी देसाई की तरह स्वमूत्र चिकित्सा जैसे सिद्धान्तों पर चलो। सत्यवादी बनो। अपने गिरेबाँ में झांककर देखो, सीवन और पाबन्दों को पहचानो। तुम मुझे शोभा के साथ सोते देखकर खुश हो जाओगे ? अब कह नहीं सकता ? क्यों नहीं ? क्योंकि तुम एक जिद्दी और निहायत उखड़े हुए इन्सान हो। मैं तुम्हें वर्षों से बर्दाश्त करता आ रहा हूँ, तुम मुझसे अलग क्यों नहीं हो जाते ? यही कर पाता तो तुम्हारा यहाँ तक पीछा क्यों करता ? अब आगे क्या करोगे ? तुम्हारे साथ रहूँगा, तुम्हारी हरकतें देखूंगा। फिर ? फिर स्निग्धा को बताऊँगा ? फिर ? वह तुम्हें समझकर चली जाएगी ? फिर ? तुम अकेले दुःखी रहोगे ? बच्चे मेरे पास रहेंगे। दुःखी और अकेले दुःखी होने का क्या अर्थ बच्चे तुम्हें नहीं मिलेंगे ? बकवास बन्द करो !

रात की गहराई में मैं कहीं खो गया हूँ। कोई सपना है या ख्याल है, क्या है, कह नहीं सकता। कमरे का दरवाजा बन्द है, पर मेरा वह मेरे साथ है, एक लम्बे साए की तरह—चुप···सोचता हुआ !

शोभा एक आदर्श बेवफा औरत है। सुबह चाय पर वह चुपचाप नाइटी पहने बेशर्मी में बैठी हुई है, मैं कहता हूँ 'बैरा के चाय लाने से पहले ढंग का कपड़ा तो शरीर पर होना चाहिए।' वह मेरे दकियानूसी होने की दुहाई देती है। ट्यूब रोजिज का भारी गुलदस्ता लिए रूम बैरा आता है, उसके पीछे-पीछे गुलाब का गुलदस्ता है दूसरे आदमी के हाथ में।

Funding by IKS-MoE

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दूसरे हाथ में वह बाल्टी में अनेक गुलदस्ते रखे है। बैरा पूछता है, 'साहब, ट्यूबरोज पसन्द करेंगे या गुलाब या कोई अन्य गुलदस्ता ?'

'इस कमरे के लिए तुम्हारे होटल का निर्धारित दस्तूर क्या है ?'

'अकेला आदमी ठहरा हो तो गुलाब, कप्पल हो तो ट्यूबरोजिज, अकेली औरत हो तो गुलदौदी।' बैरा कहता है।

'आदमी और कप्पल के लिए खुशबूदार फूल और अकेली औरत के लिए गुलदौदी, क्यों ?'

बैरा हँसते हुए अदब से कहता है, 'अकेली औरत के लिए कोई न कोई आदमी फूल लेकर आएगा ही…'

'ठीक है' शोभा कहती है, 'ठीक है, तुम ट्यूबरोज रख दो।'

बैरा फूल गुलदस्ते में लगा देता है, मैं पहले देख ही नहीं पाया था कि पिछले दिन उस कमरे के गुलदस्ते में गुलदौदी लगी थी। मैं बैरा के फूल लगाते हुए पुराने फूलों को देखता हूँ। गुलदौदी अकेली औरतों का फूल है ! शायद ठीक है, अंग्रेजी में इसे क्रापसैंथमम कहते हैं, सफेद रंग का यह फूल निर्गन्ध है। औरत निर्गन्ध होती है। उसे खुशबू या दुर्गन्ध पुरुष देता है। नहीं, पुरुष गुलाब के फूल से भी तो जुड़ा है, औरत गुलाब की खुशबू है या खूबसूरती ? जो भी है, वह पुरुष से पृथक् नहीं है, तो वह पुरुष के साथ उसकी भोग्य खुशबू का हिस्सा ही तो बन जाती है। सेवाय होटल के इस कमरे का भाग्य ट्यूबरोज है, कब-कब रहा है ? कब-कब रहेगा, या फिर वह गुलदौदी से जुड़ा है, कोई गुलाब लेकर आएगा, पर कभी मेरे जैसा अनजान आस्टर के निर्गन्ध पुष्प ले आया तो ? तो क्या ? दुनिया में इन नश्वर, लघु जीवनयुक्त फूलों का महत्त्व नहीं होता ! महककर जीना और महक को भोगकर जीना एक बात तो नहीं ?

मुझे वीणा के बाद शादी नहीं करनी चाहिए थी। स्वतन्त्र जीकर सैक्स भोगने का अनुभव करना था। वीणा का बोझ वर्षों-वर्षों रहा। स्निग्धा में भी उसके गुण खोजता हूँ। स्निग्धा से शादी और वीणा के जाने के बीच में कुछ अर्सा इतनी जल्दी बीत गया कि मुझे सँभलने का मौका नहीं मिला। नये सिलसिले में स्निग्धा पर जैसे अविश्वास हो गया था, या मेरा अपने ऊपर से नियन्त्रण उठता गया। मुझमें निरंकुशता आ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गई थी। पूरी जिन्दगी को चार-छः औरतों के साथ बाँध दिया। उस दायरे से अलग होना धीरे-धीरे असम्भव हो गया।

शोभा जिस जिन्दादिली से अपने पति का घर कभी भी छोड़कर पर-पुरुषगामिनी का रूप धारण कर लेती है, उसके लिए उसे साहसी कहना ठीक होगा। साहसी लुटेरों के लिए भी प्रयुक्त होता है। मसूरी में भानु के फोटो स्टुडियो में शोभा की बहुत-सी तस्वीरें प्रिंट बनाने के लिए दी थीं, आज लाऊँगा। कुलड़ी में घूमते हुए शोभा सिंह ईश्वर सिंह की दुकान में सरदारजी मुझ बहुत अच्छी तरह पहचानते हैं। वे शायद यह भी जानते हैं कि मेरी पत्नी और प्रेमिकाएँ बदलती रहती हैं। वे मुझे देखकर खुश होते हैं। टैक्सीस्टेण्ड से कुलड़ी तक हॉकमेन होटल से होकर आना पड़ता है। हॉकमेन में नान वेजिटेरियन खाना अच्छा बनता है, शोभा को फिशकरी वह भी सार्डीन फिशकरी खाने का शौक है। वस्तुतः मुझे प्रायः अपनी प्रेमिकाओं में सजीव अनेकता में भी एकता दिखाई देती है—इस एकता का कारण खाने के टेस्ट में समानता है या सिर्फ एडजस्ट करने की शक्ति—जो भी हो, मुझे फिशकरी, सार्डीन फिशकरी और शोभा को दोनों की टेस्ट चेंज करने के लिए अच्छी लगती हैं।

क्या औरत और फिशकरी एक ही चीज हो सकती हैं ? हो तो सकती हैं। उस नाते पुरुष और फिशकरी भी एक बात हो सकते हैं, तुम नहीं भी बैठे तो क्या ? बात तो है। इन औरतों के साथ पुरुष रहते हैं, प्रकृति की भिन्नता के बावजूद जिन्दगी कट जाती है।

खजुराहो में भी शोभा के साथ गया था। होटल चन्देला में ठहरा था। मन्दिरों को देखकर मुझ पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इन मन्दिरों की नायिका थी अतिरूपा नाम की एक औरत। इनके सृजन का प्रेरक था कालभैरवी का उपासक एक पुजारी। नग्न नृत्य जिस दायरे में होते थे, वह मूल में कहाँ है, कहा नहीं जा सकता। जिस कलाकार ने नग्न मूर्तियाँ गढ़ी थीं वह अतिरूपा का प्रेमी था, परन्तु राजा के आदेशों के कारण उसे अपनी ही प्रेमिकाओं की सामूहिक यौन लीलाएँ देखकर चित्रित करनी पड़ी थीं फिर उन्हीं की मूर्तियाँ बनानी पड़ी थीं। पाश्चात्य देशों में सामूहिक ओर्गीज और खजुराहो के नृत्य-यौनाचार में फिश-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करी और औरत जैसी समानता है। मध्य प्रदेश के ये मन्दिर सुन्दर हैं, उनके बाह्य दीवारों पर यौनानन्द चित्रित है। सरकार की ओर से हर वर्ष वहाँ नृत्य आयोजित होते हैं। हम ये नाट्य समारोह देखने आए हैं, हम यानी शोभा और मैं।

प्रथम नृत्य है यामिनी कृष्णमूर्ति का भरतनाट्यम। झाँझ-करताल बजाते वादक जब, नृत्य के प्रणेताने अलौकिक···बासुरी बजाने के सुन्दर पोज में यामिनी कृष्णमूर्ति, एस कनक का भावपूर्ण भरतनाट्यम, भगवान शिव असुर हाथी का संहार करने के बाद का विजय मुद्रा का अद्भुत रूप। भरतनाट्यम में ही धनञ्जयन और शांता का राजारानी के रूप में नृत्य राजसी छटा का दर्शनीय रूप ! प्रोतिमा वेदी का उमा पुत्र भगवान गणपति का अभिवादन सब आधुनिक लगते हैं। उनमें कहीं कोई अतीत नहीं है। माधवी मुद्गल का ब्रह्माण्ड स्वामी को अभिवादन दृश्य, भारती शिवाजी का नायिका केश विन्यास, अलरमेल बल्ली का भरतनाट्यम—शिव का आनन्द ताण्डव दृश्य ! शोभा इन नृत्यों को तन्मयता से देखती है। मस्त होकर—मैं इन नर्तकियों के वर्तमान जीवन, अतीत और व्यक्तिगत जीवन के बारे में सोचता हूँ। बेचारे शिव भगवान् इन नृत्यों को देखकर शायद दुःखी हो रहे होंगे। एक भी मुद्रा दिव्य नहीं है, प्रत्येक मुद्रा के पीछे मैं देखता हूँ मन्दिरों पर बनी सैक्सी नंग-धड़ंगी अतिरूपा को। वह अतिरूपा शोभा है, हर पोज वासना है। इन नृत्यों को देखकर अगर कोई पुरुष रात को बिस्तर में औरत के साथ सोकर यदि शिव उपासना करता तो अलग बात थी। औरत के सहवास में पुरुष वही करता है जो मैं शोभा के साथ करता हूँ। प्रसिद्ध नर्तकियों का नृत्य देखना, खजुराहो की पृष्ठभूमि में देखना अय्याशी है, कला का अपमान है। शिवस्तुति के लिए बहानों की आवश्यकता नहीं, वह मंत्र रात के अँधेरे में पढ़ा जा सकता है :

आंगिकं भुवनंयस्य वाचिकं सर्ववांगमयम्
आहार्यं चन्द्रतारादि तं नमः सात्त्विकं शिवम्।

मैं रात को यौनकर्म के बाद शोभा को नन्दिकेश्वर द्वारा रचित अभिनयदर्पणम् के उपर्युक्त मंत्र का अर्थ समझाता हूँ, 'हम भगवान शिव को प्रणाम करते हैं, ऐसे शिव जिनका शरीर यह ब्राह्मण्ड है, जिनकी वाणी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समस्त साहित्य है, समस्त वांगमय है, जिनके आभूषण जिनकी सजावट चाँद और सितारे हैं।'

'तुम रात को यह क्यों समझा रहे हो ?'

'इसलिए कि इन नृत्यों में तुम्हें कहीं दिव्यता का आभास हुआ ?'

'नृत्य आनन्द देता है, क्या इतना पर्याप्त नहीं है ?'

'शोभा, जो आनन्द तुमने मुझे कुछ क्षण पहले दिया है, वह भी तो आनन्द है।'

'तुम हमेशा गन्दी बात सोचते हो।'

मैं हँसता हूँ, कहता हूँ, 'शोभा, मैं इन मन्दिरों में भक्ति की खोज में नहीं आया हूँ, तुम्हें ये नृत्य और मूर्तियाँ दिखाकर यौन का आनन्द पाना चाहता हूँ। यौन का विस्तार और सुख देगा, और प्यार देगा, और जागृति व चेष्टा देगा। पर यह भी सही है मुझे इन नृत्यांगनाओं में से कोई भी औरत तुमसे अधिक सुन्दर नहीं लगी !'

'चन्दर, तुम यहीं आकर बाजी जीत जाते हो। मुझे ही नहीं किसी भी औरत को तुम जीत जाते हो। तुमसे हारने के लिए मैं सहवास चाहती हूँ। यह भी जानती हूँ कि तुम्हारी मैं अकेली प्रेमिका नहीं हूँ।'

'शोभा, नृत्य राजाओं की रखैलों और मुजरों में बदलकर या सरकारी धन से अय्याशी के लिए समारोह मनाकर कराए जाएँ तो कला को समझने वाले प्रत्येक व्यक्ति को दुःख होगा। मैं इन सब नर्तकियों के नृत्य पहले स्टेज पर देख चुका हूँ, वहाँ वे सुन्दर भी लगती हैं, दिव्य भी लगती हैं, अलौकिक भी लगती हैं क्योंकि वहाँ वे कलामर्मज्ञों के सामने नाचती हैं, पैसे वाले अय्याश गंजी खोपड़ी वाले या हिजड़ों की तरह दाँत दिखाने वाले संयोजकों के लिए नहीं नाचतीं। मेरी एक दोस्त थी। मशहूर फिल्मी नायिका थी, वह पर्दे पर नाचती थी तो कहीं कला दिखाई नहीं देती थी, पर कभी घर में अपने माँ-बाप या मेरे सामने नाचती थी तो हम सब नृत्य से उत्पन्न खुशी महसूस करते थे। श्रृंगार, गहने, अलता, वस्त्र ये सब एक जगमगाहट पैदा करते हैं, कला को विस्तृत नहीं करते।'

एस कनक के पाँव में अलता लगा है, उलटे पाँव की मुद्रा में मांस में सलवटें हैं। वस्त्र तथा आभूषण भव्य हैं। चेहरे के भाव अस्पष्ट हैं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
गालों पर गड्ढे हैं, कमर भी मोटी है। घुंघरू बाजारू तरीके से बँधे हैं। मंदिर का जो कौल उसके नृत्य के लिए चुना गया है उस पर कुछ लेस्वीयन मूर्तियाँ खुदी हैं। प्रोतिमा वेदी के ओठ और नाक सुन्दर नहीं हैं। गणेशजी की टूटी हुई मूर्ति पृष्ठभूमि में है। दो पेनहज में हाथी और आदमी दिखाई दे रहे हैं, ऊपर का हिस्सा स्पष्ट दिखाई नहीं देता। भारती शिवाजी का चेहरा सुन्दर है। वेशभूषा अच्छी है। आँखों का विस्तार आकर्षक है। सम्भोग के दृश्यों वाली मूर्तियाँ पीछे हैं। एक स्त्री को दो औरतों ने जंघाओं से पकड़ा है, पुरुष सम्भोगरत है। उसका सिर नीचे फ़र्श पर है। उस आसन का नाम याद नहीं आ रहा है। भारती के सौन्दर्य पर सम्भोग का यह दृश्य मुझे शोभा को छूने और उसका ध्यान आकर्षित करने पर विवश करता है। अलरमेल वल्ली देखने में सुन्दर है, शोभा सुन्दर है। मेरे मन में पर्वट भावनाएँ आ रही हैं। मन ही मन मैं इस नर्तकी की चाहना करता हूँ। मेरा मन भ्रष्ट हो रहा है। यह नर्तकी काफी सैक्सी लग रही है। शोभा से भी अधिक सैक्सी ! कमर इसकी भी ज्यादा पतली नहीं है।

इस नर्तकी के ओठों में कशिश है, गुदगुदापन है सारे शरीर में। मैं भरतनाट्यम से पृथक् अपने मन में नाट्यम देख रहा हूँ, उसके कानों के सुन्दर झूमकों को देख रहा हूँ, उसकी मोतियों की माला को देख रहा हूँ। कमर के भरावों को देख रहा हूँ, उरोजों के छिपाव देख रहा हूँ। मैं विचलित हूँ। शोभा मुझे हाथ से दबाती है, वह मेरे विकृत मन को जानती है। शिव का आनन्द ताण्डव भरतनाट्यम का प्राण है। यह नर्तकी उस दृश्य को अति सुन्दर ढंग से प्रस्तुत कर रही है। मुझे लगता है, अभी-अभी अतिरूपा आएगी और मुझे नाचने को कहेगी। सामूहिक सम्भोग का दृश्य होगा। तान्त्रिक हम सबको नचाएगा। भूत, वर्तमान, भविष्यत, सब एक हो जाएगा। अतिरूपा का प्रेमी कलाकार, खजुराहो का संगतराश मुझसे ईर्ष्या करेगा क्योंकि उसकी अतिरूपा मेरी बाँहों में नग्न नाचेगी। अतिरूपा के साथ खजुराहो के मन्दिरों पर मेरी मूर्तियाँ होंगी, लोग हमारे सम्भोग के वुत देखने आएँगे। मैं अमर हो जाऊँगा।…नहीं शोभा अतिरूपा है, मेरी जगह मोटा थुलथुल कोई नेपाली व्यक्ति है, कोई राजा
Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साहब है। अलरमेल बल्ली के स्थान पर अतिरूपा थी, अतिरूपा के स्थान पर शोभा है…मैं कहाँ हूँ? कहाँ हूँ मैं? खजुराहो डांस फेस्टीवल मेरे जैसे लोगों के लिए अपने विवाहित जीवन की अब अपनी प्रेमिकाओं के गोद में बिताने के लिए आकर्षक है। मेरी सैक्स भावना अनियंत्रित हो रही है, एक पुरुष मैं, अतीत का पुरुष मैं सिर्फ बैठकर नृत्य की प्रशंसा करूँ…यह अनुचित है।

हर रात शोभा को मेरे भीतर का पुरुष नाचने को कहता है। हम होटल के कमरे में दिन को देखे हुए खजुराहो के मूर्त रूपों का अभ्यास रात को करते हैं। सैक्स के प्रति नई एप्रोच देते हैं। शोभा कहती है, 'तुम मेरे लिए यह सब कर रहे हो या कोई और है तुम्हारे मन में?'

'तुम मेरी अतिरूपा हो।'

'अतिरूपा किसी एक की होकर तो रही नहीं?'

'तुम भी कहाँ किसी एक की हो?'

'मानती हूँ पर मैं अतिरूपा से ज्यादा वफादार हूँ!'

'वह विवश थी, पराधीन थी।'

'वह तो मैं भी हूँ, विवाहित हूँ, परकीया हूँ!'

'ये तुम्हारे विशेषण हैं, तुम कुछ और हो!'

'और क्या?'

'एक स्वतन्त्र छन्द हो तुम!'

'डांस फेस्टीवल का असर हो गया है?'

'नहीं, मैं तुम्हें अतिरूपा की तरह देखकर तुम्हारे रूप की कविता में उतर गया हूँ।'

'रूप की कविता?'

'हाँ, वही जो हमेशा दूसरे को भटकाती रहे, कल्पना में बाँधे रखे, जो लय हो!

'इन पत्थरों में अतिरूपा कहाँ-कहाँ है?'

'सर्वत्र, पर मेरी अतिरूपा है सिर्फ मेरे पास, मेरे श्वासों की प्राचीरों में बँधी हुई!'

'तुम मूर्तियाँ गढ़ सकते हो?'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'सजीव, सप्राण मूर्तियों को जन्म दे सकता हूँ जो शोभा जैसी हों।'

'तो फिर जन्म क्यों नहीं देते ?'

'बन्धन के भय से, उन मूर्तियों के जारज कहलाने की कल्पना के डर से !'

'छोड़ न यह सब चन्दर, दे न मुझे एक सन्तान !'

'तुम्हें प्यार करने की यह शर्त है या परकीया प्रेम का दण्ड ?'

'न शर्त, न दण्ड, मेरी इच्छा।'

'जानती हो तुम्हारे पति के घर में मेरी सन्तान मुझे मानसिक यातना पहुँचाएगी।'

'ऐसा न हो तत्हेतु व्यवस्था कर दी जाएगी !'

'अब शोभा मैं तीसरी बार शादी करूँ, अच्छा नहीं रहेगा, वीणा के बाद स्निग्धा और अब स्निग्धा के बाद धूमकेतु बनकर तुम आ रही हो ? धूमकेतु विनाश देता है।'

'तुम व्यर्थ सशंकित हो रहे हो। मैं धूमकेतु नहीं बनूंगी। तुमसे शादी भी नहीं करूँगी। सन्तान तुम्हारी हो, कहलाएगी तो मेरे पति की !'

मैं हँसता हूँ, 'जैसे तुम प्रेमिका मेरी, और पत्नी अपने पति की !'

'हाँ' वह कहती है, 'समाज की व्यवस्था है, उसी को मानती हूँ। यह व्यवस्था मुझे तुम तक आने के लिए नहीं रोकती। मेरा पति भी इसमें बाधा नहीं डालता। वह जानता है मैं खजुराहो में हूँ, पर वह यह नहीं जानता कि तुम्हारे साथ हूँ। तुम अपनी पत्नी से खजुराहो आने की कहकर नहीं आए हो···बस यही पाप है। सच्चाई को बनाए रखो, उसे अधिक खींचो मत—अधिक खींचने पर रस्सी की तरह टूट जाएगी।'

'फिलासफी, सरमन, प्रीचिंग यह औरत के दायरे में नहीं आते !'

'खजुराहो की तुम्हारी जो खुदी हुई अतिरूपा मूर्तियों में है न वह भी औरत थी, वह क्या एक दर्शन या शिक्षा नहीं है।'

'वह तो कलाकार पुरुष के कारण है।'

'तुम सीरियस हो रहे हो, छोड़ो, आओ उस नये पोज की प्रेक्टिस करें।'

Funding by IKS-MoE

'औरत का यहीं आकर धैर्य टूट जाता है। वह एक सम्पूर्ण संस्कृति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हो जाती है।'

'तुम हमेशा अनैतिक को संस्कृति-वंस्कृति का लबादा पहनाए रहते हो।'

खजुराहो फेस्टिवल में अगली बार अपनी पत्नी को लाऊँगा। उसे वह सब सिखाऊँगा जो मुझे शोभा सिखा रही है। शोभा सन्तान चाहती है। उस रात उसने मेरे साथ अनाचार किया है यह कहकर कि मासिक धर्म का बीसवाँ दिन है और वह सुरक्षित है। मैं उस मायाजाल में बँध गया हूँ। दिल्ली लौटकर शोभा ने कहा था 'तुम मुझे क्षमा कर दो, मैंने झूठ कहा था।'

मैं चुप हूँ। आज तक यह स्थिति नहीं आई थी। शोभा धोखे से मेरी सन्तान पाने में सफल हो रही है। यह छल तोड़ना होगा! इसे तोड़कर मैं शोभा को हमेशा के लिए अपनी जिन्दगी से काट दूंगा। मैं पाप कर सकता हूँ, अपराध कर सकता हूँ पर इस झूठ को जीतूंगा।

तीन माह बाद मुझे खबर मिली थी कि शोभा हस्पताल में है। उसने एबार्शन करवा लिया है। मैं उसे मिलने जाता हूँ। वह कहती है, 'चन्दर, जो तुम्हें बुरा लगे वह मैं कभी नहीं कर सकती। क्षणिक आवेग में तुम्हें खो देने के लिए उपक्रम पालकर मैं सुखी कहाँ रहूँगी? बस, यह जो किया है तुम्हारी खुशी के लिए है!'

शोभा ने जो किया ठीक किया। परन्तु मुझे इससे ठेस पहुँची है। क्या हर औरत छल की इस सीमा तक पहुँच सकती है? क्या हर औरत शोभा हो सकती है। वह शोभा जो अपनी खुशी के लिए सन्तान पाना चाहती है, वही शोभा दूसरे की अनुभूति को समझकर अपनी खुशी को समाप्त भी कर सकती है? यह तुच्छता है या महानता है, कह नहीं सकता!

पर मेरे भीतर कुछ ऐसा जरूर आ गया है जो मुझे बदल रहा है। मैं जानता हूँ मेरा और शोभा का एकान्त का सम्बन्ध समाप्त हो रहा है, हो जाएगा।

मैं एक माह तक शोभा से नहीं मिला हूँ। उस रोज मैं अपने आफिस में बैठा काम कर रहा था कि शोभा का फोन आया, 'मैं तुमसे मिलना

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चाहती हूँ आज रात, कहीं भी···कहीं भी चलो !'

'पर शोभा, आज नहीं, मैं व्यस्त हूँ। घर पर स्निग्धा ने पार्टी पर कुछ लोगों को बुलाया है।'

'ठीक है, मैं तुम्हारे दफ्तर आ रही हूँ।' वह फोन रख देती है। आधे घंटे बाद शोभा मेरे दफ्तर में है। वह आते ही कहती है, 'चन्दर, मुझे तुम्हारी सलाह चाहिए।'

मैं उसे सोफे पर बैठाता हूँ, चाय का आदेश देता हूँ, स्वयं सामने बैठ जाता हूँ और कहता हूँ, 'बोलो, क्या कहती हो !'

'मेरे पति को मेरे और तुम्हारे सम्बन्धों का पता लग गया है। वे मुझे पूछ रहे थे !'

'तो तुमने बता दिया ?'

'नहीं।'

'अच्छा किया, तुम मुझसे सम्बन्ध तोड़ लो, हमेशा के लिए !'

'यह नामुमकिन है।'

'तो तुम क्या करना चाहती हो ?'

'मैं अलग रहना चाहती हूँ और तुम्हें चाहती हूँ !'

'यह मेरे लिए नामुमकिन है !'

'रास्ता ?'

'तुम अपने पति का विश्वास पुनः प्राप्त करो ! उसे कहो कि मेरे-तुम्हारे सम्बन्ध कला और इसी तरह की दूसरी बातों पर टिके हैं।'

'वह नहीं मानेगा ?'

'तो उसे कहो डूब मरे।' मैं तल्खी से कहता हूँ।

'चन्दर प्लीज, बताओ !'

'मैं कल तुम्हें और तुम्हारे पति को मिलने शाम सात बजे स्निग्धा के साथ आऊँगा।'

'बीच में स्निग्धा क्यों ?'

'मैं तुम्हारे पति पर यह जाहिर करूँगा कि स्निग्धा और मैं पति-पत्नी के रूप में कितने खुश हैं !'

Funding by IKS-MoE

'पर···'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'मुझ पर छोड़ो, एक बात और, तुम आज शाम हमारे यहाँ पार्टी पर आओ ! आज स्निग्धा का वर्थडे है। हो सके तो अपने पति को भी साथ लाना !'

'तुम यह सब, तुम कह रहे हो ?'

'हाँ, मैं कह रहा हूँ। तुम्हारा पति हमारा घर देखकर शायद अपने विचार बदल ले !'

पर पार्टी पर शोभा और उसका पति नहीं आए। और मैं भी दूसरे दिन उनके यहाँ नहीं गया। बीच में दो-तीन वार शोभा का फोन आया था कि मामला पैच अप हो गया है ! ऐसा होना ही था। शोभा कहती है, 'कुछ अरसे वाद हम फिर मिल सकेंगे।' हाँ-हाँ···जरूर मिलेंगे···जरूर मिलेंगे, पर मैं जानता हूँ गाँठ कट गई है, उसे खोला या तोड़ा नहीं गया वरन् काट दिया गया है।

तब मैं बहुत छोटा था। दसवीं में पढ़ता था। मिस भाटिया शहर की सबसे सुन्दर लड़की थी। वह मुझसे वड़ी थी पर पढ़ती दसवीं में ही थी। क्लास में वह सिर्फ लड़कियों सेबोल ती थी। लड़कों में कभी-कभार मुझसे बात कर लेती थी। उन दिनों बात करना ही पर्याप्त था। पन्द्रह वर्ष का भी नहीं था मैं। बस इसे रोमांस समझ लिया। अपनी किशोरा-वस्था का रोमांस ! उसी स्टेज पर वह रोमांस रहा। मैं उसके घर जाकर उससे मिल सकता था। कितावें ले-दे सकता था। पढ़ाई में हमारी स्पर्धा थी। स्कूल की परीक्षा के बाद सपना टूटा। मैं पढ़ाई के लिए जिले के बाहर भेज दिया गया।

मेरे रोमांसों की संख्या बढ़ती गई। मिस सूरी एक गुमानी लड़की थी, मिस चोपड़ा हँसमुख और अच्छी लड़की थी। नलिनी अच्छा गाती थी। शशि शेर अच्छे कहती थी। शशि तब बहुत सुन्दर थी। उसके पिता की मृत्यु हो गई थी—बहुत पहले शायद उसके पैदा होने से कुछ पहले। उसकी

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

माँ एक ट्रांस्पोर्ट कम्पनी की मालिक थी। मिसेज मल्हण···सुलक्षणा मल्हण था उसकी माँ का नाम। नया शहर, हास्टल की जिन्दगी, नये लोग। बस दोस्त बने लड़के-लड़कियों के घर जाने में मजा आता था। हास्टल से अलग खाना मिलता था। शशि के यहाँ प्राय: उसकी माँ घर पर नहीं रहती थी। उसके बारे में शोहरत थी कि उसके पति ने जहर इसलिए खाया था कि वह डा० कमलजीत से अवैध सम्बन्ध रखती थी। डाक्टर के घर पड़ी रहती थी। यह सचाई ही होगी क्योंकि जब शशि मेरे रोमांस में उलझ गई तो सुलक्षणाजी डाक्टर की उपपत्नी बनी हुई थीं। शशि अपनी माँ के दुष्चरित्र होने से बिगड़ गई थी। वह विद्रोही-सी थी। गम्भीर। चुप्पी। खूबसूरत शशि मेरी जिन्दगी में तीन वर्ष रही। मेरे और शशि के रोमांस के कारण मिस सूरी और मेरा रोमांस टूट गया।

उस दिन मेरा अठारहवाँ जन्मदिवस था। हास्टल टकशॉप में पार्टी थी। मिस्टर बाली ने मुझे पैन भेंट किया, हरनाम चौहान ने क्रिकेट पर एक पुस्तक। वेद ने इतिहास की ब्रिटिश हिस्ट्री बाई टी० एफ० टाउट, बोहरा के रूमालों का डिब्बा, रमेश चोपड़ा ने क्रिकेट की टोपी। हास्टल के लिफ्ता-मुफ्ता-ठग ग्रुप ने एक क्लिक कैमरा। परमार ने पेंटिंग के जर्मनी में बने दो पेलेट माइक। शशि पार्टी में नहीं आई। पार्टी के बाद मैं उसके घर चला गया था। वह घर पर अकेली थी। शाम के सात बजे थे। मुझे देखकर भीतर चली गई और कहती गई 'हैपी बर्थ डे टू यू', भीतर के कमरे का उसने दरवाजा बन्द कर लिया और खिड़की से मुझे चिढ़ाती रही। जब मैं लौटने को हुआ तो उसने दरवाजा खोलकर मुझे कसकर बाँहों में पकड़कर चूमना शुरू कर दिया। बोली, 'मुझे मालूम था तुम आओगे !' वह मुझे भीतर के बैड रूम में ले गई। और मेरे सैक्स जीवन का वह एक अनुभव भरा दिन था। मैं कहता हूँ, 'शशि, कुछ हो गया तो ?'

'नहीं होगा, मेरा सेफ पीरियड है।'

मैं इन बातों में अनजान था। पर उस दिन के बाद शशि मेरी जिंदगी में भर गई। मेरी पढ़ाई पर भी असर पड़ने लगा। छ:माही परीक्षा में मैं प्रथम स्थान से उतरकर छठी पोजीशन पर आ गया। प्रिंसिपल से

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डाँट खाई। पिताजी से डाँट पड़ी। दोस्तों-यारों ने भी प्रतिक्रिया व्यक्त की। परमार का कहना था, "क्यों उस रंडी के चक्कर में आता था। छोड़ यार, पढ़ाई-लिखाई कर !'

मैं कहता हूँ, 'परमार—बहुत मुश्किल में हूँ। समझ नहीं पाता क्या करूँ। तुम बताओ !'

परमार एक गम्भीर लड़का था। वस्तुतः वह आयु में काफी बड़ा था। मेट्रिक के बाद ओवरसीयर का डिपलोमा कर लिया था। पर उसके इंग्लैण्ड में रहने वाले भाई ने उसे इन्जीनियर बनने के लिए इण्डिया से बी० एस० सी० पास करके इंग्लैंड आने का निमन्त्रण दिया था। परमार का बी०एस०सी०में अन्तिम वर्ष था। बोला,'देखो, कैरियर पहले, यह छोकरी-बोकरी का चक्कर उमर भर रहेगा। तू इंग्लैंड आएगा, गोरी चमड़ी मिलेगी। तीन इंच के मांस के टुकड़े के लिए जिन्दगी खत्म मत कर। कहाँ तू यूनिवर्सिटी में फर्स्ट आने वाला, कहाँ कालेज की छठी पोजीशन। दोस्त, छोड़ दे। सैक्स-वैक्स छोटी चीज है। उसकी उमर होती है।' परमार ने मुझे बदल दिया। शशि से झगड़ा कर लिया। प्यार-व्यार खत्म। अन्ततः मैं यूनिवर्सिटी में प्रथम आया था। यह जरूर कहूँगा पढ़ाई पूरी कर जब मैं सर्विस में आया तो शशि को बहुत ढूंढ़ा। उससे शादी करने की बात सोचता था। जब वह मिली तो उसके दो बच्चे उसके साथ थे। बच्चों से कह रही थी, 'मामा है, नमस्ते करो।' बच्चे मुझे टुकर-टुकर देख रहे थे।

उसकी शादी अपने से दुगनी उमर के उस आदमी के साथ हुई थी जो उसकी माँ का प्रेमी भी रह चुका था। जीवन की विडम्बना को विवशता कह देने मात्र से दुःख का भार कम नहीं होता। शशि की माँ जिस नरक में जी रही थी, वही नरक शशि की भी धरोहर हो जाएगा इसकी कल्पना शशि के भोले मुख से नहीं की जा सकती।

मेरी और रमेश की रुचियाँ मेल खाती थीं। हम दोनों बैडमिन्टन के खिलाड़ी थे। रमेश मेरे साथ ओपन मिक्स्ड डबल की प्रांतीय विजेता रह चुकी थी। हम दोनों कविता, कहानी लिखते थे। परन्तु हमारा रिश्ता सिर्फ दोस्ती का था। उसके पिता जिला मजिस्ट्रेट रिटायर हुए थे। मैं

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसके शरीर से प्यार करना चाहता था और जब ऐसा अवसर आया तो रमेश ने ही कहा था, 'तुम जो चाहो कर लो, पर आज के बाद हमारी दोस्ती जी नहीं पाएगी।'

और दोस्ती खत्म हो गई। उस लड़की में कोई कम्पलैक्स नहीं था। कहती थी, 'जिस रिश्ते को सैक्स में ही खत्म होना है, उसे खत्म होने देना बेहतर है।'

वीणा से दोस्ती बहुत बाद में हुई, परन्तु वह दोस्ती सैक्स पर, विवाह पर टिकी थी। उसे और उसके माँ-बाप को मेरी नौकरी अच्छी लगती थी। मेरा भविष्य अच्छा लगता था, इसीलिए प्रदीप के साथ उसकी सगाई तोड़ दी गई। हमारी शादी एक घटना थी। मैं दूसरी लड़कियों से सम्बन्ध या दोस्ती तोड़ नहीं सकता था। कुछ के साथ मेरे प्लेटोनिक सम्बन्ध थे, कुछ के साथ बौद्धिक। मैं समझता था इन सम्बन्धों के कारण हमारा विवाहित जीवन मजबूत होगा, इससे भारी क्षणों को हल्का करने में मदद मिलेगी। वीणा शुरू से ही मानती थी कि इन रिश्तों के कारण हमारे वैवाहिक जीवन में दरार आ गए, बोझ बढ़ेगा! वीणा और मैं अपनी इच्छाओं की प्रकृति नहीं समझते थे। हम भ्रमित थे। वीणा यह नहीं चाहती थी कि मैं शारदा से मिलूँ। मैं शारदा के बिना अपने को एकाकी महसूस करता था। उससे बौद्धिक सम्बन्ध थे। वह मुझे भीतर तक कुरेदती थी, सचेत करती थी।

वीणा के साथ विवाह एक गलती थी। शुरू-शुरू में वह अच्छी लगी, परन्तु मैं प्यार को दोस्ती समझता था। हमारा साथ रहना, सोना, एक-दूसरे को बर्दाश्त करना घरेलू झगड़ों में बदलता गया। हमारे जीवन की भीतरी शांति धीरे-धीरे मरने लगी। हम दोनों एक-दूसरे के विरोधी-से बनते जा रहे थे। सिर्फ अकेलेपन के भय से मैं वीणा से जुड़ा रहा। वीणा हमेशा प्रदीप को मेरी तुलना में एक सफल आदमी मानती थी। हम दोनों में प्यार नहीं था। हमारे प्यार में वीणा का अतीत था।

उसके साथ डबल बैड बाँटना या साथ खाना खा लेना या कभी-कभी एक-दूसरे के प्रति नजदीकी महसूस करना एक छोटी बात थी। मजबूरी थी। हम दोनों घर के बाहर का जीवन पसन्द करने लगे।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रमेश फिर मेरे जीवन में आई। उसके पूरे परिवार के लोग पुनः मेरे समीप आने लगे। रमेश का विवाहित जीवन सुखी था। उसका पति मेरा मित्र बन गया। मिस्टर ईश्वरदास हाजरी का व्यापार करते थे। वीणा हमेशा ईर्ष्या से कुढ़ी रहती थी। मेरा और वीणा का विवाह दोस्ती के दायरे से जन्मा था। वह दोस्ती आधारहीन थी। उसका नग्न शरीर यथार्थ की एक ग्रन्थि था, अनचाहा, अनवांछा था।

विवाह के रिश्ते का दायरा टूटकर बाहर मुड़ गया था, टूटने का अहसास होने लगा था। वीणा मेरे प्रति सशंकित रहती थी। मेरे अनेक रिश्ते सैक्स सम्बन्धों से पृथक् थे, वीणा उन्हें भी सन्देह की दृष्टि से देखती थी। वीणा प्लेटोनिक रिश्तों पर विश्वास नहीं करती थी। वह चाहती थी कि स्त्री, पुरुष, कोई भी मेरा मित्र न हो। वह मुझे अपने मकड़जाल में बाँधे रखना चाहती थी। घरेलू तनाव बढ़ने लगे थे। एक-दूसरे पर चिल्लाने या बात-बात पर तल्खी हो जाती थी।

मैं वीणा के विरुद्ध एक विरोधी रुख रखने लग गया था। मेरे किसी भी दूसरे सर्कल में बीते समय को वह हमेशा भावनात्मक मानती थी। हमारे विस्तार में दरारें थीं। मैं वीणा से एक सामान्य पत्नी के सम्बन्ध के अतिरिक्त कुछ भी नहीं चाहता था परन्तु वह मुझे प्रत्येक सामाजिक सम्पर्क को तोड़ने के लिए कहती रहती थी।

मैं भी अपने मित्रों को धीरे-धीरे अपने घर के दबाव, वीणा के शक्की स्वभाव और बढ़ते हुए तनावों के कारण नये दृष्टिकोण से देखने पर विवश हो गया। मैं घर से बाहर रहने लगा। विवाह का रिश्ता नैतिकता की प्राचीर तोड़ गया। हमारे भावनात्मक रिश्ते अविश्वास और सन्देह में बदलने लगे। घर सोने और खाने-पीने का अड्डा मात्र बन गया था। मुझे घर से बाहर के वातावरण ने अपनी ओर खींचा। मेरे जीवन में प्रेमिकाएँ आने लगीं, मुझे अपने लिए या वीणा को पाठ पढ़ाने के लिए उनकी आवश्यकता महसूस हुई। वीणा और मेरी समस्याएँ पृथक्-पृथक् अस्तित्व रखने लगीं। मैं समस्याओं को हल न करते हुए उनसे अलग खड़ा होना चाहता था। वीणा और मैं अपने-अपने बोझ दूसरों को बताकर हलके करने लगे। एक-दूसरे की बुराई करना हमारा रोजमर्रा का

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काम हो गया। हमारे भीतर का तनाव बाहर आकर नफरत बन गया। एकआध मित्र ने समझौते की कोशिश की—परन्तु गम के अँधेरे हमारे दिलों पर बादलों की तरह मँडराने लगे। अपना-अपना अतीत हमारे मनस्पटल पर छाया रहता था। वीणा एक औरत न बनी रहकर एक भूत बन गई। सब काम अपनी इच्छा से करने लगी। मेरी किसी भी बात की उसे चिन्ता नहीं थी।

मैं किसी भी कार्य में दूसरों के दखल पसन्द नहीं करता। दूसरों की सहायता का इन मामलों में अर्थ ही क्या है? अपने दुःख दूसरों को बताना अपना मजाक उड़ाना मात्र है। दूसरे लोग बोझ बन जाते हैं। दूसरों की दया दिखावा हो जाती है। दूसरों का दखल मुझे नापसन्द था। वे अपने घर में झाड़ू लगाना भूलकर दूसरों के घर साफ करने का आश्वासन देते हैं। प्रायः लोग मेरा या वीणा, दोनों में से एक पक्ष देखते थे। दोनों को एक तराजू में नहीं देख पाते थे। मुझे उनके मेरे प्रति विचारों में कोई रुचि भी नहीं थी। दूसरे व्यक्ति हमारे बारे में तभी सब जान सकते हैं जब उन्हें हम अपने राज़ बताएँ। बिना व्यक्तिगत सम्पर्क या गम्भीर आत्मीय सम्बन्धों के सब कह देना आसान नहीं होता। तलाक लेने या बदला लेने की सलाह कोई भी दे सकता है। जब निर्णय हमें स्वयं लेने होते हैं तो ऐसी स्थिति में दूसरे क्या अस्तित्व रखते हैं? शायद वीणा के किसी हितैषी ने उसे मुझसे बदला लेने के लिए उसे विवाहेतर सम्बन्ध कायम करने के लिए सलाह दी होगी। वह इसका शिकार हो गई।

वीणा के प्रति मुझे सन्देह जरूर रहा है। उसके पुरुष मित्रों के साथ रिश्ते मुझसे सिर्फ बदला लेने के लिए थे। उसका पूर्व इतिहास भी धूमिल था। यह इतिहास पहले मेरे लिए कोई अहमीयत रखता ही नहीं था, परन्तु वीणा शुरू से उस इतिहास के दबाव में रही है। उसी वजह से हमारे घर में दरार आई। सन्देह से उत्पन्न नये रिश्तों के कारण मेरे लिए नफरत का कारण बन गई। हम दोनों पति-पत्नी भी नहीं रह गए थे। हमारे सम्बन्ध शत्रुतापूर्ण थे। रिश्ते में इतना बोझ आ गया था कि उसका टूटना अनिवार्य हो गया।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वीणा मुझसे बदला लेना चाहती थी। मेरे द्वारा उसे अस्वीकृत करने के कारण उसका आचरण बदल गया था। वह प्रतिक्षण प्रतिक्रियास्वरूप मुझे अपमानित करते रहने की योजनाएँ बनाती रहती थी। ऐसी परिस्थितियों में मेरा दूसरों में आश्रय ढूंढ़ना स्वाभाविक था। मुझे दूसरी औरत की आवश्यकता थी। वह कोई भी हो, कैसी भी हो, वह वीणा नहीं होनी चाहिए।

अगर वीणा इस घर में अनावश्यक थी तो वह भी मुझे विश्वास दिलाती थी कि मैं एक गुजर चुका, चुक गया पुरुष हूँ। वैसे तो मैं शुरू से ही किसी भी व्यक्ति को गम्भीरता से नहीं लेता परन्तु वीणा के प्रकरण में मेरी लापरवाही अनेकमुखी थी। मुझे न वीणा की आवश्यकता थी, न उसके प्यार की, न इस घर की। वीणा के मन में पापभावना थी, मेरे मन में पाप के प्रति अनुरक्ति। मैं अपने को बहुत भीतर तक टटोल चुका हूँ—जो मैं हूँ, वही बने भी रहना चाहता हूँ।

वीणा से तलाक के बाद वह औरत मेरे मन से पूरी तरह निकल गई थी, अपने कन्धों से उस औरत का बोझ मैं झाड़ चुका था। मेरे बहीखाते में उसका हिसाब चुकता हो गया था। मेरा जीवन नार्मल था या नहीं कह नहीं सकता। मेरे जीवन का एक पड़ाव था, पीछे छूट गया। मुझे गम्भीर या होशियार बनने की जरूरत थी। परन्तु भविष्य एक नये तराजू की खोज में था, उसके पलड़े असामान्य सम्भावनाओं के बोझ से लदे थे। उसका कोई आधार नहीं, तर्क नहीं, बस मुझे अपना जीवनदर्शन बदलने की जरूरत महसूस होने लगी थी। मैं जीवन को बदलना चाहता था। अपने जीवन के प्रति अपना रवैया बदलना चाहता था।

मुझमें क्या कोई त्रुटि थी ? क्या कोई कमी थी ? मैं स्वयं दोषी नहीं हूँ। वीणा से अलग होकर मुझे शामा ने कुछ क्षणों का सुख दिया था। अकेले रह जाने के कारण मेरा अहं ठोकर खा रहा था।

मेरे मन में शशि एक बार फिर आई थी। एक बार फिर मैं अपने बचपन में लौटना चाहता था। पुरानी चिनगारी सुलगा लेना ही एक रास्ता था। अगर मेरे पास एक वर्ष का समय निर्णय लेने के लिए न होता तो मैं शशि को ढूंढ़ निकालता, उसका अस्तित्व अब भी दिल में था,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यही एक आश्चर्य है। वीणा से पूर्व के अनेक सम्बन्धों की ओर लौट जाने को मन हुआ। रमेश के प्रति मेरा आकर्षण था परन्तु वह अपने जीवन से सन्तुष्ट थी। मिस सूरी का कोई अता-पता नहीं था। वीणा ने कभी मुझे यह अहसास नहीं होने दिया था कि उसके लिए मैं एक मात्र पुरुष हूँ, एकमात्र देव हूँ। मुझे ऐसी औरत की चाह थी जो मुझे अपना सर्वस्व मानकर अपने मायाजाल में बाँध ले। क्यों ? वीणा से बदला लेने के लिए ?

मुझे ऐसे नये साथी की तलाश थी जो मेरी रुचि पहचान सके, मेरे भावनात्मक संसार को सशक्त बनाए। परन्तु इस समय तो कुछ विवाहित औरतें मुझे घेरे हुए थीं जिनका मुझसे प्यार नहीं था, बल्कि हमारा वासना प्रधान जीवन ही सम्बन्धों का कारण था। अनुरक्ति न होकर जरूरत अधिक थी। टूटते हुए उनके विवाहित जीवन के लिए मैं एक किराये के प्रेमी-सरीखा था। पुरानी प्रेमिकाओं से सम्बन्ध स्थापित न कर पाने के कारण एक हार की भावना मुझमें आ गई थी। वाद में स्निग्धा के साथ शादी होने पर भी वही समस्याएँ प्रधान हो गई थीं जो वीणा के समय में थीं। जिस शीघ्रता से, अनसोचे ढंग से स्निग्धा जिन्दगी में आई थी उससे मुझे लगा था कि मैं फिर वही गलती कर गया। दूसरी बार मारा गया। जिस प्रकार यह रिश्ता कायम हुआ था उसे देखते हुए शुरू में लगा था कि स्निग्धा मेरे लिए बनी ही नहीं है। स्निग्धा का लखनऊ में बीता पूरा जीवन मुझसे छिपा रहा, कल्पना के लिए वहुत कुछ था। मैं गम गलत करने के लिए सिगरेट-शराब में जब डूबा था, उससे मुझे लगा था कि स्निग्धा एक अच्छा जीवनसाथी नहीं हो सकेगी। स्निग्धा में मुझे वीणा की गन्ध आती थी। मैं चाहता था वीणा को भूलना परन्तु पग-पग पर स्निग्धा वीणा बनकर मुझे अपने ही घर में घरघुसरा बना देती थी। स्निग्धा को पाकर मैं अतीत में लौट आया, काश उसे पाने से पूर्व अपने अतीत को विश्लेषित करता। यदि ऐसा कर पाता तो गलती को दोहराने की गुंजाइश नहीं होती। एक ग्रन्थि है जो फिर वहीं लौटा ले जाती है, जहाँ से हम शुरू हुए थे, जहाँ हम टूटे थे। वही रास्ते हैं, वही बाँहें हैं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं वीणा से कटकर अपनी भूल सुधार करना चाहता था। परन्तु मेरा अतीत मुझे रोकता था। बार-बार फीके अतीत में लौट जाना सुखद नहीं था। मैंने कोशिश की थी कि स्निग्धा वीणा न बन जाए। एक बार वीणा ने कहा था, 'लार्ड वायरन की एक कविता जिसमें यह लिखा है कि पुरुष का प्यार उसके जीवन से पृथक् एक अलग तत्त्व है परन्तु औरत के लिए वह पूरा अस्तित्व है।' मैं सोचता हूँ, है, जरूर है। अस्तित्व पर जिस तरह वीणा के साथ मेरे रिश्ते का अन्त हुआ था उससे मेरा अपना जीवन प्यार का अस्तित्व बन गया है। यह प्यार औरत के लिए एक वस्तु मात्र बन गया।

स्निग्धा कहती है, 'पुरुष प्यार की कोटियाँ निर्धारित कर सकता है। वह अपने हृदय की भावनाओं को सामान्य नहीं होने देता। इसी कारण वह द्वेष या बदले की भावना से कम पीड़ित होता है।'

मैं कहता हूँ 'स्निग्धा, औरत को जो देवी का था एक गुड़िया का रूप दिया गया है, उससे हमेशा हमारे समाज में पुरुष को दोषी माना जाता रहा है। आज औरत भी अपनी जिन्दगी को आजादी के नये आयाम दे रही है।'

'जानते हो पुरुष अपना गम इतनी जल्दी क्यों भूलता है ? वह बेसब्र है। वह अपना विश्वास व्यक्त करने के लिए तुम्हारी तरह तलाक के बाद पुनर्विवाह भी शीघ्रता में कर सकता है।'

'यानी !'

'यानी जो तुम्हारी तरह नहीं करता वह स्त्री मात्र का द्वेषी हो जाता है।'

औरत प्यार के लिए विवाह करती है। पुरुष आवश्यकता के लिए। इसका कारण···शायद इसका कारण है पुरुष की आर्थिक अभिलाषा, उसका कैरियर। ये दोनों चीजें शादी से या प्यार और शादी से अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। विवाह उसके लिए महत्त्वहीन हो जाता है।

'स्निग्धा, पुरुष निर्णय शक्ति अधिक रखते हैं। औरत हमेशा एक आर्द्रता रही है। वह अकेली शराबखानों में नहीं जा सकती। सिनेमा नहीं जा सकती, उसे आश्रय चाहिए। हमारा आर्थिक ढाँचा कुछ ऐसा है

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कि वह पुरुष पर आश्रित हो ही जाती है। ऐसी स्थिति में और स्थाई सहारा खोजती है, वह सहारा प्यार या विवाह दोनों में से कुछ भी हो सकता है। वह जीवन में यदि प्यार का धोखा खाती है तो दूसरे पुरुष का सहारा भी तुरन्त पा जाती है। प्यार की असफलता का अनुभव आश्रय पाने पर उसे विवश कर देता है।"

'जानते हो', स्निग्धा कहती है, 'स्त्री-पुरुष दोनों ही भावनाओं में वह सकते हैं। दोनों ही कुछ खोकर, कुछ नया पाना चाहते हैं। वे दोनों एक सुरक्षित आधार ढूंढ़ते हैं। उस आधार के टूटते ही वे दूसरा सम्बल पकड़ते हैं।'

मैं सोचता हूँ हर सम्बन्ध की सीमा होती है। ऊब, या उदासीनता कोई कारण नहीं है। सम्बन्ध स्थापित करना, एकाधिक प्रेमी-प्रेमिकाएँ रखना एक फैशन है, बेवफाई का कारण व्यक्ति के गिर्द का सामाजिक वातावरण है। वहाँ भावनाएँ प्रधान नहीं होतीं। बदलते हुए मानदण्ड प्रमुख होते हैं।

'पर ये अवैधताएँ तो हमेशा रही हैं, हर युग में रही हैं। कहीं मन्दोदरी तो कहीं राधा इन अवैधताओं के लिए कारण बन जातीं। पुरुष रावण, कृष्ण, पुरूरवा कुछ भी हो सकता है, कोई भी हो सकता है।'

'हाँ, परन्तु मेरे या तुम्हारे लिए यह वोरियत या फैशन अपने अस्तित्व को वनाए रखने के लिए आवश्यक भी हो जाता है।'

'पर मुझे अपने साथ क्यों घसीटते हो ?'

'ठीक है, तुम्हें नहीं जोड़ता। चलो, मेरे लिए एक नया विश्वास, एक नई स्वीकृति पाने के लिए यह उचित है।'

वह कहती है, 'आप उचित-अनुचित को भी अलग रखें तो अच्छा हो।' 'उचित-अनुचित ? क्यों ?' मैं कहता हूँ।

'वे भावनात्मक नहीं हैं, लोजिकल हैं। कोई भी अवैध सम्बन्ध इस तरह का बन्धन पसन्द नहीं करेगा। उचित-अनुचित कुछ अर्थ नहीं रखता। प्यार हो जाने का लबादा पहनना जरूरी है। यह कारण अपने मन के सन्तोष के लिए काफी है।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'इस तरह का प्यार हमें स्वार्थी बना देगा ।'

'हाँ !' स्निग्धा कुछ सोचने लगती है, फिर कहती है, 'पर भय को छिपी भावना हमें डर से सब छोड़ देने के लिए उकसाती भी है। यह भय औरत में अधिक है, इसीलिए उसके अफेयर सीमित हैं ।'

'तुम यह कह रही हो कि तुम्हारे मुकाबले मैं अधिक स्वतन्त्र हूँ ।'

'बेशक, तुम अपना अतीत, वर्तमान सब जानते हो। तुम्हारे पास इन सम्बन्धों को चलाए रखने के लिए साधन हैं, समय है ।'

'यह ठीक नहीं है, तुम मुझसे भी अधिक स्वतन्त्र हो। पर तुम्हारी भावनाएँ परिवार चलाए रखना जरूरी मानती हैं ।'

'तुम्हारे शरीर से असंख्य औरतों की बू आती है। तुम प्यार को टुकड़े-टुकड़े कर बिखेरते हो, अपने आदर्शों को छोड़कर तुम एक बिक चुके इन्सान हो ।'

मैं ठण्डे दिमाग से सोचता हूँ। मैं एक उद्देश्यहीन पुरुष हूँ। मैं वफा-दार नहीं हूँ। परन्तु मैं कभी किसी के लिए यातना या पीड़ा का कारण भी नहीं हूँ। मुझे अपना जीवन चलाने के लिए झूठ निर्मित नहीं करने पड़ते। दोहरी जिन्दगी, तिहरी जिन्दगी, जो भी है, वह मेरी निजी है। मुझे आधे घण्टे का एकान्त, तीस मिनटों की नवीनता अच्छी लगती है। मुझमें यह ग्रन्थि है। दूसरी औरतों को मेरी आवश्यकता है। वीणा के साथ मेरे रिश्ते की टूटन का कारण था मेरा अपना जीवन, मेरे जीवन के छिपे हुए सन्दर्भ। परन्तु स्निग्धा के प्रति मैं वस्तुतः काफी निष्ठावान हूँ। विवाह की संस्था स्थाई है। प्रेम-सम्बन्ध उस संस्था के आधार हैं।

स्निग्धा के साथ मेरा विवाह अकल्पित था। इस विवाह के लिए मुझे सहमत होना पड़ा था। मुझे चारों ओर से घेरकर बाँध लिया गया था। मेरी स्वतन्त्रता का दूसरी बार हनन हुआ था। मेरे लिए यह विवाह आशा से उत्पन्न था, अनुभव ने मुझे पराजित किया है। स्निग्धा विवाह को बराबरी का रिश्ता मानती है। घर का अर्थ है पत्नी, घर का अर्थ है पत्नी और बच्चे-परिवार। औरत इन्हें निर्मित करती है। मैं औरत में या पत्नी में आश्रय नहीं ढूंढता। परन्तु एक सुन्दर औरत, प्यार की प्रतिमा औरत कुछ समय में एक खँडहर क्यों बन जाती है ? वह एक

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साधारण स्तर क्यों अपना लेती है ? दिनचर्या के पीछे स्निग्धा की बौद्धिकता कहाँ खो चुकी है ? क्या स्निग्धा इस स्थिति से नावाकिफ है ? वह कहती है, 'तुम रसलोभी हो। तुम्हारी रुचियाँ नित्य नवीनता की खोज में रहती हैं। तुम पत्नी से जो पाना चाहते हो, बच्चों के रूप में, घर की रखवाली करने वाली के रूप में, अपनी सैक्स की हविश पूर्ति करने वाली के रूप में, वह तुम पा चुके हो। तुम्हें औरतों को बराबरी पर लाने से अपमान महसूस होता है।'

मैं हँसता हूं। यह सच है मैं स्निग्धा को पत्नी से ऊपर नहीं उठाना चाहता, वह मित्र नहीं बन सकती। मेरे बराबर भी नहीं हो सकती। कहता हूँ, 'स्निग्धा, हिमालय की चोटियों पर हर साल बर्फ पड़ती है, वे नवीन हो जाती हैं। अगर बर्फ न पड़े तो नंगी भद्दी चोटियाँ आकर्षक नहीं रहेंगी। इसी तरह औरत है, वह अगर अपनी नवीनता नहीं बनाए रख सकती है तो वह भी एक कुरूप चोटी मात्र हो जाएगी। मैं एक सादा इन्सान हूँ। सीधा-सच्चा। मैं जो हूँ यही हूँ, स्पष्ट, वर्तमान। मेरा सब सामने है, मन, शरीर, छल, कपट, प्रेम, अप्रेम, मोह, भ्रम—सब सामने है।'

स्निग्धा चुप है। भीतर नौकर बर्तनों की खटपट कर रहा है। वह भीतर जाती है। चाय बनाने को कह आती है। फिर मुझे पूछती है, 'कुछ खाओगे ?'

'तुम्हारी इच्छा है।'

वह कुछ नमकीन बनाने का आदेश देने भीतर चली जाती है। मैं स्निग्धा की बात सोचता हूँ। उसे अच्छा घर चाहिए, वह मेरे घर में उलझी हुई है। उसे अपने घर पर गर्व है, यह घर ही मुख्य साम्राज्य है उसका। उसके घर चलाने के अपने मानदण्ड हैं, वह अपनी नीतियों पर चलती है। उसकी गतिविधियों से लगता है मैं अपने ही घर में अजनबी हो रहा हूँ। घर को साफ-सुथरा, सजा-सँवरा रखना उसे अच्छा लगता है। बोन्जाई के गमले ड्राइंग रूम में भर गए हैं। रबर के पौधे गमलों में घर के बाहर सजे हैं। ये सब घर को सजाने के लिए नहीं वरन एक अहंपरक दिखावे के लिए किया है उसने।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमारे शुरू-शुरू के विवाहित जीवन में खुशी, सफलता और सम्बन्धों की स्थिरता का वातावरण था। परन्तु अब हम दोनों संवादविहित हो गए हैं। स्निग्धा अत्यधिक मूडी है, उसके साथ तर्क करना कभी-कभी दुस्साध्य हो जाता है, मेरी जगह कोई और पुरुष होता तो संवादहीनता के जीवन से दुःखी हो जाता। मेरे प्रेम-सम्बन्ध सिर्फ संवादपरता के कारण जीवित रहे हैं। एक सकारण तर्क हमेशा मुझे सहारा देता रहा है। स्निग्धा के साथ भी इसी मनोविज्ञान के कारण जीवन चला रहा हूँ। वस्तुतः जीवन को गतिशील बनाए रखने के लिए औरत एक सफल सोपान है।

स्निग्धा को मैं काफी समझाता हूँ। बहुत झूठ बोलता हूँ। झूठी कसमें खाता हूँ। उसे विश्वास दिलाता हूँ कि उसके बिना मेरा घर शून्य है। जिन्दगी के शुरू में जिस चाव से मैं स्निग्धा को अपना लाया था, उसकी याद दिलाता हूँ। अथक प्रयास करता हूँ कि वह मेरे जीवन के उच्छृंखल पहलुओं को नजरअन्दाज कर दे। शुरू-शुरू में जो समझ, संवादगत समझ थी वह बीच के तीन वर्षों में लुप्त हो रही थी, उसे लौटाना बहुत मुश्किल था। वह एक समझदार औरत है पर उसके मूड का स्वरूप इतना दुराग्रह से भरा है कि मुझे अपने दिल को हल्का करने के लिए दूसरों के पास जाना पड़ता है। योजनाएँ बनानी पड़ती हैं। बच्चों के प्रति हम दोनों व्यक्तिपरक रवैया रखते हैं। हम दो व्यक्ति बने रहे हैं। संयुक्त होकर परिवार के प्रति सचेत नहीं हो पाए। स्निग्धा मेरी जीवन-धारा को प्रभावित नहीं करती।

उस रात मुझे जल्दी नींद आ गई। स्निग्धा डबलबैड के दूसरे छोर पर करवट बदले सो रही थी···नहीं, सोई होने का बहाना कर रही थी। अचानक मुझे लगा वह एक अजनबी बन गई है। जैसे हम दोनों एक दूसरे को पहचानते ही नहीं।

शशि की माँ प्यार और सैक्स में इतनी डूबी कि उबरने का रास्ता नहीं रहा। शशि इसी प्यार-सैक्स से एक अधेड़ के गले बँध गई। मैं इसी दृष्टिकोण में परिपूर्णता के विकास की प्रक्रिया में हमेशा भटकता रहा, एक पुरुष, एक स्त्री का सिद्धान्त मुझे समझ ही नहीं आया।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझे किसी को चाहने की इच्छा हुई, मैं उसमें उलझ गया—या उसने भी मुझे चाहा, वह मुझमें रम गई। इसमें विकास की प्रक्रिया है ही कहाँ। स्निग्धा में पर्याप्त प्यार ही नहीं है, प्यार का अभाव है या प्यार के बारे में वह अज्ञानी है। हमारे बीच की दरार इन्हीं अभावों के कारण है।

कभी-कभी मैं सोचता हूँ, स्निग्धा के साथ मेरी शादी सही निर्णय के कारण नहीं हुई है। हमारा विवाह शायद प्रेम-विवाह तो नहीं ही था।

एक दिन स्निग्धा ने कहा था, 'जानते हो मैं अपने पति में क्या चाहती है ?'

'बताओ।'

'मैं उसे खुशमिजाज, रोमांटिक, बहादुर, ध्यानशील और पुरुषोचित सौन्दर्य से भरपूर देखना चाहती हूँ।'

'मुझमें इन तत्त्वों में से क्या-क्या कम है ?'

'सभी !'

'सभी ?' मैं हैरत से कहता हूँ।

'हाँ, सभी और इसके अलावा और भी बहुत कुछ कमी है !'

मैं हंसकर टाल देना चाहता हूँ। मैं कहता हूँ, 'स्निग्धा, जानती हो मैं किस तरह की औरत चाहता हूँ।'

'तुम्हें हर तरह की औरत चल जाती है। जानते हो भारतीय विवाह संस्कार में एक प्रथा तेल शान्ति की है। दुल्हन या दूल्हे के सिर पर तेल डाला जाता है, कम-से-कम पाँच स्त्रियाँ तेल डालती हैं। तुम्हारे जैसे पुरुष के लिए तेल शान्ति में कुछ भी चलता है। घी भी, मक्खन भी। मैं कहती हूँ तुम्हारी औरतों की च्वाइस का कोई आधार है भी या नहीं ?'

'मैं औरत को सैक्स सिम्बल के रूप में देखता हूँ। मैं सुन्दर, उठे और भरे हुए वक्ष वाली औरत पसन्द करता हूँ !'

'तुम एबनार्मल हो।'

'जो भी कहो। पर मैं यह जरूरी समझता हूँ कि सन्तुलित या नार्मल आदमी वह है जो सफलता-असफलता, प्यार-घृणा, खुशी-दर्द इन सबके मिश्रण से बना हो !'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'यह तुम्हारी धारणा है। मैं पूर्ण, फ्लालैस व्यक्तित्व के पक्ष में हूँ !'

'यदि ऐसा होता तो व्यक्ति का सन्तुलन कभी बन ही नहीं पाता। पूर्ण व्यक्तित्व कोई भी नहीं है। सब अच्छा ही हो, कोई त्रुटि न हो यह सम्भव ही नहीं। परन्तु त्रुटियाँ कम की जा सकती हैं, छिपाई जा सकती हैं।'

'तुम ग्लैमर पसन्द करते हो !'

'क्यों न करूँ ! ग्लैमर बनावटी नहीं होती। जन्मजात होती है। उसे बनाया, सजाया या सँवारा नहीं जा सकता। वास्तविक ग्लैमर स्वयं जन्मती है। वह विज्ञान के सत्य पर आधृत है ! प्रत्येक परिवार में एक न एक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्वरूप के कारण उस परिवार का ग्लैमर व्यक्तित्व हो जाता है। अन्य सदस्य उस व्यक्ति के आगे फीके पड़ जाते हैं। तुम भी उसी ग्लैमर से युक्त हो।'

'तुम मुझमें ग्लैमर देखते हो ?'

'देखता ही हूँ, देखता था, देखता रहा हूँ, देखूंगा। पर इस ग्लैमर को सिर्फ मैं अपने लिए सुरक्षित रखना चाहता हूँ।'

'तुम चापलूस हो।'

'यह भी सही।'

'तुम ढीठ हो।'

'यह भी सही।'

स्निग्धा के लिए घर उसकी व्यक्तिगत विजय का सूचक है। ड्राइंग रूम में मद्रास से लाकर पचास ब्रास पीसेज रख दिए हैं। उसे दक्षिण भारतीय वातावरण बहुत पसन्द है। कांजीवरम् की साड़ियाँ लाजवाब सिल्क की हैं। कितनी सस्ती हैं। छः सौ से कम की एक भी साड़ी नहीं है किसी भी स्टोर में। उसके पास खूब पैसा रहता है, कैसे कहाँ से जमा कर लेती है वह। मुझे प्रायः कहती है, 'घर के बजट पर नियंत्रण रखती हूँ।' अवश्य ही नियंत्रण रखती है। कभी बची हुई सब्जी के पराँठे नाश्ते में मिलते हैं तो कभी आमलेट, सेंडविच, मक्खन गायब, जेम गायब। बचे चावल को फ्राइड बनाना, उन्हें सरसों के तेल में फ्राई करना,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्याज और लाल मिर्च में तेल को हल्का गर्म करना—यह सब वीणा ने कभी नहीं किया। बचे चावल में बेसन मिलाकर उनके पकौड़े बनाना, सूखी ब्रैंड के पटाटो रोल बनाना। उर्द की 'टेस्टी दाल,' बनाना (यह टेस्टीदाल दाल का नाम करना हो गया है।) रातभर दाल को भिगोना, फिर सिल-बट्टे पर पीसना, फिर उसे सूखा फ्राई करना और फिर पानी डालकर उबालना। काले रंग की यह दाल अच्छी लगती है, विशेषकर चावल के साथ अच्छी लगती है। एक दिन कह रही थी कि मूंग की दाल की बरफी बनाने के लिए उसमें बराबर घी डालना पड़ता है। यह सही है कि वह खाने का सारा सामान घर पर बना लेती है। मठरी, समोसे, शक्करपारे, गुलाब जामुन सब बनाना जानती है। उसे किसी भी चीज को फेंकना या बर्बाद करना अच्छा नहीं लगता। पके बीज वाले खीरों का रस निकालकर मुँह पर लगाने के लिए बोतल में रख लेती है। आलू के रस का कोई सौन्दर्य प्रसाधन बनाती है। घर पर फेशियल, बलीचिंग, बैकसिंग, थ्रैडिंग सब कर लेती है। मुँहासे निकल आएँ तो उन पर चन्दन का पाउडर मुझे भी लगा देती है। चावल भिगोकर, पीसकर उसका लेप मुँह पर करती है। रात को एक चम्मच मलाई-दूध की मलाई मुँह पर मलती है। मुँह और बाँहें दूध से धोती है। रात को उसके चेहरे पर लगी मलाई की गन्ध बिस्तर में मुझे किसी दूध बेचने वाली अहीरन का प्रेमी होने का अहसास कराती है।

इस प्रकार, यह सब करके वस्तुतः वह बचत करती है। बचत के पैसे से साड़ियाँ खरीदती है।

उसका ब्रास की मूर्तियाँ खरीदने का शौक कुछ खर्चीला है। वर्ष में एक बार दक्षिण भारत जरूर जाती है।

उस दिन स्निग्धा ने कहा था, 'तुम अगर अपनी पहली पत्नी के साथ थोड़ा अच्छा व्यवहार करते, उसकी त्रुटियों के लिए उसे जलील न करते, क्षमा कर देते अथवा प्रौढ़ता का रवैया अपनाते तो शायद तुम्हारा जीवन एक अच्छे आदमी का जीवन होता।'

'यानी मैं अब बुरा आदमी हूँ ?'

Funding by IKS-MoE

'नहीं, यह बात नहीं है। वीणा को तुमने अपराधी बना दिया, उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपनी नजरों में अपराधी, वीणा का एक मात्र अवैध सम्बन्ध तुम्हारे व्यवहार के प्रति प्रतिक्रिया थी। पापभावना के कारण वह तलाक के लिए भी सहजता से मान गई। मेरा तुम्हारे प्रति आकर्षण एक चाहना के कारण था और मेरा वह निर्णय उस समय सही था। तुम्हारे प्रति मेरी पूर्ण धारणाएँ भी नहीं थीं।'

'अब चाहना और पूर्ण धारणाओं के अभाव को क्या हुआ ?'

'कुछ नहीं। मैं तो नहीं बदली। मैं यह मानूंगी कि प्रारम्भ में जो तुम्हारे प्रति मुझमें था—श्रद्धा, प्यार, चाह, तुम्हारे प्रति स्तुतिपूर्ण विश्वास, वह अब बदले हुए स्वरूप में है जरूर, वह मरा नहीं है। मैं तुम्हारे प्रति शारीरिक रूप से खिची थी, वह कभी भी अलौकिक या अप्राप्य नहीं था। अब भी नहीं है। तुम्हारा वीणा के प्रति या मेरे प्रति रुख दूसरी तरह का है !'

'हाँ, मैं औरत को एक कलाकृति मानता हूँ। दर्शनीय, उपभोग्य, प्राप्य, अधिकार में रखने के काबिल। सौन्दर्य को भी स्वीकारता हूँ। परन्तु मेरी कल्पना की औरत मुझे आज तक नहीं मिली।'

'कैसी औरत ?'

'ऐसी औरत जो पूर्ण होती। जिसे देखकर मैं वासनामय—सर्वांगीण प्रेम में खो जाता। जो शक्तिशाली होती। जो मुझे अपने अधिकार में रख सकती। मेरा और उसका जीवन के प्रति दृष्टिकोण व्यक्तिगत होते हुए भी कहीं ठोस आधार पर मेल खाता। मेरे आशावादी रूप को वह सन्तुलित कर देती। मुझे उस औरत के पास आकर लगता कि मैं घर में हूँ। उसके और अपने घर में !'

'हुँ—और ?' स्निग्धा कहती है।

'मेरी-तुम्हारी शादी जल्दबाजी में हुई। वीणा भी मेरी जिन्दगी में जरूरत से ज्यादा देर रह चुकी थी, उसे जाना ही था, हमारे सम्बन्ध का आधार जो नहीं था। मैं अपने को जानता हूँ। तुम्हें जल्दबाजी में ब्याह लिया, पर उसके लिए मैं पछता नहीं रहा हूँ। तुम्हारे साथ सुख पाने का मुझे अच्छा अवसर मिलेगा, यह निर्णय तुम्हें देख-परखकर लिया था। यदि हम शादी न करके अपने रोमांस को लम्बा चलने देते तो शायद

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हम दोनों और ठोस निर्णय कर सकते थे।'

'पर जब हम दोनों ने निर्णय लिया तो हम बच्चे या किशोर तो नहीं थे। हमारा निर्णय आवश्यकतानुरूप समयानुकूल था।'

'मैं तो यह मानता हूँ कि संसार में एक-दूसरे के लिए निर्धारित जीवनसाथी मौजूद रहते हैं, परन्तु हम उन्हें जल्दबाजी में ढूँढ़ नहीं पाते, सब गलत रिश्तों में बँधकर मजबूरन घर की चक्की चलाते हैं। वस्तुतः औरत जो अंग्रेजी में बैटरहाफ कहलाती है, विवाह के बाद बैटरहाफ बनती है, जबकि उसकी मौजूदगी पहले से है। हम किसी दूसरे का बैटरहाफ चुन लेते हैं, वह हमारे लिए बना हुआ नहीं होता, हम उसके साथ जिन्दगी भी काट देते हैं।'

'हाँ, दिस इज इन्टरस्टिंग।'

"अब देखो, कुछ पुरुषों में महिलाओं-जैसी नजाकत होती है, कुछ स्त्रियों में पुरुषों-जैसी शोखी। अब पुरुष गुणप्रधान महिला और अतिशय पुरुष गुणयुक्त पुरुष विवाह सूत्र में अच्छे नहीं रह सकते—वे असफल होंगे। जो औरत अतिशय महिला गुणों से भरी है उसके लिए ज्यादा प्रभावी पुरुष पति-रूप में सही होगा। परन्तु मुसीबत यह है कि हम इस सत्य को कहाँ-कहाँ ढूंढ़ें, खोजें—बस हम परिस्थितियों के आगे झुक जाते हैं।'

'मुझे तुम क्या समझते हो ?'

'सैक्स के प्रति तुम सजग नहीं हो। परन्तु हमारा विवाह अनमेल भी नहीं है। मैं तुम्हारी सैक्स की आवश्यकता समझता हूँ। हमारा सम्बन्ध अपने में अधिक सुलझा हुआ नहीं है !'

'पर मैं असंतुष्ट हूँ।'

'यह धारणा है तुम्हारी। प्रत्येक सम्बन्ध में यौन समस्याएँ आती हैं। फुलफिलमैंट या असंतुष्टि स्वाभाविक गलतफहमी। मैं भी तुमसे काफी कुछ चाहता हूं जो मुझे नहीं मिलता। ओरल सैक्स या लीक से हटकर सैक्स भी जिन्दगी की जरूरत है।'

'तो क्या तुम मेरी त्रुटियों के कारण इधर-उधर मुंह मारते हो ?'

Funding by IKS-MoE

'इस विषय पर मैं अधिक व्यक्तिगत नहीं होना चाहता। तुम्हें मैं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपनी पत्नी-रूप में खोना नहीं चाहता—यह पर्याप्त है। मैं दूसरी औरतों की बात तुम्हारे प्रति अन्याय मानता हूँ। मैं झूठ भी नहीं कहूँगा। मुझमें कमजोरियाँ रही हैं।'

'मुझे सैक्स की और लालसा रहती है।'

'इसका कारण शायद बच्चे जन्मने के बाद तुम्हारे यौन अंग की मेडीकल देखभाल न हो सकना हो। किसी लेडी डाक्टर से मिल लो।'

'शायद !'

'देखो स्निग्धा, इन सम्बन्धों में पति-पत्नी को खुलकर चर्चा करनी चाहिए। मुझे कहीं लगता है कि तुममें एक कुण्ठा उत्पन्न हो रही है। यह पति-पत्नी सम्बन्धों से उत्पन्न कुण्ठा है। हमें इन सम्बन्धों की त्रुटियों के बारे में ईमानदारी से सोचकर हल निकालने चाहिए। यौन का आनन्द हमें स्वेच्छा से, शारीरिक और मानसिक स्वच्छन्दता से जीना चाहिए। समस्त शिष्टाचारों को भूलकर एक-दूसरे से कुछ सीखना चाहिए।'

'वैसे मैं पुस्तकों में काफी कुछ पढ़ती हूँ परन्तु तुमसे कहते एक हिचक-सी होती थी। आज कह दिया।'

'मैं समझता हूँ। तुम शायद नये सिरे से पत्नी का रोल अदा कर सकोगी। बिना किसी हिचक, सन्देह या बन्धन के। मुझ पर भरोसा रखो। कुछ देर मैं चुप रहता हूँ, सिगरेट पीता हूँ और सोचता हूँ कि सैक्स विवाहित जीवन का केन्द्र है। विवाहित जोड़े प्रेमी की तरह आचरण करें, एक-दूसरे को विश्वास से भर दें। पति का कर्त्तव्य है कि वह अपने जीवन में पत्नी को महत्त्वपूर्ण माने, नौकरी कामकाज से भी महत्त्वपूर्ण। मैं स्निग्धा से कहता हूँ, 'मैडम, हम दोनों का कर्त्तव्य है कि एक-दूसरे की भावनाओं की कद्र करें और अपने प्यार के क्षणों को एक-दूसरे को सौंप दें।'

स्निग्धा कहती है, 'मेरे और तुम्हारे शिक्षा स्तर में कोई अन्तर नहीं है। हमारे व्यक्तिगत शौक भी मूलतः पृथक् नहीं हैं।'

'मानता हूँ, परन्तु बच्चे हो जाने के बाद, घर का ख्याल रखते हुए जिस रुटीन में तुम बँधी हो, उससे सम्वादहीनता उत्पन्न हो गई थी। मैं

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसी को तोड़ने का प्रयास कर रहा हूँ।'

'देखो, मैं अलग वातावरण में पली हूँ। लखनऊ में वकालत की है, पुरुषों का पेशा किया है। पुरुषों के बौद्धिक स्तर से मैं नीचे नहीं रही। सामान्य ज्ञान, राजनीतिक विषय, देश-विदेश के समाचार मेरे लिए रुचिकर थे। तुम्हारे पास आकर सब छूट गया। तुम्हारा जीवन वेदस्तूर है। दफ्तर जल्दी जाते हो, शाम देर से लौटते हो। घर पर शाम नहीं बिताते। शराब या क्लब तुम्हारे लिए जरूरी हैं। मेरे और तुम्हारे बीच बौद्धिक दूरी है।'

'तुम यहाँ वकालत क्यों नहीं शुरू कर देतीं!'

'मैंने इस पर सोचा था। वह ठीक नहीं रहेगा। पर मैं घर पर बैठकर भी बोर होती हूँ। मैं बिजनैस करना चाहती हूँ।'

'क्या करोगी?'

'इन्डस्ट्री लगाना चाहती हूँ।'

'कुछ सोचा?'

'तुम हाँ कहो तो गम्भीरता से सोचूंगी।'

'फिलहाल कुछ समाज-सेवा या राजनीतिक सम्पर्क बनाओ।'

'दिल्ली मेरे लिए नया शहर है।'

'मैं कुछ लोगों को जानता हूँ, उनसे परिचय करवा दूंगा। पहले सोशल क्षेत्र पकड़ो। मेरे दफ्तर में काम करोगी?'

'अच्छा काम होगा तो कर सकती हूँ।'

'मैं बोर्ड आफ डायरेक्टर से बात करूँगा। कुछ महत्वपूर्ण पद खाली हैं। तुम्हारे बारे में पूछूँगा।'

स्निग्धा के चेहरे पर मैं एक नये प्रकार का उल्लास देखता हूँ।

मेरी डायरी और सपने हमेशा मेरे साथ रहे हैं। जो मैं नहीं हूँ, वह विचारों में हो जाता हूँ। कभी-कभी लिखता हूँ···तब लिखा था—अपना

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिसमें अपने संजोए हुए, संकलित किए हुए, संगृहीत अतीत को तुम्हारे संसर्ग के साथ बाँधकर आज में बदल चुका हूँ, मैं जानता हूँ तुम कहोगी कि तुम स्वतन्त्र नहीं हो मेरे वर्तमान में जुड़ने के लिए। मुझे मालूम है, तुम कहोगी,'विवाहित हो', फिर मैं यह भी तो जानता हूँ कि यह सब होते हुए भी तुम आज यहाँ आई हो। मुझे मिलने। मुझे जिसने अपने पूरे अतीत में अपने जीवन के साथ जोड़े रखा, जिसे तुमने इस जीवन की मुख्यधारा से कटे पहले के जीवन में अपनी जीवन-यात्रा में एक साथी बनाने के लिए सब कुछ किया। माँ-बाप, घर-इज्जत सब कुछ छोड़ दिया। पहली बार बहुत वर्ष पूर्व जब तुम मुझे मिली थीं तो मैं एक सार्वजनिक पार्क में गुलाब के पौधों का सौदा कर रहा था। गुलाब के फूलों का नहीं, मैंने माँगा था पीले रंग का शोख पीला गुलाब का पौधा और वही था रंग तुम्हारी पहनी हुई साड़ी का। माली ने कहा था, 'साहब पीला कई प्रकार का होता है।' मैं बोला था, 'कुछ ऐसा ही पीला लेमन यैलो थोड़ा पेल यैलो, जैसा मेम साहब की साड़ी का रंग है।' तुम मन ही मन मन्द-मन्द मुस्कराकर डहेलिया के ऊँचे पौधों के पास चली गयीं। मैंने तुम्हें पहले भी देखा था, कई बार देखा था, पर यह नहीं सोचा था कि तुम्हारे पीले रंग की साड़ी का गुलाब मेरे जीवन की एक अतिरिक्त, अपूर्ण भावना को आज तुम तक ले आएगा। पर मैं अपने गुलाब का पौधा लेकर जब वहाँ से चला था, तुम्हीं ने कहा था, 'सुनिए आपको पीले रंग के गुलाब बहुत पसन्द हैं।' मैंने कहा था, 'हाँ, मुझे पीले रंग के गुलाब बहुत पसन्द हैं।'

'आप इन फूलों को कितना प्यार करते हैं ?' तुमने पूछा था। मैंने कहा था, 'प्यार ? प्यार मैं इन फूलों से नहीं करता, बस इन्हें देखता हूँ। अपनी आँखों को एक तृप्ति देने के लिए।'

तुम बोली थीं, 'कभी आप हमारे यहाँ आइए, हमारे यहाँ खूब गुलाब हैं, पीले, बहुत सुन्दर गुलाब। आपको उनमें से जो गुलाब पसन्द आ जाए आप ले जाइए।' तुमने अपना पता दिया था मुझे। दो माह बाद या कुछ दिन बाद मैं तुम्हारे घर के बाहर गेट पर रुका था। अपनी पुरानी फीयट कार का एक हार्न बजाते ही दरवाजा खुल गया था, दरबान ने सिर्फ मेरा नाम पूछकर मुझे भीतर जाने दिया था। और वह बोला था, "साहब,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आप गुलाब लेने आए हैं ?'

'हाँ, पर तुम्हें किसने बताया ?'

'मेम साहब ने कहा था कि कोई साहब कभी गुलाब लेने आएँ तो उन्हें भीतर भेज देना।'

'मेरे सामने तुम आई थीं। अब की पीली साड़ी नहीं थी। बैंजनी रंग की स्कर्ट पहने हुए। स्कर्ट नहीं, शायद कुछ आधुनिक-सा लिबास पहने हुए। मैं तब लिबासों के बारे में अधिक नहीं जानता था, इसीलिए शायद याद भी नहीं रहा। मुझे तुमने बैठने को या भीतर चलने को नहीं कहा था, सीधे कहा था, 'आइए न, आपको गुलाब दिखाती हूँ।'

'हूँ' मैं तुम्हारे साथ हो लिया था। तुम्हारे बगीचे के खूबसूरत गुलाबों को देखकर मेरा मन बहुत खुश हुआ, मैंने तुम्हें कहा था, 'अरे आपने मुझे अपना नाम तो बताया ही नहीं, गुलाब को अगर गुलाब···लेने आए हैं, मेरे गुलाब लेने आए हैं, मेरे नाम से क्या है ?'

मैंने कहा था, 'हर फूल का नाम होता है, हर गुलाब का नाम होता है। तुम्हारा भी नाम तो होगा ही।'

'फिर कभी बताऊँगी, फिर सही, आज तो आप गुलाब ले जाइए। देखें।' गुलाबों को जिस तरतीब से लगाया हुआ था, उसे देख मैंने चाहा कि उमर भर गुलाबों की खेती करता रहूँ। तुम्हारे···यानी तुम मुझे पूछ रही थीं आपको कौन-सा पौधा पसन्द है, बताइए, मैं निकलवा दूंगी, माली ठीक से निकाल देगा।'

'नहीं आज नहीं, फिर कभी ले जाऊँगा, आज तो मैं पीले गुलाब देखने आया था।'

'हूँ, आप सचमुच गुलाब देखने ही आए हैं ?'

'जी हाँ, जो गुलाब मुझे पसन्द है, वह मुमकिन है उसे देने की सहमति सिर्फ आप ही नहीं दे सकतीं, आपके घर वालों की सहमति भी आवश्यक है।'

'मैं समझी नहीं कि आप क्या कहना चाहते हैं ?'

'अरे आप बिल्कुल नहीं समझीं। खैर आज तो मैं उस गुलाब को सिर्फ देखने ही आया हूँ, उस गुलाब को जिसे मैं लेना चाहता हूँ।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'आप बुझारतें बुझा रहे हैं।'

'जी नहीं, मैं पहेलियाँ बुझाने पर विश्वास नहीं रखता।'

फिर तुमने कहा था, 'आइए न, भीतर चलते हैं।' मैं तुम्हारे साथ भीतर चला गया। भीतर तुम्हारी माताजी ने स्वागत किया था। उनकी आँखों पर काले फ्रेम का नजर का चश्मा, उनके सिर पर सफेद धोती, माथे से सटी हुई। चूड़ियों से विरहित हाथ। मैं देखकर कुछ क्षण स्तब्ध रहा। वे मुझे बैठाकर भीतर चली गईं। तुम्हीं ने कहा था, 'देखिए, हमारे पिताजी तो रहे नहीं, माँ हैं, मेरे दो भाई हैं। मैं माँ के पास रहती हूँ, भाई बाहर नौकरी करते हैं, हमारी पुरानी अपनी जमीन-जायदाद है, माँ को पेंशन मिलती है !'

मैं चुपचाप सुनता हूँ। तुम पूछती हो, ''अरे ऐसा क्या हो गया जो आप इस तरह उदास हो गए !'

'नहीं, ऐसा कुछ नहीं है।' मैं कुछ सोच रहा था। तुमने कहाँ था, 'तुम जो सोच रहे थे वह मैं जानती हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम्हारा गुलाब मैं हूँ।' और मैं खामोश, देखता रहा तुम्हारे ड्राइंग रूम की दीवारों को और एक दीवार पर उभरी हुई दीमक द्वारा बनाई भूरे रंग की मिट्टी की लकीर देखता रहा। दीमक दीवार की आकृति को बदलने की कोशिश कर रही थी।

कुछ देर वाद तुम्हारी माँ चाय लेकर आईं। उन्होंने कहा था, 'बेटा, सुना तुम बहुत बड़े अफसर हो ?'

'पर आप कैसे जानती हैं ?'

'मेरी बेटी ने बताया था !'

'आपके यहाँ अपने बच्चों का नाम नहीं लिया जाता।'

'अरे, आपको इसका नाम नहीं मालूम ! क्यों बिन्दु, तुमने इन्हें अपना नाम नहीं बताया ?'

'माँ, कभी नाम बताने की फुर्सत नहीं मिली। और आप…' माँ कहती हैं, 'क्या आपके नाम के साथ कोई जाति नाम नहीं है !'

'है, मैं अनाम हूँ ?'

'अनाम क्यों ?' Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'मेरा न कोई है, न कोई होगा, मैं इस विश्व में अकेला हूँ।'

'क्यों, ऐसा क्यों है ?'

'एक बहुत लम्बी कहानी है माँजी। उस कहानी को बिना कहे छोड़ा जाए तो बेहतर होगा।'

बिन्दु बोली थी, 'लगता है आपका अतीत बड़ा बोझिल रहा है।'

'नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है,' मैंने तनिक हँसते हुए कहा, 'मैं अपने जीवन में एकाकीपन में जी रहा हूँ। और यूँ ही बिन्दु ने गुलाब दिखाने बुलाया था, चला आया।'

'बेटा एक बात कहूँ, क्या तुम शादी करना चाहते हो ?'

'हूँ।'

'क्या कोई लड़की देखी है ?'

'अभी तो नहीं !'

'मैं अधिक तो नहीं कहूंगी, यदि तुम्हें बिन्दु पसन्द है तो मुझे कोई एतराज नहीं है।'

'माँ, इतनी जल्दी फैसला नहीं करना चाहिए। आप मुझे नहीं जानतीं, मैं कौन हूँ, क्या हूँ, कहाँ से आया हूँ। कहाँ जा रहा हूँ। क्या करूँगा, कैसे रहूँगा ? आप सोचती हैं कि मैं आपकी बेटी को सुखी रख सकूँगा ?'

'हाँ बेटा, हर माँ की इच्छा होती है अपने बच्चों को सुखी देखने की। मुझे विश्वास है, तुम दोनों सुखी रहोगे।'

'मैं कभी किसी को सुख नहीं दे सकता। किसी को नहीं माँ। मेरे भाग्य में सुख नहीं लिखा है।'

'तुम इतने कटु क्यों हो ?'

'मेरे हाथ में विवाह की लकीर नहीं है और मैं इस तरह अपने हाथ की लकीरों पर विश्वास करने लग गया हूँ कि कभी-कभी मुझे लगता है कि मेरा सारा जीवन एक लकीर है।'

'इन चीजों पर विश्वास नहीं पालने चाहिए।'

'माँ नहीं, यह बात नहीं है। मेरे हाथ में माँ-बाप, भाई-बहन किसी की लकीर नहीं है। मेरे भाग्य में सिर्फ धन, दौलत, यश की लकीर है। मेरे भाग्य में अकेलेपन की लकीर है, मेरे भाग्य में अपने जीवन के साथ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खिलवाड़ करने की लकीर है। मेरे भाग्य में भटकने की लकीर है।'

'नहीं बेटा, ऐसा मत कहो। थोड़ी चाय लो, मैं बना लाती हूँ।'

'हाँ, प्लीज। कुछ हल्की चाय पिलाइएगा।' वे उठकर चली गई थीं। तुमने कहा था बिन्दु—'मुझे आपकी कहानी तो अपनी कहानी से भी ज्यादा दर्दनाक लगी।'

'बिन्दु, यह ठीक है कि मेरी कहानी तुम्हें दर्दनाक लगी। पर यह भी सही है कि मेरी कहानी मेरी अपनी कहानी नहीं है।'

'क्या मतलब ?'

'मतलब यही कि मैं अपनी कहानी खुद नहीं हूँ। मेरी हर कहानी दूसरों की कहानी है।'

'आप बहककर अपनी एक ही बात दुहरा रहे हैं।'

'मैं दुहरा नहीं रहा हूँ, मैं अपनी कहानी में तुम्हारी कहानी जोड़कर एक और कहानी बनाना नहीं चाहता।'

'यानी ?'

'यानी क्या ? एक सपना था मेरा कि लिखता रहूँ—लिखता रहूँ, लिखता रहूँ। हर गीत, हर छन्द, हर शब्द, हर वाक्य मेरा अपना हो और उसके साथ-साथ मैं एक नया विश्व बनाऊँ। जानती हो मैं क्या चाहता हूँ ? बहुत कुछ चाहता हूँ। तुम शायद सोच भी नहीं पाओगी कि मैं इस देश का प्रधानमन्त्री बनना चाहता हूँ। मुझे लगता है मैं गलत सोचता हूँ। प्रधानमन्त्री बनना इतना आसान होता है क्या ? मैं पागल हो रहा हूँ।'

'नहीं, मुश्किल भी नहीं है। अगर एक इन्सान एक विशेष उद्देश्य लेकर जी रहा है, उसकी प्राप्ति के लिए सतत् परिश्रम कर रहा है, वह कुछ भी बन सकता है।'

'मैं मानता हूँ उद्देश्य की प्राप्ति होती है, पर अगर मैं शादी कर लूं, अपने को बन्धन में बाँध लूं तो उस रास्ते पर चलने में मुझे दिक्कत आ सकती है जिस रास्ते पर मैं चलना चाहता हूँ।'

'यह आपका सोचना है। पर मैं गलत नहीं सोच रही हूँ ?'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'मैंने कब कहा कि आप गलत सोच रही हैं, आपके सोचने के ढंग की बात मैंने की थी। मैंने कहा न कि मैं अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हूँ। लिखने के उद्देश्य के लिए, इस देश का नेतृत्व पाने के लिए, अपने आपको बलिदान कर देने के लिए।'

तुमने पूछा था—'क्या आप आदर्शों पर विश्वास करते हैं ?'

'नहीं बिन्दु, आदर्श-वादर्श कुछ नहीं होता। मैं तो एक बहुत छोटा इन्सान हूँ। किसी तरह शिक्षा पूरी की। मैंने अपने को स्वयं बड़ा किया। मेरे रिश्तेदारों ने मुझे अनाथ समझकर कभी भी मदद नहीं की। मेरा अतीत कट-कटकर टुकड़े-टुकड़े होकर पड़ा है।'

'आज तो आपकी स्थिति अलग है।'

'बिना पति के, बिना सन्तान के मैं मृतप्राय हूँ। माँ भी कहती हैं। तुम निर्णय क्यों नहीं करते ?'

'मुझ पर निर्णय थोपा तो नहीं जा सकता ? मैं अपने जीवन में कुछ विशेष उद्देश्य लेकर चल रहा हूँ। उसकी प्राप्ति जरूरी है !'

'यानी जब तक आप प्रधानमन्त्री नहीं बन जाते, आप शादी नहीं करेंगे।'

'नहीं, मैं इतना उथला नहीं हूँ। तुम्हारे साथ भावनात्मक सौदा नहीं किया है। शरीर के उपभोग की आवश्यकता से कभी इनकार नहीं किया जा सकता परन्तु विवाह एक जीवन-पद्धति है। लेखन के प्रति प्रतिबद्धता के कारण भी कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझमें क्रियाशील नपुंसकता आ रही है।'

'शायद आप शरीर-भोग की जिम्मेदारियों से बचना चाहते हैं ?'

'हाँ बचना चाहता हूँ, परन्तु इसका कारण भी है !'

'बताओ !'

'मैं विवाहित हूँ।'

'पहले क्यों नहीं बताया ?'

'छिपाना चाहता था !'

'क्यों ?'

Funding by IKS-MoE

'क्योंकि मैं सोचता था, मैं अपनी पत्नी को प्यार नहीं करता।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'मुझे धोखा क्यों दिया ?'

'मेरे पास इसका उत्तर नहीं है !'

'माँ को बता दूं !'

'उन्हें ठेस लगेगी ।'

'तुम्हारे अकेले होने की कहानी...'

'झूठी है।'

'मुझे तुमने तबाह कर दिया।'

'कह नहीं सकता।'

'गुलाब का बहाना...'

'वह सच है, मैं गुलाबों से प्यार करता हूँ।'

'मुझे !'

'तुम्हें भी प्यार करता हूँ।'

'फिर अपने को धोखा दे रहे हो ?'

'नई जिन्दगी चाहता हूँ ।'

'फरेब, झूठ और दूसरे से खिलवाड़ करने की जिन्दगी ?'

'नहीं, स्पष्ट जीवन जीने की जिन्दगी !'

'क्या ?'

'तुम्हें अपना बनाना चाहता हूँ।'

'तुम एक गिरे हुए इन्सान हो ।'

'नहीं सिर्फ विवाह से अलग रिश्ते स्थापित करने से इन्सान नहीं गिरता।'

'गिरना और क्या है ?'

'तुम क्या चाहती हो ?'

'मेरा तुम्हारा आज के बाद कोई रिश्ता न रहे !'

'सोच लो !'

'सोच लिया है। मेरी अपनी गलती थी !'

मैं आ गया था और हमारे उस रिश्ते का एक-दो महीने में ही अन्त हो गया। वीणा तब मेरी पत्नी थी और उसे तलाक देने की बात तब मन में थी। हमारी शादी हुए कुछ ही महीने हुए थे—मुझे अपने चरित्र पर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अविश्वास था। बिन्दु जिन्दगी से कट गई। शाख से गुलाब टूटकर गिर गया, पाँखों को जोड़ना सम्भव ही नहीं।

'जी हाँ, स्थिति अलग है। मैं जीने के साधनों से रिक्त नहीं हूँ। कहानी बेचकर, कविता बेचकर, किताब लिखकर, कविता पढ़कर, मंचों पर दूसरों के लिए अपने हर आदर्श को बेचकर रोटी कमाई है। मैं राजनीतिक झूठ लिखकर भाषण घड़ता था। राजनीति से वड़ा झूठ और कुछ क्षण नहीं है। मैं अपने पूरे अस्तित्व को झूठ पर टिका चुका हूँ।'

'आप बहुत मनोरंजक बातें करते हैं ?'

'मैं, बिन्दु, मनोरंजक बातें करता हूँ, यही कारण है कि आज मैं तुमसे तुम्हारी जिन्दगी का गुलाब माँगने आया हूँ। शादी करोगी मुझसे ?'

'सोचा नहीं !'

'मुझे एक नया झूठ घड़ने की आज जरूरत है। तुम्हें प्यार करने को।'

'और भी रोचक बात हो गई है, आप तो…'

'हाँ बिन्दु, मैं तो…मैं तुम्हें एक छोटी-सी बात कहना चाहता हूँ। तो क्या तुमने अपने चेहरे को गुलाबों में छिपाकर देखा है ?'

'ऊँ हूँ !'

'कभी देखना। मैं हर सुन्दर चेहरे को गुलाब की पाँखों में सजाकर देखना चाहता हूँ।'

'यह तो कवियों की कल्पना की बातें हो रही हैं।'

'मैं कवियों की कल्पना की बातें कर रहा हूँ। न ! तुम्हारे इन आरिज को, तुम्हारी मुस्कराहट को, तुम्हारे सौन्दर्य को छूकर, चखकर जब तक देख नहीं लूँगा तो…'

'तो क्या ? तुम मुझे छूना चाहते हो ?'

'मैं तुम्हें छूना नहीं चाहता, मैं तुम्हें छूना नहीं चाहता, छूना नहीं चाहता, पर मैं यह चाहता हूँ कि तुम्हारे गुलाब के ओठों की पाँखों में, मैं चाहता हूँ, अपनी साँसों के प्रतिबन्ध जोड़कर देखूँ कि खुशबू की महक तुम हो या ये फूल जो खिले हैं, अनायास मुरझाने के लिए या तुम्हारी तरह जिन्दगी का प्यार पाने के लिए।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'सुनो, मैं तुम्हें कुछ कहना चाहूँगी।'

मैं कहता हूँ, 'आज नहीं, अगली बार।' और तुम्हारी माँ द्वारा लाए गए चाय के दूसरे प्याले को पीकर मैं अचानक उठकर चला आया था।

गुलाब के पौधों को लाने-ले जाने का चक्र शुरू हो गया। बिन्दु को फिर पीले रंग का फोबिया सवार हो गया। बिन्दु मुझे एक लेखक के रूप में जानती है। बागवानी का बहुत शौक था। नया-नया। बिन्दु के साथ शादी का वायदा तो नहीं किया परन्तु मेरी दूसरी विजिट से ही सैक्स का रिश्ता शुरू हो गया।

'हर औरत एक माँ बनना चाहती है। वह घर, बच्चे और अपना संसार चाहती है।' बिन्दु ने कहा था।

'हाँ यह सही है, जब तक कोई औरत माँ नहीं बन जाती तब तक वह एक बच्चा बनी रहती है। जब तक सन्तान न हो विवाहित व्यक्ति अकेले हैं, वे परिवारहीन हैं। सन्तान न होना एक अभिशाप है।'

'तुम मुझे सन्तान क्यों नहीं देते ?'

'सन्तान के लिए विवाह जरूरी है और अभी तक मैं विवाह पर निर्णय नहीं कर पाया हूँ।'

तुम हरी घास पर बैठी थीं। अचानक मेरे वहाँ आ जाने से उसने नजरें ऊपर उठाईं, मुझे देखा और फिर आँखें झुका लीं। कुछ क्षण मैं चुप रहा, मैंने चाहा कि कुछ न कहूँ लौट जाऊँ, फिर अचानक मेरे मुँह से निकला, तुम मुझसे नाराज थीं न, बहुत साल पहले, मुझे मालूम है, बहुत साल पहले की वह कहानी मुझे मालूम है। मैं दूर, बहुत दूर चला गया था। और मैं जानता था कि तुम मेरी प्रतीक्षा करोगी, इसी तरह, तुमने चाहा था कि मैं एक बहुत बड़ा लेखक बनूं, देश-विदेश में मेरी शोहरत हो, मेरा साहित्य जन-मानस पर छा जाए, मेरे एक-एक शब्द में जीवन का वह गीत भरा हो जो जागृति, देश-प्रेम, भ्रातृत्व की भावना से पूर्ण हो।

पर वर्षों बाद मैंने तुम्हें आज जब देखा, जानती हो क्या सोचने लगा—तुम अब भी चुप हो, कुछ नहीं कहना चाहती हो। जानती

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हो एक बार मैंने कहा था—मेरी आवाज में इतनी ताकत है कि मैं संगमर्मर की मूर्ति में जान डाल सकता हूँ। तुम एक मूर्ति बनकर वहाँ बैठ गई थीं और जिद्द करने लगी थीं कि अगर मैं तुम्हें हँसा दूँ तो तुम मेरी बात सच मान लोगी।

पर जानती हो क्या हुआ था—मैं कुछ भी कहते-कहते खामोश हो गया था। फिर अचानक मैंने कहा था कि कहीं दूर, कहीं दूर अगर मैं चला जाऊँ तो यह सफेद संगमर्मर की मूर्ति अगर यहाँ बैठी होगी, तो मुझे विश्वास है कि वह मूरत मुझे मुड़कर जरूर देखेगी, जानती हो मैंने क्या किया ? मैं उलटे कदम आगे हटने लगा। अचानक तुम हिलीं और मैंने कहा 'देखा, देखा मैंने संगमर्मर की मूर्ति में जान डाल दी है।' और तुम खिलखिलाकर हँस पड़ीं और कहने लगीं 'मैं सोच ही नहीं सकती थी कि तुम इस तरह की बात करोगे' और फिर तुम्हीं ने तो कहा था मुझे—साहित्यकार बनना बहुत कठिन होता है। और मैं तो बन ही चुका था साहित्यकार। और वर्षों के अन्तराल के बाद आज सारी दुनिया से दूर तुम्हारे तक फिर लौट आया हूँ। हुँ—और तुम—क्या तुम अपने अतीत को काट पाई हो ? नहीं न ! तुम्हारी इस बेजुबानी ने मुझे यह बताया है कि···तुम···तुम जब मेरी आवाज में खो जाती थीं तो मैं अपने जीवन को भीतर, बहुत भीतर तक खोजने की कोशिश करता था। तुम्हें याद है तब तुमने क्या कहा था ? रेल की दूर तक फैली हुई पटरी को देखकर तुमने कहा था न कि पर्वत के ऊपर चमकती हुई बर्फ के समानान्तर चलती रेल की इस पटरी के समीप एक घर बनाऊँगी, उसकी खिड़की में खड़े होकर रोज बर्फ को देखूंगी और धूप से जेठ महीने की दोपहरी को, पिघलते हुए धूप के साए में पिघलती हुई बर्फ को देखूंगी और देखूंगी बर्फ के बदलते हुए रंगों को, धूप के साथ-साथ चमकती हुई अपनी जिन्दगी को।

और तुम्हीं ने तो कहा था···कि मेरे जीवन की हर कमी को तुम पूर्ण कर दोगी। मैंने उसी पूर्णता की तलाश में आज तक किसी और से प्यार नहीं किया। अपने जीवन को कल्पना की एक मूर्ति के प्यार में खो दिया।···मैं सोच भी नहीं पाता कि क्या हो रहा है···तुम खामोश

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हो, बोलना नहीं चाहती हो···क्या मेरी मौत के बाद तुम्हें सुख मिलेगा ? उफ्···तुमने कहा था—तुम्हारी मौत के बाद मुझे क्या सुख मिलेगा, यह मैं नहीं कह सकती, पर तुम्हारे जीतेजी मुझे जो सुख मिला, उसके बारे में कह सकती हूँ···शायद तुम कहोगी—मैं तुम्हें छोड़कर चला गया था ···मैंने तुम्हारी भावनाओं के साथ, तुम्हारे दिल के साथ अत्याचार किया है। यह भी कि मेरे सिवाय तुम्हारे मन में एक क्षण के लिए भी दूसरा नहीं आया। पर मैं कह सकता था कि तुम क्षण को महत्त्व देती हो, मैं युग पल तक किसी और को इस दिल में न ला पाऊँगा। तुम्हें ज्ञात है ये वर्ष मैंने कैसे गुजारे ? युगों में मर-मरकर, इन्हें नाप-नापकर मैं आज इस किनारे तक आया हूँ—जहाँ सागर तो है, उसकी लहरें नहीं हैं। हुँ···तुम ··उस दिन···मद्रास के मरीना-सी बीच पर मेरे पैरों को स्पर्धित करती हुई लहरों को देखकर, तुम्हीं ने तो कहा था—'ये लहरें तुम्हारे पाँव से ऐसे लिपटती हैं जैसे जन्म-जन्म से ये तुम्हें अपने साथ बाँधे हुए हों।' मेरे जन्म-जन्म से उनके साथ या उनका जन्म-जन्मान्तर से मेरे साथ रहने से मालूम नहीं मुझे क्या मिला, पर तुम्हारे उस कथन से मुझे अहसास हुआ कि जीवन का विस्तार इस सागर की तरह होना चाहिए—उसकी लहरें आ-आकर लौट जाएँ, लौट जाएँ, फिर, फिर लौट जाएँ, फिर-फिर आने को लौट जाएँ—पूरी जिन्दगी एक सिल-सिला, एक क्रम बन जाए—महाबलीपुरम् में सागर के उफान के साथ-साथ पुराने मन्दिर के पीछे की चट्टानों पर बैठकर तुमने ही कहा था—जानते हो सागर की इन लहरों से चट्टानों से टकराकर जलकण मेरे चेहरे पर आकर गिरते हैं तो मुझे लगता है मुझे अमरत्व मिल गया है। जीवन की पूर्णता मिल गई है। हुँ···पानी की बूंदों से जीवन की पूर्णता पाने वाली तुम···तुम आज अपने सामने सागर पाकर कुछ सोच क्यों नहीं पातीं। मैं गम्भीर हो गया हूँ। हुँ, अपने आपको सागर समझ बैठा हूँ। खैर ! दम्भ भी तो मानव की एक प्राप्ति है—एक उपलब्धि है। मुझे मालूम है तुम्हें बोलना आता है। तुम मुझसे बोलोगी नहीं, तुम्हारी जिन्दगी की यही जिद्द, तुम्हारे जीवन की यही कमी तुम्हारी इस हालत के लिए जिम्मेदार है। मैंने उस दिन कहा था तुम्हें कि मैं यह देश छोड़-

Funding by IKS-MoE

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर कहीं चला जाना चाहता हूँ। इस देश से दूर, दूर कहीं दुनिया के दूसरे किनारे तक जाना चाहता हूँ। ध्रुवों तक जाकर उनके बर्फीले सायों में, उनकी अभृत स्थिरता से जुड़ जाना चाहता हूँ। एक बार तुमने मुझे छेड़ा था कि 'उत्तरी ध्रुव तक तुम्हीं जाओगे ?' आज मैं तीस वर्ष बाद तुम्हें यह दिखाने आया हूँ कि 'यह रहा उत्तरी ध्रुव के नीचे की, मीलों के नीचे की मिट्टी की खुदाई का टुकड़ा। यह मैं तुम्हारे लिए लाया हूँ। मैं तुम्हें सिर्फ यह बताना चाहता हूँ कि इन्सान जो चाहता है वह कर भी सकता है। ध्रुवों की मिट्टी भी वह भारत की मिट्टी के समीप लाकर रख सकता है।'

महाबलीपुरम् के उस मन्दिर में एक खामोशी को देखा था तुम्हारे भीतर, तुम सागर का गीत, गीत लगा ? मेरी कविता को तुम्हारे आँचल में जीवन दर्शन का नाम न मिल सका ? फिर भी मैंने तुम्हें अपने जीवन-दर्शन में रखा, मैंने तुम्हें अपनत्व के लिए एक शिला माना, उस शिला के बोझ को ढोने के लिए मेरे कन्धों पर सलीब नहीं था, मैं मसीहा नहीं था। मैं एक ऐसा इन्सान था जो हर तरह से जिन्दगी को जिन्दगी की तरह जीना जानता है। मैं चाहता तो तुम्हारे अतिरिक्त असंख्य दूसरी सुन्दर औरतें अपनी जिन्दगी में ला सकता था, वे आ सकती थीं। तुम्हारा अस्तित्व ही क्या था। पर नहीं, मैंने ऐसा न होने दिया। मैंने अपनी एक-एक कविता में, उसकी एक-एक पंक्ति में, एक-एक शब्द में, एक-एक अक्षर में, जीवन-दर्शन बुना। और वह जीवन दर्शन था मेरा अपने आपको भूलकर इस संसार में खो जाने का एक प्रयास।

अपनी जिन्दगी में मुझे जो मिला मैंने उसे बाँट दिया। सिर्फ एक चीज है जिसे मैं बाँट नहीं सका। वह है मेरे दिल में तुम्हारा प्यार। नहीं, बात उलटी है—तुम्हारे दिल में मेरा प्यार। मैं जानता था, मजबूरी है।

तुम चुपचाप मुझे सुने जा रही हो। मैं बोलता जा रहा हूँ। मैं अब भी चाहूँ, तुम्हारी आवाज मुझ तक आएगी, उसे सुन सकता हूँ। मुझे आभास होता है। एकान्त सागर में कोई नाविक एकाकी नाव को खेता हुआ दूर कहीं अनजाने देशों में पहुँच जाते थे, पुराने जमाने में तो

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनकी पत्नियाँ दीपक जलाकर आँचल की ओट में सागर के किनारे आकर रुक जाती थीं ताकि उनके पति या प्रेमी कभी लौटें तो उस रोशनी का सहारा लेकर उन तक पहुँच सकें। मुझे बताओ तुम—तुमने मेरे लिए कौन-सी रोशनी आज तक जलाए रखी है ? कौन-सा दीपक है जिसे आज तक तुम अपने आँचल में सँभाले हो ? कौन-सी ज्योति है जो तुमने मुझे रास्ता दिखाने के लिए दीप-स्तम्भ पर रखी है ? उफ् …मैं थक गया हूँ। मेरे माथे पर पसीना आ गया है। लगता है मैं अपनी जिन्दगी को खो देना चाहता हूँ, पर नहीं मैं एक और कहानी लिखूँगा, वह कहानी होगी तुम्हारी कहानी। सच तुम्हारी कहानी, ऐसी कहानी जिसे सिर्फ मेरे बाद तुम देख सको, पढ़ सको, तुम सुन सको, और अगर तुम्हारा अस्तित्व बना रहा तो तुम्हारे माध्यम से संसार के दूसरे प्राणी भी सुन सकें। पर ठहरो, तुम मेरी कहानी का विषय-कथ्य नहीं हो सकतीं। मैंने बहुत पहले एक बार कहा था—जिस व्यक्ति पर मैं कहानी लिखता हूँ, वह उस व्यक्ति को भूलने के लिए करता हूँ। शायद यही कारण है मैं तुम्हारे ऊपर कोई कहानी नहीं लिख सका हूँ। तुमने मुझे कहीं —याद नहीं आ रहा कहाँ…याद नहीं आ रहा कहाँ…हाँ याद आया— तुमने मुझे कुल्लू की व्यास नदी के झूला पुल के बीच में खड़े होकर कहा था 'जानते हो मैं इस पुल की तरह हूँ। यहीं रहूँगी। मेरा स्थायित्व है।' आज जो तुम सामने चुपचाप बैठी हो, मैं जानता हूँ तुम मेरे बुलाने पर आई हो ! कभी कुछ कहा तक नहीं। दोष मुझे दिया। मैं तुम्हें मिलने नहीं आया। मेरा एक अहं था, मेरी एक मर्यादा थी। तुमने मेरी कविताओं को सोने के अक्षरों में सँजोने के लिए कहा था न ! ये रहीं वे कविताएँ जिन्हें सुनकर तुम कहती थीं कि इनके साथ तुम्हारा प्रेम सम्बन्ध है। ये कविताएँ मेरे भीतर का पुरुष थीं न ! ये कविताएँ मैं तुम्हें देता हूँ। लो।

अरे ! तुम्हारी आँखों में ये आँसू ? किसके लिए ? मेरे लिए ? हँसी का गीत…हूँ मुझे…मुझे…सब पुरानी बातें रह-रहकर क्यों कुरेदती हैं ? क्यों याद आ जाती हैं ?

Funding by IKS-MoE

बहुत छोटा था मैं तब। बहुत छोटा। तुम न जाने तब कौन-से शहर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में, मेरे लिए अजनबी किस घर में पल रही थीं। मैं एक सपना लिये था जीवन भर शादी नहीं करूँगा। यह बचपन की जिद्द थी। तब हमारे पड़ोस में एक छोटी-सी लड़की रहती थी…वह भी जिद्दी थी…उसने पाँच वर्ष की आयु में जिद्द ठान ली कि वह शादी करेगी तो मुझसे ही करेगी। बस इस जिद्द से मैं इतना नाराज होता था कि मेरे जीवन में—भीतर—बहुत भीतर इतना गुस्सा इकट्ठा हो गया कि जिन्दगी भर, सारी दुनिया की औरतों के खिलाफ बना रहा। मेरे दिल में, मेरी आत्मा में एक कोरापन था। एक सपाट तत्त्व था। न समतल, न ऊबड़खावड़। सपाट। न जिस पर उगे कभी कोई घास का तिनका, पत्थर नहीं, रेत का कण भी नहीं। उस तत्त्व से दूर भागकर जब मैं दिल्ली आया तो स्टेशन पर, रेलवे स्टेशन पर भारी भीड़ में अपने को अकेला पाकर सोचने लगा—यह शहर—भीड़-भड़क्का—यह क्या है ? मैं शान्त चित्त होने …जीवन का सन्धान पाने आया था। घर वालों ने मुझे जीवन के निर्माण तथा ऊँची पढ़ाई के लिए भेजा था। पर दिल्ली शहर के प्रति, आधुनिक सभ्यता के प्रति मेरे मन में पहली टीस उत्पन्न हुई। वहीं मैंने तुम्हें तुम्हारे माँ-बाप के साथ उसी दिन स्टेशन पर देखा था, तुमने कुली को डाँटा था—बदतमीज कहा था। दूसरी बार डी० टी० यू० की बस में लोधी रोड से मौरिस नगर आते हुए पीछे की सीट पर मैं बैठा था तो तुम बिस्कुट चबाती हुई खान मार्केट के बस स्टाप पर बस में चढ़ी थीं। बस के शेष लोग तुम्हारी इस क्रिया से शायद परिचित थे, दबी-सी हँसी का वातावरण बन गया था। मैं आश्चर्य से देख रहा था कि बस में खड़े-खड़े, धक्कों से लड़खड़ाते हुए कोई कैसे कुछ खा सकता है ? मैंने अनजाने में तुमसे कहा था 'आप यहाँ बैठकर बिस्कुट खा लीजिए, तब तक मैं खड़ा रहूँगा।' मेरे भोलेपन पर सारी बस खिलखिलाकर हँस पड़ी। दिल्ली में युनिवर्सिटी जाने का वह पहला दिन था। मैं अपनी सीट से उठ गया था, तुम बैठ गई थीं। वक्त गुजर गया। उस दिन टिटोरियल लाइब्रेरी में एम० प्रीवियस की परीक्षा की तैयारी करते हुए, अपने सामने की टेबल पर तुम्हें बैठे पाया। पर मेरे चेहरे पर दाढ़ी उगी हुई थी, पढ़ाई के कारण कुछ दिनों से दाढ़ी न बना पाया था। तुम मुझे

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देखकर जोर-जोर से हँस पड़ी थीं, लाइब्रेरियन ने आकर आपको डाँटते हुए कहा था कि 'मैडम, यहाँ शोर मत कीजिए !' आप उठकर बाहर चली गई थीं, कुछ देर बाद मैं बाहर आया था तो आप लॉन में बैठी थीं, मुझे आता देख आप मेरे पास आई थीं और माफी माँगी थी। यह तीसरी मुलाकात थी।

हमारी चौथी मुलाकात परीक्षा भवन में हुई। जब मैं चुपचाप अपना सिर दबाए पेपर लिखता जा रहा था और आप चुपचाप मुझे देखती जा रही थीं। तुमने अपने रोल नम्बर के सिवाय अपने पेपर पर कुछ नहीं लिखा था। जब तीन घण्टे लगातार आपने देख लिया होगा मुझे तो उसका नाम आपने दिया होगा प्यार। लेकिन उसका कोई महत्त्व उस दिन नहीं था। जब परीक्षा में आप फेल हो गईं तो युनिवर्सिटी में आप मुझे अचानक मिल गई थीं, कॉफी हाउस में या वैंगर्ज में, याद नहीं कहाँ ? आपने कहा था 'तुम्हारी वजह से मैं फेल हो गई।'

मैंने कहा था, 'मेरी वजह से कोई फेल हो सकता है ! परीक्षा युनिवर्सिटी लेती है, पेपर कठिन होता है, लोग फेल हो जाते हैं, ठीक से पढ़ाई नहीं करते, फेल हो जाते हैं।'

तुम बोली थीं, 'तुम कितने गुमान से भरे हुए हो। तुमने जीवन में कभी असफलता नहीं देखी।'

मैं गुमान से भरा हुआ था, युनिवर्सिटी में सब कहते थे कि मैं गुमान से भरा हूँ। तुमने कोशिश की थी मेरे गुमान को तोड़ने की। उस दिन के बाद हमेशा मुझे अपने गुमान का अहसास हुआ। तुम्हारी मूक वाणी ने मुझे हर पल बेचैन कर दिया। मेरे मन में खलल डाला, मैं तबाह होने लगा। उसके बाद जिस शब्द को तुम प्यार कहती थीं, मैं उसे एक प्रतीक मानकर चलता था, जीवन की विवशता का प्रतीक। जिसे तुम एक-दूसरे के प्रति खो जाने की भावना कहती थीं, उसे मैं गीतों की टूटी हुई कड़ियों के जोड़ के लिए एक सम्बन्ध मात्र मानता था।

फिर तुमने मेरा मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। अपने दोस्तों में, सहेलियों में, बाजार में, सर्वत्र तुमने मेरा मजाक उड़ाया। मैं तब कवि नहीं था, सिर्फ कविता लिखता था। तुमने सर्वत्र मुझे शक्लसूरती शायर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहा। 'इन्हें शायरी की दो-दो लाइनें पढ़नी नहीं आतीं, मियाँ गालिब बन बैठे हैं।' और मैं अवाक् सुनता था। क्या मैं इतना ज़ाहिल, इतना पिछड़ा हुआ, इतना असभ्य हूँ कि मैं किसी शायर की दो पंक्तियाँ पढ़ने की योग्यता नहीं रखता। तुम क्या जानोगी कि मेरी जिन्दगी में शायरी थी।

उस रोज अचानक युनिवर्सिटी में गोली चली थी। मैं घायल हो गया था। तुम मुझे देखने आई थीं। मैंने पहली बार तुम्हारे चेहरे पर हँसी को खोया हुआ पाया। तुम मेरा मजाक उड़ाने नहीं आई थीं। पहली बार मुझे लगा था कि तुम्हारे दिल में मेरे प्रति दर्द है, हमदर्दी है। और मुझे लगा था मेरे मरने पर तुम्हें दुःख होगा। इसीलिए मुझे जिन्दा रहने की प्रेरणा मिली होगी। ऐसा नहीं था, मैं अपने ही कारण जिन्दा था। तुम्हारी भावनाओं को मैं कुछ भी महत्व नहीं देता था, पर तुम मेरी जिन्दगी का एक पुल बन गई थीं। इस पुल से सिर्फ तुम्हारे मन में मेरे मन के लिए गुजरने की जगह थी, मेरे शरीर के लिए कुछ नहीं था। तुमने एक बार किसी बहाने से मेरे हाथ की छोटी उंगली को छू दिया था। उससे एक सरसराहट-सी, एक जुम्बश-सी मेरे सारे शरीर में दौड़ गई थी। जानती हो तुम क्या चाहती थीं···तुम्हें बच्चे चाहिएँ··· हो सकता है मैंने भी कहा हो। तुम मुझे चाहती थीं, तुम्हारा रूप बदल गया था, तुमने पुराने सब रिश्ते तोड़ दिए थे। तुम्हारे माँ-बाप, भाई, बहनें सब तुमसे अलग हो गए। उन सबको छोड़कर तुम मेरे पास आ गई थीं। इस तरह उस दिन आते हुए देखकर मुझे एक झटका लगा था। तुम्हारा घर में आना ठीक नहीं लगा। मैंने कहा था 'तुम इस तरह सामान लेकर क्यों चली आईं।' जानती हो तुमने क्या कहा था, 'हमेशा के लिए तुम्हारे पास रहने के लिए आई हूँ।'

'हमेशा के लिए मेरे पास रहने ? तुम्हारा घर है, परिवार है, रिश्तेदार हैं, लोग···'

तुमने मुझे टोकते हुए कहा था 'लोगों की परवाह तुम करते हो !' वस्तुत: मेरे सामने एक असमंजस आ गई। जो पुल तुमने बनाया था, उस पुल को उस दिन तुम्हीं ने अपने हाथों से काट दिया। मैं मन के रास्ते से तुम्हारे समीप न आकर शरीर के राश्ते से समीप आने में यह भूल

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गया कि—मनुष्य की आत्मा, उसका मन, उसका हृदय शरीर से बहुत ऊपर होते हैं। समर्पण के क्षण के समीप आकर मैं अनुचित की बात सोचकर रुक गया था, चुप हो गया था, खामोश पड़ा रहा था। जिन्दगी में पहली बार उस दिन मेरे मन में आया था कि मैं जी भरकर शराब पी डालूँ, शराब···फिर तुम्हें तुम्हारे घर तक छोड़ आया था। तुम्हारी माँ ने मुझे बैठने को कहा था, मैं शायद रुका था या नहीं, याद नहीं, पर इतना जरूर याद है कि एक दोस्त के पास जाकर मैंने शराब माँगी थी, उसने हँसते हुए कहा था, 'यार तुम नहीं पी सकते।' शायद उसने सच कहा था मैं शराब का एक घूंट पी न सका। गिलास में डला हुआ पैग देखकर मेरा हृदय काँप गया। यह मेरे और तुम्हारे नये रिश्ते की शुरुआत थी। उस दिन :

लॉ फेकल्टी के बाहर तुमने जोर से मुझे बुलाया था, 'ऐ—कहाँ जाता है।' मैं रुक गया। तुम्हारी आवाज बदली-बदली-सी थी, तुम्हारे चेहरे पर हँसी थी, खुशी थी। सब आँखें हमें घूरने लगी थीं। मैंने कहा था, 'क्यों कह क्या रही हैं आप ? क्या मुझसे कहा ?' तुमने कहा था, 'आपसे नहीं तो क्या किसी और से कह रही थी, सारी दुनिया जानती है कि हमारी शादी होने जा रही है और आप हैं कि दूर हो रहे हैं।' तभी मैं एक बड़ी अजीब-सी स्थिति में आ गया। मुझे एक और लड़की प्यार करती थी और वह लड़की वहीं खड़ी थी। सब सुन रही थी। मैं नहीं जानता था कि वह मुझे गम्भीरता से चाहती थी। किताबों और क्लास नोट्स का लेन-देन हम करते थे। कभी दो शब्द बोलते भी थे। उसने तुम्हें जब चिल्लाकर हँसते हुए मुझे आवाज लगाते सुना तो मेरे पास आकर कहने लगी, 'मैं मर जाऊँगी, खुदकशी कर लूँगी, अगर यह सच है कि तुम इसे चाहते हो तो मैं जिन्दा नहीं रहूँगी।'

धीरे से उसे मैंने कहा था, 'यह सरासर झूठ है, मैं जिन्दगी भर कभी शादी नहीं करूँगा।' और आज—

आज न जाने वह कहाँ है, कैसी है, है भी, या नहीं है। मुझे मालूम नहीं। आज तुम हो मेरे सामने, उस दिन के कहे हुए शब्द आज मैं तुम्हारी झोली में डाल रहा हूँ। सोचो। दुनिया में मेरी तरह के सम्बल-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हीन लोग बहुत कम होंगे, बिना किसी आश्रय के, घर, शहर, रिश्ते के बिना जो जिन्दा रहें। अपने सर्वस्व को भूलकर सिर्फ अपने नाम की खातिर महिमा के लिए जिन्दा रहें। मैंने आज तक क्या पाया। बचपन में गुलाब का पौधा लगाया था, जब उसमें पहला फूल आया तो उस फूल को मैंने तोड़ दिया था। खुशी से उस फूल को चाहने लगा था। शाम होते न होते उस फूल की पंखुड़ियाँ मुरझा गईं। रात भर उस फूल को मैं तकिए के नीचे रखकर सो गया। सुबह उठते ही उस फूल को देखा तो पाया कि उस फूल की एक-एक पत्ती बिखर गई थी। तब मैं बहुत छोटा था। किसी जीवन का अन्त, किसी जीवन का बिखराव पहली बार देखा था। उसके बाद आज तक मैंने किसी फूल को उसकी शाख से नहीं तोड़ा। अपने गले में पुष्पहार नहीं पहने। यह एक यातना है, या धर्म है या चाहत है, कुछ भी है, है तो एक अस्तित्व की स्वीकृति ही। तुम्हें भी इसी रूप में देखकर मैं सोचता हूँ, मेरी ही तरह तुम भी जीवन की रिक्ति से ऊबकर मुझे कुछ लौटा पाने की शक्ति संकलित कर सको। तुम्हारे शव्द मूक हैं। स्तब्ध है तुम्हारी वाणी, और उफ्···तुम चुप हो। ओह ! मैंने कभी, कभी नहीं सोचा था कि तुम मुझे फिर इस तरह मिलोगी और मैं तुम्हारे सामने कहूँगा कि तुम्हारा दिया हुआ सर्वस्व तुम्हें लौटाने आया हूँ। तुमने मेरे जीवन को साहित्य दिया, तुमने मुझे साहित्यकार बनाया, मेरी आत्मा में परिशुद्धता लाकर मुझे एक कलाकार के रूप में, एक इन्सान के रूप में बहुत आगे बढ़ाने की कोशिश की। तुम्हारी माँ ने मेरा नाम लेकर कहा था कि वे चाहती हैं मैं घर बसाऊँ, जब मेरा घर बस जाए तो वे मुझे देखने आएँ। पर उन्होंने यह नहीं कहा कि वे सिर्फ यही चाहती हैं कि मैं उनकी बिटिया के साथ घर बसाऊँ। यदि ···तुमने ही तो कहा था 'तुमने जीवन में पहले भी प्यार किया था, किसी से···याद नहीं आता कि वह कौन था, तुम अपनी नींद में, अपने ख्वाबों में अपनी जिन्दगी को संवारा संजोया करती हो, हम वक्त-वेवक्त, उनींदे रहकर आग की तुषाररेखा का संधान पाने के लिए सोचते-सोचते···एक-एक कदम बढ़ाते हुए कहीं दूर, दूर कहीं खो जाना चाहता हूँ। मैं··· तुमने कभी सागर में समाती हुई नदी को देखा है। अस्तित्वहीन हो जाती

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। शेष रह जाती है केवल उसके अंतिम चरण की रज, जिस धूलि को मिलन के पावन अवसर के रूप में कोई यात्री अपने मस्तिष्क में उपासना का चिह्न बनाकर लगा लेता है। मैंने भी अपने को सागर कहकर तुम्हें नदी का रूप देने के लिए एक माहौल बनाना चाहा। पर ऐसा हुआ नहीं, आज, तुम्हें सामने पाकर मैं कुछ माँगूँगा नहीं, अपने टूटे हुए विश्वासों के दायरे में, अपनी उपलब्धियों की याद में, अपनी जिन्दगी के निःस्वार्थों में, तुम्हें स्वीकारने में अपनाने की असीम लालसा में···जानती हो मैं कहाँ-कहाँ भटका ? मेरी समस्त भटकन का प्रारम्भ तुम हो, तुमने मुझे कला, साहित्य कविता से भरकर स्वयं एक बाधा के रूप में उपस्थित होकर एक चुनौती दी।

'मेरा जीवन एक बहुत सादा जीवन है। कोई चाहना नहीं।'

तुम रो रही हो। तुम मुझे जीवन देना चाहती हो। तुम मेरे साथ की माँग कर रही हो। तुम अपने विवाह को तोड़कर मुझे अपनाना चाहती हो, तुम्हारा तर्क था कि 'अब भी हम एक-दूसरे के लिए जी सकते हैं, जीवन की अर्थवत्ता समाप्त नहीं हुई है।'

मैं चुप था। मन में सोच रहा था, मैं जानता था यही होगा। प्रायः मेरे साथ यही होता है। तुम मेरी पहली मुलाकात से पूर्व की कहानी भी नहीं जानतीं और इन बीते दस वर्षों की कहानी भी अनजानी है। मेरे पहले के जीवन में···मेरे अतीत में मेरी जिन्दगी का महाभारत रचा गया। आज उस युद्ध का एक महत्वपूर्ण आक्रमण था, चक्रव्यूह। मैं उस चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए आज तुम तक आया था, पर मेरे कन्धे पर रखे हुए तुम्हारे सहारे के बोझ में मैं चक्रव्यूह में भ्रम गया हूँ—मैं घिर गया हूँ फिर से घिर गया हूँ अपने जीवन की कमजोरियों में। मुझे महसूस हुआ मैं वेसहारा हूँ। मेरी आत्मा तुम्हारी आत्मा से दूर है—भटकन में है। आज मेरी इच्छा है कि एक समानान्तर जीवन और जी लूँ—तुम्हें भी अपनी जिन्दगी में ले आऊँ।

वीणा से तलाक के बाद सर्वप्रथम मैं बिन्दु की खोज में गया था। उसका और मेरा सम्बन्ध भावुकता पर टिका था। मैंने उसे इण्डिया गेट पर बोट क्लब पर मिलने को कहा था। एक बार फिर वही भावुकता मेरी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिन्दगी में आई। एक बार फिर खिलवाड़ करने की इच्छा जगी। बिन्दु विवाहित थी। उसकी तीन सन्तानें थीं।

भावावेश में मैं जो कुछ कह गया था, बिन्दु ने जो कुछ कहा—वह उस दिन की भावुकता थी।

उस दिन फिर एक बार बिन्दु मुझसे अलग हो गई थी। जिस असम्भव को सम्भव बनाया नहीं जा सकता उसकी मृगतृष्णा क्यों? तीन बच्चों की माँ को, उसके परिवार को मैं तोड़ना नहीं चाहता था। कुछ दिन बाद मैंने उसे फोन पर कहा था, बिन्दु मैं एक चरित्रहीन व्यक्ति हूँ। बुरा मत मानना। यह सही है कि मेरा तलाक हो गया परन्तु यह भी सही है कि मैं बिन्दु को अपनी जिन्दगी में लाने की बात सोचता था। भीतर भी भावनाओं के कारण फिर पुराने रिश्ते को जिन्दा करना चाहा था। एक अन्याय है मेरा यह—अपने प्रति···बिन्दु के प्रति।

बिन्दु से मैंने यह वायदा किया था कि फिर कभी उसे परेशान नहीं करूँगा। बस एक सूत्र और काट दिया। एक अध्याय और बन्द कर दिया। अस्तित्व का एक आधार पीछे छूट गया। पर मुझे खुशी थीकि बिन्दु मेरे प्रति अभी भी उतनी ही भावुक है जितना वर्षों पहले थी।

वीणा के साथ तलाक के बाद मैं अपने लिए नई पत्नी की प्रतीक्षा में अपने सम्बन्धों का दायरा बनाता गया। दायरा इतना विस्तृत है, इतना विशाल है कि मुझे विवाह की ही आवश्यकता नहीं।

एक कसक है। अब तक मैं सन्तानहीन हूँ। बिना सन्तान के मोक्ष नहीं मिलता। मुझे शादी तो करनी ही पड़ेगी।

'Man's love vs of a man's life a thing apart
T'is womam's whole existence'. —Byron

'जिन्दगी के अभाव, इच्छाओं के विस्तार, पैसे की समस्या परिवार को तोड़ भी सकती हैं और मजबूती भी दे सकती हैं', शोभा ने कहा था।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'तुम्हारी अपनी जिन्दगी में क्या है ?'

'मैं अभावों में नहीं पली। माँ-बाप की अकेली सन्तान थी। जो माँगा, मिला, माँ-बाप के पास दौलत थी, मेरी हर जरूरत उन्होंने पूरी की। परन्तु पति के घर में अभाव ही अभाव मिले।'

मैं शोभा की बात सोचता हूँ, सुन्दर है, इन्टैलीजेंट है परन्तु अपने बारे में उसका हिसाब-किताब कभी ठीक नहीं बैठा—वह मुझे हमेशा कहती रही है कि मैं उसे कभी समझ नहीं पाऊँगा, वह मेरे प्रति किस कारण से या किन कारणों से आकर्षित थी, मैं जानता था। उसे एक अमीर पति की जरूरत थी जो उसके पति से भिन्न हो। वह एक घरेलू औरत बनकर रह जाना पसन्द नहीं करती थी। उसका पति दूसरी, निचले स्तर की औरतों के संसर्ग में जिन्दगी जीता था। वह अपने को एक फिल्म एक्ट्रैस या माडल से ज्यादा खूबसूरत बनाकर रह रही थी, उसका आदर्श 'फैमिना' या 'फिल्मफेयर' इव्ज वीकली या मर्लिन मुनरो का नंगापन था। वह बाहर-भीतर पूरी तरह अशांत था। दो सन्तानों के बावजूद वह भूखी औरत थी। सौन्दर्य और भूख का क्या रिश्ता ? अपने को 'कुछ हूँ' बना देने या 'कुछ है' कहलवाने में उसे आनन्द आता था। दूसरे मर्दों की गोदी में बैठकर या सीने में छिपकर सिसकने में, अपने पति की बुराई करने में, वह फक्र महसूस करती थी। प्रोफेशनल मॉडल की तरह सजकर रहती थी और कहीं भी, किसी भी बिस्तर में कपड़े उतार देना उसे अच्छा लगता था।

अपने पति के प्रति उसे शिकायत थी कि मेरा 'मेरा पति मेरे सौन्दर्य की प्रशंसा नहीं करता। मैं सजधजकर उसे प्यार देना चाहती, वह गंदे, भद्दे रंगों के नाइट सूट पहनकर ड्राइंग रूम में बैठा रहता। उसने कभी मेरे द्वारा बनाए भोजन की प्रशंसा नहीं की। हमेशा मेरे सामने वह दूसरी औरतों की तारीफ करता है। पर मैं जानती हूँ, वह अपनी बेवकूफी छिपाने के लिए, मुझे सन्तुष्ट, प्यार सम्बन्धों में सन्तुष्ट न कर पाने के कारण सस्ती और आसानी से उपलब्ध औरतों के पास जाता था। मैं कब तक रुकती ? मेरे योग्य वह नहीं है !'

'पर शोभा, तुम यह क्यों नहीं सोचतीं कि मेरे दिल में तुम्हारा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अस्तित्व नहीं है ! तुम्हारे बालों का स्टाइल, तुम्हारे कपड़े, तुम्हारा सुन्दर चेहरा, तुम्हारे लिए सिर्फ दूसरों को आकर्षित कर लेने के लिए है ! जानती हो, तुम्हारा मेरी बाँहों में आ जाना एक स्वाभाविकता है। तुम अपने को क्यों तबाह करना चाहती हो ?'

मैं अपने पति को यह अहसास करवाना चाहती हूँ कि मैं उससे बहुत ऊपर हूँ। मेरे रूप का वह अंश मात्र भी पाने के योग्य नहीं है। वह मेरे हर प्रेम सम्बन्ध का हिसाब रखता है। मेरे हर पुरुष का जीवनवृत्त वह अपने पागलपने में रटता है। बदला लेने की कसमें खाता है। वह जब आशा करता है कि मैं उसके बिस्तर में मिलूँगी, मैं तुम्हारे या किसी दूसरे मर्द की बाँहों में होती हूँ। वह मुझे शूट कर देने की धमकियाँ देता है, पर वह इतना कमजोर है कि अपनी ही धमकियों से डर जाता है।'

मैं शोभा के बारे में सोचता हूँ। मुझे लग रहा है कि उसका और उसके पति का आपसी रिश्ता टूट रहा है। वे दोनों एक-दूसरे से असंतुष्ट हैं, उनकी जिन्दगी के तनाव, उनका आपसी मनमुटाव सीमारेखाएँ तोड़ गया है। शोभा अपनी हर चीज टिपटाप चाहती है, उसका पति ठीक इससे उलटा है। मूल कारण उन दोनों का अनमेल विवाह है। उसका पति ईसाई है, वह एक महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण परिवार की है। मैं सोच रहा हूँ और उसके नग्न शरीर को अपनी बाँहों में भर रहा हूँ, उसके उरोजों को छूकर मसल रहा हूँ, उसकी आँखों में देख रहा हूं, उसके स्तनों की ऐंठन और उभार में अपने ओठों को छिपा रहा हूँ और सोच रहा हूँ कि यह शरीर उसके नाकाबिल पति के योग्य नहीं है। सोचता हूँ, शोभा के लिए अपने परिवार को तोड़ दूँ ! नहीं, ऐसा इसलिए नहीं होगा कि शोभा मेरे लिए सिर्फ एक वेश्या है। कभी-कभी की हवश है। वह मेरी जिन्दगी की वहशत नहीं बन सकती। वह मुझे भावनागत प्यार नहीं दे सकती। उसका सम्पूर्ण एक टूटा हुआ अजूबा है। वह एक संस्कार से हठी वेश्या है, मेरे लिए अधर्म है—मेरा प्राप्य नहीं है। उसके साथ सो लेना कोई मौलिक अनिवार्यता भी नहीं है। शोभा का शरीर ही शरीर है—आत्मा या गहराई कुछ भी नहीं है। वह प्रेम अतीत नहीं जानती। सिर्फ इतना जानकर कि मेरे लिए औरतें शौकीनी का एक साधन हैं, मेरी पत्नी भी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शुरू में मेरी एक आदत मात्र थी, आश्रय नहीं। मेरे प्रेम-सम्बन्धों, विवाहेतर सम्बन्धों के बावजूद हमारा परिवार टूट नहीं सकता।

शोभा कहती है, 'मेरे पति के शरीर से दुर्गन्ध आती है।' मुझे हर पुरुष, हर औरत के शरीर में दुर्गन्ध के अस्तित्व पर यकीं है। शोभा का विश्वास है कि वह मेरी विवाहित पत्नी बनेगी। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि शोभा का बाहरी शरीर जितना सुगन्धित है, पूर्ण दीखता है, उसका भीतरी शरीर उतना ही गन्दा है, अश्लील से भी गन्दा। औरत के भीतर की औरत को पाने की ख्वाहिश हर पुरुष में होती है। हर औरत को हर कीमत पर पा लेने की तमन्ना बेमन है, बेसिर-पैर का डिल्युजन है। शोभा एक कहानी भी नहीं है।

एक दिन कह रही थी, 'मैं तब बहुत छोटी थी। पुरानी बात है। बम्बई अँधेरी के पास भी नहीं फैली थी, हम खार में रहते थे। मैं चौदह वर्ष की थी। मेरा पहला प्रेमी हमारे धोबी का लड़का था, उसके सिर पर कुप्पी भर तेल चुपड़ा था, मुझसे आयु में थोड़ा ही बड़ा होगा। उसके पहले ही सम्पर्क ने मुझे गर्भवती कर दिया। मेरी जिन्दगी का वह सुखद अनुभव था, माँ बनने की इच्छा—असलियत। पर उसी लड़के ने मुझे मातृत्व के बोझ से छुड़ा दिया था—जानते हो उसकी माँ ने मुझे अपनी बहू बनाने से इनकार कर दिया था—पर मुझे मेरे पेट से छुटकारा भी उसी ने दिलाया। मैं एक बड़े घर की लड़की क्या शादी के बाद धोबिन कहलाऊँगी ? पर तुम मानोगे नहीं, मेरे इस पति में साथ जीवन से धोबी की पत्नी का जीवन बेहतर होता। उस घर की होकर रहती। इस पुरुष ने मुझे हरजाई बना दिया है।'

'पर शोभा जो तुम अब हो···या मान लो जो तुम मेरे सम्पर्क में हो, वह क्या एक अनुभव नहीं है। विदेशी समाज में सैक्स पार्टियाँ सामूहिक यौन सम्बन्धों को मान्यता देती हैं, हमारे सम्बन्ध तो चन्द गिने-चुने स्त्री-पुरुषों से रहते हैं, या हैं—फिर पति को कोसते रहने की क्या आवश्यकता है ?'

'आवश्यकता है, Funding by IKS-MoE घाघरे में, नो स्कर्ट में घुसकर वह अपनी माँ-बहन की करवाता है, शराब के नशे में धुत् घर आता है,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मेरा शरीर टटोलता है, अपनी विवशता की वजह से मुझे कुछ दे तो पाता नहीं—वह नशे में मसीहा बन जाता है। बाइबल खोलकर उपदेश देता है। रात भर अपने को क्रास करता है। मुझे विरजन मेरी से भी अधिक पवित्र मानता है। पर, सुबह, नशा काफूर होते ही बाथरूम में बन्द होकर अपने यौन का उतार-चढ़ाव उतारता-चढ़ाता है।'

मैं सोचता हूँ यह चुड़ैल कहीं मेरा जीवन बर्बाद न कर दे ! वह अपने पति से ईर्ष्या रखती है। वह अपने प्रति अपने पति की भावनाओं को नहीं पहचानती। वह अपने पति के अन्य औरतों के साथ सम्बन्धों के कारण इतनी भयभीत नहीं है जितनी अपने सम्बन्धों की अस्थिरता के कारण है। इस औरत के जीवन में सैक्स से इतर कोई सम्बन्ध अस्तित्व नहीं रखते। इनके विवाहित जीवन में अस्थिरता का कारण काल्पनिक है, प्लेटोनिक है। अपने सम्बन्धों के विषय में इनके दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं हैं। दोनों का जीवन एक-दूसरे से अलग होकर विवाह के बन्धन को शिथिल कर चुका है। शोभा ने अपने पति को विवाह करने पर मजबूर किया होगा, उन्हीं हालात पर जिनमें धोबी का लड़का फँस गया था। और अब यह टूटन भी इसी की वजह से है।

वृज भी इस औरत का प्रेमी है। पर वह हमेशा इन दोनों के बीच एक झूठा मित्र बनकर समझौते की बात करता है। मुझे यह सब पसन्द नहीं। वह अपने सम्बन्धों को छिपाकर एक खतरनाक स्थिति पैदा कर रहा है। शोभा और उसके पति के लिए भी, अपने लिए भी। सलाह देने का हक उसे नहीं है। वह इन दोनों को घण्टों लेक्चर देकर इनका विश्वास अर्जित करके शोभा का उपभोग कर रहा है।

मैं शोभा को अपना मित्र नहीं मानता। अपनी पत्नी से इस सम्बन्ध को छिपाए हुए हूँ। चुप रहकर देख रहा हूँ। शोभा का पति मेरा मित्र नहीं है। किसी व्यक्ति की पत्नी के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उसके पति को दोस्त या भाई-बहन कहना कोई सरकारी कानून नहीं है ! शोभा बौद्धिक है। वह डी० एच० लारैंस के उपन्यासों 'दि रेनवो', 'सज्ज एण्ड लवर्ज', 'वूमिन इन लव' या 'दि लेडी चैटरलीज लवर' या लारैंस की न्यूड पेंटिंग्ज की चर्चा करती है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'मैं आधुनिक हूँ। मैं हर खूबसूरत पुरुष को प्यार करती हूँ। हम दोनों प्रेमी हैं, जब हम एक-दूसरे के साथ होते हैं, प्यार करते हैं तो हमें अच्छा लगता है। प्यार करने के तरीके पर पूरी जिन्दगी, सम्बन्ध जिन्दा रह सकते हैं। जब हम बिस्तर में एक-दूसरे को पसन्द करते हैं तो इन सम्बन्धों का विस्तार क्यों न किया जाए।'

'पर शोभा, तुम जिस तरह की पारिवारिक जिन्दगी जी रही हो, उसके तनाव, उसकी गलतफहमियाँ मौजूद हैं। तुम्हारे विवाह का आधार लड़खड़ा रहा है, तुम दोनों अतिशय यौनक्रिया भावना से पीड़ित हो। तुम्हारे दो लड़के हैं। ऐसी हालत में क्या तुम परिवार की संस्था का आदर नहीं करतीं। तुम्हारे यौन सम्बन्धों के तनाव, तुम्हारे जीवन को नर्क बना चुके हैं।'

'पर मेरे पति में सैक्स है कहाँ, मेरा पति सैक्स की दृष्टि से एबनार्मल है। कुछ ही क्षणों में वह थक-हार सो जाता है, मुझे यकीन है वह सिगार में ड्रग्ज़ पीता है—वह अमली है। उसमें वेहयापन है। बेशर्मी है।'

'परन्तु शोभा, सैक्स वस्तुतः परिपूर्णता से बहुत अलग है, यदि पति-पत्नी दैनिक सन्तुष्टि पाने लगें तो मैं उन्हें एबनार्मल कहूँगा। ऐसी स्थिति कभी-कभी आती है।'

'तुम समझते हो मुझे सैक्स थैरेपी की आवश्यकता है?'

'मुझे सोचने दो···तुम जानती हो सैक्स थैरेपी में तभी उचित सफलता मिल सकती है जब पत्नी और पति दोनों एक ही समय में इलाज कराएँ। तुम्हारे अकेले इलाज में यदि थैरेपी में तुम्हारे सैक्स के लिए साथी बाहर से लाया गया तो तुम्हारे एक नये प्रेम सम्बन्ध का खतरा पैदा हो जाएगा। यह प्रयोग सीधे सैक्स पर आधारित होने से, तुष्टि के लिए सम्भोग तक जाता है। कभी-कभी थैरापिस्ट स्वयं भी तुम्हारे जैसी सुन्दर औरतों के साथ फँस जाते हैं। बीमार स्वयं इलाज करने वाले बन जायें तो कोई आश्चर्य नहीं। परन्तु मेरे मत में तुम्हें सैक्स थैरेपी की आवश्यकता नहीं है, तुम्हें सैक्स में परिपूर्णता या आनन्द पाने के लिए एक पुरुष की होकर रहना चाहिए।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'वह पुरुष तुम क्यों नहीं हो जाते ?'

'छोड़ो, मैं विवाहित हूँ, तुम भी किसी की पत्नी हो, अगर मैं तुम्हारा एक पुरुष बन गया तो तुम्हारे लिए फिर नये प्रेमी खोजने की आवश्यकता होगी। चोरी-छिपे सम्बन्ध, इश्क के रिश्ते विवाह के बाहर ही हैं। फिर मैं कुछ दकियानूसी विचारों का भी हूँ। प्रेमी की हैसियत से तुम्हारा सिगरेट या सिगार या शराब पीना बर्दाश्त कर लेता हूँ पर पति के रूप में नहीं करूँगा। वही स्थिति तुम्हारे संयुक्त जीवन की है। तुम्हारे पत्नी बनने के बाद मैं दूसरे पुरुषों को बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा।'

'फिर तुम दूसरों की पत्नियों के प्रेमी क्यों हो ?'

'इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर न दिए जा सकते हैं, न दिए जाने चाहिए, मुझे या तुम्हें विवाह से बाहर के शरीर सम्बन्ध चाहिए—हम सहमत हैं।'

जब मैं अभी बीसवें वर्ष में भी नहीं गया था, तभी से मेरी जिन्दगी में एक विचारक से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलने पर यौन मेरे लिए एक चुनौती बना रहा है। विवाह की आवश्यकता परिवार परम्परा और आर्थिक सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। प्यार एक अलग ही बात है, वह बात ही और है। आज तक मैं इस अनिवार्यता या पार्थक्य को वनाए हुए हूँ। इन दोनों को एक ही व्यक्ति में पाकर निराशा भी हो सकती है।

मेरी पत्नी की मान्यता है कि गृह जीवन एक साथी विशेष के कारण आराम देता है। संसार में कोई भी प्राणी, पशुपक्षियों समेत विवाहित जीवन से पूर्ण सन्तुष्टि नहीं पाते। मुझे उसकी बातें सही लगती हैं परन्तु शोभा का कहना है कि त्रिवाह में सभी कुछ गलत-सलत है। अनेक पति अपनी महत्त्वपूर्ण बातों को कुछ सीमा तक छिपाए रखते हैं, उसका पति भी वैसा ही करता है। 'वह मुझे बहुत कम विश्वास में लेते हैं। हम दोनों ने अपनी जिन्दगी की कोई भी पेचीदगी, कोई भी समस्या कभी साथ बैठकर हल नहीं की। उन्होंने कभी अपना सम्पूर्ण खाली समय मेरे प्रति अर्पित नहीं किया, एक दिन भी नहीं। मुझे उसकी आदत पूर्णतया नापसन्द हैं। उन्हें भी मुझसे चिढ़ है, मेरा सब कुछ नापसन्द है। हमारी व्यक्तिगत सैक्स लाइफ कचरा है, कूड़े का ढेर है। मेरा पति एक सूअर है—

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
वह कचरे में मुँह मारता है। उसे देखते ही मुझे लगता है वह मेरा आदमी नहीं हो सकता, मैं उसकी औरत नहीं हूँ। मैं उसका सान्निध्य बर्दाश्त नहीं कर सकती, कुछ क्षणों के लिए भी उसे जीना नामुमकिन है। परन्तु उस पुरुष के साथ शादी करके मैं अपनी जिन्दगी जीने में स्वतन्त्र हूँ।'

शोभा का विवाह एक औपचारिकता है, वह एक मधुमक्खी है, जहरीली। उसकी तुलना में मुझे शामा की याद आती है। शामा कहती थी, 'पति-पत्नी एक सिक्के के दो पहलू नहीं हैं। वे अलग-अलग सिक्के हैं। पर दोनों सिक्के साथ रहकर एक कोश बन जाते हैं, वे संयुक्त नहीं हैं, फिर भी एक-दूसरे के नजदीक हैं, वे व्यक्ति भी हों, जोड़ा भी हों, एक-दूसरे पर आश्रित हों, दोनों के जीवन में व्यक्ति की सीमित स्वतन्त्रता भी हो। स्वतन्त्रता की सीमा के कारण प्यार या विवाह के रिश्ते में दरार आ सकती है, इसीलिए सीमा एक रेखा न होकर एक दायरा विशेष होनी चाहिए। जिसे मैं प्यार करती हूँ उसे स्वतन्त्रता नहीं दे सकती। सैक्स की स्वतन्त्रता नहीं दे सकती! परन्तु दूसरी ओर मैं अपने को स्वतन्त्र रखना चाहती हूँ। यहीं से अस्थिरता का रिश्ता पैदा होता है, अविश्वास जगता है।'

शामा की बातें सही भी हैं, नहीं भी—उसे अपने और अपने पति की व्यक्तिगत जिन्दगी में नजदीकी लाने के लिए हर वर्ष एक सप्ताह के लिए हनीमून पर जाने की आदत है, और हनीमून से लौटकर वह मेरी बाँहों का आश्रय खोजती है, मेरे शरीर को टटोलती है। वस्तुतः इस दृष्टि से मेरी इस कहानी के नायक की जिन्दगी अच्छी है। 'मैं' के रूप में प्रस्तुत यह नायक एक भटका हुआ अजनबी न होकर एक शाश्वत प्रेमी है। आधुनिकता का आदर्श है। 'मैं' का कहना है—हम जिसे देखते ही गर्मजोशी महसूस नहीं करते, उसके प्रति प्यार या सैक्स भावना जगाना सम्भव नहीं। प्रत्येक प्रेमी युग्म की सैक्स समस्याएँ अनमनेपन या एक-दूसरे के प्रति आन्तरिक आधार पर उत्पन्न और हल होती रहती हैं। प्रत्येक पुरुष और प्रत्येक स्त्री की पृथक्-पृथक् आवश्यकताएँ होती हैं। हमारे भारतीय नायक-नायिका भेद, पुरुष-स्त्री भेद में भी यही आधार है। हम प्यार, विवाह या कोई भी समझौता तभी सफल बना

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सकते हैं जब हम एक-दूसरे के जीवन की असलियत के साथ अपना सहानुभूतिपरक रिश्ता कायम रखें।

शोभा न एक अच्छी पत्नी है और न ही अच्छी प्रेमिका। मेरे लिए नित्य नवीनता का यह अर्थ नहीं है कि छछूंदर के सिर पर चमेली का तेल लगाकर, उसे लीप-पोतकर सौन्दर्यवान बना दिया जाए। मैं समझता हूँ शोभा की महत्त्वाकांक्षाएँ अवास्तविक हैं, वह हर मर्द से अत्यधिक चाहती है, आशा रखती है। उसमें अतिशय रोमांटिक व्यक्ति का दर्प है।

अकेले में बैठी वह प्रायः अपने विवाह के समय के फोटो एलबम देखती है। अपने अतीत की तस्वीरों में अपने सुन्दर रूप को निहारती है। वह अपने सजने, सँवरने में घण्टों लगा देती है, उसका पति इस दृश्य की प्रशंसा नहीं करता तो वह पैर पटकती अपने किसी प्रेमी की तलाश में निकल पड़ती है। अपने पति के साथ प्यार का मूड बनते ही वह उसे सीधे आकर बिस्तर में घुसने का आदेश देती है! किसी भी विषय पर, आर्थिक, धार्मिक, किसी भी विषय पर वह पति से सहमत नहीं होती। उसे हमेशा विवाह से जो चाहिए था, वह नहीं मिला, यह शिकायत रही है! उसका पति उसके प्रति वफादार है फिर भी वह उसके प्रति वफादार क्यों नहीं है। शायद वह अपने पति से ईर्ष्या करती है। स्वयं धोखा देकर पति को दोषी करार देती है। उसने कभी अपने पति की अच्छी आदतों या व्यक्तित्व के प्रति आकर्षित होने की बात नहीं सोची और वह हमेशा अपनी इच्छापूर्ति के लिए दूसरे पुरुषों की सहशयनी बनी रहती है। इस औरत ने यह कभी भी नहीं सोचा कि लड़कपन के सपने और जीवन की वास्तविकताओं में वहुत अन्तर होता है। हर औरत एक अच्छे पुरुष से शादी करना चाहती है—परन्तु मानवीय प्रेम का आधार देकर अपने पति के प्रति जिम्मेदारियाँ भी उसे याद रखनी चाहिए।

शोभा विवाह की संस्था पर विश्वास करती है, हालाँकि विवाह उस जैसी औरत के लिए नहीं होना चाहिए। अवैध सम्बन्ध और विवाह दोनों को साथ-साथ वनाए रखने में कठिनाई तो आएगी ही। शादी का टूट जाना या महज बने रहना कोई अर्थ नहीं रखता। एक आध घण्टे के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दभोग के लिए, दूसरी स्त्री या दूसरे पुरुष के लिए हम प्रेम और विवाह दोनों को तोड़ देने के लिए भूमिका तो बनी ही रहती है। दूसरे की पत्नी के साथ अवैध सम्बन्ध अपराध है। शोभा का पति यह सब जानते हुए भी चुप क्यों रहता है ? वह अपनी बदचलन पत्नी की खुशियाँ छीनना नहीं चाहता शायद।

शामा के अवैध सम्बन्धों का प्रभाव उसके पति पर तो नहीं होता था, मुझ पर अवश्य ही असर हुआ। मेरे और मेरी पत्नी के भावनात्मक सम्बन्धों में तनाव आया था। शारीरिक व्यवहार में परिवर्तन महत्त्वपूर्ण बात है।

शोभा के अनेक रोमांस छिपे रोमांस हैं, जैसे अनूपसिंह के साथ वह कहती है, 'छोटी और अपने से कम से कम दस वर्ष छोटी आयु के युवकों के साथ सम्बन्ध मजेदार रहते हैं। हम अपनी हर गतिविधि के लिए नई और छुपी हुई जगह खोजते थे। मैं तो सम्बन्धों की अनेकता की हिमायती हूँ।'

'तुम ऐसा क्यों करती हो ?' मैं पूछता हूँ।

'क्यों करती हूँ ?' शोभा कहती है, 'क्यों भी कोई शब्द है ? इसलिए करती हूँ कि विवाह का रिश्ता संकुचित है, दूसरे पुरुषों के साथ अवैध सम्बन्ध असीम विस्तार लिए रहते हैं। दूसरे व्यक्ति को प्रसन्नता देने के लिए, उसके साथ अपने अहसास बाँटने के लिए अवसर मिलता है। भावुकता का सम्बन्ध अपना ही महत्त्व रखता है। एक जागृति, चेतना और अपने पति पर विजय की भावना बनी रहती है।'

'वह आदमी तुम्हें छोड़ क्यों नहीं देता, तलाक क्यों नहीं ले लेता, उसके दो पुत्र हैं, अच्छी नौकरी है।'

'मुझे छोड़ने के लिए मेरे बिस्तर में सोए अन्य पुरुष को अगर वह देख लेगा तो हो सकता है, आँखें बन्द कर ले, राम-राम जैसे पाप मुक्तिदायक शब्द कहे। किन्तु वह न्यायालय में जाकर अपना अपमान नहीं करवाना चाहता।'

'परन्तु वह तो अपने को नैतिक मानता होगा ?'

Funding by IKS-MoE
'उसे अधिकार है, हमारे सम्बन्धों के बावजूद विवाह का अभी तक

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

घिसटते चले जाना उसकी नैतिकता का प्रमाण है।'

'शोभा, पति और पत्नी भावनात्मक और समाज-मनोविज्ञान के कारण जुड़े रहते हैं। वे एक-दूसरे के दुःख-सुख के भागीदार हैं। एक-दूसरे को शेष लोगों की तुलना में अच्छी तरह जानते हैं !'

'सुनो मेरे यार, तुम भाषण कला में अच्छे जरूर हो, यह भी सही है कि तुम रंगीन आदमी हो, औरतों के शौकीन हो, तुम्हारे पास धन-दौलत सब कुछ है, पर तुम मुझे समाज-सुधारक बनकर तो अपने बिस्तर से बाहर नहीं फेंक सकते।'

'मैं क्या हूँ शोभा, कह नहीं सकता। तुम्हारी स्वीकारोक्तियाँ, तुम्हारा दर्प, तुम्हारा बेगानापन या खुला-खुला-सा अपनापन, तुम्हारी व्यक्तिगत जिन्दगी एक खुलती-बन्द होती धार्मिक किताब की तरह है, उसे तुम ही जानती हो।'

'मैं तुम्हारी कल्पना की जीव नहीं हूँ मिस्टर ! समझे। तुम विवाहित, मैं विवाहित, लो-दो मजा कर, बीच-बीच में पति-पत्नियों को क्यों घसीटते हो।'

शामा का कहना है कि दूसरे की पत्नी या पति के साथ अवैध सम्बन्ध 'अपने प्रभुत्व अर्थात् अपने साथी पर अपनी धाक जमाए रखने के लिए जरूरी हैं। या अपने साथी के पूर्ण प्यार को प्राप्त करने के लिए और अपनी कुण्ठाओं को समाप्त करने के लिए ये सम्बन्ध जरूरी हैं।'

मैं समझता हूँ कि विवाहित जीवन में हमारी एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदारी के कारण आवश्यकताओं में वृद्धि होती है जबकि विवाहेतर सम्बन्ध इस दबाव से बचे रहते हैं। यदि इन सम्बन्धों का भेद खुल जाता है तो शायद उस स्थिति का उपयोग अपनी त्रुटियों और अपने साथी की आवश्यकताओं को विश्लेषित करके सम्बन्धों को पुनः नार्मल बनाया जा सकता है। मैं भी अपने आपमें एक विचित्र प्राणी हूँ। सम्भोगेच्छा सभी में है। उसकी मिकदार, इसकी मात्रामूलक परिमाप वैयक्तिक है, नैसर्गिक भी। स्वाभाविक है अपने को हम विश्लेषित नहीं करते, जीवन के बोझिल क्षणों को हल्का करने के लिए सैक्स आवश्यक है, अवैध सम्बन्ध उसी परम्परा की देन हैं। मैं आज तक दूसरे व्यक्ति की यौन इच्छाओं

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की शक्ति को समझने में असमर्थ रहा हूँ। शामा, मेरी पत्नी, शोभा और दूसरी सभी औरतें जो मेरी सह-शयनी रही हैं, उनकी वास्तविक सैक्स शक्ति, यौनेच्छा से मैं सदैव अनभिज्ञ रहा हूँ। उन्हीं की क्यों ? अभी तब मैं अपनी ही शक्ति का अन्दाजा नहीं लगा पाया। भीतर, मेरे बहुत भीतर कुछ है जो मुझे अतृप्ति में तृप्ति खोजने की प्रेरणा देता है, यह मेरा साधुपना है या धूर्त्तता है—ठीक से नहीं जानता। परन्तु क्षणिक या अस्थाई प्रेम सम्बन्ध जीवन के लिए जरूरी भी हो सकते हैं।

शामा कहती थी 'आज की पत्नियाँ अपने पतियों को मधुर उपदेश, कान्तासम्मतियों तथा तरह-तरह के अन्य उपदेश देने से नियन्त्रण में नहीं कर सकतीं। पति की एक त्रुटि को यदि उसे समझाकर, समझौता करके क्षमा कर दिया जाए तो शायद आगे जाकर वे सम्वन्ध विकराल समस्या नहीं बन पाएँगे। हम हमेशा अपने जीवनसाथी को दोष देते हैं परन्तु उस बीच जो तीसरा व्यक्ति आ जाता है, उसके प्रति सहानुभूति नहीं रखते।' पर मैं शामा की बात से पृथक् सोच रहा हूँ, कभी-कभी पति-पत्नी दोषरहित होते हैं, मेरी तरह का यह तीसरा आदमी खतरनाक चुनौती बन जाता है। मेरे अपने जीवन में अवैध सम्बन्धों का कारण मेरी पत्नी का यौन के प्रति कभी लापरवाह रहना या मेरे प्रति कटुतापूर्ण व्यवहार नहीं था। उस औरत में ठण्डापन या अव्यावहारिक शिष्टाचार था।

मेरे जीवन में भटकन है। सुन्दर के प्रति आकर्षण है। मैं सिर्फ प्यार के लिए प्यार करता हूँ और सैक्स के लिए सैक्स। भेद की स्पष्टता यह। प्यार पाँच मिनट से पाँच जन्म तक का भरा है मेरे भीतर। कुण्ठारहित, संस्कारविहित, सीधा-सपाट प्यार, सीधा, स्वच्छ सैक्स ! किसी अवैध रिश्ते के कारण मैं यह नहीं सोचता कि मुझसे कोई त्रुटि हुई है, या मैं अपूर्ण हूँ।

शोभा का कहना है कि 'शादी क्यों टूटेगी। मेरी कोई व्यक्तिगत कमजोरी नहीं है। मैं अपना प्यार बाँटती हूँ, सबको आश्रय देती हूँ—मेरे चरित्र को कोई दोष नहीं देना चाहिए। सैक्स वासना की तृप्ति है, एक प्राप्य वस्तु है, ललचा देती है। हमारे लिए किसी का दिल दुखाना या

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसकी भावनाओं के साथ खेलना उचित-अनुचित क्या है, मैं नहीं जानती, जनाना भी नहीं चाहती। तुम सैक्स को पाँच मिनट का वासनाजनित व्यवसाय कहते हो, मैं उसे एक या दो सैकिण्ड का मानती हूँ—वह क्षण तुम नहीं समझ सकते। औरत के भीतर का वह एक सैकिण्ड का समय अपूर्व, अतुलनीय, अनिर्वचनीय है। देह का अलौकिक आनन्द, आनन्द का दैहिक रूप!'

मैं कहता हूँ, 'शोभा, अतिशय सैक्स किसी को दार्शनिक भी बना सकता है, देवता भी, दानव और मानव अन्तरविहित है। निषेध का उपभोग तुम्हें सुख देता है, मुझे विश्वास। जीवन में विश्वास का सुख बहुत कम लोग पाते हैं।'

आधी रात बीत चुकी है, मैं सो नहीं पाया हूँ। गर्मी के कारण या अपने भीतर की चुभन के कारण। जिन्दगी भर आस्था की तलाश में भटका। अतीत का एक-एक टुकड़ा मेरे सामने है, उन्हें जोड़ भी नहीं पाता और न ही उन्हें फेंक देने की हिम्मत है। अपने भीतर तक आज एक ठण्डी आग महसूस करता हूँ, धीरे-धीरे जल रहा हूँ, घुल रहा हूँ परन्तु गर्मी—जीवन जी लेने की गर्मी का अहसास नहीं। जिस सुख की तलाश में भटकते-भटकते दूसरी बार जिन्दगी शुरू की थी, वह कहीं नहीं मिला। पहली पत्नी के साथ जिन्दगी के चन्द दिन भी नहीं काट पाया तो उसका कारण अपनी बौद्धिकता को मानता था। उसे त्यागने की जिद्द थी। उसके प्रति किसी तरह का मोह नहीं जगा पाया। दोष-अदोष, गुण-अगुण कुछ भी नापा-परखा नहीं था। बस पहले शादी नहीं करने की जिद्द थी। बचपन से वह जिद्द बनी थी। नहीं करूँगा विवाह—कभी भी नहीं। शायद यह जोगीपुर के जोगियों के साथ मेल-जोल के कारण था। नाथ सम्प्रदाय के जोगी द्वारिकानाथ जी का हमारे यहाँ बहुत आना-जाना था। वे हमेशा कुछ लेकर आते थे। उनकी अपनी खेती थी, भुट्टे,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सब्जी या उनके मन्दिर पर चढ़ी हुई चिल्लर, कुछ भी लाकर हमें देते थे। हमारे कस्बे के पास ही एक-डेढ़ कोस पर था जोगीपुर।

खेतों की हरियाली, उनके मेड़ों के रास्ते, मिट्टी की गन्ध, छोटी कूलों का ठण्डा पानी, मेरे भीतर तक भरे हुए प्रकृति प्रेम के कारण अकेले भटकने के लिए मुझे एक संस्कार दे गया था। मुझे आत्मकेन्द्रित कर गया था या मेरे 'स्व' के क्षेत्र को तोड़कर मुझे अनन्त तक विस्तार दे गया था। मेरे आत्म की परिधि मेरे असीम में कहाँ थी, थी भी या नहीं थी, कह नहीं सकता। साधुओं के उस डेरे में स्त्री को छोड़ पूरा एक निश्चित संसार था, एक गति थी। उस दिन जोगी द्वारिकानाथ कह रहे थे—'इस जगह कूँआ खुदाना है। तुम्हारे दादाजी कहते थे, यहाँ कूँए की जमीन है, पानी निकलेगा।'

द्वारिकानाथ जी की आयु साठ वर्ष थी या अस्सी, कह नहीं सकता। दादाजी का जन्म सन् 1860 के आस-पास का रहा होगा। वे 78 वर्ष में दुनिया से चले गए थे। उनकी विद्वत्तता की चर्चा सर्वप्रथम नाथ जी से सुनी। दादाजी के चेहरे पर एक तेज था, और ओजस्व था। मैं उन्हें नहीं देख पाया था। परन्तु उनका संस्कृत का ज्ञान, ज्योतिष शास्त्र पर अधिकार, व्यक्तित्व, उनकी मृत्यु के बारह-पन्द्रह वर्ष तक भी यथावत् लोगों की जबान पर रहते थे। उनका पोता होना मुझे एक गर्व से भर देता था, मैं भी उनकी तरह विद्वान बनने की सोचता था। दादी की मृत्यु तो सन् 1907 में ही हो गई थी। द्वारिकानाथजी ने दादी को नहीं देखा था परन्तु दादाजी के बारें में उनकी हर बात अधिकृत थी। वे कहते 'पंडितजी को आम की यह बगिया बहुत पसन्द थी—इस पेड़ के आम बहुत पसन्द थे। उन्हें जोगीपुर बहुत पसन्द था।'

शायद इसी कारण मुझे जोगीपुर जाना अच्छा लगता था। कच्ची सड़क के रास्ते सूरजकुण्ड से आगे सड़क दो रास्तों में बँटती है। एक ओर रेलवे स्टेशन और ब्रूडीबाँ चश्मे को रास्ता जाता है, दूसरा रास्ता सदरपुर को, इस रास्ते के अधबीच जोगीपुर के लिए खेतों से होकर जाना पड़ता था। मुझे अभी भी याद है पिताजी द्वारा सन् 1947 में मुस्लिम से हिन्दू बनाए गए धोबी की दुकान के साथ वाली सड़क सदरपुर जाती

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थी। सूरजकुण्ड के वीरभद्र, अच्छरकुण्ड, गुप्त गंगा, मणीकरण कुण्ड की ओर रास्ता मुड़ता था। बचपन में इन सब जगहों पर मैं घूमा करता था। अच्छरकुण्ड जाते हुए दाहिनी ओर एक आधी टूटी मीनार थी, चूने और लाल पत्थर की बनी। सन् 1905 के भूकम्प का अवशेष। अच्छरकुण्ड एक झरना था, उसका पानी पहाड़ से होकर चट्टान के बीचों-बीच नीचे गिरता था और पानी की फुहार जोर से नीचे प्राकृतिक स्नानागार में गिरती थी। दो सौ फुट से भी ऊँची दीवारों वाली प्राकृतिक चट्टान से बनी चारदीवारी, प्रकृति का अद्‌भुत रूप। इस जल-प्रवाह से बने कुण्ड को अच्छरकुण्ड कहते थे। यहाँ बाँझ स्त्रियाँ स्नान करती थीं, उन्हें सन्तान प्राप्त होती थी। एक सौ आठ सीढ़ी नीचे उतर-कर यह कुण्ड आता था, एक सौ आठ सीढ़ी की ऊँचाई से जलप्रपात गिरता था, कभी-कभी मैं उस कुण्ड में जलकणों के स्पर्श का आनन्द लेने चला जाता था, वहाँ लटके असंख्य काले परान्दे, बाँझ औरतों द्वारा त्यक्त कपड़े, रोली, सिन्दूर, डोरी में बँधी लाल रंग की चूड़ियाँ सर्वत्र बिखरे रहते थे। अच्छर कुण्ड का पानी एक गुप्त मार्ग से और अंशतः खुले मार्ग से बाण गंगा नदी में मिल जाता था। प्रपात का पानी गुप्त गंगा कुण्ड से आता था, गुप्त गंगा का पानी पत्थर के बने शेर के मुँह से निकलता था, भीतर एक कुण्ड था, कुण्ड के जल का स्रोत अदृश्य था। गुप्त गंगा अच्छरकुण्ड में बदलकर बाण गंगा में मिल जाती थी। बाण गंगा का दूसरा नाम बण्डेर खड्ड था। बाण गंगा कुल दो-तीन किलो-मीटर और आगे जाकर, जयन्ती मन्दिर से और आगे मनूनी और माझी की संयुक्त धारा को अपने भीतर समा लेती थी। नदी के किनारे बना पुराना किला अपनी ऊंची प्राचीरों से एक भव्य दृश्य प्रस्तुत करता है।

बाण गंगा से जोगीपुर बस एक सीमा न होकर अपूर्व प्राकृतिक वैभव, सौन्दर्य और पूर्णता का प्रतीक बन गया था। तब तक हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों ने मुझे आकर्षित नहीं किया था, जोगीपुर से ये चोटियाँ मैंने कभी नहीं देखीं। द्वारिकानाथजी हमारी खूब आवभगत करते थे, कड़े वाले तीन पाव के गिलास भरकर लस्सी पिलाते थे, उसमें मक्खन का बड़ा टुकड़ा ऊपर से। कभी भी उन्होंने हमारे साथ धर्म या

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धर्मग्रन्थों की बात नहीं की। मेहमानों की तरह हमारी खातिरदारी होती। पंडितजी के पोते होने के नाते आदर-सत्कार। शायद अपनी पहली पत्नी के प्रति विरक्ति का एक कारण यह संगत भी रही हो। नहीं भी हो। मेरे मन में एक ही धुन थी, विद्वान् वनूँगा, पुस्तकें लिखूँगा। द्वारिकानाथजी अपने सम्प्रदाय के गुरु थे यह बात वर्षों बाद मेरे ज्ञान में आई। अचानक एक दिन दिल्ली में मौरिस नगर के पास बैलगाड़ी पर जाते हुए दिख गए। रुककर पाँच मिनट बात करते रहे। बोले, कभी अम्बाला आओ। वह हमारी अन्तिम मुलाकात थी, उस मुलाकात के बाद 23 वर्ष बीत गए हैं। वे जोगीपुर जाते हैं या नहीं, कह नहीं सकता, परन्तु मैं गत 30 वर्ष से उधर नहीं जा पाया। दादाजी के बताए स्थान पर कुंआ खुद गया था। शायद बहुत पहले खुदा था, मुझे याद है, मैंने कुँआ देखा था। नाथजी ने एक बार कहा था 'तुम्हारी दो शादियाँ होंगी।'

मैंने कहा था, 'मैं एक भी नहीं करूँगा!'

काल के कठोर हाथों मेरे जीवन के साथ वह सब हुआ जो विधाता ने मेरे भाग्य में लिखा था। पहली पत्नी परित्याग के युद्ध में न्यायालय के निर्णय के आधार पर पत्नी नहीं रही। परन्तु उस लम्बे मुकद्दमे की यन्त्रणा से आज तक उबरा नहीं हूँ। वर्षों लड़ते-लड़ते आज लड़ाई को जीवन का आधार मान लिया है।

मेरी पूरी जिन्दगी में मुझे बिना लड़े कुछ भी नहीं मिला, शिक्षा, नौकरी, धन, परिवार, सर्वत्र लड़ाई। एक युद्ध या युद्धों का सिलसिला। पहली शादी 21वें वर्ष में कर दी गई थी, उसे समाप्त होने में एक दशक से भी अधिक समय लगा। आज वह रिश्ता नहीं रहा परन्तु अपनी वर्तमान पत्नी के व्यवहार से, उसकी मानसिकता के कारण अतीत में भटकना अच्छा लग रहा है। रात के दो बज रहे हैं, उसकी कुढ़न, चिड़-चिड़ाहट और मेरे मनोबल को तोड़ने की लगातार कोशिश को मैं आज तक गम्भीरता से नहीं ले पाया। वार-वार अटैची बाँधना उसने पिछले दशक में यह नाटक अनेक बार दोहराया है, घर छोड़ देने की धमकी, मेरे बाल खींचना, एक विक्षिप्त व्यक्ति की तरह दाँत पीसना, मेरी जिन्दगी की सारी शक्ति को, मेरे मन के विश्वास को हिलाकर रख देता

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। कभी आत्महत्या की बात आज तक नहीं सोची, अब भी नहीं सोचता हूँ परन्तु कब तक युद्धरत रहूँ, कहाँ तक लड़ूँ, किस-किससे लड़ूँ? हार तो मानूँगा नहीं। जब-जब मुझ पर विपत्ति आई है इस औरत ने उसे बढ़ाया है, मुझे सदमे पर सदमा दिया है। एक स्थिति जो प्राय: बन जाती है उससे जूझने के लिए मन स्वस्थ है पर शरीर साथ नहीं देता। किस-किस जन्म के पाप मुझे खरोंच-खरोंच कर क्षीण कर रहे हैं, या शत्रु किसी तन्त्र के प्रयोग से मेरी पत्नी को भी बस में रखे है, वह उन सबके साथ हो गई है या मेरा भ्रम है। शायद परिवार में तनाव के कारण इस औरत के मन में विचारों की ऊहापोह हो, मेरी शारीरिक कमजोरी के कारण कोई कुण्ठा हो, मैं ईश्वर से सब मागूँगा, अपने लिए मौत नहीं मागूँगा। सुख का एक भी क्षण नहीं देखा आज तक, उसी क्षण के लिए जिन्दा रहूँगा।

आत्म रूप है, अनात्म उसका सन्धान। रात अरूप है प्रात: एक उपलब्धि—सशरीर—व्यक्त। मैं अपूर्ण हूँ, अपंग हूँ, युद्धों ने मुझे अपंग बना दिया है परन्तु मैं अशक्त नहीं हूँ। मेरे भीतर शक्ति माँ रूपा है, जागृत, अखण्ड, युद्धों में रत मैं हमेशा जीता हूँ। विषय क्या है, नहीं जानता।

परन्तु यह मैं अवश्य जानता हूँ, आदतन जानता हूँ या सोचता हूँ कि प्यार एक दर्द छोड़ जाता है, दिलोदिमाग में कहीं बहुत गहरा अदृश्य दर्द। इस औरत के साथ यदि मेरे सम्बन्ध तर्कसंगत होते तो शायद मैं अपने जीवन की पूर्णता की बात सोचता। मुझे लगता है स्त्री और पुरुष का प्यार कभी तर्कसंगत नहीं हो सकता, यदि ऐसा होता तो सारा रिश्ता एक कारण पर टिक जाता। कोई भी प्राणी प्रेमरोगी न कहलाता। जिन्दगी सादी होती—समतल। अपनी, अपने परिवार की या अपने जीवन साथी की पसन्द यदि एक हो जाती, रिश्तों में समीकरण आ जाता तो जिन्दगी में कहीं दर्द न पनपता। प्रत्येक औरत या मर्द के जीवन में दूसरा व्यक्ति होता है भले ही उन्हें स्वयं व्यक्तिगत स्तर पर यह ज्ञान न हो। तड़प स्थाई रहती है।

यह पत्नी प्यार के पागलपन की हद है। मुझसे सर्वस्व चाहती है, बदले में कुछ भी नहीं देती। छोटी-सी गलती, त्रुटि या कल्पित कमी के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए वह आपा खो देती है। कसूर उसका नहीं है, उसके बचपन के वातावरण, पारिवारिक परिस्थितियों, उसके माँ-बाप के आपसी सम्बन्ध सब इसके लिए जिम्मेदार कारण हैं। उसकी आवश्यकताओं की, भौतिक जरूरतों की पूर्ति न हो पाने से उसके सिर पर भूत सवार हो जाता है।

इसे अपने जीवन के प्रारम्भ में जिस कल्पित पुरुष का स्वप्न था, वह मुझमें है या नहीं परन्तु लगता है वह सब पाकर भी एक छोटी बच्ची की तरह खिलौनों के लिए तरसती है। शायद उसने अलभ्य पा लिया है। इस औरत में भावनात्मक अस्थिरता है। एक अजीब-सी कर्कशता है। उसे मन पर नियन्त्रण नहीं है। गुस्से में उसका मन जैसे जमकर बर्फ हो जाता है। मेरे जीवन का दोष है भावमयता, भावुकता या शायद भावावेश। आवेग आवेश का अन्सतुलित मिश्रण है इस औरत का दिल।

मैं एक इन्सान हूँ, अपनी भावनाओं की कद्र करता हूँ, इसीलिए मुझे अपना प्यार बाँटना जरूरी हो जाता है। भावातिशेक से मैं बँटकर रह गया हूँ। मैं विभक्त हो गया हूँ। मैं अन्यत्र प्यार की खोज में भटकने की सोचता हूँ, अपनी कमजोरी के कारण या अपने पर अविश्वास के कारण। विवाह एक संस्था है, बेवफाई उस संस्था की नींव। हर सम्बन्ध अविश्वास के कारण जीवित है।

रखैल रख लूँ। पहले भी सोचा था, बहुत पहले। पर क्यों ? कुछ पाने की लालसा के कारण ? सुख और ऐशो-आराम की खातिर ! मैं सैक्स जीवन के बहुआयामी रूप को मानता हूँ। रूप-सौन्दर्य गौण हो जाता है। एक अतिरिक्त तलाश में मैं एक घरेलू औरत से, सादी औरत से प्रेम सम्बन्ध स्थापित करना चाहता हूँ। क्षणिक या जीवनपर्यन्त चलने वाले एक विवाहेतर रिश्ते की तलाश में हूँ। मेरी यह आवश्यकता भी है, चाहत भी। मुझे जो विवाहित जीवन में नहीं मिल पाया उसे पाने की तलाश है। प्यार—इस प्यार में मुझे कोई संकोच नहीं है। परन्तु फिर जो सिलसिला शुरू होगा उसके अन्त की प्रतीक्षा मैं कर पाऊँगा ?

शोभा की जिन्दगी में आए सम्बन्ध मेरे प्रेम सम्बन्धों से पृथक् सत्ता रखते हैं। वह हमेशा दूसरों की जिन्दगी में इन्वाल्व होती रही है, मैं

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमेशा अपने जज्बातों को बाँटता रहा हूँ। भावुकता का रिश्ता सैक्स में बदलकर मैं एक व्यवसायी प्रेमी नहीं बन पाया, वह विवाहेतर सम्भोग सम्बन्धों में लिप्त है।

मैं केज्युल प्रेम सम्बन्धों को स्वीकार करता हूँ। ये सम्बन्ध एक विशेष आवश्यकता के कारण बनते हैं, यह आवश्यकता अस्थाई होती है। किसी भी औरत की प्रशंसा के कारण एक रात का सहवास अस्वाभाविक नहीं। शोभा भी मेरा एक केज्युल रिस्ता मात्र है। मुझे सहानुभूति से जन्मे प्रेम सम्बन्ध अच्छे नहीं लगते। अपनी वर्तमान पत्नी के स्वभाव के बावजूद मैं दूसरी औरतों की सहानुभूति नहीं चाहता। शोभा कहती है 'तुम्हारे प्रति दया उपजती है, सहानुभूति के कारण मैं तुम्हें अपने शरीर तक ले आती हूँ।' मैं समझता हूँ मैं एक ऐसा प्राणी हूँ जो भीतरी नकारात्मकता या विरोधों को तोड़कर अपनी नैतिकता को बदलना चाहता हूँ।

मेरी जिन्दगी में निर्मल आई थी, वह विवाहित थी, उसके लिए सैक्स एक आवश्यकता थी, मेरा सहवास अतिरिक्त आवश्यकता मात्र। विवाहित जीवन के सत्य और स्वार्थयुक्त अप्रौढ़ प्रेम धारणाओं के कारण वह मुझ जैसे प्रेमी को आदर्श रूप में चाहती थी। मैं सिर्फ कुछ क्षण अपने लिए चाहता था। निर्मल भी वह क्षण थी। इस रिश्ते में मुझे एक विशेषता मिली—शरीर का अपरिचय। पत्नी, अपनी पत्नी के शरीर के हर मोड़ से परिचित रहकर निर्मल के अपरिचित शरीर में सजग चेतना देखी। इस नई औरत के साथ भावुकता का रिश्ता कायम न कर पाया। निर्मल कहती थी 'मेरा पति मुझे एक दैनिक रूटीन, एक स्थाई आवश्यकता के साथ ही प्रेम सम्वन्धों को औपचारिक बना देता है। मुझमें उसके प्रति विरक्ति उत्पन्न होती है, मैं इस पति से भर गई हूँ, बोझिल हो गई हूँ।'

निर्मल वस्तुत: मेरे स्पर्शों में नयापन पाती है। वह मुझे महीने में दो बार मात्र पा लेने के लिए पूरा माह योजनाएँ बनाती है। मेरे शरीर के हर तथ्य को वह अपनेपन से पढ़ लेना चाहती है। मैं उसका अकेला प्रेमी हूँ, वह अपने पति के अतिरिक्त सिर्फ मुझे जीवन में ला पाई।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रोमांस की आवश्यकता के कारण वह मुझ तक आई। अपने भीतर की नैंतिकता को मुझे सौंपने मुझ तक आई। नैसर्गिक आवश्यकता प्यार है, सैक्स नहीं, शायद यह सही नहीं है, सैक्स भी नैसर्गिक आवश्यकता है। निर्मल मेरे लिए एक प्यार नहीं सैक्स भरा प्यार है। प्यार तो सम्पूर्ण अर्पित करने की प्रक्रिया है, वह दैनिक, रोजमर्रा की बात नहीं है। अप्राप्य की प्राप्ति है प्यार, वह अपनों के लिए न होकर किन्हीं विशेष दूसरों के लिए है।

निर्मल एक रोमांटिक औरत है, उसका पति एक कामकाजी आदमी है, रोमांटिक आदर्श नहीं है। वह मेरे एक चुम्बन को अपने पति के साथ बिताए वर्षों के जीवन से अधिक महत्व देती है। कुछ अवैध क्षण प्यार को स्थाई बना देते हैं।

शोभा के लिए सैक्स एक जाल है। वह अपने पति को एक खरीदा हुआ खिलौना कहती है। वह अपने प्रेमिओं का आदर नहीं करती, मेरा भी नहीं, वह मुझे अपना विश्वास बढ़ाने के लिए उपयोग में ला रही है, या शायद मेरे माध्यम से किसी अपूर्णता को भर रही है। वह यह मानती है कि उसके अस्तित्व के लिए एक योग्य पुरुष, विवाहित पुरुष आवश्यक है। मेरी मान्यता है कि शोभा एक ईर्ष्यालु औरत है। शोभा एक प्रौढ़ महिला है। वह अपने पति के क्षीण होते यौवन के प्रति सशंकित है। उधर मैं अपनी पत्नी के व्यवहार के प्रति आशंकित हूँ। जीवन पहले ही इतना छोटा है कि उसे दैनिक चिन्ताओं के कारण मैं छोटा नहीं बनाना चाहता।

निर्मल मेरे जीवन की उदासी के प्रति सचेष्ट प्रक्रिया है। मेरी पत्नी का ठण्डापन या मेरे प्रति विमुखता के कारण यह रिश्ता मुझे ताजगी देता है।

मैं अपनी पत्नी को जीवन के प्रति उदासीनता छोड़ने के लिए बार-बार कह चुका हूँ, समझा चुका हूँ। उसे प्यार करने के तरीके सिखाते-सिखाते थककर, हारकर दुःखी हो गया हूँ। मैं एक रोमांटिक आदमी नहीं हूँ। मुझे इन अतिरिक्त सम्बन्धों से घृणा नहीं है, मैं स्वीकार पर विश्वास करता हूँ। वस्तुतः मैं अतिरिक्त सम्बन्धों को अपनी जिन्दगी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चलाए रखने के लिए जरूरी मानता हूँ।

निर्मल जानती है कि मेरी जिन्दगी में दूसरी, बहुत-सी दूसरी औरतें आती रहती हैं, फिर भी वह मुझसे गत आठ वर्षों से महीने में दो दिन के लिए बँधी हुई है। वस्तुतः इन दो दिनों के अतिरिक्त मेरे मन-हृदय से निर्मल अदृश्य हो जाती है। मैं अपने हर माह के जीवन के पूरे पन्द्रह दिस अपनी पत्नी को देता हूँ। शेष दिन बाँट देता हूँ। विविधताओं में बाँट देता हूँ। परिवार को मैं तोड़ना नहीं चाहता, प्रेम सम्बन्धों को न छोड़ना चाहता, हूँ, न कम करना।

मेरी पत्नी मेरे पन्द्रह दिनों का हिसाब-किताब जानती है या नहीं, मैं नहीं जानता, जानना भी नहीं चाहता ! मेरे पास वैसे खो देने के लिए कुछ भी नहीं है।

शोभा अपने आप से बहुत प्रेम करती है, वह अपने सौन्दर्य को स्थाई मानती है। दूसरों की प्रशंसा के लिए वह प्रेम सम्बन्ध स्थापित करती है। वह एकान्त में शीशे में अपने को देखती है। अपनी हर मुस्कराहट की रिहर्सल करती है। उसके मेक-अप के ढंग प्रतिदिन बदलते हैं, उसे अपने सजने-सँवरने में आनन्द आता है। वह स्वयं प्यार नहीं करना चाहती, दूसरों को प्रेमजाल में फँसा रखना चाहती है। उसने मेरी तरफ हमेशा निगाहें यह देखने के लिए उठाई हैं कि मैं उसके चेहरे को देखकर सौन्दर्य का आनन्द पा रहा हूँ अथवा नहीं।

मैं समझता हूँ शोभा एक वस्तु बन गई है, एक कीमती चीज। वह अपने को अद्भुत व्यक्तित्व बनाए रखने की प्रक्रिया में, अपने सौन्दर्य को अधिक महत्व देती है। वह एक कल्पित जीवन जीकर भी पूर्ण नहीं है। उसके जीवन का स्पष्ट विभाजन हो चुका है। उसका पूरा जीवन अन्दरूनी बनावटीपन लिये हुए है। जीवन में वह कुछ सन्धान न पाकर कल्पित आकारों पर आश्रित है। जीवन के कटु अनुभवों का वह सामना नहीं कर सकती, व्यक्तित्व को कोई आधार नहीं दे सकती। उसका प्रतिदिन बदलते हुए फैशन के साथ उतरता-उभरता है।

निर्मल एक बहुत खूबसूरत औरत है पर वह प्यार को पहचान नहीं पाती। उसके भीतर कुछ टूटा हुआ है, अजनित है, अनपनपा है। वह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमेशा इन दो दिनों की बात करती है और जब ये बहुप्रतीक्षित दो दिन आ जाते हैं तो वह मुझसे ज्यादा अपने से प्यार करती है। शोभा की तरह अद्‌भुत यौन वैचित्र्य की मूर्त्ति भी वह नहीं बन पाती। शोभा के प्रशंसकों की कमी नहीं है, उसका चरित्र बहुचर्चित है।

निर्मल सौन्दर्य के लिए अपने को सुन्दर नहीं बनाती, वह सुन्दर है इसीलिए उसका सौन्दर्य भी है। परन्तु वह अपने पति और मेरे बीच अपने को बाँट चुकी है। शोभा की फेंटेसी के पीछे मुझे मौत के साए का आकार दिखता है। सैक्स की अतिशयता में वह अपने से अघाकर जिस प्यार की तलाश में जूझ रही है, जी रही है, शायद वही उसका अन्त होगा।

मैं निर्मल से पूछता हूँ, 'ए, तुम मुझे क्यों चाहती हो।'

'सुनोगे ? सच बताऊँ, मुझे तुम्हारी शक्ल बहुत अच्छी लगती है। तुम मुझे अपने किसी की याद दिलाते हो। जब मैं अठारह वर्ष की थी तो उनकी मृत्यु हो गई थी। वर्षों मैं उन जैसे आत्मविश्वासी व्यक्ति की तलाश में रही, तुम मेरे लिए प्रेमी जरूर हो पर उससे ऊपर भी कुछ हो। और तुम मुझे क्यों चाहते हो ?'

मैं क्या उत्तर देता, ऐसे प्रश्न का क्या उत्तर देता। मैं उसे अपनी जरूरत के लिए चाहता हूँ ? रोमांस के लिए चाहता हूँ ? या अपने जीवन के विरोधाभासों की खाई खत्म करने के लिए चाहता हूँ। निर्मल मुझसे उत्तर न पाकर कहती है, 'तुम्हीं ने सच बोलने को कहा था। मैं तुम्हें तुम्हारे प्यार के लिए भी चाहती हूँ। मेरे पति में न मेरे पिता का आश्रय है न रोमांस। मैं चाहती तो तुम्हारे साथ के आठ वर्षों के रिश्ते के कारण अपने पति को छोड़ सकती थी। मेरा एक दसवर्षीय बेटा है, स्वाभाविक है वह तुमसे नहीं है। उस पुत्र में भी मैं एक आदर्श पुरुष की खोज करती थी, पर नहीं, वह मेरे पति से पृथक् नहीं है। तुम मेरा प्यार भी हो, मोह भी और मेरे मोहभंग की कहानी भी। मैं अपने भीतर के रोमां-टिक के रूप में जानती हूँ।'

मैं सुन रहा था और सोच रहा था निर्मल वस्तुतः एक अलग औरत हैं, जैसा मैं सोचता था, वह वैसी नहीं है। वह प्यार को अनुभूति से भर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

देती है। मुझे एक फादर फिगर बन जाना भी रुचिकर लग रहा है। मैं उसके लिए एक गति हूँ। हमारा प्यार एक तत्त्व विशेष पर आधारित है। हमें एक-दूसरे की आवश्यकता, उसकी आज की बात के कारण और अधिक होगी। इस औरत के प्यार में बहक नहीं है। हमारा दो दिन प्रति माह का रिश्ता, मिलन और बिछुड़न की कहानी बन सकता है। शायद निर्मल के जीवन का आधार मिलन की खुशी है। परन्तु मैं जानता हूँ हम दोनों इसी रूप में खुश हैं, पति-पत्नी बनकर वह खुशी नहीं मिलती। हमारे ताल्लुकात एक नशे के कारण हैं, एक दूसरे को समझ सकने का नशा। हम रोमांटिक होकर भी वास्तविक जीवन के धरातल पर हैं, मेरी पत्नी और उसका पति हमारे बीच कमी न आए, यही एक रिश्ता है जिसकी चर्चा मैं किसी से भी नहीं करता, कभी भी नहीं।

मैं कहता हूँ, 'निर्मल, जानती हो रोमांस क्या है ? रोमांस हमारी संस्कृति की गति है। यौन सत्य से पृथक् है रोमांस ! प्रत्येक तत्त्व में रोमांस है। प्रत्येक मानव और समस्त प्राकृतिक संरचनाओं में रोमांस है। तुम्हारे जीवन की वास्तविकता और तुम्हारा अतीत, तुम्हारा मुझमें अपने पिता का रूप देखना भी रोमांस है।'

निर्मल कहती है, 'रोमांस एक उपन्यास है, सूत्रबद्ध, विस्तृत कथा यात्रा। मैं हमेशा शिष्ट आचरण और रिश्तों को स्थिर रखने के लिए किए जाने वाले किसी भी प्रयास को रोमांस मानती हूँ। मैं किसी धारणा से प्यार नहीं करती, अपने एकान्त संसार में भी विचरण नहीं करती परन्तु जिन्दगी के समस्त अवसरों का उचित मूल्यांकन करना उनकी प्रशंसा कर दोस्ती या रिश्ते स्थापित करना, मुझे आता है।'

मैं कहता हूँ, 'निर्मल, प्यार एक गतिमय अनुभव है। उसे एक बार पाना या बार-बार पाना कोई मतलब नहीं रखता, पाकर खो देना ही महत्वपूर्ण है। पहला प्यार ही सारे जीवन का रोमांस है, पहला प्यार कोई भी नहीं पाता, वह जज्बातों में खो जाता है, शेष बन जाता है। हमेशा आँखों के प्रथम मिलन और उस दृश्य का अस्तित्व बना रहता है।'

Funding by IKS-MoE

'पर मैं समझती हूँ उस रिश्ते में सैक्स का स्थान तो होगा ही। चाहे काल्पनिक क्यों न हो।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'सुनो निर्मल', मैं कहता हूँ, 'सुनो, तुम कभी प्यार की पहचान नहीं कर सकतीं, तुम प्यार के अनुभव को आत्मिक अनुभव मानने लग जाओगी। तुम्हारा प्रेमी तुम्हारे लिए एक स्वप्न बन जाएगा।'

'भले ही वह प्रेमी तुम ही हो !'

'हाँ, भले ही मैं ही हूँ। मैं तुम्हारे जीवन का सपना बनकर एक वस्तु-मात्र बन जाना पसन्द नहीं करूँगा।'

'शायद तुम्हारी इसी धारणा ने तुम्हें अपनी प्रथम पत्नी से तलाक लेने पर विवश कर दिया था, तुम अपने को रोमांटिक नहीं मानते, अरे यार, तुम झूठ कहते हो। तुम हमेशा सुन्दर के प्रति आकर्षित होते हो। अगर तुम रोमांटिक नहीं होते तो यह डायवोर्स गाथा न बनती। तुम्हारी दूसरी शादी भी तुम्हारे रोमांटिक होने के कारण है। और गत आठ वर्षों में अगर मैं चाहती तो तुम्हारी तीसरी पत्नी बन सकती थी, यह भी तुम्हारे रोमांटिक होने का सबूत है।'

'तुम मुझ पर उद्देश्यहीन होने का आरोप लगा रही हो !'

'नहीं, ऐसा नहीं है, मैं तुम्हें सम्पूर्ण प्यार की याद दिला रही थी। तुम जिन्दगी के झूठ को असलियत में बदलना चाहते हो। सैक्स और रोमांस दोनों के मिश्रण में आदर्श की खोज तुम्हारे व्यक्तित्व की जटिलता को साधारण से साधारण स्थिति में भी जटिल बनाती है।'

'शायद तुम अपने जीवन की अपूर्णताएँ मुझ पर लादना चाहती हो, तुम्हीं ने पहले कहा था कि मुझमें तुम्हें अपने पिता का व्यक्तित्व दिखाई देता है ?'

'इससे मैं इन्कार कहाँ करती हूँ, इसीलिए तो तुम्हारे जैसे अप्राप्य पुरुष से जुड़ी हूँ।'

'शायद यह सच है, हम दोनों किसी सीमा तक रोमांटिक हैं।'

'रोमांस की सीमाएँ नहीं होतीं, तुम और मैं दोनों उस असीम के अणु हैं। मुझे अपने पति में जो नहीं मिलता, वह तुम्हें अपनी पत्नी में भी नहीं मिलता। हमारी भटकन एक है, हमारा उद्देश्य एक है, हम दोनों अपनी निश्चित जिन्दगी से अलग जिन्दगी जीते हैं।'

Funding by IKS-MoE

'मुझे लगता है दो दिन के मासिक कैरियर को तोड़ना आवश्यक हो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गया है।'

'मैं तैयार हूँ।'

'महीने के पहले सप्ताह का तीसरा दिन और जोड़ लो—पर एक शर्त पर—तुम्हें अपने पति का भी ध्यान रखना होगा।'

'यानी तुम समझते हो मैं अब उसे निगलेक्ट करती हूँ ? उसकी जितनी देखभाल मैं करती हूँ उतनी शायद ही कोई पत्नी करती हो !'

'उस देखभाल में एक दिन कम करना क्या उचित होगा ?'

'मैंने कब कहा ? मैं सिर्फ तुम्हें प्यार करती हूँ। एक पागल व्यक्ति की तरह, तुम्हारे लिए जिन्दा हूँ—अपना जो भाग तुम्हें दे रही हूँ वह मेरी उपलब्धि है, तुम मुझे नकार नहीं सकते, तुम अपनी पत्नी को भी नकार नहीं सकते, मेरी स्थिति ऐसी नहीं है, मैं तुम्हें पा चुकी हूँ, आठ वर्ष तक एक सीमित सम्बन्ध को पूर्णता समझकर जी चुकी हूँ, जी रही हूँ।'

'निर्मल, तुम यह तो मानती हो, हम असलियत में एक सम्बन्ध मात्र हैं, जीवन के सत्य को भोगना बहुत कठिन होता है। मेरी जिन्दगी की दूसरी औरतों से तुम्हें ईर्ष्या नहीं होती ?'

'मैं तुम्हारे बारे में सोचती हूँ। उन दूसरी औरतों का मेरे लिए अस्तित्व नहीं है। तुम्हारे साथ का मेरा अपना समय है, निश्चित स्थान है, गति, सीमा, परिचय का दायरा अपना है। इस बैंड पर जब तक तुम्हारे साथ मैं हूँ मुझे दूसरी औरत चुभेगी, मेरे सामने अगर तुम अपनी पत्नी के साथ भी बैठोगे तो मुझे चुभन होगी, पर जब तक तुम मेरा अस्तित्व पूर्णता में इसी तरह बनाए रखोगे, मैं कभी, कभी भी दूसरी स्थिति से समझौता करने को तैयार हूँ।'

निर्मल वस्तुतः एक सामान्य औरत है। रोमांटिक भी और प्रेक्टीकल भी। विवाह, पति, प्यार, प्रेमी, परिवार सभी दायरों में वह एक व्यक्ति विशेष है। मैं सोच सकता हूँ कि वह एक पतिव्रता औरत भी हो सकती है, एक बदचलन व्यक्ति भी। बगीचे में तेज हवा से गमले गिर रहे हैं, एक समय में मैं एक गमले को सीधा कर सकता हूँ, एक पौधे को पुचकार सकता हूँ, निर्मल एक पौधा है, पला-पलाया, सजा हुआ पौधा, उसे रख पाना मेरी जिम्मेदारी है। यह जिम्मेदारी भी एक प्रकार का रोमांस है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नन्दिता के जीवन में अनूपसिंह के प्रति नफरत भरी हुई है। उस धोखेबाज ने उसे दुःखाया है। उसके जीवन के हर सत्य के प्रति मिस्टर सिंह ने स्वार्थ को सामने रखा है। सरकारी अफसर अनूपसिंह साहब एक घुटा हुआ घाघ है। नन्दिता से शादी दहेज के लालच में कर ली थी। उस आदमी की जिन्दगी की कमजोरी एक आदमी था जो हमसाये की तरह उससे चिपका रहता था। शुरू-शुरू में नंदिता ने उन दोनों की दोस्ती को गम्भीरता से नहीं लिया। परन्तु एक दिन उसने ऐसा दृश्य देखा कि अपने पति से आतंकित हो गई। अनूपसिंह और उसके पुरुष मित्र का सैक्स का रिश्ता था, नंदिता ने अपनी आँखों से देखा था। वह अपने पति का गला घोंट देना चाहती थी।

अपने पति के प्रति उसका प्यार उसी क्षण मर गया। वह अपने भीतर, अन्दर तक दर्द की टीस महसूस करने लगी। यह एक असहनीय हादसा था। आज उस हादसे को वर्षों गुजर गए। नफरत और बदले की भावनाओं से भरे मन से वह उस आदमी के साथ रहने को मजबूर थी। यदि यह आदमी उसका विवाहित पति न होता तो, इस नपुंसक को वह सरेआम जूते लगाती। पर जहरीलेपन के बावजूद वर्षों से वह इस आदमी को भोग रही है। नंदिता को लगा था सारा विश्व उसके प्रति शत्रु बन गया है, सारे संसार ने उसे रिजैक्ट कर दिया है। और उसी दिन उसने तय कर लिया कि पुरुष की जाति के साथ वह हमेशा विश्वासघात करेगी, विषकन्या बनकर वह इसी पति की मौजूदगी में सब प्रेमियों को अपने पति के बिस्तर पर सम्भोगेगी।

नंदिता के लिए इस शादी का बोझ असह्य हो गया। वह अपने को एक बेकार, परित्यक्ता-सी महसूस करने लगी। उसे लगा था कि सारी जिन्दगी सारहीन है, उसे मर जाना चाहिए। उसके लिए प्रत्येक क्षण बोझिल हो गया। खाना, पीना, सोना, सर्वस्व बोझिल हो गया।

मुझे नंदिता ने बताया, 'तुम मेरी स्थिति की कल्पना नहीं कर सकते। मैं अपने पति को दूसरे पुरुष के साथ सैक्स की स्थिति में देखकर अचम्भित रह गई। जानते हो मैं क्या बन गई! एक कुतिया, आवारा कुतिया, मुझे किसी के साथ सोने में कोई एतराज नहीं था। मैं शराब पीने लगी,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिगरेट, सिगार पीने लगी। बारिश में मैं इसलिए भीगना चाहती थी कि मुझे बीमार होकर मर जाने की चाह थी। घर के सब काम छोड़ दिए। पति से तो वात तक करना मुझे मौत से भी बदतर लगता था। कुछ दिन तक मैं वस्तुत: एक डायन-सी बनी रही।

रातों मुझे नींद नहीं आती थी, सुबह शीघ्र आँख खुल जाती थी। मैं इस पुरुष से कहीं दूर भाग जाना चाहती थी, पर माँ-बाप, मर्यादा और हमारे समाज के दायरे थे। मैं यह सोच भी नहीं सकती थी कि कोई पुरुष इतना गन्दा, इतना घिघौना भी हो सकता है। इस आदमी ने मुझे दिया क्या ?

फिर मेरे जीवन में परिवर्तन आया। इस पति का स्थानान्तरण दिल्ली हो गया। मैं डिस्कोथैक या ऐसी ही अन्य जगहों में जाने लगी। शराब में मस्त, गैरों की बाँहों में घर लौटती। यह आदमी मेरे विस्तर तक आ सकने का साहस नहीं जुटा पाता था। मैं इससे वदला लेने के लिए इसे अपमानित करने के लिए सब कर रही थी।

पर मेरी जिन्दगी में एक नया मोड़ आया। मैं एक अन्य पुरुष के प्रेम-पाश में फँस गई। दुर्भाग्यवश वह प्रेमी एक एक्सीडेंट में मर गया। मैं उसे कभी नहीं भूल पाई। सोते जगते मुझे अपने मृतक प्रेमी की याद आती थी। मैं दु:खभरी गाथा समाप्त करने की सोचती थी, अपने लिए मौत माँगती थी। ऐसा पति, एक मरा हुआ प्रेमी—यह थी मेरे जीवन की उपलब्धि।

फिर मैं गम्भीर हो गई। अपने पर नियन्त्रण करने लगी। इस पति को आर्थिक सुरक्षा के रूप में स्वीकारने लगी। जीवन की कथा के टुकड़े-चीथड़े सीने लगी। मुझे लगा मेरा पति भी मर चुका है, बस इसी खयाल से पुन: जिन्दगी में लौटी। अतीत और वर्तमान को जोड़ती रही, तोड़ती रही।

इस पुरुष का सिर्फ नाम पौरुषयुक्त था, वास्तव में वह एक ढकोसला था। मेरे पति को शब्द और उनके अर्थों को अपनी डायरियों में लिखने का शौक है। हमारी शादी के पहले सन् की डायरी में उन्होंने अंग्रेजी के हनीमून शब्द को, जर्मन भाषा में हनीगमाण्ड, फ्रेंच में लूने-द-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मिइल, इतेलियन में लूना दी मिले और स्पेनिश में लूना-द-मिइल लिखा था। और मुझे इसके इन्हीं शब्दों से भय लगता था। जिस प्रकार पूर्णिमा का चाँद क्षीण होता है, उसी प्रकार कुछ ही दिनों में, एक पखवाड़े से भी कम समय में हमारा यह चाँद अस्त हो गया। मेरे लिए एक अवसाद या शायद एक वहम बाकी रह गए थे। शादी शब्द से मुझे चिढ़ हो गई। वन्धन में बँधना मुझे अच्छा नहीं लगा। अपनी जिन्दगी बदलने के लिए उतावली होने लगी। इस आदमी के चुम्बनों में मुझे तिरस्कार दिखा, शादी से पूर्व मेरे जीवन में उत्साह था। शादी की हर साड़ी, हर गहना, मैंने वहुत उत्साह से चुना। परन्तु शादी के दस दिन के बाद के पति-संग बीते एकान्त ने मुझे बीस साल बड़ा कर दिया।

मैं अपनी तरह की लड़की थी, नई जिन्दगी जीने के लिए मुझे यह नामर्दुआ मेरे माँ-बाप ने छाँटकर दिया। न जाने कितने जन्मों के पाप मेरे आड़े आए, इस मानुष की पिण्डी से मुझे दुर्गन्ध आती थी। मैं हमेशा सोचती थी कि मेरा कसूर क्या है ?'

'नंदिता, मैं तुम्हारे प्रति उदार हूँ', मैं कहता हूँ, 'तुम्हारी बातें सुन रहा हूँ, पर तुम यह क्यों नहीं सोचतीं कि चाँद-तारों की दुनिया, जिसे हम सोचते हैं कि हमें शादी के बाद मिलेगी—वह एक झूठ है। सैक्स का पूरा जीवन एक तकनीक है, उसे सीखना होता है…'

'वह तो ठीक है, पर शादी की पहली रात के बाद जब सुवह मेरी नींद खुली तो इस भैंसे को खुर्राटे लेते देखा, सुना और मैंने स्वयं से कहा —क्या सारी उमर मुझे इस जानवर के साथ एक ही खूँटे में बँधकर काटती है ?'

'हाँ नन्दी, ऐसा होता है, एक सहज धारणा है, जिसे हम प्यार समझते हैं, वह एक रुटीन वोरियत हो जाती है। दिनचर्या। जीवन पद्धति का यह वदलाव है। हनीमून एक वेकार कसरत है। रोमांस का अन्त है। तुम्हारा जो भाग, तुम्हारे जीवन का जो भाग गोपनीय है उसे दूसरों पर उद्घाटित कर देने से मन की उलझने बढ़ेंगी। उसे छिपाये रखना, न कहना ही उचित है। दूसरे लोग इससे गलत समझते हैं।'

'पर तुम क्यों गलत नहीं समझते ?'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'मैं इस पथ पर इतना चल चुका हूं कि एक से दूसरी औरत के शरीर का अन्तर उसके स्पर्श मात्र से समझ लेता हूँ, फिर मैं तो स्वयं ही तुम्हारी तरह हूँ। तुम किसी एक मोड़ पर आकर गम्भीर हो गई हो, मैं इस प्रौढ़ी में भी अगम्भीर हूँ।'

'मैं तो यह जानती हूँ कि विवाह किसी भी व्यक्ति की स्वतन्त्रता, व्यक्तिगत जीवन की स्वतन्त्रता को अंकुश लगा देता है।'

'पर रेशनेली सोचने पर विवाह की सफलता हमें एक-दूसरे पर आश्रित होने पर ही प्राप्त होगी। विवाह के बाद अपनी जिन्दगी में आई समस्त औरतों को पुरुष और समस्त पुरुषों को स्त्रियाँ छोड़ दें तो सम्बन्धों में सामान्यता बनी रहती है। हम अपना खाली समय एक-दूसरे को दें।'

'यही तो मैं करती थी। रोमांटिक बनने के लिए अपना सब उस पुरुष पति परमेश्वर के लिए छोड़ दिया, परन्तु उस मृगतृष्णा ने मुझे तुम्हारे जैसे लोगों तक ला छोड़ा है!'

'सही है, तुम न एक पत्नी हो सकी हो और न ही एक रखैल। तुम्हारी कामनाओं का संसार अपना है। तुम्हारे लिए विवाह का कोई अर्थ है ही कहाँ, मेरे मत में तुम स्वतन्त्र जीवन जीने की हकदार हो।'

'परन्तु सामान्य स्तर पर विवाह एक सांस्कृतिक समझौता माना जाएगा। इसे समाज के लिए अनिवार्य माना गया है। इसे मनोभावना पर आधारित नहीं कहा जा सकता।'

'मैं विवाह संस्था के विरुद्ध हूँ। पाप की जिन्दगी इस दलदल में रहने से अच्छी है।'

'ये सब पुरातनपन्थी बातें होती जा रही हैं। मैं विवाह की संस्कृति को भी मानता हूँ और स्वतन्त्र प्रेम सम्बन्धों को भी। दोनों का कहीं-न-कहीं मिश्रण अनिवार्य है।'

'तुम्हें यह शायद ज्ञात नहीं कि विवाह पुरुषों के लिए अधिक सुविधा-जनक है, स्त्रियों के लिए कम। पुरुष की आर्थिक स्वतन्त्रता इसका कारण है।'

Funding by IKS-MoE

'मैं नार्मल सैक्स की बात करता हूँ। इस नार्मल में सन्तानोत्पत्ति भी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शामिल है परन्तु महत्त्वपूर्ण तथ्य है समाज जिस यौन व्यवहार को नार्मल कहता है, वह भी अस्वीकार योग्य नहीं है। समाज से मान्यताप्राप्त असामान्य जीवन जो हम लोग जीते हैं, वह हमारी वैयक्तिक नार्मलसी है, समाज उसे कुछ भी कहे, व्यक्ति के स्तर पर वह भी अस्वीकार नहीं है क्योंकि कानून बहुविवाह का विरोधी है, बहु-प्रेम-सम्बन्धों का नहीं। हमारे समाज में इस प्रकार का व्यक्ति रंगीन कहलाता है।'

'समाज की धारणाएँ तो बदलती रहती हैं,' नंदिता कहती है। वेनिटी-बैग से सिगरेट निकालकर मुझे माचिस लाने को कहती है। मैं उठकर भीतर जाकर माचिस लाकर उसका सिगरेट जलाता हूँ। नंदिता अपने ओठों पर लिपस्टिक का प्रयोग नहीं करती। कुछ कश लेती है और फिर कहती है 'समाज की नैतिकता को चुनौती देकर, उसूलों और परम्पराओं को तोड़कर मैं उस प्रत्येक स्थिति को नार्मल कहती हूँ जिसका परिणाम पीड़ा न हो। परन्तु स्वेच्छा भी तो कोई अर्थ रखती है ?'

'क्यों नहीं, मैं स्वेच्छा से पुंसुक हूँ, अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य औरतों के साथ भी मेरे सम्बन्ध अपनी इच्छापूर्ति के लिए हैं, परन्तु दूसरों की सुविधा-असुविधा का ध्यान तो अवश्य ही रखना पड़ता है। इन सम्बन्धों में एक-दूसरे के प्रति आदर की आवश्यकता है। तुम्हारी स्थिति दूसरी है, तुम्हारा पति असामान्य है, तुम्हें वह अस्वीकार है, इसलिए तुम्हारा सर्वस्व नार्मल है।'

'पर जिस आदमी के साथ मुझे बाँधा गया है, उसका सैक्स जीवन दूसरे पुरुष और मेरी उपस्थिति में हस्तमैथुन की क्रियाओं से भरा है।'

'पहली स्थिति, यानी दूसरे पुरुष की स्थिति असह्य जरूर है, पर इसका फैशन दूसरे देशों में काफी है, दूसरी स्थिति साधारण प्रक्रिया है। तुम्हारे प्रति एक प्रतिक्रिया मात्र।'

'सैक्स का अर्थ है तुष्टि या परिपूर्णता। स्त्री-पुरुष दोनों आरगेज्म की स्थिति तक पहुँचें, तुम्हारे साथ कभी-कभी यह अनुभव होता है, दूसरे पुरुषों के साथ नहीं। तुम्हारे लिए मैं सब कर सकती हूँ।'

मैं कहता हूँ, 'मेरी जिन्दगी गिगलो ब्वॉय से पृथक् नहीं रहने दोगी तुम ?'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नन्दी ने कहा, 'हमेशा बात टाल जाते हो तुम ?' वस्तुत, मैं हमेशा बात टाल जाता हूँ। समस्त सम्बन्धों को अपने पर उतारकर भी दूसरों की बात टाल जाता हूँ। क्यों ? इसके मूल में क्या है ? मेरे व्यक्तित्व का हल्कापन या भीतर की गम्भीरता। शामा मेरे भीतर की गम्भीरता को समझती थी।

शामा का मेरे जीवन में अपने तलाक के बाद आना कोई अजीब बात नहीं थी। वह मेरे अधीन चीफ एग्जीक्यूटिव आफिसर के पद पर आई थी। हमारा दफ्तर में एक-दूसरे के साथ बार-बार बातचीत करना स्वाभाविक था।

शामा का विवाह अतिशय भावुकता के कारण टूटा था। प्रेम हुआ, शादी हुई, परन्तु पति भी नौकरी करते थे, शामा भी, कामकाजी होने के कारण दिन भर के तनाव, शापिंग, मार्किंग, खाना पकाना और अनेक दूसरे कामों से जुड़े हुए थे। पति का स्वभाव शादी के बाद चिड़चिड़ा हो गया। उसकी प्रत्येक बात में, प्रत्येक स्थिति में आलोचना करते थे वे। सुबह की कॉफी पीने से पहले उठते ही चिड़चिड़ापन। उन्हें रेडियो जोर से चलाकर समाचार या गीत सुनने की लत थी। शामा शान्तिप्रिय थी। उसके पति मिस्टर दीक्षित बहस करने के आदी थे, शामा को यह भी पसन्द नहीं था। वह कभी कोई गम्भीर पुस्तक पढ़ने लग जाती थी तो उसके पतिदेव अपनी बात समझाने, सुनाने के लिए चिल्लाते थे, कभी-कभी हाथ भी उठा लेते थे। प्रायः घर का वातावरण गर्म रहता था।

शुरू से ही सम्बन्धों में ताजगी या आत्मीयता लुप्त होने लगी। प्यार-व्यार सब ठंडा गया था—मर गया था। शादी से पूर्व इन स्थितियों पर कभी सोचा ही नहीं था शामा ने।

शामा कहती है, 'प्रेम विवाह नहीं होने चाहिए। प्रेम अन्धा बना देता है, एक-दूसरे को समझने के लिए मौका नहीं देता।'

'पर शामा सब प्रकरण तो तुम्हारे जैसे नहीं होते। मैं तो यही समझता हूँ प्रत्येक रिश्ता अपना पृथक् अस्तित्व रखता है। प्यार की वास्तविकता पूर्व की अपूर्णता स्पष्ट करती है।'

वह कहती है, 'तुम्हारी धारणा है। मेरे दीक्षित साहब अलग प्राणी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हैं । वे मुझसे अधिक आशाएँ रखते थे । वे आदर्श कुक को आदर्श पत्नी मानते थे । हमारे दोनों के व्यक्तित्व इतने भिन्न थे कि मैं जब भी उन्हें देखती थी मुझे लगता था मेरे भीतर की औरत मर गई है, उनके जीवन का प्रत्येक तथ्य, हर पहलू असह्य बनता गया । उस आदमी का सैक्स वहशत से भरा था । वह एक अजनबी था, दिल, शरीर, मन पर मात्र एक बोझ ।'

'तुम उसे बदल सकती थीं, अपना व्यवहार बदल सकती थीं, अभिनय करके उसे अवसर तो देतीं ।'

'अवसर दिए जनाब, बहुत अवसर दिए, उस आदमी ने मेरे पुराने जख्मों को कुरेदा, मेरे पुराने प्रेम सम्बन्धों का मजाक उड़ाया । हमारा बैडरूम एक उजड़ा हुआ खण्डहर था । हमारे शारीरिक सम्बन्धों की कोई सत्ता ही नहीं थी । मैं हमेशा उसे एक विचित्र आश्चर्य से देखती थी । हमारे बौद्धिक परिमाप बदल गए थे । भावनात्मक स्तर पर कुंठा स्थिर हो गई । पहले मैं अपने परिवार में भाई-बहनों में एक विशेष स्थान रखती थी, अब एक डर का माहौल मुझे घेरने लगा । अपने रिश्तेदारों से मिलना छोड़ती गई । एकान्तप्रिय हो गई । हमेशा बोरियत, एक-दूसरे के सम्पर्क में अकेलापन, थकावट, अजनबीपन हमें घेरता गया । घर खाने को, काटने को, दौड़ने लगा ।

'एक औरत के नाते तुम्हें मिस्टर दीक्षित का ध्यान रखना था, उनके प्रति इज्जत और प्रेम-भावना उत्पन्न करनी थी ।'

'आप भी किताबी कीड़े हो । मैंने कई टोटके आजमाए । दीक्षितजी अपना देहातीपना नहीं छोड़ सके । मुझे उनका प्यार चुभने लगा । छोटी से छोटी बात झगड़े का कारण बनने लगी । मेरी जिन्दगी तनावों से भर गई । मैं उसकी नौकर बनकर रह गई । मुझे दीक्षितजी स्वार्थी और स्वकेन्द्रित व्यक्ति लगते थे । जिस घर के बसाने के लिए शादी की थी, मुझे न वह घर मिला, न पति । मुझे अपने गिर्द सब कुछ अपना दुश्मन-सा लगने लगा । दीक्षित मेरे औरत होने को नहीं समझ सका । मेरे सौन्दर्य को वह बनावटी मानता था । कल्पनाविहीन, थोथे तर्कों से भरे उस आदमी ने मुझे परेशान किया । वह वस्तुतः मुझे शारीरिक

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पीड़ा देता था, उसके बिना वह शरीर के सुख को अपूर्ण मानता था। वास्तविकताओं से पृथक् वह शराब या नशीली दवाओं के सेवन से अपने को सन्तुष्ट कर पाता। उसके लिए सामाजिक, शारीरिक और पारिवारिक बन्दिशें नहीं थीं। विवाह एक भार था। मेरे उसके साथ रहने का बोझ दमघोंटू था।'

'मेरे मत में हमारे देश में भी एक वर्ष की अवधि के लिए विवाह प्रोवेशन या ट्रायल पर होने चाहिए।'

'शादी प्रोवेशन पर क्यों ? बिना विवाह के एक आध साल तक साथ रहकर देखा जा सकता है। साथ रहकर यह समझा-परखा जा सकता है कि भविष्य में क्या दोष, क्या कमियाँ सामने आएँगी। दैनिक जीवन की, रोजमर्रा की बातें महत्त्वपूर्ण होती हैं। साथ रहने से उनका बारीकी से अध्ययन किया जा सकता है परन्तु कुछ अरसे में हम एक-दूसरे को समझ ही लेंगे, इसकी क्या गारंटी है। आप पाश्चात्य देशों की मानसिकता को दूर से बैठकर सही कह सकते हो, परन्तु प्रोवेशन या साथ रहना एक सप्रयास सम्बन्ध स्थापना के सिद्धान्त पर टिका होने से अस्थाई स्थिति है, इसमें भुलावा अधिक है।'

'तुम ठीक ही कह रही हो। कुछ देर तक यह स्थिति ठीक होगी फिर असन्तोष उभरेगा या छल और अभिनय महत्त्वपूर्ण हो जाएँगे।'

'आप मेरी इस बात से तो सहमत होंगे कि वर्षों बाद भी पति-पत्नी के लगातार अच्छे चले आ रहे सम्बन्ध अचानक खराब हो जाते हैं। अधेड़ उमर में या बुढ़ापे में तलाक लेने पड़ जाते हैं।'

'सो तो है शामा, रिश्ते तो समय के साथ वनते-बिगड़ते हैं। फिर साथ रहना एक वर्ष का हो या सारी उमर का, विवाह के बिना, सामाजिक मान्यता के विना उसमें गति नहीं आ सकती।'

'हाँ, यही तो मैं कहती हूँ। अचानक या परिस्थितिवश औरत-पुरुष का साथ रहना अलग बात है और ट्रायल के तौर पर साथ रहना अलग वात। शादी एक सच्चाई तो है।'

'हाँ, जैसे विवाह अपनी पूर्णता में सिर्फ यौन पूर्ति के अर्थ में सर्वस्व नहीं है उसी प्रकार साथ सोना वह भी एक ट्रायल के लिए, जमता नहीं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिन्दगी में किस-किस चीज को ट्रायल पर लिया जा सकता है ? फ्रिज, वीडियो, टेलीविजन, एयकंडीशनर किराये पर मिलते हैं, स्त्री-पुरुष भी किराये पर ट्रायल पर मिलें तो सारा विश्व एक मार्केट वन जाएगा। जो औरत-मर्द रिजैक्ट हो गया, या बार-बार रिजैक्ट हो गया, हाँ, वास्तव में, तो उसका भविष्य क्या है ?'

'तुम मुझे फिलहाल ट्रायल पर अपनी प्रेमिका बना लो, तुम्हारे विवाहित जीवन को मैं नहीं तोड़ूंगी। देखो कुछ दिन, कुछ महीने, ट्रायल की प्रेमिका कैसी लगती है ?'

'तुम मुझे ट्रायल पर रखोगी या मैं तुम्हें ?'

'वक्त बताएगा। तुम्हें मेरा प्यार दूसरी बार ट्रायल पर मिल रहा है।'

'तुम अगर मेरी बीवी हो जातीं तो अवश्य उस प्यार को लेकर कुढ़ती रहतीं।'

'नहीं, मैं तुम्हारे लिए कभी ऐसा नहीं सोचती। जो अप्राप्य है उसका कुछ भाग, उसके जीवन का कुछ समय पा लेना एक उपलब्धि है। मेरे लिए यही पर्याप्त होगा।'

'फिर जिन्दगी शुरू करने से पहले गम्भीरता से सोच लो !'

'जानते हो तुम मेरे बच्चे के पिता बनते-बनते रह गए। अगर वह हो जाता तो आज उन्नीस वर्ष का होता !'

'माई गॉड ! शामा तुम मुझे अकेला छोड़ दो, प्लीज, इस समय मुझे एकान्त चाहिए !' शामा उठ गई, अपने कमरे में चली गई। अपने दफ्तर में बीता यह दिन एक बोझिल और थका देने वाला दिन था। शामा ! शामा !! एक बार फिर ! एक बार फिर···नहीं, नहीं, शामा झूठ कह रही है, वह झूठ कह रही है। अपनी स्थिति का लाभ उठा रही है ! मुझे भावनात्मक ब्लैकमेल कर रही है !

मैं सिगरेट जलाता हूँ। एक लम्बा कश लेकर उसे ऐशट्रे पर टिका देता हूँ। शून्य में मुझे उन्नीस वर्ष का मेरा हमशक्ल दिखाई देता है। नहीं ··यह झूठ है···

पर यह सच है, मैं तब भी जानता था कि यह एक सच है। शामा के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भीतर मेरा अस्तित्व रहा है, वह उसे जिन्दा नहीं रख सकी, क्यों ? क्यों नहीं ?

दीक्षित जी एक आशिकमिजाज पति थे। हमेशा दूसरी गैर औरतों की तलाश में रहते थे। उनके कपड़े पहनने का स्टाइल, चलने-उठने, बैठने का स्टाइल सब उन्हें एक शौकीन आदमी बनाते थे। उनकी मान्यता थी कि सैक्स आनन्द की चीज है, तबीयत खुश करने की चीज है। अपनी शान बनाए रखने के लिए औरतों की जरूरत है, यही उनकी नैतिकता थी, परन्तु वे एक तंगदिल आशिक थे। घर में अपनी बीवी को किसी प्रकार की स्वतन्त्रता देने के पक्ष में थे। बीवी घरेलू नौकर है—जूतों के तश्मे बाँधने वाली बींधनी मात्र। राजस्थानी भाषा में बींधनी शब्द का अर्थ है पत्नी। अपनी सैक्शुअल बहादुरी की डींगें मारना उन्हें प्रिय था। शामा भी शायद उसकी आशिकमिजाजी के चक्कर में प्यार कर बैठी थी जो शादी में बदलना जरूरी हो गया। वे अपनी विजय गाथा में असंख्य प्रेमिकाओं की चर्चा करते हुए शामा की त्रुटियाँ ढूंढ़ने लग गया था। शामा के रहस्यों से परिचित होकर, उसके अतीत की खोज कर वह एक दानव बनकर शामा से बदतमीजी व मारपीट करने लग जाता था। बात-बात पर लड़ाई, झगड़ा, मारपीट ! वस्तुतः प्रत्येक औरत को अपने रहस्य छिपाए रखने चाहिए। अतीत का खुल जाना औरत को सस्ता बना देता है।

दूसरी औरतों के प्रति उनकी रुचि वास्तविक थी, भावनात्मक भी, परन्तु इसी रुचि का सीमित दायरा था। एक बार के प्रयोग तक सीमित। उसकी प्रवृत्ति एक दिन का भावनात्मक रिश्ता कायम कर, प्रेम सम्बन्ध कायम करने की थी। इन सम्बन्धों की कोई सारगर्भित सार्थकता नहीं थी। उसका मुस्कराना, लुभाना, वफादारी एक रात या चन्द रातों तक ही बनी रहती थी। औरतें उसके प्रति आकर्षित होती थीं, उसे औरतें फँसाने की कला में महारत थी। शामा भी उसके प्रथम दृष्टि में व्यक्त प्यार में फँस गई थी। मन की अनेक दुविधाओं को समझा-बुझाकर दीक्षित के साथ वह बँधी थी, शुरू-शुरू में वह बौद्धिक लगता था, फिर उसका नकली रूप स्पष्ट हुआ।

शामा के मन में बगावत जन्मी। वह अपनी मनस्थिति, अपने सन्तोष

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के लिए प्रेमी तलाशने लगी। वह इस आशिक से बदलने के लिए तैयार हो गई। अपने सजने-सँवरने का ढंग बदलने लगी। वह अपनी कामना-पूर्ति के लिए साथी ढूँढ़ने लगी। शामा का चरित्र शुरू से अलग तरह का रहा है। वह आधुनिका थी। मेरे साथ अस्थाई रूप से बँध गई थी। मैं उसका प्रथम पुरुष था, प्रथम प्रेमी नहीं। मैं हमेशा अपना दृष्टिकोण विशेष बनाकर रहा हूँ। शामा के प्रति मैं पूर्ण प्यार का भाव जगाकर, उसकी अच्छाई को जानकर, यह समझकर कि वह मुझे चाहती थी, मेरे प्रति पहले-सा प्यार लिए है, उसकी अच्छाई और उसका दर्द मुझे मालूम है, उसे टूटे हुए कंटीले अतीत से अलग कर एक बार फिर मैं अपनी जिन्दगी में ले आया। शामा का वर्षों बाद मिला आलिंगन नई इच्छाओं को जगा गया। मेरी जिन्दगी में उसका दूसरी बार आना अच्छा लगा।

शामा ने मुझे बताया कि 'दीक्षित के साथ बीता उसका जीवन दुर्भाग्य-पूर्ण रहा, उसे गालियों और मारपीट के अलावा कुछ भी नहीं मिला, कुछ भी नहीं। शादी से पहले का प्यार दो दिन में गायब हो गया। किसी खास चीज से बदलकर मैं उसके लिए आम चीज, सहज प्राप्य तथ्य बन गई। दीक्षित आपसे बहुत अलग है। वह नये-पुराने रिश्तों को साथ-साथ नहीं बनाए रखता। हर पुराने रिश्तों को काटकर नये रिश्ते बनाता है।

वह कभी किसी भी औरत के साथ पूर्ण रिश्ता कायम नहीं रख सकता। दिल फेंक, मक्कार आदमी है वह। उसके भीतर कुछ गन्दे दबे हुए जज्बात हैं। सैंट या कपड़े और दूसरों के प्रति असाधारण दिलचस्पी के कारण उसके प्रति औरतें आकर्षित होती रहीं।'

मैं कहता हूँ, 'शामा, प्रत्येक पुरुष आशिकमिजाज होता है। अपनी पत्नी कितनी भी सुन्दर क्यों न हो, उसे दूसरों की औरतें ज्यादा सुन्दर लगती हैं। विवाह के बाद वफादारी का कम होना भी कभी-कभी स्वाभाविक हो जाता है। नवीनता का आकर्षण अपने आपमें एक इतिहास है। दूसरी औरतों का प्यार कुछ और ही बात है। ताजगी के लिए, बदलाव के लिए, अपनी पत्नी के प्रति वफादारी बनाए रखने के लिए शायद दूसरी औरतें जरूरी हैं।'

'पर आप दीक्षित को ऐसा पुरुष मत समझिए। वह तो साक्षात

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
काऊन्ट ड्रेकुला का रूप है। रक्तपिपासु-पिस्सु है।'

'शायद तुम्हारे दीक्षित को भी किसी आदर्श महिला की तलाश है। मुझे भी एक ऐसी औरत चाहिए जो रहस्यमयी हो, प्यार करना जानती हो और मेरी भावनाओं का आदर करे। एक जीवित भावात्मक मूर्ति हो, जिसे स्पर्शा जा सके, पाया जा सके। वह मेरे द्वारा शासित भी हो और मुझ पर शासन भी कर सके। उसमें भरपूर योग्यता हो और असीम फूहड़ता भी। ऐसी औरत जो मेरी गति को समझे। स्वतन्त्र, निर्बाध आनन्द भोगवाद के जीवन के लिए जो औरत मेरे अस्तित्व को अपने सौन्दर्य और प्यार की वास्तविकता से भर दे!'

'क्या वह औरत मैं नहीं हो सकती ?'

'अभी तो तुम दूसरी बार मेरी जिन्दगी में आई हो, तुम्हें बार-बार आकर मुझे विश्वास दिलाना पड़ेगा कि वह तुम ही हो, वह असम्भव औरत तुम ही हो।'

'क्या मुझे एक उपपत्नी से अधिक दूसरा अस्तित्व नहीं दोगे ?'

'उपपत्नी का अस्तित्व भी कहाँ मिला है तुम्हें शामा।'

'पर सिर्फ प्रेमिका बने रहने से अच्छा है कि तुम मुझे कोई भी दूसरा रूप दो, अन्य नाम दो। सोलह वर्ष की उमर से आज तक अपने साथ जुड़े प्रेमिका शब्द से तंग आ चुकी हूँ।'

'हाँ, मुझे प्रत्येक प्रेमिका एक उपपत्नी लगती है। अपनी पहली पत्नी और दूसरी पत्नी को भी मात्र प्रेमिका बनाकर नहीं रख सका। वे पूरी तरह पत्नी भी नहीं बन पाईं।'

उपपत्नी हमारी संस्कृति में वर्षों से स्वीकृति पाती रही है। एक पत्नी, और चार उपपत्नियाँ रखने की जागुंइश दी है। उपपत्नी रोमांस के लिए जरूरी भी है। पत्नी के लिए पति एक ईश्वर बन जाता है। बराबरी के धरातल पर नहीं रहता। उपपत्नी का वह प्रेमी है। अवैध, अनैतिक सम्बन्धों के कारण यह रिश्ता बड़ा रोचक बन जाता है।

उपपत्नी की आवश्यकता अपनी पत्नी के प्रति उदासीनता या बासीपन के कारण महसूस होती है। पुरुष के जीवन में एक समय आता है जब वह अपनी प्रशंसा करवाना चाहता है। जो पत्नी नहीं समझती वह
Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उपपत्नी समझ सकती है। यह रिश्ता हृदय में छिपी हुई गहराई को छूकर उसे जागृत करता है। शामा के प्रकरण में तो आर्थिक अभाव भी हमारे रिश्ते का कारण नहीं है, उसे मेरी जरूरत है, कानूनी और सामाजिक मान्यताओं की उसे आवश्यकता नहीं है, वह पहले भावनात्मक सम्बन्ध के कारण मुझसे जुड़ी थी, अब शारीरिक और भावनात्मक दोनों कारणों से मेरे साथ जुड़ गई है। उपपत्नी का रिश्ता एक वास्तविक रिश्ता है, शामा एक ऐसी औरत है जो मुझे पहले से जानती है, रिश्तों को समझती है। वह प्यार चाहती है जिसके मूल में धन का लालच नहीं है।

शामा का कहना है कि वह वैवाहिक सत्य से अपनी स्वतन्त्रता बनाए रखने के कारण भागी थी। उसमें बचपना है। वह जानती है कि वह अब प्यार की गुड़िया नहीं रही। अपने बारे में उसे कोई भ्रम नहीं है।

शामा सुन्दर है, काफी सुन्दर है, पर उसका पूरा दृष्टिकोण अनमना-सा है, वह किसी गम्भीर रिश्ते में बँध नहीं पाएगी। मैं जब पहली बार उसका प्रेमी बना था तो वह एक व्यक्ति विशेष थी, उसके प्रति अनेक अन्य व्यक्ति आकर्षित थे। परन्तु इस बार उसने उसे मुझे चाहने के लिए चुनौती दी है। उसे मैं अपने जीवन के गोपनीय, महत्त्वपूर्ण क्षण दूँ—एक स्थिति विशेष बना दूँ। मेरे अहं के लिए यह औरत जरूरी है। वह फिर लौटी है मेरी जिन्दगी में, पहले मैं उसका अधिकार छीन चुका हूँ—उसे पत्नी नहीं बना सका—अब वह अनायास आ गई है। मेरी जिन्दगी में एक नया सिलसिला शुरू हो रहा है। आफिस के बाद मैं शामा के फ्लैट पर चला गया हूँ। परिचित-सा वातावरण है।

सहज व्यक्तित्व की यह औरत वस्तुतः एक स्पृहणीय वस्तु है। फ्रिज से निकालकर पानी पीती है। फिर चाय बनाने के लिए किचन में चली जाती है। फिर मुझे आलिंगन में बाँध लेती है। मेरे ओठों पर लगे लिपस्टिक को रूमाल से पोंछ देती है और कहती है, 'आप जिस शामा के लिए आज यहाँ आए हैं वह आज नहीं मिलेगी, आपको दो दिन और प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।'

Funding by IKS-MoE

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'क्यों ?' मैं पूछता हूँ।

'इस क्यों का तो उत्तर है, पर दो दिन के बाद बताऊँगी।'

'तुमने दीक्षित को क्यों छोड़ा ?'

'यह अच्छा प्रश्न नहीं है, उत्तर है भाग्य में उस रिश्ते का टूटना लिखा था, रिश्ता टूट गया—दीक्षित जी अभी भी कभी-कभार मुझे मिलते हैं, फोन पर कुशलक्षेम भी पूछते हैं।'

'तुम उसे फिर क्यों नहीं लातीं जीवन में ?'

'जो पेड़ कटकर गिर गया, जिसके टुकड़े जलाकर लकड़ी में बदल गए, उसे जोड़ना सम्भव नहीं। एक फाँस बाकी है, चुभी हुई। उसे कभी भी निकाल फेंकूंगी।

मेरे इस सम्बन्ध के बावजूद शामा एक अन्य पुरुष के साथ विवाह बन्धन में बँध गई। पर मेरे साथ भी जुड़ी रही। वह मेरी उपपत्नी नहीं बन सकी। मात्र एक सैक्स जीवन में बदलाव बनी रही। शामा का दूसरा विवाह अचानक हो गया। उस रात हम दोनों रात देर तक शामा के फ्लैट पर एक-दूसरे के प्यार में जुड़े रहे। शामा को नंगे रहना बहुत पसन्द है। कभी-कभी सिर्फ ब्रेसरी पहने पूरा घर घूम लेती है, खिड़की से बाहर भी देख लेती है। दरवाजे से बाहर झाँक सकती है।

'आप मुझे एक राय दीजिए !'

मैं चुप हूँ। वह कहती है, 'मेरे डायवोर्स का दो वर्ष का समय कल खत्म हो रहा है, मैं फिर शादी करना चाहती हूँ।'

'क्या कोई नजर में है ?'

'हाँ है, इसी मुहल्ले में एक तेईस वर्षीय युवक है, मुझसे बारह वर्ष छोटा है। हम कल आर्यसमाज में शादी कर रहे हैं। आप आओगे। एक गवाह के रूप में—कहो—आऊँगा। प्लीज आना है, कल सुबह ग्यारह बजे !'

'तुमने पहले कभी नहीं बताया।'

'भूल गई थी, दरअसल वह इसी शहर में एक फैक्टरी में इंजीनियर है। रात भर डियूटी पर रहता है, सुबह छः बजे मुझे मिलता है और

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हम मेरे आफिस टाइम तक साथ रहते हैं ।'

'कब से है यह सिलसिला ?'

'रिश्ता है, अभी कुछ सप्ताह पूर्व का रिश्ता है । बस मैं उसे चाहती हूँ । कम उमर के पुरुष के साथ जिन्दगी कैसे चलती है, देखना चाहती हूँ । तुम्हें कैसा लगेगा ?'

'मुझे क्या लगेगा ? मैं एक विवाहित आदमी हूँ । तुम जो भी मुझे देती हो, वह सिर्फ एक बोनस है ।'

'तुम्हारे इस विवाह के बाद भी तुम्हें बोनस दूँगी ।'

'अचानक आपसे तुम क्यों ?'

'अब मैं आप पर आश्रित नहीं हूँ—सैक्स के लिए—अनावश्यक बोझ नहीं हूँ । फिर यह 'आप' शब्द तो हमारे दूसरी बार के रिश्ते में आया है, पहले तुम्हें 'तुम' ही कहती थी ।'

'कल मुझे कब आना है ?'

'कहा न ! ग्यारह बजे ! और हाँ, वहाँ तुम्हें इस शादी के दूसरे गवाह से भी मिलवाऊँगी ।'

'किससे ?'

'मिस्टर दीक्षित से, मेरे पहले पति से ।'

'शादी के गवाहों के रूप में दीक्षित और मुझे ही क्यों चुन रही हो ?'

'एक विश्वास पाने के लिए कि मैं कितनी उन्मुक्त हूँ । अपने चरित्र की शक्ति दिखाने के लिए । क्या तुम्हें ईर्ष्या होगी ?'

'मैं अलग मुहूरत में पैदा हुआ हूँ, अलग तरह की फौलाद का बना हूँ ।'

'मेरी शादी के बाद तुम्हें कैसा लगेगा ?'

'क्या कैसा लगेगा । मेरे लिए सूत्र का जुड़ना, कटना कोई अर्थ ही नहीं रखता । चरित्र पर मेरा विश्वास नहीं है ।'

'हाँ, तुम्हारे पास आने की स्वतन्त्रता कम हो जाएगी । कमल कल मेरा पति बनेगा । तुम्हारे लिए मैं हमेशा दिल में उम्मीद लिए रहूँगी । तुम जब चाहोगे तुम्हारे पास आऊँगी, जहाँ चाहोगे वहाँ रहूँगी । पति मुझे अपनी जिन्दगी के खाली कोनों को भरने के लिए चाहिए । अपने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'क्यों ?' मैं पूछता हूँ।

'इस क्यों का तो उत्तर है, पर दो दिन के बाद बताऊँगी।'

'तुमने दीक्षित को क्यों छोड़ा ?'

'यह अच्छा प्रश्न नहीं है, उत्तर है भाग्य में उस रिश्ते का टूटना लिखा था, रिश्ता टूट गया—दीक्षित जी अभी भी कभी-कभार मुझे मिलते हैं, फोन पर कुशलक्षेम भी पूछते हैं।'

'तुम उसे फिर क्यों नहीं लातीं जीवन में ?'

'जो पेड़ कटकर गिर गया, जिसके टुकड़े जलाकर लकड़ी में बदल गए, उसे जोड़ना सम्भव नहीं। एक फाँस बाकी है, चुभी हुई। उसे कभी भी निकाल फेंकूंगी।

मेरे इस सम्बन्ध के बावजूद शामा एक अन्य पुरुष के साथ विवाह बन्धन में बँध गई। पर मेरे साथ भी जुड़ी रही। वह मेरी उपपत्नी नहीं बन सकी। मात्र एक सैक्स जीवन में बदलाव बनी रही। शामा का दूसरा विवाह अचानक हो गया। उस रात हम दोनों रात देर तक शामा के फ्लैट पर एक-दूसरे के प्यार में जुड़े रहे। शामा को नंगे रहना बहुत पसन्द है। कभी-कभी सिर्फ ब्रेसरी पहने पूरा घर घूम लेती है, खिड़की से बाहर भी देख लेती है। दरवाजे से बाहर झाँक सकती है।

'आप मुझे एक राय दीजिए !'

मैं चुप हूँ। वह कहती है, 'मेरे डायवोर्स का दो वर्ष का समय कल खत्म हो रहा है, मैं फिर शादी करना चाहती हूँ।'

'क्या कोई नजर में है ?'

'हाँ है, इसी मुहल्ले में एक तेईस वर्षीय युवक है, मुझसे बारह वर्ष छोटा है। हम कल आर्यसमाज में शादी कर रहे हैं। आप आओगे। एक गवाह के रूप में—कहो—आऊँगा। प्लीज आना है, कल सुबह ग्यारह बजे !'

'तुमने पहले कभी नहीं बताया।'

'भूल गई थी, दरअसल वह इसी शहर में एक फैक्टरी में इंजीनियर है। रात भर डियूटी पर रहता है, सुबह छः बजे मुझे मिलता है और

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हम मेरे आफिस टाइम तक साथ रहते हैं।'

'कब से है यह सिलसिला ?'

'रिश्ता है, अभी कुछ सप्ताह पूर्व का रिश्ता है। बस मैं उसे चाहती हूँ। कम उमर के पुरुष के साथ जिन्दगी कैसे चलती है, देखना चाहती हूँ। तुम्हें कैसा लगेगा ?'

'मुझे क्या लगेगा ? मैं एक विवाहित आदमी हूँ। तुम जो भी मुझे देती हो, वह सिर्फ एक बोनस है।'

'तुम्हारे इस विवाह के बाद भी तुम्हें बोनस दूँगी।'

'अचानक आपसे तुम क्यों ?'

'अब मैं आप पर आश्रित नहीं हूँ—सैक्स के लिए—अनावश्यक बोझ नहीं हूँ। फिर यह 'आप' शब्द तो हमारे दूसरी बार के रिश्ते में आया है, पहले तुम्हें 'तुम' ही कहती थी।'

'कल मुझे कब आना है ?'

'कहा न ! ग्यारह बजे ! और हाँ, वहाँ तुम्हें इस शादी के दूसरे गवाह से भी मिलवाऊँगी।'

'किससे ?'

'मिस्टर दीक्षित से, मेरे पहले पति से।'

'शादी के गवाहों के रूप में दीक्षित और मुझे ही क्यों चुन रही हो ?'

'एक विश्वास पाने के लिए कि मैं कितनी उन्मुक्त हूँ। अपने चरित्र की शक्ति दिखाने के लिए। क्या तुम्हें ईर्ष्या होगी ?'

'मैं अलग मुहूरत में पैदा हुआ हूँ, अलग तरह की फौलाद का बना हूँ।'

'मेरी शादी के बाद तुम्हें कैसा लगेगा ?'

'क्या कैसा लगेगा। मेरे लिए सूत्र का जुड़ना, कटना कोई अर्थ ही नहीं रखता। चरित्र पर मेरा विश्वास नहीं है।'

'हाँ, तुम्हारे पास आने की स्वतन्त्रता कम हो जाएगी। कमल कल मेरा पति बनेगा। तुम्हारे लिए मैं हमेशा दिल में उम्मीद लिए रहूँगी। तुम जब चाहोगे तुम्हारे पास आऊँगी, जहाँ चाहोगे वहाँ रहूँगी। पति मुझे अपनी जिन्दगी के खाली कोनों को भरने के लिए चाहिए। अपने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

असीम एकाकीपन को दूर करने के लिए और आत्मतोष के लिए कमल को व्याह रही हूँ !'

'कमल हमारे रिश्ते को जानता है ?'

'नहीं जानता है तो जान जाएगा। क्या फर्क पड़ता है ! तुम्हारी पत्नी हमारे बारे में जानती है ?'

'हाँ जानती है, तुम्हारी शादी से शायद उसे राहत मिले !'

'वेचारी ! अरे हाँ आफिस के कई लोग कहते हैं कि तुम शिलाजीत खाते हो !'

मैं हँसता हूँ। कहता हूँ, 'इस शिलाजीत का नाम सुना है, बेचने वाले पगड़धारी लोग देखे भी हैं, कभी खाई नहीं। अब जब तुम एक युवक से शादी कर रही हो तो शायद शिलाजीत खानी पड़े।'

'अच्छा छोड़ो, अब जाओ, तुम्हारी पत्नी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होगी। अच्छे बच्चे की तरह उसके पास जाओ ! मैं सोना चाहती हूँ।'

नन्दी कहती है 'जिन्दगी जीने के लिए है, मौजमस्ती के लिए है। आनन्द परिवर्तनशील है, आनन्द की प्राप्ति के साथ ही उसका रूप बदलना शुरू हो जाता है।'

मैं कहता हूँ, 'खुशी की खोज ही जीवन है। हमारे सम्बन्धों में, हमारे प्रत्येक व्यवहार में इस आनन्द की प्राप्ति की सम्भावना वर्तमान है। शारीरिक सन्तुष्टि का जी लिया एक पूर्ण क्षण स्थाई खुशी बन जाता है।'

'यह खुशी व्यक्ति विशेष की आशाओं और क्रियाओं पर आश्रित है। आनन्द का अनुभव और सन्तोष की तलाश सतत् चलती रहती है।'

'पर नन्दिता, तुम यह क्यों नहीं मान लेतीं कि इनके लिए भाग्य महत्वपूर्ण रोल अदा करता है। एक आदमी जिन्दगी भर सही चुनाव करता है, सभी सही प्रयास और प्रयत्न करता है, परन्तु अदृश्य हाथ उसके विरुद्ध

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्यरत रहते हैं, उसे खुशी नहीं मिलती। मेरे प्रकरण में ऐसा ही है। अपनी जिन्दगी को नौकरी, घर, चित्रकला, वागवानी, लेखन, कविता, सामाजिक परिवेशों में बाँधकर, सब कुछ सही रखने के प्रयास में मैं कितना गलत हो गया हूँ। भाग्य मेरा साथ ही नहीं देता। पहली पत्नी के साथ तलाक हुआ, यह विवाह बहुत सोच-समझकर किया था। भाग्य। दूसरी पत्नी भी ठीक नहीं मिली, पुनः भाग्य, तुम्हारे जैसी प्रेमिका मिली, फिर भाग्य। खुशी भाग्य से मिलती है।'

'तुम एक बात मानो। आशा और आकांक्षा बनाए रखो, मनुष्य के जीवन के उद्देश्य इन्हीं से प्रभावित होते हैं। वास्तव में हमारे जीवन में जो होता है, वह वस्तुतः चांस या भाग्यवश ही होता है। सैक्स में हम क्या पाना चाहते हैं ?'

'शारीरिक तुष्टि।'

'उसका आधार शरीर ही होगा। ठीक ! सैक्स बौद्धिक तुष्टि नहीं देता। हमारा उद्देश्य सिर्फ उतना ही होना चाहिए जहाँ असम्भव की सीमा शुरू हो, उसके आगे नहीं।'

'अपने बारे में पहले जानो !'

'हाँ, इच्छाएँ धरातल पर असलियत बन जाती हैं, वे कल्पनातीत नहीं हो जातीं। शुरू में अगर सफलता मिलती है तो आगे के रास्ते भी साफ होंगे। मेरा देखो। है क्या मेरे पास ?'

'दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति जागरूक रहना जरूरी है, पति-पत्नी के सम्बन्धों में यह और भी जरूरी है। वस्तुतः आनन्द की खोज अति आनन्द तक जाकर अन्धी शारीरिक लिप्ति में बदल जाती है—आनन्द का मार्ग ब्लाक्ड हो जाता है—देखो यह तो मानना ही होगा कि विश्वास, खुशी और शान्ति परिवार के सुख के लिए जरूरी हैं।'

'मैं और तुम उसी की तलाश में एक-दूसरे से नहीं टकरा रहे हैं क्या ? हमारी क्रियाएँ कटिबद्धता को जन्म देती हैं, कटिबद्धता आनन्द के लिए, चाहे वह आनन्द कुछ देर का ही क्यों न हो, आवश्यक हो जाती हैं।'

Funding by IKS-MoE

'मनुष्य अपने जीने की प्रक्रिया पर नियंत्रण तो रख नहीं सकता !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमारे अपने जीवन को गति देने के लिए, लिये गए निर्णय अर्थपूर्ण सम्बन्धों पर टिकें तो आनन्द मिलेगा। आनन्द की प्राप्ति के लिए प्यार जरूरी है। प्यार के लिए सैक्स भी जरूरी है।'

'सैक्स भी क्यों ? सैक्स ही क्यों नहीं ?'

'क्योंकि काम, जिम्मेदारियाँ, जीवन की सुविधाएँ जुटाना सैक्स से पृथक् हैं, इसीलिए सैक्स भी एक है। आनन्द के लिए दो व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति कटिवद्ध हों—उसके लिए इज्जत देने की आवश्यकता है। तुम न अपने पति को इज्जत देती हो न अपनी भावनाओं को—मेरा तुम्हारा रिश्ता और तरह का है, अस्थाई है, कुछ देर के लिए है। हमारा रिश्ता स्वार्थ पर टिका है। इसमें दोस्ती का तत्त्व भी नहीं है, इसीलिए हमारी एक-दूसरे के प्रति कटिवद्धता अस्थाई है, हमारा आनन्द क्षणिक है, वह स्थाई नहीं हो सकता।'

'परन्तु प्रतिबद्धता में आनन्द तो है ही। प्यार, सैक्स, शादी आनन्द की परिमाप तक ले जाते हैं। पति-पत्नी के बीच का सैक्स एक स्थिति विशेष है, प्रेमियों, खासकर मेरी और तुम्हारी तरह के प्रेमियों का सैक्स आनन्द और एडवैंचर की भावना देता है। हर अवैध रिश्ते में एडवैंचर है। सैक्शुअल और रोमांटिक क्षण भी अपना महत्त्व रखते हैं।"

'देखो नंदी, मैं-तुम दोनों असफल विवाहों की कगारों पर हैं, किनारों पर लुढ़कने के लिए ही बैठे हैं। विवाह का उद्देश्य पारिवारिक खुशी देता है, तनावों को बढ़ाता नहीं है, वरन् कम ही करता है। परन्तु हमारे जैसे असफल लोग दूसरों की सफलता की बात क्यों सोचते हैं ?'

'सच-सच बताना, अगर हम दोनों शादी कर लें तो क्या हम दूसरे विवाहित लोगों की तरह नहीं रह सकते। बच्चे पैदा करना, एक-दूसरे से आशाएँ रखते हुए परिवार की स्थापना करना क्या उचित नहीं होगा।'

'नन्दी, मेरा और तुम्हारा विवाह और भी अधिक असफल होता। कारण यह है कि जो मजा दूसरे को धोखा देकर आनन्द पाने में है, वह विवाह के वास्तविक बन्धन में नहीं।'

'ऐसा आखिर क्यों है ? क्या हम अपने शरीर की मूलभूत छोटी-सी आवश्यकता—जिसे सैक्स कहते हैं, के लिए आनन्द को स्वीकार क्यों नहीं

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर लेते ?'

'देखो नन्दी, मैं यह नहीं कहता कि सैक्स-सम्भोग से हमें आनन्द नहीं मिलता। आनन्द मिलता है, वह आनन्द मेरे-तुम्हारे प्रसंग में अस्थाई है, मेरी पत्नी के लिए स्थाई, तुम्हारे पति के लिए इसका अस्तित्व ही नहीं है।'

'तुम आनन्द को एक अनुभव ही मानते हो, आनन्द की अपेक्षा रखना, उसमें लिप्त होकर एक प्रयास विशेष से उसे स्थायित्व दिया जा सकता है। प्रयास विशेष का आनन्द, प्राप्ति के आनन्द से अधिक है।'

'एक बात कहूँ, जीवन में सफलताएँ कोई महत्त्व नहीं रखतीं। वस्तुतः लगातार सफलताएँ निराशावादी बनाती हैं। मैं जिन्दगी में सैक्स में इतनी सफलता से उलझा हूँ कि किसी नई औरत की प्राप्ति आनन्द नहीं देती, बाद में निराशा ही हाथ लगती है। वस्तुतः जीवन का आनन्द इसी में है कि हम अपनी उपलब्धियों के लिए प्रयत्नरत रहें। तुम जीवन से झूठी आशा रखती हो, तुम यह क्यों नहीं सोचतीं कि तुम्हारी वजह से किसी दूसरे का आनन्द लुप्त हो रहा है। आनन्द पाने के लिए आनन्द के सोपान हैं, उनका निर्माण स्वयं करना होता है, उन्हें आदेश देकर बनवाया नहीं जा सकता।'

'तुम अपनी जिस जिन्दगी के लिए मुझसे या मुझ-सी बहुत-सी दूसरी औरतों में डूबे रहते हो, उससे तुम्हें थकावट नहीं होती। क्या तुम नहीं सोचते कि कभी तुम पराजित हो जाओगे ?'

'क्या कहूँ ? मेरी दूसरी पत्नी है। मैं अपनी पत्नी के साथ अपने सम्बन्धों को मधुर बनाने के लिए सब कुछ करता हूँ—परन्तु मेरा भाग्य मेरे साथ नहीं है।

मेरी दूसरी पत्नी का नाम स्निग्धा है। प्रत्येक विवाह का आधार है सैक्स। यह शादी मैंने सिर्फ सैक्स के लिए की थी। मुझे आशा थी कि इस विवाह से मुझे तुष्टि मिलेगी। हमारे दूसरे विवाह का प्रारम्भिक काल भी एक बुरे सपने की तरह था। मेरी पत्नी को मेरी आलोचना करने में मजा आता है। स्निग्धा शुरू-शुरू में मेरी बातों से असहमत रही, उसका कहना था कि हमारे जैसे मध्यवर्गीय परिवारों के लिए सैक्स सर्वा-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

धिक महत्त्व की वस्तु नहीं है। भावनात्मक तोष शारीरिक तुष्टि से ऊपर है। सैक्स के कारण विवाह का टूटना या बने रहना असम्भव है। वस्तुतः आजकल डायवोर्स का कारण भी सैक्स की असफलता नहीं है।'

'मैं यह मानने को तैयार नहीं कि पुरुष सैक्स के बिना जिन्दा नहीं रह सकता।'

'पर यह सचाई है, जब सैक्स उपलब्ध हो, उस स्थिति में सैक्स के विना रहना असम्भव हो जाता है' स्निग्धा ने कहा।

'सैक्स एक शक्तिशाली मनोभावना जरूर है, परन्तु सर्वस्व नहीं है।' मैं कहता हूँ।

'सैक्स को शरीर से बाहर करने की आवश्यकता है। एक छोटे तालाब में जब पानी भर जाता है, तो वह किनारों को तोड़कर बाहर आता है। उसे निकास मार्ग चाहिए। सैक्स की भी यही स्थिति है। हमारा प्रत्येक का अपना व्यक्तिगत सैक्स-व्यवहार रहता है, अनुभव रहते हैं। सैक्स के प्रति हमारी अपनी धारणाएँ हैं, विचारधाराएँ हैं।'

'स्निग्धा, तुम एक पढ़ी-लिखी लड़की हो। तुम्हें जीवन का ज्ञान है। तुम जानती हो कि सैक्स आनन्द भी देता है। जुगुप्सा भी उत्पन्न करता है—परन्तु विवाह में यह जरूरी नहीं कि हम आपसी तालमेल वैठाएँ।'

'जरूरी है, तुम अपनी आदतें सुधार लो तो मैं तुम्हें दोष नहीं दूंगी।'

'देखो, तुम पुरुष और स्त्रियों के सम्बन्धों में यह पाओगी कि हमारी वासना शक्ति असीम है, पशुओं की तुलना में सैकड़ों गुना अधिक। हमारे सैक्स के लिए निकास जरूरी है। सैक्स का सम्बन्ध अनेक भावनाओं से है। एक मनुष्य सैक्स को प्यार मानता है, दूसरा इसे कुछ और मानता है।'

'तुम्हारा वचपन प्यारविरहित रहा है इसीलिए तुम्हें अधिक सैक्स के रिश्ते चाहिए। एक पत्नी से तुम सन्तुष्ट नहीं रह सकते। तुम्हारी प्रारम्भिक गरीबी तुम्हारे लिए अस्थिरता की भावना पैदा कर गई। तुम भावनात्मक सुरक्षा के लिए अनेक प्रेम सम्बन्धों में जीते हो। तुम इसी-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए एक पत्नी से सन्तुष्ट नहीं हो।'

वस्तुत: मैं अपनी इस पत्नी के प्रति भी वफादार नहीं हूँ। मैं समझ नहीं पाता हूँ कि प्यार की वास्तविकता क्या है। स्निग्धा या अन्य औरतें मेरे लिए एक ही अर्थ रखती हैं, थोड़ा फर्क स्निग्धा के सम्बन्ध में है। वह मेरे बच्चों की माँ भी है।

स्निग्धा कहती है कि उसे बच्चों व घर की देखभाल करना अच्छा लगता है। वह मेरे साथ चर्चाओं में, बातचीत में अपनी बौद्धिकता की छाप भी छोड़ जाती है। वह यह प्रमाणित करना चाहती है कि हम एक-दूसरे के बहुत नजदीक हैं।

मेरे लिए यौन भावनात्मक आवश्यकता है। मैं सैक्स को अपनी प्रेमिकाओं के व्यक्तित्व से पृथक् रखता हूँ, व्यक्तित्व को सैक्स और प्यार से जुड़ा पाता हूँ। कुछ के साथ ताल्लुकात में प्यार भी नहीं है। मैं अपनी लिप्साओं की पूर्ति के लिए औरत चाहता हूँ। घर···पत्नी तो रिश्ते हैं। स्निग्धा के बच्चों के कारण मैं कुछ बदला जरूर हूँ। अब दूसरी औरतें मेरे पास नहीं आतीं, मेरे घर नहीं आतीं, मुझे उन तक जाना पड़ता है। स्निग्धा मेरी सैक्स की पूर्ति के लिए पर्याप्त नहीं है। मुझे सैक्स के अतिरिक्त अपने साथी में हमेशा समान रुचि, एक-दूसरे पर सम्पूर्ण के लिए आश्रित रहने और नैतिकता की तलाश रही है। जब यह नैतिकता नहीं मिली तो मैं अनैतिक हो गया। मेरे मन, दिमाग, शरीर में औरतें हैं। समाज और संस्कृति के दायरों की बात मैं नहीं सोचता। धीरे-धीरे मैं एकांगी होता जा रहा हूँ।

मैं धीरे-धीरे अकेला होता जा रहा हूँ, जीवन अर्थहीन हो गया है। ऐसी स्थिति में दूसरे रिश्ते मुझे अस्थाई बल देते हैं। ये आवश्यक हैं, मेरी विवशता बन जाते हैं—दो शरीर मिलकर अकेलेपन की भावना को दूर करते हैं। स्निग्धा के साथ भी मुझे शरीर सम्बन्धों से खुशी मिली है। पर यह औरत मुझ पर विश्वास नहीं करती, मेरी आदतें देखकर विश्वास नहीं करती।

शामा के लिए सैक्स एक मुक्ति था, अमरता था, वह दीक्षित को सह नहीं सकी, दूसरे शरीरों में वह क्रिया खोजने लगी ताकि उसे

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विश्वास हो जाए कि उसका अपना शरीर मरा नहीं है। परन्तु सिर्फ अपने को प्रमाणित करने के लिए सर्वत्र अतिरिक्त उत्साह में शामा उलझी रही थी।

स्निग्धा कभी-कभी फ्रिज्ड-सी रहती है। परन्तु हमारा आपसी रिश्ता सन्तोषजनक तो जरूर है। स्निग्धा एक अच्छी पत्नी भी है।

मेरी दूसरी प्रेमिकाएँ अपनी पृथक्-पृथक् स्थितियों में अपनी चेष्टाओं को जस्टीफाई जरूर करती हैं। निर्मल के साथ मेरा अभी भी वही महीने में दो दिन का रिश्ता है। अभी भी हमारा सम्बन्ध गुप्त है।

निर्मल कहती है, 'मैं पैंतीस की हो गई हूँ। मेरा पति मुझसे दस वर्ष बड़ा है। वह मुझे सन्तुष्ट नहीं करता।'

'मैं तो तुम्हारे पति की उमर का हो रहा हूँ।'

'न, तुम देखने में वैसे लगते हो, न अपनी गति में।'

'धन्यवाद'। परन्तु सत्य यह है कि मैं प्रत्येक प्रकार के भय से मुक्त हूँ। मैं अपनी जिन्दगी में हमेशा शीत युद्ध से बचा हूँ। यह सही है हमारे, औरत और मर्द के रिश्ते में जहाँ प्यार भरा है, वहाँ नफरत भी भर सकती है। मुझमें कभी दर्प की भावना नहीं पनपी। कभी मैं दिखावे पर विश्वास नहीं करता। स्निग्धा कहती है, 'तुम अपने जीवन की सफलता के कारण अपने यौन रिश्तों का दिखावा करते हो!'

यह सही नहीं है। मेरे व्यवसाय का मेरे पौरुष से कोई सम्बन्ध नहीं है। शुरू में मैं एक कलाकार, लेखक, कवि बने रहने की चेष्टा करता रहा, उसमें सफल भी हुआ परन्तु व्यवसाय में इनमें से कुछ भी मुझे आगे बढ़ने में नहीं रोक सका।

स्निग्धा मुझसे आयु में काफी छोटी है, यही कारण है कि उसे पाकर मैं और दृढ़ हो गया हूँ। मैं कभी छोटी आयु की औरतों के पीछे नहीं भागा। मेरे प्रत्येक सम्बन्ध में एक यौवन रोमांस, नवीनता उभरी है।

स्निग्धा कहती है, 'सैक्स के मामले में तुम खानाबदोश हो।'

Funding by IKS-MoE

मैं समझता हूँ सैक्स मेरे जीवन का विस्तार है। वस्तुतः ये अस्थाई

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रेम सम्बन्ध एक मित्रता से पृथक् कुछ नहीं हैं। सिर्फ इन्हें दोस्ती कहा जा सकता है। ये रिश्ता मेरे लिए दोस्ती का स्वरूप लिये है। मैं औरत को कभी सजावटी साधन नहीं मानता। अपने शरीर के लिए, मन के लिए एक लगातार चलते हुए काफिले की तरह ये औरतें मेरे रास्ते में आईं। मुझे प्रभावित किया, मेरे साथ रिश्ते कायम किए और मुझे जीवन्तता दी इन्होंने। यदि कोई औरत मेरी सहशायिनी नहीं बनी तो मैंने उसे काटकर अलग नहीं किया, रिश्ता बना रहा, सैक्स की दोस्ती से पृथक् एक सामाजिक रिश्ता।

स्निग्धा का कहना है, 'मैं भी तुम्हारी तरह बन जाऊँ तो तुम क्या करोगे।'

'कुछ नहीं करूँगा। तुम्हें दैनिक जीवन की एक स्थिति मान लूंगा। हमारा दैनिक जीवन हमारे व्यक्तित्व को घेरों में घेर लेता है, हमारी प्रवृत्तियों और हमारे उद्देश्यों को निर्धारित करता है। हमारे परिचय का दायरा हम तोड़ नहीं पाते—हमारे ही बनाए हुए वृत्त हमें घेरकर विवश कर देते हैं। हमारा सतही अस्तित्व सामने आता है, इन्हीं विवशताओं के कारण हम अजनबी चेहरों की तलाश करते हैं। जीवन की स्वाभाविकता के कारण बनी भावुकताओं को टूटने से बचाने के लिए, उन्हें दबावों से बचाने के लिए, अपनी रोमांटिक इमेज बनाए रख़ने के लिए—हम नावाफिक शरीरों की खोज में जाते हैं। क्या तुम्हें ऐसा लगता है? यदि लगता हो तो तुम भी अपनी तलाश शुरू करो।'

'सुनो···तुम कभी अपने को पराजित मानने को तैयार क्यों नहीं हो जाते?'

'पराजय? किसलिए? मैं नई खोज में, नये संधान में, नये चेहरे में एक चेतना पाता हूँ। यही चेतना हम एक-दूसरे में, पति-पत्नी में भी पा सकते हैं। उसके लिए हम दोनों को परिपक्व होना चाहिए। वस्तुतः विवाहित जीवन के द्वितीय चरण में, प्रौढ़ी में ऐसा समय आता है। परन्तु जो आनन्द जीवन भर लगातार नये की तलाश में है, उसकी प्राप्ति में है, वह अतुलनीय है। नये शरीर में हम प्यार पाते हैं। वस्तुतः अनेक सम्बन्धों को बनाए रखना इसलिए भी जरूरी है कि हम किसी एक से

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बँधकर न रह जाएँ। मैं विवाहित स्त्रियों में प्यार की प्रौढ़ता पाता हूँ।'

'मेरे पतिदेव—क्या भावनाएँ डरावनी नहीं होतीं। यौन सम्बन्धों पर नियंत्रण पाया जा सकता है, प्यार पर नियंत्रण नहीं हो सकता। प्यार पर नियंत्रण पाना असाध्य है, क्या आपके समस्त रिश्ते यौन पर टिके हैं? क्या भावना का उनमें कोई स्थान नहीं?'

'विवाहित प्रेमिकाएँ मुझे जिम्मेदारियों से मुक्त रखती हैं। चिन्ता और बन्धन नहीं होने से मैं अपने को उन्मुक्त पाता हूँ।'

'क्या इच्छाओं का अन्त कभी होता है? आपकी अपनी इच्छाएँ न हों, दूसरा क्या चाहता है, आप सोचते हैं कभी? आपने दूसरों की इच्छाएँ पूर्ण करने का ठेका लिया है? कोई पत्नी ऐसे पति को बर्दाश्त नहीं करेगी! समझे!'

'स्निग्धा, मेरा-तुम्हारा सम्बन्ध पति-पत्नी का है, किराये पर लिए शरीर का नहीं! मैं अगर बिगड़ा हुआ हूँ तो तुम मुझे सुधारने के लिए प्रयत्न क्यों नहीं करतीं। मेरा मार्ग बदल क्यों नहीं देतीं?'

'क्या ऐसा हो सकता है?'

'प्रयास करके देखो। ट्राई इट। मैं कभी डांस हालों में, नाइट क्लबों में, डिस्को में, या कहीं अन्यत्र जाकर प्रेमिकाएं नहीं ढूँढ़ता। मुझे अपने परिवेश में, अपने दायरे में, प्यार मिलता है। सामाजिक ढाँचा मुझे जो देता है, मैं उसे ग्रहण करता हूँ।'

'शरीर की भूख और शरीर की भाषा सर्वत्र एक जैसी है, उसमें पैसा या प्रभाव दोनों एक ही अर्थ रखते हैं।'

'कॉलरिज का डॉन जुआन मुझसे पृथक् था। मैं यौन चाहनेवाली, यौन बेचने वाली नहीं, औरतों की रोमांटिक परिकल्पनाओं में, उनके भीरु स्वभाव में शरीर का प्यार खोजता हूँ!'

'बस, बस, रहने दो, बड़े आए कॉलरिज के हीरो?'

'तुम मुझे बदल क्यों नहीं सकतीं। तुम्हारा पति हूँ—सुधारो। कौन रोकता है तुम्हें। तुम अगर समझती हो कि तुम्हारे साथ शादी करके मेरे हालात, मेरा वातावरण बदला है तो क्यों नहीं अपने बाहुपाश में

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जकड़कर मुझे पुराने रास्ते से कट जाने पर विवश करतीं! क्यों नहीं ?'

'तुम्हारा रास्ता स्वयं सुधरेगा ? तुम्हारे लिए ये सम्बन्ध जीवन-धारा नहीं हैं, एक तरीका मात्र हैं ! तुम्हें बिना प्रयास के सब मिला है। तलाक भी, मैं भी, फिर तुम कोई असाध्य प्राणी भी नहीं हो। तर्क करते हो, तर्क समझते हो—स्वयं बदलोगे। मेरे कहने की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी।'

'यह सही है, मैं दूसरों की पत्नियों के साथ जितने भी सम्बन्ध स्थापित करता हूँ वे अपराध हैं। मुझमें अपराध का भय अभी नहीं है ? कानून तोड़ना बुरी बात है। इन सम्बन्धों का मुझ पर दुष्प्रभाव भी पड़ा है। मुझे कहीं भी, किसी भी औरत के संसर्ग में मेरी तलाश का, मेरी चाहना का सुख नहीं मिला है। मेरे समस्त सम्बन्ध उद्देश्यहीन हैं। रिश्तों के टुकड़े हैं। कड़ियाँ नहीं हैं।

'मनुष्य एक समय में दो व्यक्तियों से प्यार कर सकता है। कोई पुरुष यदि एक ही समय में अनेक रिश्तों में बँध जाए तो क्या उसके मन में लालसा और अपराध की भावनाएँ जाग्रत नहीं होंगी ? या शायद वह पुरुष किसी से भी प्यार करने के योग्य नहीं है ! उसका व्यक्तित्व शायद विभक्त है। हर औरत चाहती है कि उसका प्रेमी सिर्फ उसी का होकर रहे। हर औरत चाहती है कि वह परिवार में प्रधान रहे।

'परन्तु पत्नी और प्रेमिका का त्रिकोण सर्वत्र वर्तमान रहता है। जब पाश्चात्य देशों में मिस्ट्रैस या सेक्रेटरी रोमांस के लिए उपलब्ध रहती हैं तो मैंने भारत में कौन-सा नया सिद्धान्त चालू कर दिया है ? मैं घर में तो सिर्फ तुम्हें ही रखे हूँ। अपनी किसी भी अन्य दोस्त को तुम्हारी जगह नहीं रखता!'

'तुम रखकर देखो तो ? एक साथ दो औरतों को रखना असम्भव भी हो जाता है। तुम पत्नी-पति के रिश्ते में तीसरी औरत को मेरी मौजूदगी में रखकर तो देखो !'

'अगर मुझे दूसरी औरत से तुम्हारे बराबर प्यार हो जाएगा, या तुम दोनों को एक ही धरातल पर देखूँगा तो अवश्य वह 'तीसरी' घर में आएगी !'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'हमारा जीवन एक भीड़ का जीवन होगा !'

'नहीं, तुम दोनों को बाँट लूँगा। तुम मेरे लिए मेरे बच्चों की माँ, घर प्यार, मधुर सम्बन्धों की मालिक रहोगी और वह मेरी वासना, मेरे दीवानेपन, मेरी जरूरतों की पूर्ति का साधन होगी। सच कहूँ, मैं एक समय में सिर्फ एक ही औरत को प्यार करता हूँ।'

'तुम प्यार किसे कहते हो ?'

मैं कुछ क्षण चुप रहता हूँ। फिर कहता हूँ 'सैक्स पर आश्रित रिश्ते को इस अर्थ में प्यार कहता हूँ। वस्तुत: प्यार विभाजित नहीं होता। कुछ दूसरी तरह के भाव होते हैं जो प्यार में गडमड हो जाते हैं। मेरे लिए किसी भी औरत को लगातार जीना, सह लेना सम्भव नहीं। वीणा मेरे प्यार का भाजन नहीं बन सकी, पत्नी होकर भी नहीं, प्रेम विवाह के वावजूद भी नहीं। तुम्हारे प्रति भी आकर्षण सिर्फ प्यार पर आश्रित नहीं है, तुम्हारे भीतर मुझे दूसरे गुण भी मिलते हैं, यदि तुम ईर्ष्या की भावना छोड़कर कुछ आदर्श पाल लो तो शायद धीरे-धीरे दूसरी औरतें मेरी जिन्दगी से बाहर हो जाएँगी। हो सकती हैं ! दूसरी औरतों की अपनी जिन्दगियाँ हैं। मैं हमेशा कहता रहा हूँ कि अगर तुम मुझे अटूट प्यार दोगी, आस्था दोगी, मेरा विश्वास जीतोगी तो अवश्य ही दूसरी औरतें भविष्य में मुझे नहीं घेर पाएँगी !'

'बच्चों की वजह से तुम मुझे पत्नी कहोगे, उनके कारण प्यार करोगे, अपने बुढ़ापे के कारण मुझे घर में रहने दोगे, इतनी सारी मेहरबानियाँ एक साथ क्यों ?'

'तुम्हारे कारण भी, यानी तुम्हारे व्यवहार के कारण हमारे बीच दूरी है। तुम सुन्दर हो, परन्तु मुझे तुम्हारे सौन्दर्य से क्या लाभ है ? तुम घर को एक बिजनैस हाउस बनाकर व्यस्त रहती हो। दूसरी किसी भी औरत के साथ कोई भी समझौता नहीं है, कोई शर्त नहीं है। कैज्युल अफेयर है ! किसी अन्य औरत को मुझसे कोई सन्तान नहीं हुई। मेरी पहली पत्नी को भी नहीं, फिर तुम मुझे जो व्यवहार देती हो वह भी अनुचित है, काफी सीमा तक अनुचित है ! मेरे वर्तमान में कोई ऐसी औरत भी नहीं है जिसे कभी मैं जीवन से उतार चुका हूँ—कोई भी नहीं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दोस्ती अलग बात है। कभी-कभार सो लेना, हँस-खेल लेना आधुनिकता के नाम पर चलता है। मेरे लिए पत्नी के रूप में तुम्हारा चुनाव अन्तिम चुनाव है। वीणा से छुटकारा पाने के बाद मेरे पास चुनाव के लिए स्पष्ट अवसर मिला था, प्राय: जीवन में ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं। मैंने तुम्हें चुना !'

'पर तुम मुझसे खुश तो नहीं हो। तुम्हें दूसरी औरतें क्यों चाहिए ?'

'स्निग्धा, अगर यही प्रश्न दूसरी औरतें पूछतीं तो क्या मजा आता ! सुनो, दूसरी औरतें परिवार की संस्था को बनाए रखने के लिए हैं। जीवन में विश्रृंखलित क्षणों में उनकी आवश्यकता होती है। अब देखो, प्यार-व्यार मैं मानता नहीं, एक सम्बन्ध है, कानूनी-गैर-कानूनी जो भी जैसा भी ! रिश्ते को खुफिया रखना जिन्दगी को आनन्द देता है। दूसरी औरत जिन्दगी का रहस्य है। अगर मेरी पत्नी अच्छी है, तुम्हारा प्यार पूर्ण है तो ये औरतें आतीं-जाती रहेंगी। हमारा रिश्ता टूटेगा नहीं ! तुम्हारे रहते किसी दूसरी से प्यार का मतलब नहीं। रिश्ते, इश्क-विश्क चलने दो, तुम्हें कोई हानि नहीं होगी। वासना प्यार को जन्म दे सकती है ! आज तक मैं किसी भी औरत के लिए पागल नहीं हुआ। ये जो चाहना-वाहना है, लगा रहता है।'

'जानते हो, मैं एक परिवार को जानती हूँ। हमारे एक रिश्ते में कोई कुछ हैं। उन्होंने दो शादियाँ की थीं और दोनों औरतों को अलग-अलग घरों में रखा था। वे दोनों पूरी उमर सोचती रहीं कि वह उन्हें बराबर प्यार करता है। उस व्यक्ति का व्यक्तित्व विभक्त था; या शायद उसकी स्थिति असाधारण थी। भावनात्मक रिश्ते में दोनों के प्रति प्यार असम्भव है। दो जीवन जीना मुश्किल तो नहीं है, पर अपने को धोखा देना जरूर है।'

'देखो स्निग्धा, जो आदमी वर्षों तक दो पत्नियों के साथ अलग-अलग घर बसाकर रह सकता है वह असाधारण व्यक्ति है। दो घर चलाने की उसमें योग्यता है। मैं सैक्स की खातिर सैक्स के सिद्धान्त को मानता हूँ। आवश्यकतानुरूप सम्बन्धों का अपना महत्त्व है। मैं नैतिकतावादी कभी रहा भी नहीं। सोसाइटी, क्लब या दूसरी औरतों से मैं हमेशा घिरा रहा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वे मेरी आदत हैं। मैं चाहता हूँ कि कोई मेरी इस आदत को तोड़ दे।'

'मैं कोशिश करूँगी।'

'कहीं स्वयं इस भ्रमजाल में मुझे सहानुभूति का पात्र न बना बैठना !'

'उससे क्या होगा ?'

'तुम्हें नई सौन्दर्य दृष्टि मिलेगी। जब आकर्षण शरीर के धरातल पर रहता है तो सौन्दर्य के कारण व्यक्ति दयावान, रोचक तथा शरीर सम्बन्धों में अधिक योग्य होता है। मैं सौन्दर्यपिपासु हूँ।'

'सामान्यतः यह सही है, वस्तुत यहाँ विवाह का आधार प्यार न होकर चुनाव की प्रक्रिया दूसरों द्वारा पूर्ण होती है, वहाँ सिर्फ सुन्दर चेहरा ही प्रधान हो जाता है।'

'आकर्षण, सौन्दर्य फिर भी बाहरी हैं। उन्हें अन्तिम मानदण्ड नहीं माना जा सकता। व्यक्तियों की रुचियाँ पृथक्-पृथक् होती हैं। सौन्दर्य पूर्णतया व्यक्तिगत पसन्द का विषय भी नहीं है।'

'आप प्रत्येक औरत को एक वस्तु या ठोस पदार्थ मानकर चल रहे हैं। हमारा एक-दूसरे के प्रति, हमारे पृथक् यौनाचार पर आधारित आकर्षण शरीर विज्ञान के कारण है, स्त्री या पुरुष विशेष के कारण है। हमारे रक्त में संचरित हारमोन्ज़ हमारे आकर्षण का मूल कारण हैं।'

'बात तो ठीक है,' मैं कहता हूँ, 'यह सर्वमान्य मूलभूत तथ्य है।'

स्निग्धा दो गिलास लाती है, अपने लिए नींबू पानी नमक डालकर तैयार करती है, मेरे लिए फ्रिज से चिल्लड पीयर लाकर गिलास में डालती है। हम अपना-अपना पेय पीते हैं। चीयर्ज जैसी औपचारिकता पर विश्वास नहीं करते। मैं कहता हूँ, 'स्निग्धा, यह तो सर्वमान्य है कि प्रत्येक सुन्दर स्त्री आकर्षण का कारण होती है। सौन्दर्य एक आमंत्रण है। एक चुनौती है, एक आमंत्रणपूर्ण चुनौती। जीवन के प्रति उत्साह इस आकर्षण का मूल है।'

'तुम घर को भी अपनी प्रयोगशाला बना बैठे हो।'

मैं अतीत में खो गया हूँ। वीणा से तलाक लेकर अकेलेपन की जिन्दगी दूसरी औरतों के साथ जीकर खुशी नहीं मिली। फिर जीवनसाथी की

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तलाश की··· जिन्दगी में एक बार फिर रोमांस की भावनाएँ जगीं। स्निग्धा से पहले कभी मुलाकात नहीं हुई। अपने एक दूर के रिश्तेदार के घर शादी पर गया था। दोस्त के यहाँ अनेक मेहमान थे। एक सुन्दर लड़की थी, वह पच्चीस वर्ष के आस-पास थी। मेरा उससे परिचय मित्र की पत्नी ने कराया।'

'इनसे मिलो स्निग्धा, ये हमारे जमाने के डान जुआन हैं।'

'डान जुआन ?' स्निग्धा चौंककर पूछती है।

'ओह भाभी, हमेशा मेरी लोग पुल्लिग करती हो। डान जुआन होता न तो तुम्हारे घर के बाहर मेला लगा होता। खैर, तो आप स्निग्धा हैं ?'

'जी हाँ, भाभी कहीं दूसरे काम में लग गई हैं।'

'पढ़ती हैं ?'

'नहीं, वकालत करती हूँ।'

'कहाँ ?'

'लखनऊ में ?'

'औरतों के लिए यह कैसा पेशा है ?'

'वहुत कम औरतें हैं इस पेशे में।'

'आप इधर क्यों गईं ?'

'शादी नहीं करना चाहती थी, पब्लिक लाइफ चुन ली। वकालत चल गई, काम जम गया तो राजनीति में जाऊँगी !'

'राजनीति ही क्यों ?'

'एक बार शासन करने की तमन्ना है।'

'प्रजातन्त्र में ?'

'प्रजातन्त्र क्या है ! सत्ता में बैठा प्रत्येक व्यक्ति शासक है। उसका जीवन राजसी है। एक बार आदमी कुर्सी के मोहजाल में फँस गया तो वह जाल स्वाद हो जाता है।'

'आप काफी रोचक हैं ?'

'अच्छा ?' वह प्रश्नवाचक शब्द उछालती है, फिर प्रश्न को आश्चर्य-मिश्रित स्वीकृति में बदल देती है।

'एक राजनीति में आप गम्भीर हैं ?'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'कह नहीं सकती। लखनऊ युनिवर्सिटी की प्रेजीडैंट रही हूँ। यूथ कांग्रेस में काम किया है।। प्रदेश युवक कांग्रेस में सहायक सचिव अभी भी हूँ।'

'राजनीति का कारण क्या कोई विशेष विचारधारा है ?'

'अभी कहा न सत्ता का लालच। मैं कुर्सी चाहती हूँ। अगली बार लोकसभा के लिए टिकट माँगूंगी !'

'राजनीति के लिए कोई आदर्श हैं आपके ?'

'आप भी क्या सौ वर्ष पुरानी राजनीति की बात करते हैं। मैं गांधीवादी हूँ। किसी भी राजनीतिक दल में गांधीवाद की जरूरत है। इसीलिए मैं इस द्वाक्षर को ही आदर्श, आधार, प्रेरणा मानती हूँ। जनता पार्टी 1977 में बनी, वह भी गांधीवादी थी। फिर इन्दिरा कांग्रेस बनी, वह भी गांधीवादी है।'

'यानी माने क्या ? गांधीवाद से बड़ा कुछ नहीं है ?'

'वस्तुतः आप गम्भीर हैं ?'

'क्यों नहीं। जब गांधीजी की मृत्यु हुई तो उसके कुछ घण्टे पूर्व मेरा जन्म हुआ। घर के लोग तो मुझे गांधी बाबा का अवतार मानते हैं !'

'आप इसे सत्य मानती हैं ?'

'उससे क्या है, मैं गांधी को मानती हूँ।'

'क्यों मानती हो ?'

'जैसे रामनामी चद्दर के नीचे कामशास्त्र की माला छिप जाती है वैसे ही गांधीवाद के लिहाफ में सब दुबक जाता है। पाप-पुण्य, गरीबी-अमीरी सब बराबर। गांधीवादी मन्त्री गरीबी को स्वीकारते हैं, गांधी को अमर करने के लिए कुर्सी पर बैठकर, चढ़कर दूरदराजों में व्याप्त गरीबी को आँखों से देखते हैं, फिर कुर्सी पर बैठकर आराम से हल ढूढ़ते हैं। गरीबी दूर करने का हल ! फिर हल मिल जाता है—बैठे-बैठे वे ऊँघते हैं, फिर नींद आ जाती है। नींद में गांधीवाद जागता है। सारी गरीबी मिट जाती है। मैं भी बस एक बार उस नींद में रहना चाहूँगी। पाँच वर्ष तक केवल !'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'आप सचमुच रोचक हैं।'

'रोचक न होती तो संजय, राजीव, मेनका, इन्दिरा जी इन सबकी नजरों में कैसे आती ?'

आप इन सबसे मिली हैं ?'

'मिली ही नहीं, इन्दिरा जी को छोड़ अन्य तीनों से अपने घर पर भी गुफ्तगू की है। मुझे टिकिट भी मिल जाएगा ! अरे हाँ, आप क्या करते हैं ?'

'मैं बिजनैस फर्म चलाता हूँ !'

'उससे सन्तुष्ट हैं ?'

'नहीं मेरे भी उद्देश्य हैं।'

'यानी महत्त्वाकांक्षाएँ हैं ?'

'हाँ, मैं भी तुम्हारे ही पथ का यात्री हूँ। सिर्फ उद्देश्य तनिक ऊँचा है !'

'कितना ऊँचा ?'

'मैं प्रधानमंत्री बनना चाहता हूँ, देश के लिए कुछ करना चाहता हूँ !'

'यह हुई न बात। चलिए हम आपके दोस्त बनते हैं।' स्निग्धा मेरे साथ हाथ मिलाती है। फिर कहती है, 'कहीं आराम से बैठकर बातचीत की जाय !'

'चलिए !' भीतर के कमरे खचाखच भरे हैं। स्निग्धा बाहर आती है। कहती है, 'कल कुछ शान्ति होगी, कल बात करेंगे, आई एम इन्टस्टीड इन यू !'

स्निग्धा अपने व्यक्तित्व की छाप मुझ पर छोड़ गई। उस रात मित्र की पत्नी, मिसेज चोपड़ा ने मुझसे पूछा था, 'क्यों भैयाजी, स्निग्धा पसन्द हो तो उसकी बात चलाऊँ।'

मैंने कहा था, 'भाभी पसन्द तो है, पर लवएट फर्स्ट साइट वाली बात नहीं है। दो दिन का समय दो।'

भाभी ने मुझे स्निग्धा के माँ-बाप से मिलाया। वे अच्छे लोग थे। उन्हें मेरे बारे में चोपड़ा ने सब बता दिया होगा क्योंकि उनका मेरे साथ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बातों का दायरा सिर्फ मुझे और मेरे बिजनैस तक सीमित रहा।

स्निग्धा से दूसरी मुलाकात अगले दिन हुई। उस मुलाकात में हमारा प्यार भी हो गया। शादी की बात भी हो गई। राजनीतिक भविष्य भी तय हो गया। एक-दूसरे के बारे में हम सिर्फ इतना जान पाए थे कि दोनों आजाद थे। उसे पहले डायवोर्स का बताया तो बोली, 'मेरे साथ झगड़ोगे तो जीत नहीं पाओगे। मैं वकील हूँ।'

मेरे मन में एक धारणा ने जन्म लिया था तबकि हमारा यह आकर्षण सामान्य नहीं है। यह लगाव रोमांटिक नहीं था। छोटी-सी मुलाकात और कुछ छिछली और सतही बातों पर टिका था। न हम दोनों में समानताएँ थीं और न ही हम एक-दूसरे के पूरक थे। हम दोनों की आयु में भी लगभग नौ वर्ष का अन्तर है। स्निग्धा प्रौढ़ है। वह बातूनी है। मेरा स्निग्धा के प्रति आकर्षण उसके सौन्दर्य और खुले व्यवहार के कारण हुआ था।

वह एक प्रेरणा भी बन सकती थी परन्तु बनी नहीं। वह रोचक थी, उसमें कल्पनाशीलता थी, नये विचार थे, जोश था, परन्तु शादी के बाद ···शुरू-शुरू का प्यार था, वस्तुतः हम प्यार की सीढ़ियों से चढ़कर एक-दूसरे के पास नहीं आए थे। आकाश से पृथक्-पृथक् पैराशूट हमें लेकर जमीन पर उतरे थे, जिस स्थान पर पैराशूट ने हमें डम्प किया, वह एक सुविधाजनक स्थान था, इसीलिए स्निग्धा और मेरा शादी करना लाजमी था!

हमारे प्यार का आधार वातावरण का बदलाव था। पर मुख्य कारण मेरा विवाह के लिए उपलब्ध होना और स्निग्धा का मुझमें रुचि लेना था। हम प्यार के रहस्यों से अपने-अपने अतीत में परिचित थे और हमारी समस्त प्रवृत्तियाँ असमानता का भाव लिए हुए थीं।

हमारी दूसरे दिन की मुलाकात साधारण थी। 'आई कान्ट लिव विदआउट यू' जैसी हल्की शुरुआत वाली मुलाकात। मुहब्बत का अपना रसायन शास्त्र है। वह शास्त्र किसी तर्क पर नहीं चलता। स्निग्धा हल्का मेकअप किए थी, लिपस्टिक पर लिप ग्लो लगाए थे। शायद स्निग्धा अपने सौन्दर्य के प्रति सतर्क थी।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं उसे देखते ही कहता हूँ, 'फेनटास्टिक स्निग्धा !' वह ब्लश करती है। फिर बातों में उलझ जाती है। कहती है 'मामी ने कहा कुछ निर्णय लेकर आना।' मामी यानी मिसेज चोपड़ा। स्निग्धा कहती है, 'आप डायवोर्सी हैं ?'

'हाँ।'

'क्यों छोड़ा उसे ?'

'कहानी का अन्त था वह। तुम…'

'क्यों न हम नई कहानी शुरू करें ?'

'हम ?'

'मैं और आप। हम दोनों के राजनीतिक उद्देश्य हैं। हम दोनों एक विशेष दिशा में सोचते हैं। प्राप्त के बाद उद्देश्यों में विशालता आ सकती है।'

'जानती हो, जिसकी पहली पत्नी नहीं रहती और वह पुनर्विवाह करता है, उसे क्या कहते हैं ?'

'नहीं।'

'दुहाजू !'

स्निग्धा हँसती है। कहती है, 'यह किस भाषा का शब्द है ? आपने गढ़ा होगा।'

'तुम वस्तुतः शादी नहीं करना चाहतीं ?'

'मैंने कब कहा ?'

'कल कहा था।'

'कल कहा होगा आज तो नहीं कह रही हूँ।'

'आज क्या कहना चाहती हो ?'

'आज आप जो कहोगे वही करूँगी !'

'तो मुझसे शादी कर लो !'

'वह भी कर लेंगे, और कुछ !'

'तुम्हारी हँसी इतनी छिनछिनाती क्यों है ?'

'पंजाबी कुड़ी की हँसी है, हम लोग संकीर्ण नहीं हैं।'

'लखनऊ में रहकर क्या सीखा ?'

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'पहले आप, पहले आप !'

'और क्या ?'

'लँगड़े और दशहरी आम खाना !'

'लँगड़े क्यों ?

'त्रुटि हुई, सिर्फ दशहरी ।'

'स्निग्धा, हमारी-तुम्हारी दोस्ती का कारण क्या है ?'

'मामी की जिद्द ।'

'क्यों ?'

'उन्होंने आपके डायवोर्स का बताया, फिर मुझे कहा है कि अच्छा जोड़ा बनेगा। फँसा लो !' वह खिलखिलाकर हँसती है। हम कॉफी हाउस में बैठे इडली, डोसा, बड़ा सब खा चुकने के बाद कॉफी पी रहे हैं।

'वस्तुतः तुमने मामी की बात गम्भीरता से ली !'

'क्या करती ? पच्चीस वर्ष की आयु पार कर गई हूँ। दो चार साल ऐसे ही निकल गए तो बुढ़ा जाऊँगी, यही सोचकर सैकेण्डहैण्ड माल लेने की ठान ली।'

'हम सैकेण्डहैण्ड हैं ?'

'और क्या ?'

फिर स्निग्धा कुछ दिन के लिए अपनी मामी के पास रुक गई। हमारा रिश्ता गहरा होता गया। वह मेरे यहाँ आने लगी। शरीर का रिश्ता स्थापित हो गया। मेरे दफ्तर मुझे मिलने आई—अच्छा लगा। मेरे साथ शापिंग करने, पिक्चर देखने की इच्छा व्यक्त की, वह भी पूरी की। उसमें मुझे कोई कमी नहीं दिखाई दी। एक महीने बाद वह लखनऊ वापस गई, और उसके साथ ही गईं मामीजी—हमारी शादी जल्दी करवाने के चक्कर में।

तीन माह के बाद शादी हुई। इस बीच मैं चार बार लखनऊ गया और दस-दस दिन दो बार स्निग्धा दिल्ली आई। शादी भी हो गई। हनीमून भी हो गया। घर फिर भर गया। वीणा की जगह स्निग्धा आ गई। बस गई। जिन्दगी एक बसेरा है—बस जाना जरूरी है। तीन वर्ष में एक लड़की, एक लड़का भी जन्म ले गए। घर भर गया। परन्तु स्निग्धा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के साथ रिश्ते में कुछ अटक गया। बच्चों के कारण वह पूरा समय मुझे नहीं देती थी।

स्निग्धा को शादी की वर्षगाँठ मनाना, मेरे और अपने जन्म दिन मनाना, बच्चों के जन्म दिन मनाना अच्छा लगता था। दिल खोलकर पार्टियाँ देती थी। घर भरकर अतिथि आते थे। शुरू-शुरू में मैं उसके लिए एक नशा था। स्वयं जो भी मेरे लिए कर सकती थी, करती थी।

मेरे आफिस जाते हुए मेरे गले की टाई को ठीक करती थी। मुझे सिर से पाँव तक देखती थी। शर्ट के कालर पर इतर-सैंट मलती थी। रोज दोपहर मुझे आफिस में फोन करती थी। शाम को साड़ी बदल मेरे आते ही दरवाजे पर आकर स्वागत करती थी।

सूर्य ढलने से पहले लान में कुर्सियाँ लगवाती, बच्चे के लिए प्रेम्बुलेटर बाहर रखती। बच्ची के लिए छोटी कुर्सी लगवाती। समय के हर टुकड़े को वह खुशी से भर देती। उसकी उपस्थिति में मुझे लगा था कि यह सिलसिला खूबसूरत है।

स्निग्धा मेरी छोटी से छोटी बात का ध्यान रखती। खाना, पीना सब सँभालती। मुझे सिगरेट पीने से रोकती। कहती, 'सिगरेट मत पिया करो, मेरे पिताजी पीते हैं, उन्हें हार्ट ट्रबल हुआ था। सिगरेट से हार्ट ट्रबल होता है।'

'दस सिगरेट रोज पीने से हार्ट ट्रबल नहीं होता!'

'निकोटीन रक्त में मिलकर उसे दूषित कर देती है, मत पिया करो!' कभी-कभी मेरे हाथों से सिगरेट छीन लेती। कभी अधिक मूड में होती तो अपने हाथों से सिगरेट जला भी देती। जब बच्चे नहीं हुए थे तो वह प्यार की खुमारी में थी। उसे अच्छे कपड़े पहनने का शौक था। मेरे लिए वह अत्याधुनिक लिबास पहनती, रंगों के चुनाव में वह मेरी रुचि का ध्यान रखती। जीन्स पहनकर वह बहुत स्मार्ट लगती। अपने लम्बे बालों को बहुत अच्छा सहेजती थी। पीछे से इस प्रकार मोड़कर गले के ऊपर से पिन करती थी कि बाब्ड लगती थी। खुले बाल उसकी पूरी पीठ को ढक लेते थे।

मैं उसे चिढ़ाने के अन्दाज में बाल कटवाकर छोटे ब्वाय कट बाल

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रखवाने को कहता था। वह इसे सच मान जाती थी और कहती थी, 'नहीं, यह मत कहना, मुझे लम्बे बाल अच्छे लगते हैं।' स्निग्धा सुन्दर थी, आकर्षक भी थी। अपनी देखभाल करना जानती थी। हमारा सैक्स-जीवन सहज-सामान्य था। हमारी जरूरतें कम थीं। मैं घर की किसी भी बात में दखल नहीं देता था, कभी भी, एक बार भी मैंने भोजन की या खाने की किसी भी चीज की बुराई नहीं की। खाने में नमक न हो तो भी खा लेता। स्निग्धा कभी-कभी जान-बूझकर नमक नहीं डालती थी। फिर कहती थी, 'आप भी कैसे हैं, बोल नहीं सकते कि नमक नहीं डाला है।'

मैं कहता,'अरे हाँ, इस सब्जी में तो नमक नहीं है, थोड़ा डाल दो !'

हमारे घर का वातावरण बच्चों के कारण बड़ा सजीव था। बच्चों का रोना-चिल्लाना, उछल-कूद करना, रूठना सब मेरे लिए नया अनुभव था। वीणा के साथ बीती जिन्दगी से अलग एक नया जीवन—एक पूर्ण जीवन। वीणा मेरे जीवन की त्रासदी बनते-बनते रह गई। वीणा के बच्चा क्यों नहीं हुआ ? शायद उसके और भी अवैध सम्बन्ध होंगे ! शायद वह मुझे सताना, दुःख देना या धोखा देना नहीं चाहती थी। शायद वह अवैध सन्तान जनकर मेरे लिए या शायद अपने लिए भी मानसिक कुंठा पैदा नहीं करना चाहती थी। पर वह वफादार हो क्यों न पाई ? स्निग्धा वफादार है। मेरे बच्चों की माँ है। वह मुझे चाहती है। प्यार करती है। और उस जीवन में मैं अपने विवाहेतर सम्बन्धों को सिर्फ परिचय में बाँधता रहा। अपनी कमजोरियों पर नियंत्रण पाता रहा।

मैं अपने पारिवारिक सम्बन्धों से ऊब गया हूँ। कभी-कभी मुझे लगता है मैं अपंग हो गया हूँ, नपुंसक बन गया हूँ। या शायद नहीं, मैं अपनी पत्नी के संग एकरस रिश्ते से घबराकर ऊबा हूँ। भ्रष्ट समाज, टूटते हुए नैतिक मूल्य और इन सबसे ऊपर भावनाओं और क्रियाओं के सम्पर्क सूत्रों ने मुझे तोड़ दिया है। मैं और मेरी पत्नी सिर्फ इसीलिए साथ-साथ रहते हैं कि प्रकृति का विधान ऐसा है—एक मशीनी विधान, एक अनबूझ अनिवार्यता। केवल शारीरिक सम्बन्धों के कारण हम बँधे हैं—एक-दूसरे से जुड़े हैं।

शाम के धुंधलके में हम दोनों लॉन में बैठे हैं, कहीं भी, कुछ भी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शून्य में देख रहे हैं, खोज रहे हैं। अचानक पत्नी पूछती है, 'तुम अपनी भावनाओं को मेरे प्रति पूर्ववत् जागृत क्यों नहीं कर सकते ?'

मैं मूर्तिवत् पूछता हूँ, 'पूर्ववत् क्यों ? क्या तुम अब भी यही सोचती हो कि औरत सिर्फ बच्चे पैदा करने की मशीन है। सैक्स सम्बन्ध सिर्फ पुरुष का अधिकार है ? तुम पुरातनपंथी हो। पुरुष और स्त्री के बीच यौन सम्बन्ध केवल पुरुष की जिम्मेदारी ही क्यों ? क्यों आखिर ?'

'तुम भाषण देते हो, सच्चाई को टालते हो !'

'नहीं, पुरुष और स्त्री सैक्स के बराबर के भागीदार हैं। हम बराबर हैं, यौन सम्बन्धों को सम्यक् रूपेण भोगना तुम्हारी भी जिम्मेदारी है।'

'तुम हमेशा सैक्स को आनन्द-भोगवाद मानते हो ?' 'हाँ, तुम्हें भी वह भोगना आना चाहिए। खजुराहो की मूर्तियों में, कामसूत्र में, विदेशी सैक्स पत्रिकाओं में—सर्वत्र स्त्री को नवीनता की खोज में, उसके प्रयोग में प्रतिक्रिया और क्रिया में देखा गया है। पुरुष को वह अपने शरीर के अंश मात्र से सन्तुष्ट करती है—सम्पूर्ण से नहीं—पूर्णता, परिपूर्णता स्त्री दे सकती है।'

'तुम वासनाप्रधान हो, तुम किसी बगीचे में आलिंगनबद्ध प्रेमी-प्रेमिकाओं को देखकर, या गन्दी सैक्सी फिल्में देखकर, या नंगी औरतों की तस्वीरें देखकर अपनी सैक्स भावनाएं उभारते हो ! तुम इस गन्दगी के बिना नार्मल ही नहीं रहते।'

'यह एक आरोप है, हर कमजोर औरत यही कहती है। वस्तुतः एक पत्नी प्रेम या एक-पति प्रेम में पड़े लोग इन सब बातों में सामान्य से अधिक रुचि लेते हैं, यही गन्दगी है जो चरित्र को बनाए रख सकती है। विवाह संस्था का भी अर्थ यही है—स्त्री-पुरुष एक-दूसरे को जानें—समग्र में डूबकर परिवार की परम्परा बनाए रखें। इस परम्परा को बनाए रखने के लिए दूसरी औरत की आवश्यकता हमारी भारतीय संस्कृति ने भी महसूस की है। वैशाली की नगरवधू हो, उर्वशी हो या मेनका—वे सब पुरुष के जीवन की एकरसता को तोड़कर उसमें नवीनता देती रही हैं।'

Funding by IKS-MoE

'तुम हमेशा भावना को पीछे छोड़कर सम्बन्धों की अस्थिर औप-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चारिकता की ओर क्यों लौट जाते हो ? पुरुष का शरीर हमेशा भूखा रहा है। स्त्री अपने एक पति से भी सन्तुष्ट रह सकती है, सैक्स की भूख को आत्मानुभूति में भर सकती है।'

'यह गलत है, स्त्री चक्षुदर्शी सैक्स से अलग किताबी या कर्णभेदी भावनाओं में तृप्ति पाती है। वह घर और परिवार या बच्चों का बिम्ब बनाए रखती है। परन्तु यौनिक एकरसता या उबाहट उसके भीतर भी है, है ही।'

'तुम अभी भी औरत को सैक्स का नेगेटिव भाव मानते हो ! मनोवैज्ञानिक तथ्य भी बदलते हैं !'

'तुममें यह बदलाव क्यों आ रहा है ?'

'बदलाव नहीं है—मैं तुमसे सन्तुष्ट नहीं रही कभी। आधुनिकता के दौर में हमारे दसवर्षीय विवाहित जीवन में तुमने मुझे क्या दिया है ? तुम्हारी संगति में शुरू-शुरू में मुझे लगता था—मुझे परिपूर्णता मिल रही है···पर यह मेरी गलतफहमी थी···मैं हमेशा कुछ खोती रही हूँ।'

'अँधेरा बढ़ रहा है, चलो, भीतर चलें !'

'रुको, यहीं रुको···पिछले एक वर्ष से मैं तुम्हें बदलने की कोशिश करती रही हूँ !'

उपर्युक्त बातें पुरानी हो गई हैं। युग बीत गया है।

अपनी पत्नी के इस बदलाव का मूल कारण शायद कुछ और मानते हुए भी मुझे लगता था कि त्रुटि कहीं अवश्य ही मेरी है और सैक्स के आधुनिक दृष्टिकोण को अपनाने से पूर्व मैं एक अजीब से दौर से गुजरा हूँ। मैं भी पुरातनपंथी था, दकियानूसी था। शिष्ट-अशिष्ट का भेद मानता था। मैं अल्पभाषी था, परम्परा और आधुनिकता की सीमारेखा में बँधा था। शुरू-शुरू में अपनी पत्नी की आधुनिकता का दौर देखकर मैं घबराया था। मुझे यह तथ्य ही मालूम नहीं था कि औरत भी कुछ माँग सकती है ! वह मुझमें एक प्रेमी की तलाश करने लगी।

यही मेरे जीवन का मोड़ था। मैं अपनी पत्नी का प्रेमी बन गया। मेरी नपुंसकता काल्पनिक थी। बस कुछ समय के लिए मेरे भीतर सैक्स भावना कम हो गई थी। हमारे जीवन की नई शुरुआत का कारण था

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

—खाली समय—हम एक-दूसरे की शिकायतें सुनते थे, एक-दूसरे को समझने की कोशिश करते थे। पत्नी का ठण्डापन धीरे-धीरे कम होता गया। पत्नी के मन की ग्रन्थि टूट गई। अब मैं अपूर्ण प्रेमी नहीं रह गया था। मैं यह जान गया था कि प्रत्येक पति-पत्नी, प्रत्येक प्रेमी-प्रेमिका के यौन सम्बन्धों की क्रिया, परिधि और व्यक्तित्व पृथक्-पृथक् हैं। किन्हीं भी दो व्यक्तियों के प्रेम सम्बन्ध दूसरों से, अन्यों के सम्बन्धों से मेल नहीं खा सकते। समस्त सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक आधार लिए रहते हैं।

याद नहीं कब मैं सोचने लगा था कि कोई भी शादी सैक्स सम्बन्धों की सफलता असफलता पर जिन्दा नहीं रहती। हमारे सम्बन्धों में समय की शिथिलता ने एकरसता ला दी थी। उसे तोड़ने के लिए रिश्तों की नवीनता या एक-दूसरे के प्रति लगाव की आवश्यकता रहती है।

मैं अपनी पत्नी को यह समझाने में सफल हो गया कि सम्बन्धों को उबाऊपन से उबारने के लिए औरत को आवश्यक समझौता करना आवश्यक होता है, अन्यथा बुढ़ापा आ जाता है। विवाहित जीवन के शुरू के कुछ वर्षों के बाद औरत यदि अपना सौन्दर्य, अपनी नवीनता बनाए रखे तो पति में भी बदलाव आएगा। पति एक आधार मात्र है। पति में सैक्स भावनाएँ उभारना पत्नी का काम है। यदि पत्नी यह नहीं करती है तो उसका पति भटक जाएगा। दूसरी औरत या दूसरा मर्द एक अनिवार्यता हो जाएगी।

पुराने जमाने की एक और घटना याद है मुझे—हमारा विवाह प्रेम-विवाह था। परन्तु उस विवाह से पूर्व मेरा एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रेम सम्बन्ध भी रह चुका था। पत्नी को यह मालूम नहीं था। हमारे जीवन की सामान्य गति में हमारी शादी के बाद मेरी पुरानी प्रेमिका का एक बार फिर मेरे जीवन में आ जाना एक तथ्य मात्र था। मेरी समृद्धि, सम्पन्नता और कामकाज की स्थिति कुछ ऐसी थी कि मेरे ही कार्यालय में मेरी प्रथम प्रेमिका एक अधिकारी बनकर नियुक्ति पर आ गई। मुझमें नया आत्मविश्वास आया। और पुराना प्यार फिर जिन्दा हो गया। शामा, मेरी पहली प्रेमिका का विवाह हो गया था, फिर तलाक

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भी। और हमारे लिए एक नया चेप्टर खुल गया। मुझे शामा और अपनी पत्नी में असीम अन्तर दृष्टिगत हुआ। शामा का मेरे साथ यौनाचार नित्य नये रूप, स्टाइल, गति, मेकअप और कपड़े पहनने खोलने के सलीके के कारण नया-सा बन गया। अचानक। मुझे लगा बावजूद प्रेम विवाह के मेरी पत्नी के साथ मेरा कभी प्रेम नहीं रहा। मेरी इच्छाएँ बदल गईं। शामा सुन्दर थी, अनुभवी थी, स्वतन्त्र थी और कुछ ही दिनों में मैं अपनी पत्नी के शरीर से पृथक् हो गया। शामा के साथ जिन्दगी काटने लगा।

तभी यह सब मेरी पत्नी के ज्ञान में आ गया। उसकी एक सहेली ने मुझे शामा के साथ देखा और वह चुप रही, उसने मुझे कोई अहसास नहीं दिलाया। वह बदलती गई। सुन्दर कपड़े पहनने लगी, बालों का स्टाइल बदल गया। चाल-ढाल बदली, घर का रख-रखाव बदला। मुझे उसके चेहरे पर बदली हुई रंगत मिली। मुझे लगा, उसके जीवन में कोई पुरुष आ गया है। उसने सैक्स की क्रियाएँ बदल लीं। एक शाम मैं घर लौटा था बहुत देरी से…पत्नी के स्लीवलैस कन्धे, ट्रांस्पेरैंट कपड़े, गहरे लिपस्टिक और थिरकती हुई मुस्कराहट ने मुझे विवश उसकी बाँहों में कस दिया। शामा के साथ गुजर चुका वह आखिरी दिन था।

शामा कहा करती थी कि मैं उसका सर्वश्रेष्ठ प्रेमी था, उसके पूर्ण पति से पृथक्, अन्य प्रेमियों से पृथक्।

अपनी पत्नी में आए बदलाव में मुझे नयापन मिला। उस औरत ने अपनी अतृप्ति को तृप्ति में बदलकर मुझे पुनः पाया—प्रेमिका से -क् किया। परन्तु कुछ ही महीनों में जब शामा मुझसे अलग हो चुकी थी, मेरी पत्नी फिर पुरानेपन पर आ गई। उसकी सैक्स भावना, सजावट सौन्दर्य सब बासी पड़ने लगा। यह औरत अब एक टेबू, एक निषेध बनने लगी। मेरे जीवन की परिपूर्णता बनकर अब वह एक छलावा बन गई—मेरी जिन्दगी का धोखा। वह ही सबसे बड़ा निषेध है। प्यार की परिपूर्णता समय, एकान्त, पुरुष स्त्री के सम्बन्धों पर आश्रित रहती है। एक-दूसरे को यौनाचार के साथी के रूप में चाहना पर्याप्त नहीं है। यह चाहना क्या स्थाई है ? सम्बन्ध बनाए रखना ? क्यों ?

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं सोचता हूँ आज विवाह की संस्था में परिवर्तन आ गया है। आधुनिकता के नाम पर रिश्तों में बदलाव आया है। विवाहेतर सम्बन्ध सर्वव्यापक से हैं। क्या कारण है कि हम एक-दूसरे के प्रति यौनिक रिश्तों में वफ़ादार नहीं रह सकते ? शायद आज का समाज, खुला समाज, यौन जागृत समाज मूल कारण हो ! पर यह सत्य है कि विवाहेतर सम्बन्ध सर्वमान्य-से हो गए हैं, उन्हें सामाजिक मान्यता—मूक मान्यता, अलिखित मान्यता मिलती जा रही है। इसके मूल कारण में मनोवैज्ञानिक तो नहीं पहुँच सकते। बेवफा पति-पत्नी या इन सम्बन्धों में लिप्त व्यक्ति ही इसका उत्तर दे सकते हैं।

कारण अत्यन्त संकीर्ण हैं—जीवनागत वोरडम अर्थात् उकताहट कारण है ! साधारण—सामान्य सम्बन्धों में शिथिलता आ चुकती है, हम अपने साथी के प्रति उदासीन रुख अपनाते हैं। हम जीवन में कुछ नया पाने के लिए, उत्सुकता के लिए, या शायद अपनी तसल्ली, आत्मतोष के लिए विवाह के बाहर रिश्ते खोजते हैं, चार बाँहों, चार आँखों के रिश्ते ! प्रेरणा की खोज···परन्तु यह खोज अस्थाई जरूर है। इस अस्थायित्व के बावजूद हम अवैध रिश्ते चाहते हैं, हम···हमारा मन चाहता है। परन्तु यह तथ्य सब पर लागू नहीं होंगे।

हमारे भीतर जो कायरता है, नहीं जो भय की भावना है, उसके कारण हम इन नए रिश्तों से बचते रहते हैं। भय भावना के बावजूद कभी-कभी स्वतः विवाहेतर सम्बन्ध स्थापित हो जाते हैं, सामाजिक मेल-जोल, एकान्त, पार्टियाँ, लम्बी यात्राएँ इन सम्बन्धों का आधार बन जाती हैं। कभी-कभी प्रेम की वास्तविकता भी सम्बन्ध को जन्म दे सकती है। प्यार से स्वार्थ जन्मता है। स्वार्थ मनुष्य को बहुत कुछ गलत करने को मजबूर कर देता है। दिल के रिश्ते कायम रखने में या जीवन की मौज-मस्ती बनाए रखने में स्त्री-पुरुष दोनों ही स्वतन्त्र हो जाते हैं।

परन्तु क्या ऐसे सम्बन्ध उचित हैं ? हमारी परम्परागत वफादारी टूट नहीं जाती क्या ? क्षणिक या सामाजिक आवेग, भावावेश क्या जीवन में अस्थिरता नहीं ले आएगा ? यह होगा। फिर ? फिर क्या —पुरुष जब प्रौढ़ होता है, विवाह का सात-आठ वर्ष का जीवन पुरुष

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

को उसकी पराजय की याद दिलाता है, विवाहेतर सम्बन्ध इस पराजय को विजय में बदलने के लिए हैं ? हुँ—तो यह बात बनी न ! बस, चलो शुरू करें जीवन में नयेपन की खोज, थ्रिल और एडवैंचर की तलाश ! पुरुष अपने लिए नये घास के मैदान खोजता है। औरत नये कासमेटिक्स। पुरुष शरीर चाहता है, औरत प्रशंसा या प्रशंसा भी।

छिपे सम्बन्धों का मजा ही दूसरा है। भोगवादी दृष्टिकोण हमेशा नयापन लिए रहता है। छिपे रिश्तों में पत्नी और पति अपना विवाहित जीवन सुरक्षित रख सकते हैं। घर और बाहर भोगकर नई गति से जीवन चला सकते हैं। पर छिपे रिश्तों में रोमांस की मात्रा कम हो जाने का भय होगा। नये रिश्ते, नये प्यार की थ्रिल का अभाव रहेगा।

पति-पत्नी के बीच बेवफाई का परिमाप रात को आपके घर में, बिस्तर में एक-दूसरे के प्रति आसक्ति की मात्रा द्वारा हो सकता है। इच्छाएँ और भावनाएँ स्पष्ट लक्षित हो जाती हैं।

हमें अपने विवाहित जीवन से क्या अपेक्षाएँ हैं ? आश्रय, परिपूर्णता, सैक्स की पूर्णता—अन्यथा हमें समय के थपेड़े जीर्ण कर देंगे। हम पुराने जमाने की ओर देखते हैं, परम्पराओं और अतीत को अपना साथी बनाते हैं, नैतिकता की क्रचेज लेकर चलते हैं—परन्तु कभी-कभी मेरे जैसे लोग भी हैं जो हर निषेध को तोड़ते हैं, बगावत करते हैं। जिस चीज को··· जिस औरत को पा सकना असम्भव हो, उसे पाना जरूरी हो जाता है। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए विवाहेतर सम्बन्ध कोई अर्थ नहीं रखता, अर्थ सिर्फ प्राप्ति का है—औपचारिक प्राप्ति। मैं अपने प्रत्येक ऐसे रिश्ते में अपने को एक चुप्पी में बाँध लेता हूँ। गम्भीरता से जिन्दगी को भर लेता हूँ—पत्नी को धोखे में रख सकता हूँ। परिवार या विवाह को तोड़ने से बेहतर है अपने को या अपनी पत्नी को धोखे में रखूं। पर यह काम कठिन जरूर हो जाता है। मैं न आत्मस्वीकृति को स्वीकारता हूँ, न पाप को। मेरे लिए चुप रहकर अपने मन के विकल्पों को बनाए रखने की गुंजाइश बनी रहती है। समय आने पर रहस्य खोल कर स्थिति को बदल सकता हूँ, टाल सकता हूँ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर अगर मेरी पत्नी भी ऐसा ही करे तो ? पर शायद वह ऐसा नहीं करेगी, भावुकता की अतिशयता या संवेदन के आधारों के कारण —बच्चों के कारण—औरत के लिए सैक्स पाना पूर्णता है, पुरुष के लिए सैक्स जागृत कर देना मात्र पर्याप्त है। स्त्री में बदले की भावना जन्म ले सकती है, वह अपने पति के विवाहेतर सम्बन्धों के कारण अपने को बदले की आग में झोंककर अपना सर्वनाश कर सकती है। वह दूसरों की भोग्या बनकर, अपने को खुले में पति के प्रति विद्रोह के कारण समाज में दर्प का अहसास करवाने के लिए अनेक पुरुषों की बाँहों में बँधकर, कटु बनकर, सुख नहीं पा सकती। फिर पुरुष को, मुझे क्या हक है छिपे रिश्ते बनाए रखने का। शायद अपनी पत्नी को अपना पूर्ण सैक्स देने के लिए मुझे दूसरी औरतों की आवश्यकता हो, नशीली दवाई की तरह औरत को नशा मानकर अपनी पत्नी को खुश रखने के लिए ऐसे औचित्य के लिए मैं जो करूँ वह कहाँ तक उचित है ?

दूसरी तरफ मुझे लगता है कि मनुष्य बहुस्त्रीगामी नहीं होना चाहिए। जिन्दगी में कभी-कभार की बेवफाई जिन्दगी में रस लाने के लिए स्वीकार करते हुए भी यह कहना ठीक होगा कि विवाहित स्त्रियों के साथ शयन-सम्बन्धों का सिलसिला नहीं चलाए रखना चाहिए। यदि मेरे और मेरी पत्नी के जीवन में यह सिलसिला शुरू हो जाए तो विवाहित सम्ब्रन्धों को बनाए रखने में कोई सार नहीं है। विवाह को असफल घोषित करना उचित होगा।

मैं हमेशा यह मानता रहा हूँ कि प्रेम-सम्बन्ध इतने सरल नहीं होते। वास्तविक प्यार बहुत धीरे-धीरे पनपता है। हर सम्बन्ध को शुरू करने से पूर्व एक सही मूल्यांकन भी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। अपनी पत्नी के साथ अपने सम्बन्धों और नये प्रेम सम्बन्धों के समस्त पहलुओं पर पहले सोच लेना चाहिए। मेरे लिए कभी-कभी यह बात दुःखद पीड़ा की रही है कि हमेशा मैं अपनी प्रेमिकाओं को उसी स्थान पर पहली बार मिला हूँ, या उसी स्थान जैसे स्थानों पर मिला हूँ जहाँ मैं अपनी पत्नी को मिला था। मेरे कहने का तात्पर्य है प्रथम मुलाकात के बाद हमारा मिलन स्थान वही रहा है—मेरा शयनकक्ष। क्या मेरी पत्नी की भी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यही स्थिति है ? क्या वह भी विवाहित जीवन की एकरसता तोड़ने के लिए हमारे बैडरूम का उपयोग जिन्दगी को जायकेदार बनाने के लिए करती है ?

शामा से पहले नन्दिता से कुछ रिश्ता कायम किया था। उसका जीवन-दर्शन स्पष्ट था। वह त्रिवाहित थी तथा विवाह को एक सौदा मानती थी। आर्थिक तथा भावनात्मक साँझे का सौदा। 'पति घर का खर्च चलाता है, पत्नी घर का प्रबन्ध करती है, बच्चे भी पालती है। इससे यह लगता है कि यौन-भोग बाँटा जाता है—दोनों के बीच, उसका भौतिक अर्थ नहीं होता।'

मैं कहता हूँ 'क्या कभी-कभी वैवाहिक समझौता संकीर्ण नहीं हो जाता ? भेंट, गहने, कपड़े और डायनिंग टेबल की सजावट में उसे नापा नहीं जाता ?'

'नापती हूँ, न, मैं अपने पति की हर रात नापती हूँ। उससे मुझे कोई उम्मीद नहीं रहती। सरकारी नौकरी से प्राप्त पैसे से वह मेरे लिए आज तक एक हीरे की अँगूठी भी खरीदकर नहीं ला सका।'

'और कभी वह हीरे की अँगूठी लेकर आ गया तो तुम क्या करोगी ?'

'मैं दस दिन, दस रात नंगे बदन, शरीर पर सिर्फ अँगूठी को उँगलियों में पहने उसे प्यार करती रहूँगी।'

'क्या तुम मुझसे भी यही आशा करती हो ?'

'तुम मेरे पति होते तो जरूर आशा करती, परन्तु एक प्रेमी के रूप में जो तुम मुझे अच्छे होटलों में खाना खिलाते हो, सिनेमा ले जाते हो—वह भी उसी आधार पर मान्य है।'

'यानी तुम अपना शरीर मुझे मुफ्त में नहीं देती हो ?'

'यह भी सही है !'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'तुममें और वेश्या में अन्तर ही क्या रहा ?'

'कुछ भी कहो ! मेरे पति सीधे स्वभाव के हैं, शर्मीले हैं, मेरे लिए वे एक आदर्श पति हैं परन्तु वे यौन को शादी के समझौते में पाकर ही सन्तुष्ट हैं। उन्होंने कभी मेरे किसी भी रूप की प्रशंसा नहीं की ।'

'तुम्हारा कहना सही है । पति-पत्नी के सम्बन्ध अच्छे रहें, तत्हेतु यौनाचार की रिश्वत देना जरूरी है । मेरी पत्नी भी यदि अधिक प्यार करने के मूड में होती है, तो उसकी आवाज दबी-सी रहती है, उसकी मुस्कराहट बदल जाती है । ओठों पर भाव उतर आते हैं ।'

'और जानते हो मेरे पति क्या करते हैं ?' नन्दिता कहती है, वे कहते हैं, 'नन्दिता, आज मैं सिनेमा इसलिए ले जा रहा हूँ ताकि तुम रात मुझे रोमांस दे सको !'

मैं कहता हूँ, 'सात रुपये के सिनेमा टिकिट की रिश्वत देनेवाले इस आदमी के साथ तुम जिन्दगी कैसे काटती हो ? क्या वह एक बोझ मात्र नहीं है ?'

'हमारी सैक्स लाइफ की यही कमी है, इसीलिए तुम्हारे पास आती हूँ । हमारा संघर्ष सतत् है। समझौता शादी का है, दिल या प्यार का नहीं ।'

'शायद वह अपरिपक्व है—कुछ पुरुष ऐसे होते हैं । पर उसके ऐसा होने का कारण तुम हो—तुम उसे अपने सौन्दर्य से गिरवी रखती हो, अपनी वासनाओं के व्यवहार में उसे एक सिक्का मात्र मानती हो, जिसे कभी भी फेंक सकती हो, कभी भी उठा सकती हो । उसे बदलकर नया रूप दे सकती हो ।'

नन्दिता कहती है, 'तुम्हारी बात पूरी तरह तो सही नहीं है पर उसमें तत्त्व जरूर है, मेरे लिए वह एक रोजाना जरूरत की चीज मात्र है। कपड़े धोने की मशीन की तरह ।'

मैं अपनी पत्नी की बात सोचता हूँ जिसके लिए मैं उसके बिना माँगे उपहार लाता हूँ और नन्दिता की बातें सुनकर मुझे अपनी पत्नी से भी डर लगता है । मैं भी क्या एक सिक्का हूँ ।

Funding by IKS-MoE

मेरी पत्नी ऐसी नहीं है, वह सैक्स को एक उपभोग्य तथ्य मानकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विवाहित जीवन का केन्द्र बिन्दु मानती है। मुझे कभी-कभी अपनी भावनाओं से भय लगता है और मैं अपने भीतर तक कुंद हो जाता हूँ।

नन्दिता कहती है, 'जानते हो मैं तुम्हारे पास क्यों आती हूँ, तुम्हारी भावनाओं को जिन्दगी भर ब्लैकमेल करते रहना चाहती हूँ।'

'यह बात तुम्हारे पति पर अधिक लागू होगी। मुझे पर कम। तुम्हारी त्रुटि यह है कि तुम अस्वस्थ हो, तुम असन्तुष्ट हो। तुम अपने पति के साथ सैक्स सम्बन्धों पर नियन्त्रण रखती हो, स्वेच्छा से उसे पाती हो, स्वेच्छा से उसे दुत्कारती हो।'

'नहीं, यह भी सही नहीं है, वह एक कामकाजी पति है। मैं एक अतृप्त औरत हूँ। तुम या तुमसे पृथक् दूसरों की बाँहों में मुझे ढाढस मिलता है, अपने औरत, पूर्ण औरत होने का अहसास होता है।'

'हा ! हा ! हा !!' मैं हँसता हूँ, 'चन्द मिनटों के संयुक्त जीवन में तुम तुष्टि पाती हो ? नन्दिता, जब तक तुम्हारे शरीर की बनावट में यौवन है, अल्हड़पन है तभी तक मैं हूँ और मेरे अतिरिक्त दूसरे प्रेमी हैं। शरीर ढलने पर वही पति तुम्हारे काम आएगा !'

'नहीं !' वह लगभग चीखती है। 'नहीं, मेरे जीवन की शुरुआत यौवन ढलने से होगी, अभी मैं दूसरों और अपनी—मिश्रित इच्छाओं पर जी रही हूँ—फिर—जिसे तुम शरीर ढलना कहते हो—उस स्थिति में तुम्हारे सरीखे नहीं तो मेरे पति सरीखे निरीह जीव बहुत मिलेंगे, उनका प्यार, उनकी वासना, उनका सन्तोष, उनकी संयुक्त बनकर एक-दूसरे जीवन की शुरुआत करूँगी।'

'मुझे लगता है, शायद मैं सोचता हूँ, तुम्हारे पति का बौद्धिक स्तर बहुत ज्यादा है और तुम एक झूठी मान-मर्यादा वाली औरत हो—तुम्हारा विवाह अनमेल है !'

'और तुम्हारा अपना विवाह ? तुम्हारी पत्नी ? तुम्हारे विवाहेतर सम्बन्ध—क्या नाम दोगे तुम उन सबको !'

'पौरुष ! अतिशय पौरुष !!'

'छिः, तुम दम्भी भी हो ? तुम अनाचार को पौरुष मानते हो ?'

Funding by IKS-MoE

'जब तक मैं तुम्हारे घर में तुम्हारे अपने बिस्तर में घुसा हुआ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पकड़ा न जाऊँ तब तक मैं अनाचार-दम्भ जैसे शब्दों को अस्वीकार करता रहूँगा। पर में यह भी इनकार नहीं करूँगा कि विवाहेतर सम्बन्ध मुझे अच्छे लगते हैं—जब तक ऐसा मानूंगा, ये सम्बन्ध बनाए रखूंगा। अच्छा नहीं लगेगा तो केंचुली उतार लूंगा।'

'तुम मेरे दूसरे प्रेमियों के बारे में क्यों नहीं पूछते ?'

'जरूरत क्या है ?'

'आज का डिनर ?'

'ताजमहल होटल में !'

'आज का सैक्स ?'

'डिनर के बाद सोचूंगा !'

निर्मल ने कहा था उस शाम। क्या कहा था ? किस शाम कहा था। वह शाम मुझे याद इसीलिए है कि स्निग्धा के साथ मेरी खटपट चल रही थी। मैं दौरे के बहाने दिल्ली से बाहर जाने की कहकर ताजमहल होटल में रात काट रहा था। निर्मल को बुलाने के लिए कई दिनों से कार्यक्रम नहीं बना पाया था।

मैं कहता हूँ, 'निर्मल, तुम मुझसे शादी कर लो !' वह कहती है, 'तू बोल तुझे क्या चाहिए। तू कहे तो तेरे साथ महीने के तीस दिन पड़ी रहूँ। बोल न क्या कहता है।'

'निर्मल, मैं स्निग्धा के व्यवहार से दुःखी हूँ।'

'छोड़ न यार ! क्या सोचते हो ? बेकार है सब। मैं तेरे साथ हूँ। तू जो कहेगा कर लूंगी पर शादी की बात रहने दे।'

'क्यों ?'

'देख यार, तू है न अच्छा आदमी, योग्य—काबिल आदमी। और मुझसे बहुत काबिल और मैं यह जो एक दो दिन तुम्हारे साथ काट लेती हूँ न, वे भी कभी-कभी भारी हो जाते हैं। तुम्हारे व्यक्तित्व में

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
तिरोहित हो जाती हूँ। तुम प्रभावी हो ! समझे ! मैं तुम्हारे लिए ही हूँ, पर दूसरे रूप में। तू बता, क्या रखा है टूटी-फूटी शादी रचाकर। मेरा पति भी दुःखी, तुम्हारी स्निग्धा भी दुःखी। मैं तुम्हारी तरक्की चाहती हूँ। जो चाहो मदद करूँगी। तुम नौकरी छोड़ो, बिजनिस करो —वड़ा बिजनैस, दस-बीस करोड़ का, मैं तेरे साथ हूँ, तुम्हें फाइनैंशियल मदद दूंगी, तुम्हारे मेल-मिलाप बैठाऊँगी। पर देख तू अगर मुझे अपनी औरत बनाएगा न तो मैं तुम्हारी इतनी तरक्की चाहूँगी कि यह प्यार-व्यार सब मर जाएगा। तू क्या सोचता है ?'

'प्यार नहीं मरेगा। मैं जो हूँ।'

'यह गलत है यार। सरासर गलत। हमारा रिश्ता एकतरफा हो जाएगा। मैं तुम्हारा साया बन जाऊँगी। समझे—तुम्हारी परछाईं, है ठीक। फिर न तुम्हारा भला होगा, न मेरा। देख मैं तुम्हें अपने से सुपीरियर मानती हूँ। मेरा हब्बी मेंटली ब्रोक है, एकदम डफर, मैं तेज-तर्रार—पर सच यह है कि मुझे अपने से तगड़ा मर्द अगर घर की चक्की में डालेगा न तो क्लेश हो जाएगा। भयंकर युद्ध होगा। जीतूंगी मैं। अब मैं स्वतन्त्र हूँ।'

'मैं भी तुझ पर भार नहीं बनूंगा। मुझे तेरी बातें अच्छी लग रही हैं।'

'देख, तू सुन, हें—शादी में हमें सुख-दुःख बाँटना होगा। तेरा बिज-निस वढ़ाऊँगी, तेरा काम बाटूंगी। मेरे दिमाग का इस्तेमाल होगा। मेरा जीने का तरीका अलग है।'

'पर निर्मल बावजूद इसके तुम जिस तरह की हो, हमारे बीच तनाव-हीनता तो होगी—जिन्दगी कुछ समझदारी से कटेगी।'

'छोड़ यार। सैक्स है न, इसकी बहुतायत अच्छी नहीं। तू मुझे जितना मिलता है न बहुत है। मेरे पति को देख, वह मुझसे अलग है। वह मेरे लिए एक खिलौना है। खेलती हूँ। मुझमें यह कुण्ठा-वुण्ठा कुछ नहीं, है। मेरी दुनिया मिस्ट्री से भरी है, अपने रहस्य मैं तुम्हें भी नहीं बताती।'

'तू मुझे प्यार करती है।'

'ठीक है, प्यार करती हूँ। पर तुझे अपना प्रेमी नहीं मानती, दोस्त हो। शरीर का सहयोग कर लेते हैं, ठीक है इसमें गिल्ट नहीं है, हमारा
Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

व्यक्तिगत ताल्लुक है। प्यार या दोस्ती और शादी अलग रहें तो ही ठीक है।'

'तुम्हारे साथ बीता समय शाश्वत हो जाता है।'

'मेरा हब्बी है न, साला बैल है।'

'तू उसे कुछ सिखाती क्यों नहीं ?'

'वह साला अपनी माँ के पेट से सीखकर आया है सब ! उसे सैक्स में वही सुख मिलता है जो गोशाला के सांड को बाजार में घूमने पर मिलता है। वह न मुझे लुभाता है, उसमें सहानुभूति की कमी है, वह स्वार्थी है, भरी बन्दूक की तरह वह सैक्स को फायर करता है।'

'किस मूड में हो निर्मल ? क्या बात है। आज कुछ उखड़ी और बहकी-बहकी-सी हो।'

'कुछ नहीं यार। सच कहती हूँ, उस बैल को मैं छोड़ नहीं सकती। मेरे माँ-बाप-भाई, चालीस करोड़ का कारोबार करते हैं, उनकी इज्जत की वजह से बँधी हूँ इससे।'

मुझे लगता है निर्मल भीतर, बहुत भीतर टूट गई है। मैं उसे महसूसता हूँ, उसके प्रति जागरूक हूँ। उस जैसी औरत घर में पड़ी श्रृंगार कर बैठी रहे। कभी कशीदा कर ले, पेंटिंग कर ले। क्लब चली जाए—पर उसके भीतर की ज्वाला दबी हुई है। निर्मल कहती है, 'मैं न आउटडोर जिन्दगी की बहुत शौकीन हूँ। जी होता है किसी नदी के किनारे टेंट लगाकर बैठा जाए। कुछ हफ्ते सारी शहरी जिन्दगी से कटकर रहा जाए। मैं अपने माँ-बाप के यहाँ जाती हूँ न तो एक छोटी बच्ची की तरह सुरक्षित महसूस करती हूँ, उछल-कूद करती हूँ। अपनी सहेलियों से मिलती हूँ, कभी-कभी खाना बनाती हूँ—अपनी इच्छा का खाना।'

इधर मैं भी स्निग्धा के प्रति अपने व्यवहार को बदलने की बात सोच रहा हूँ।

निर्मल कहती है, 'देख यार अब अगली बार यह होटल नहीं चलने का। यहाँ रिसैप्शन में लोग मुझे पहचानने लगे हैं। खैर यह बताओ तुम सैक्स, चित्रकला और संगीत इन तीनों में से किस एक को चुनोगे ?'

Funding by IKS-MoE

'मैं सैक्स को चुनूंगा। वह एक आवश्यक चीज है। वक्त काटने का

CC0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सर्वाधिक सक्रिय तरीका है। वास्तविक सुखद सैक्स अनुभव एक उपलब्धि है।'

'मेरे बस में होता तो मैं कभी शादी न करती। स्वतन्त्र बिजनैस करती। अपनी मरजी से सैक्स पार्टनर चुनती और जिन्दगी को कभी बँधने न देती। अकेले रहने में भी आनन्द है।'

'हाँ, आज के वातावरण में यह सम्भव तो है।'

'तुम्हें एक चीज कहूँ—कभी-कभी मैं सोचती हूँ सैक्स कोई लाजमी चीज नहीं है। इसके बिना जिन्दा रहा जा सकता है। सैक्स के बिना बिल्कुल सहज रूप से जिन्दा रहा जा सकता है। पर दूसरी ओर लगता है सैक्स एक जरूरी चीज है। इसमें दूसरे आदमी या औरत की जरूरत के कारण जीवन में पूर्णता आती है। जब तक तू मेरी जिन्दगी में नहीं था न तो मुझे सैक्स नहीं मिला था, सैक्स जिस तरह मैं चाहती थी।'

'देख निर्मल, सैक्सी जिन्दगी के बिना तुम तो रह नहीं पाओगी। मुझे सैक्स की जरूरत है ठीक वैसे ही जैसे जिन्दगी की दूसरी अच्छी चीजों की जरूरत है। बस उससे बढ़कर या कम नहीं। सैक्स के बिना मुझे अपने अधूरेपन का एहसास होता है। मानवता को सही रास्ते पर बनाए रखने के लिए सैक्स, विवाह विवाहेतर सम्बन्ध सब जरूरी हैं।'

निर्मल कहती है, 'यह बता तू दो रात मेरे साथ इकट्ठी काटेगा या एक। अगर कल का दिन भी काटेगा तो उसी तरह की मनःस्थिति बनाऊँ। मेरा मियाँ छः दिन के लिए बाहर है। बोल यार। अब मैं कपड़े खोलने को मर रही हूँ।'

'निर्मल, प्यार के बाद तुम्हारा सौन्दर्य बढ़ जाता है। तुम इतनी आकर्षक हो जाती हो कि फिर-फिर प्यार करने के लिए हृदय में तूफान उठते हैं।'

'हाँ मुझे भी ऐसा लगता है, प्यार से एक स्वस्थ चमक मेरे चेहरे पर आती है, पर सिर्फ तेरे प्यार से। हवा के ताजे झोंके से स्वच्छ, स्वस्थ है तुम्हारा एक-एक स्पर्श।'

'सैक्स का आनन्द परिस्थिति और उसके औचित्य से जुड़कर मर जाता है। यह आनन्द ब्रह्मास्वाद सहोदर है, अनिर्वचनीय है।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्यार जीवन है, जिन्दगी है। सैक्स उस जीवन को भरपूर बनाने का रास्ता है। वासनामय यौन क्रिया क्षणिक है परन्तु वे क्षण पूरे जीवन का आधार हैं। जीवन के संश्लिष्ट स्वरूप में वह सूत्र है, सबको जोड़ने वाला। इन क्षणों पर पूरी गतिविधि आश्रित होकर प्रतिपल नई चमक पाती है। हमारी भावनात्मक सक्रियता को प्यार स्थिरता देता है। प्यार खुशी है, प्यार पागलपन है। प्यार अनकही गाथा है, प्यार सफलता का सोपान है। प्यार मौत को रोकता है, प्यार मुश्किलों का साथी है, जिन्दगी का पथ-प्रदर्शक है, दीप है, स्वयं एक दीप है। सागर है, स्वयं एक बूंद है। प्यार माला का मनका है, मंगलसूत्र का धागा है।

निर्मल कहती है कि उसका अपने पति के साथ प्यार नहीं है। सैक्स का रिश्ता है, बिना प्यार का। वह उसे नफरत करती है। उसके संसर्ग में वह अपने से नफरत करती है।

औरत का अस्तित्व सन्तानोत्पति के लिए है। प्यार में सैक्स मनोवृत्ति रहती है, परन्तु सैक्स मनोवृत्ति में प्यार का रहना जरूरी नहीं है। निर्मल आकस्मिक प्यार के स्थान पर नियोजित, पूर्वनिर्धारित सैक्स पाती है। जिस समाज में मां-बाप विवाह-शादी निर्धारित करते हैं, दहेज लेन-देन पर रिश्ते तय होते हैं, वहां प्यार का सुख नहीं मिलता। विवाह के बाद प्यार एक सम्भावना है, सीमित सम्भावना।

मैं कहता हूँ, 'निर्मल, जब तुम्हारी शादी हुई थी तो क्या तुम वस्तुतः कुमारी थीं ?'

'नहीं यार, मैं पहले से ऐसी ही थी। मेरा एक प्रेमी था, जब सोलह साल की थी, तभी से। उसके साथ शादी नहीं जमा पाई।'

मुझे निर्मल में एक ऐसी औरत की गन्ध आती है जो अपने स्वार्थ के लिए, अपनी वासना तृप्ति के लिए किसी का भी उपयोग कर सकती है। इस विश्वास का स्पष्ट कारण क्या है, कह नहीं सकता। वह अपनी लालसा के लिए सब कर सकती है। छः सौ रुपये रोज का होटल का कमरा उसके नाम पर स्थाई रूप से गत छः वर्षों से बुक रहा है। धन के आगे शायद उसका पति झुका होगा। क्या मैं भी ऐश्वर्य की चाहना नहीं कर रहा। मुझे विश्वास नहीं है कि उसके विवाहेतर जीवन में केवल

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं अकेला पुरुष हूँ।

स्निग्धा की एक-एक बात मैं मानता हूँ। वह चरित्रवान है। छोटे-मोटे, किस-विस के रोमांस जरूर हुए होंगे उसके परन्तु दूसरी तरह से वह हमेशा एक पूर्ण व्यक्ति रही है। परन्तु वह सैक्स में शादी से पहले उलझी ही नहीं थी। निर्मल बिना प्यार के अपने पति से बँधी है परन्तु मेरे ख्याल में यह सम्भव नहीं। जब सम्बन्ध स्थाई होता है तो प्यार किसी न किसी रूप में अवश्य वर्तमान रहता है। और अगर प्यार न हो तो जीवन कष्टप्रद हो जाता है, दिल में चोट देता है, यदि बिना प्यार का सैक्स एक आदत, स्थाई आदत हो जाता है, वहाँ दोनों पक्ष हानि उठाते हैं, निर्मल में शायद यह आदत है। वह मुझे यूज कर रही है, अपने लिए इस्तेमाल कर रही है। पर मुझे एक वस्तु नहीं बनना है, इस्तेमाल का साधन नहीं बनना है। मुझे अपने से घृणा हो जाएगी।

पर शायद निर्मल मुझसे अपना स्थाई सम्पर्क सम्बन्ध बनाए रखना चाहती है, कार की स्टेफनी की तरह नहीं, एक गीयर पिन की तरह, आवश्यक मानकर।

निर्मल कहती है, 'तू देख न, मैं अपने हब्बी को छोड़ नहीं सकती। पर हमारा दोनों का जीवन झूठ पर टिका है। मैं उसे हमेशा अपना प्यार देने का आश्वासन देती हूँ। प्यार का बहाना करती हूँ। मैं उससे इतनी नफरत करती हूँ कि झूठ में बाँधकर उसे आशावादी बना दिया है। मैं बेईमान हूँ। उस आदमी के प्रति हमेशा मैं वितृष्णा से भरी रहती हूँ। वह मेरे प्रति क्या भावना रखता है, नहीं जानती। शायद उसके मन में कड़वाहट हो।'

'नहीं निर्मल, ऐसा नहीं है। तुम्हारा पहला प्यार असफल रहा था न, वही कारण है तुम्हारे सम्बन्ध का।'

'नफरत से उत्पन्न सम्बन्ध और बिना प्यार के सम्बन्ध का भेद तू क्या जानेगा यार।'

वस्तुत: निर्मल इन दो दिनों में खूब शराब पीती है। जी भरकर। बिना कपड़ा पहने कक्ष में घूमती है। औरत का नग्न शरीर ही प्यार का आधार होता तो शायद निर्मल एक अद्‌भुत प्रेमिका होती। वीणा ने जिस

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पागलपन से मुझे प्यार किया था, वह पागलपन निर्मल में देखता हूँ। तो फिर वह सम्बन्ध क्या सचमुच मेरी नासमझी के कारण टूटा ? नहीं, जितनी तेजी से जिन्दगी में वह क्रश आया था वह उसी तेजी से समाप्त हो गया।

मुझे लगता है स्निग्धा भी कहीं प्यार की असफलता को महसूस करती है।

'प्यार की परिभाषा क्या है ?' निर्मल पूछती है।

'कोई निश्चित परिभाषा नहीं है। पर शायद अगर सैक्स में स्निग्धता और कोमलता का व्यवहार आ जाए और आपसी रिश्ते को किसी तरह का स्थाई आधार दे दिया जाए तो उस रिश्ते में प्यार होगा या वह रिश्ता प्यार का होगा।'

निर्मल मेरे लिए वर्षों से एक आकर्षण रही है। उसकी रोचक बातें, किस्से-कहानियाँ मुझे बाँधते हैं। मेरे लिए वस्तुत: वह एक स्थाई सम्बन्ध बनती जा रही है। स्निग्धा के व्यवहार ने इन सम्बन्धों को बढ़ावा दिया है। स्निग्धा का चिड़चिड़ापन, घर में घुसे रहने की आदत। अच्छे कपड़े घर में न पहनना, एक साधारण-सा रूप बनाए रखना···कुछ ऐसी बातें हैं जिनके कारण मैं घर से बाहर सुख तलाशता हूँ। मुझे चरित्रवान होना चाहिए। पर क्यों ? शायद इस क्यों का भी उत्तर है। उत्तर नहीं होता तो यह प्रश्न जन्म ही क्यों लेता ?

मैं उर्मिल को किस आधार पर पत्नी बनाना चाहता हूँ ? उसे अधिकार क्या है। जो औरत मेरे लिए यह सब करती है, वह मेरी होकर दूसरों के लिए भी वैसा करेगी, तो ? तो मेरे लिए उसे सह पाना मुश्किल होगा। वीणा के वाद मुझे रिश्तों की अस्थिरता भयभीत कर देती है। निर्मल जैसे रिश्ते में क्या वास्तविक सुख है। नहीं, मैं अपने को छल रहा हूँ। मेरा घर है, पत्नी है बच्चे हैं। आयु भी इतनी छोटी नहीं कि हीरो बना रहूँ। रोमांटिक बने रहने का स्टिकर भी हमेशा लगाए रखने से बासी हो जाने का खतरा है।

स्निग्धा में क्या नहीं है, वह निर्मल से ज्यादा इन्टैलिजैन्ट है। पढ़ी-लिखी है। एक अच्छी औरत है। उसके स्वभाव को किसने चिड़चिड़ा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बनाया ? उसे किसने छला ? क्यों छला। शुरू से ही क्यों एक निश्चित धारणा, मैं उसके विषय में बनाता रहा ? उसने मेरे तलाक के बावजूद सहर्ष मुझसे शादी करना स्वीकार किया। उसमें कोई हिचक नहीं थी, कोई अवरोध नहीं था। एक सहज व्यक्तित्व लिए वह मेरी जिन्दगी में आई।

ताज होटल का यह कमरा भव्य है। दिल्ली में जब ताजमहल होटल नहीं था तो हम होटल जनपथ में रहते थे। निर्मल के साथ मेरा रिश्ता उचित-अनुचित की सीमा तोड़कर बना रहा है। मुझे जब उसकी आवश्यकता हुई है, वह मुझे बहुत कम मिली है, उसने अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए जब चाहा, पा लिया।

यह कमरा काफी बड़ा है। सैकेण्ड फ्लोर पर स्थित है। पीछे की वालकनी स्विमिंग पूल की ओर खुलती है। भीतर सिटिंग रूम में सोफा-सेट है, पीला कार्पेट वाल-टू-वाल है। दरवाजे के साथ वाले कोने में रवर प्लांट एक खूबसूरत पीतल के वेस में है। सामने की दीवार पर हुसैन की दे केम टूगेदर पेंटिंग का प्रिंट फ्रेम किए हुए टंगा है। पीले रंग से वहुत से गधे दिशा बदलते रंगरूटों की तरह दिखाई दे रहे हैं। दीवार के कोने में राइटिंग टेबल है। उस पर पीले-क्रोम यैलो रंग का लेम्पशेड ब्रास के लैम्प पर लगा है। सेंट्रल टेबल पर पीला सनमायका या सनग्लास है। दीवारों पर जूट का आवरण चढ़ा है। एक दीवार पर मिट्टी की एक वहुत पुरानी हंडिया है। दूसरी दीवार पर नटराज लटके हैं। मेज की दराज खोलकर देखता हूँ, उसमें लिखने के लिए स्टेशनरी है। रैस्तोराँ से खाना आदेशित करने के लिए आर्डर स्लिप्स हैं। भीतर के कक्ष में डवलबैड है, उसकी दोनों ओर छः-छः दराज का साइडबोर्ड है। नेचुरल टीक कलर का सनमाइका लगा डबलबैड सुन्दर है। उस पर खूबसूरत प्रिंट की चादरें हैं। बैड कवर को हटाकर पाँव की ओर धकेल कर निर्मल वैठी है, सिर्फ ब्रासरी पहने। काले रंग की ब्रासरी पर लाल रंग की पट्टी लगी है। बैडरूम में रीडिंग लाइट को छोड़कर सब रोशनियाँ दीवारों में इन बिल्ट हैं। टेबल पर पानी का जग और दो गिलास रखे हैं। वैडरूम के दाहिने का दरवाजा एंटीरूम में खुलता है। वहाँ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ड्रेसिंग टेबल पर बैठने के लिए एक स्टूल है। वार्डरोब दीवार में सामने की ओर बने हैं, उन पर सफेद सनमाइका लगा है। बोर्ड पर चार बोतल मिनरल वाटर रखा गया है। कमरे से बाईं ओर बाथरूम है। टब का आकार सामान्य से कुछ छोटा है।

निर्मल एक झटके से ब्रासरी खोलती है और बैडशीट को खींचकर अपने को गले तक ढक लेती है। फिर साइड टेबल पर रखे गिलास को दाहिनी ओर मुड़कर उठाती है, पीती है। मैं बिस्तर के दूसरी ओर खड़ा सिगरेट पी रहा हूँ और व्हिस्की का गिलास थामे हूँ। निर्मल एक घूंट भरती है और कहती है—

'तू आ न ! अब एक घण्टा हो गया तुम्हारा। चल, गर्म गोश्त को छूकर देख···ले, इन्हें पी न···आ···' और वह सिलसिला फिर शुरू हो गया है। मेरा व्हिस्की का चौथा पैग है।

तभी रूम टेलीफोन की घण्टी बजती है। मैं उठकर फोन सुनना चाहता हूँ। निर्मल मना करती है। घण्टी बजकर चुप हो जाती है।

'मजा आ रहा है,' निर्मल पूछती है।

'नहीं आता तो तुम्हारे पास क्यों दौड़ता।'

शान्ति, चुप्पी···हम उठते हैं। फोन पर बैरा को रूम में भेजने का मैं आदेश देता हूँ। हम कपड़े पहनकर सिटिंगरूम में आ जाते हैं। बैरा दरवाजे पर दस्तक देता है। मैं दरवाजा खोलता हूँ।

'क्या खाओगे ?' निर्मल पूछती है।

'जो भी मिल जाए !'

'सुनो, तुम एसपैरागस सूप, मशरूम फाइड, बाम्बूशूट मिक्स, गुश्तावा और नान ले आओ।'

'पुडिङ्ग,' बैरा कहता है।

'नहीं चाहिए—अच्छा ठहरो—क्यों क्या लोगे तुम !' निर्मल मुझे पूछती है।

'मैं आइसक्रीम ले लूंगा, कोई भी हाई आइसक्रीम !'

बैरा चला जाता है। मैं बालकनी का दरवाजा खोल देता हूँ। स्विमिंगपूल के ऊपर के टैरिस का लॉन रात की रोशनी में सुन्दर लग रहा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। जी होता है, वहाँ चला जाए। सामने दिल्ली की पूर्व-पश्चिमी स्काईलान अंधेरे से उभरती रोशनी का प्रभात सा बना रही है। एक सुबह का एहसास रात के दस बजे हो रहा है।

'जानते हो यह कमरा मेरा हर रहस्य जानता है।' निर्मल कहती है।

'हाँ, मैं यह महसूस कर सकता हूँ।'

डिनर लेकर रूम बैरा आ गया है। सूप बहुत अच्छा बना है। खाना खाने के बाद निर्मल शेरी लेती है, मैं एक पैग पोर्ट लेता हूँ। फिर हम कपड़े बदलकर कमरा बन्द कर नीचे स्वीमिंग पूल पर चले जाते हैं। कुछ देर टहलते हैं। मन होता है निर्मल की जगह स्निग्धा होती। निर्मल बहुत बातूनी है। उसकी बातों को सुनकर मुझे वीणा की खामोशी याद आ जाती है। वीणा के मोटे सुन्दर होंठों पर हँसी कुछ अजीब-सी लगती थी। इस अँधेरे में वीणा की याद क्यों आ रही है। निर्मल कुछ अर्से पहले यू. एस. ए. गई थी, वहाँ से मेरे लिए डायमैण्ड की अंगूठी खरीद लाई है। मुझे शुरू में लगा था यह अँगूठी नकली नग की है। एक जौहरी मित्र ने इसे परखा था तो पता चला यह तो वस्तुत: एक खजाना है। तीन लाख से कम की नहीं है। मैंने निर्मल से कहा था, 'निर्मल मुझ पर इतना पैसा क्यों बर्बाद करती हो, मुझे अँगूठी की क्या आवश्यकता थी ?'

'अरे यार, ले आई और तुम्हें पहना दी। तुम्हारे लिए लाई थी, तुम्हें पहनाकर खुशी हुई। तुम भी तो मेरे लिए कोसा की साड़ियाँ लाते थे। इम्पोर्टिड कार्डीगन और सैंट-वैंट क्या-क्या लाते थे। मैं एक चीज ले आई तो क्या बुरा किया। बता न तू !'

निर्मल का बोलने का सलीका मुझे बेहद अपनत्व से भरा लगता है। घूमकर हम कमरे में लौट आए हैं। बिस्तर का ठण्डापन हमारे शरीरों की गर्मी की प्रतीक्षा में है।

निर्मल कहती है, 'बता न, कल दिन को रुकेगा या नहीं ?'

'निर्मल सुन, अभी तो आज की भी शुरुआत नहीं हुई फिर कल की क्या कहूँ।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'अच्छा यार, चल अब इधर आ !' रात है, निर्मल है, ताजमहल होटल का कमरा है, इसी शहर में मेरी दूसरी पत्नी स्निग्धा है, पहली पत्नी वीणा है। यहीं शामा है, नंदिता है···और मैं हूँ इन सबसे घिरा, निर्मल की आगोश में या बैडशीट की नर्माई में जिन्दगी के जमा-माइनस का हिसाब भूलकर एक खोखला पेड़ का तना। कभी भी, कोई भी आँधी आएगी—यह टूट जाएगा। निर्मल कहती है, 'ए, बत्ती जली रहने दे', वह हाथों से मेरे शरीर को सहलाती है, पथ-प्रदर्शन करती है। सैक्स का यह रूप उसका है, यहाँ वह जो चाहती है, पाती है, अपनी शर्तों पर। मुझे लगता है मैं बिक गया हूँ या कामरूप की यह कोई जादूगर है, मुझे भेड़ बनाकर अपने पीछे-पीछे लिए चली आ रही है। मैं विवश हूँ। स्वयं की मेरी कोई गति नहीं है, मेरा अपना कुछ भी नहीं है।

'सुन यार, रात ऊँघने की नहीं है, आ कुछ बातें करें !'

'क्या बातें करें ? यह सब बातें नहीं तो और क्या है ?'

'तू अपनी बीवी की बता न, कैसी है इस सबमें ?'

'तुझे क्यों कहूँ ? चुपचाप सो जा !'

'नहीं रे, तू देख मेरा एक मात्र प्रेमी है, तेरे बारे में हमेशा सोचती हूँ, हर घड़ी, अपने हब्बी के साथ सोकर भी तुम्हारी शक्ल देखती हूँ।'

'इससे क्या है ?'

'है तो कुछ नहीं, पर बहुत कुछ है, मेरे लिए तू ही एग्जीस्ट करता है !'

'मैं अगर तुमसे अलग हो जाऊँ ?'

'तो भी मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगी रे। देख, मैं इस जन्म में तुम्हें अपना पति नहीं बना पाई, अगले जन्म में तू मेरी औरत बनेगा, फिर बदला लूँगी !'

'अगले जन्म में तू बिल्ली बनेगी।'

'शायद मेरे इस जन्म से मेरा अगले जन्म में बिल्ली बनकर जीना अच्छा होगा, बेहतर होगा !'

'यह बता तू सचमुच मुझे बहुत चाहती है !'

Funding by IKS-MoE

'देख, बहुत बार कह दिया, चाहती हूँ। जब तक जिन्दा हूँ, तुम्हें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसी तरह पाना चाहती हूँ !'

'पर निर्मल, अगर मैं अपनी जिन्दगी पूरी तरह अपने परिवार को देना चाहूँ तो ?'

'तो यार सुन। मैं तुम्हारी फेमिली लाइफ खराब नहीं करूँगी। प्यार करती हूँ। इसका यह मतलब नहीं कि तुम पर बोझ बन जाऊँगी। तू कहेगा न तो अलग हो जाऊँगी !'

'कोई दूसरा तलाशेगी क्या ?'

'देख भविष्य की बात मैं ज्यादा नहीं सोचती, कल की सोचती हूँ, सिर्फ एक दिन आगे की बात सोचती हूँ। कल की भी तब सोचती हूँ जब तू साथ है आज ! नहीं होते तो नहीं सोचती। और जब सोचती हूँ न तो वह मेरा निर्णय होता है। उसे मैं बदलती नहीं !'

'पर निर्मल, तुम अपने को मुझसे अलग कर सकती हो...'

'देख, तू बड़-बड़ मत कर। कह दिया तू कहेगा तो अलग हो जाऊँगी। साथ रखेगा तो तेरी औरत बनकर नहीं रहूँगी, यही बनकर रहूँगी जो आज हूँ। जब तू नहीं आता न साथ तो इस कमरे की बालकनी से दूर दिल्ली के आकाश के क्षितिज तक देखती हूँ। वहाँ जो चुप्पा है न, सूना-सूना सा विस्तार है न जो, उसे देखती हूँ। उसमें मुझे कुछ भी महसूस नहीं होता। वह चुप्पा-चुप्पा-सा कुछ मेरे दिल में, दिमाग में भर जाता है। और अगर तू मुझसे अलग हो गया तो भी यहाँ आकर उसी आकाश के टुकड़े को, उस टुकड़े से जुड़े क्षितिज को देखूँगी। देख सैक्स-वैक्स की वजह से मैं तुमसे नहीं जुड़ी हूँ। कुछ और था...।'

'कुछ और क्या था निर्मल ?'

'था न, मेरा जो पहला प्यार था न वह तुम-सा था ! घुंघराले बाल, खूबसूरत मुस्कराता चेहरा—बस वही कुछ था जो तुममें है। तू मुझे धोखा नहीं दे सकता, जानती हूँ। साहिर लुधियानवी एक शायर था, उसकी वह नज्म है न—तसव्वुरात की परछाइयाँ उभरती हैं...पढ़ी है ? उसमें एक जगह आता है—

तुम आ रही हो जमाने की आँख से बचकर
नज़र चुराए हुए जिस्म छिपाए हुए

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम्हें यकीं है कि हम मिलकर कभी न बिछुड़ेंगे
मुझे गुमाँ है कि हम मिलकर भी पराए हैं।

यह जो नज्म है न बस यार, अपने किस्म की एक ही नज्म है। उसमें एक जगह जो आया है न कि प्रेमी के घर प्रेमिका जाती है, उसके विस्तर पर बिखरी पुस्तकों को सहेजती, समेटती है, करीने से लगाती है—साहिर साहब कहते हैं—

वे जो गीत सुहागरात ढोलक पर गाए जाते हैं।
वही गीत दबे स्वरों में गा रही हूँ॥

समझे दोस्त, तेरी निर्मल बस एक परछाईं है। साहिर जी से इस नज्म को सुनने के लिए उमर भर एक ख्वाहिश रही। उनकी अकाल मृत्यु से मुझे दु:ख हुआ। मेरी कहानी-वहानी कुछ नहीं है। बस अधूरी तमन्नाएँ रह गईं। तुझे देख माज़ी में जी लेती हूँ।'

'पर तुम्हारा वह प्रेमी कहाँ है अब ?'

'वह नहीं है, सन् 65 में पाकिस्तान की लड़ाई में मारा गया। उसे महावीर चक्र मिला था। जानते हो मैं एक महीने बाद उससे शादी करने वाली थी•••हँ•••खैर तू क्यों सोचता है•••छोड़, मैं उसे जितना चाहती थी, उतना ही तुम्हें चाहती हूँ•••और कहूँ एक बात•••तुम्हारा और उसका नाम भी एक था !'

'प्लीज निर्मल•••स्टाप इट•••मुझे कुछ व्हिस्की बना दो।'

वह उठती है, व्हिस्की बनाती है। मैं धीरे-धीरे पीता हूँ और कहता हूँ, 'तुम निर्मला सिंह थीं तब•••तुम मुझे इस तरह मिलोगी•••ओह••• उफ्•••तुम्हारा वह प्रेमी मेरा दोस्त था•••हम दोनों बहुत दोस्त थे••• एक साथ पढ़े थे, निर्मल•••मेरा सिर चकरा रहा है•••!' मैं सिगरेट पर सिगरेट पीता रहा।

निर्मल कहती है, 'दुनिया इतनी छोटी होगी, मैं कभी सोच नहीं सकती थी।'

मैं चुप हूँ। शब्द मर गए हैं। मेरी आँखों के सामने है एक अतीत जिसमें मैं हूँ, मेरा दोस्त सी० एन० सिंह है। कमीशन मिलने के बाद वह मुझे मिला तो बोला था, 'चन्द्र, मैं देहरादून जा रहा हूँ•••' उसी की

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खुशी की वह तस्वीर मेरी आँखों के सामने आती है। फिर मिला था तो पठानकोट रेलवे स्टेशन पर—सैकेण्ड लेफ्टीनैंट की वर्दी में। एक और मुलाकात हुई थी तो बोला था, 'दिसम्बर 5 को शादी है, जरूर बारात चलना।'

'किससे कर रहे हो शादी ?'

'अरे, तुम्हें बताया था न कि अपना रोमांस हुआ था, निर्मला सिंह नाम है उसका। शी इज़ ए रियल ब्यूटी।'

'यार, तुम्हारी शादी होगी न तो भाभी को पहला किस हम करेंगे।'

'तुम उसी से फैसला कर लेना, पर देख बारात में चलना है, कोई बहाना नहीं चलेगा। ओम् भी आएगा।'

'वह कहाँ है आजकल ?'

'तेजपुर साइड में है उसकी बटालियन।'

'वेद कहाँ है ?'

'वेद महू में प्लेटून वैपन्ज कोर्स पर है, शादी पर आएगा।'

'प्रमोद तो चकराता में था।'

'नहीं, अब उसकी बटालियन बकलोह में है।'

'रतन कहाँ है।'

'रतन सिकन्द्राबाद में है।'

'तुम कहाँ पोस्टिड हो ?'

'मैं पुंछ सैक्टर में गलूटी में हूँ, कैप्टन हो गया हूँ। जी-3 का काम देख रहा हूँ।'

और उसके बाद आया था 1965 का अक्तूबर। युद्ध का पहला दिन। रात नौ बजे के समाचार। कैप्टन सी० एन० सिंह को मरणोपरान्त महावीर चक्र दिया गया है। हमारी फौजों ने मेढर—बलनोई—पुंछ और राजौरी में दुश्मन के आक्रमण को पीछे धकेल दिया है। कैप्टन चन्द्रनारायण—डैड···माई गाड···चन्द्र इज़ डैड···नो···ही इज़ डैड नो···उसकी शादी···मैं उसकी मृत्यु के बाद उसकी माँ से मिला था··· उसके पिता और बहन से मिला था। हम सब दोस्त उसके घर में मिले थे। वेद, ओम्, रतन, प्रमोद—हम सब रोए थे एक साथ ! निर्मला

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आज कह रही है यह सब—मुझसे कह रही है ! चन्द्र…मैं भी चन्द्र हूँ। हमारी दोस्ती…निर्मला क्यों…मैं दुःखी हूँ…निर्मला दुःखी है। कहती है, 'मुझे मालूम नहीं था तुम इतने भावुक हो…' मैं भावुक हूँ। मेरा दोस्त था। 'भाभी का पहला चुम्बन मैं लूंगा।' जी होता है निर्मल को बता दूं। सारा अतीत खोलकर रख दूं। वह कहती है, 'हमारा क्या है—जिसे चाहा वह चला गया। तुम कहते हो—मुझे चन्द्र या तुम्हारी शक्ल का दूसरा आदमी मिला न तो शायद तुम दोनों को भुला दूंगी। चन्द्र तुम्हारा दोस्त था। मैं तुम्हारे दोस्त की बीवी होती तो शायद तुम मेरी जिन्दगी में नहीं आते। तुम मुझे बदचलन समझते हो ?'

'निर्मल, नहीं, मैं किसी को कुछ नहीं समझता।'

निर्मल गाती है—

गुजरा हुआ जमाना आता नहीं दुबारा
तनहाइयों में अकसर रोएंगे याद करके
वो वक्त जो कि हमने इक साथ है गुजारा
हाफिज खुदा तुम्हारा
मेरी कसम है तुमको, तुम बेवफा न कहना
मजबूर थी मुहब्बत सब कुछ पड़ा था सहना।'

वह गा रही है…उसकी आँखों से आँसू टपक रहे हैं।

'निकलेगा जनाजा मेरी बारात बनकर
अच्छा हुआ जो तुमने देखा नहीं नजारा।

शायद उसने पूरा गाना गाया है…मुझे कुछ पंक्तियाँ याद नहीं आ रही हैं। उसकी आवाज में दर्द है…असीम वेदना है। मैं हार गया हूं…अपने एक दोस्त की मौत से हार गया हूँ। चन्द्र की मौत के बाद हम दोस्त इकट्ठे गलूटी गए थे। गलूटी के सामने की पहाड़ी जो काफी आगे जाकर भीम्बर गली और पुंछ की ओर से आती पहाड़ियों के रीएण्ट्रैंट से मिलती है, उस पहाड़ी पर गलूटी से तीन मील दूर चन्द्र युद्ध में मारा गया था। एक खामोश दोपहर। उसकी मौत की कहानी मैं निर्मला को सुनाता हूँ, 'हम गलूटी पहुँचे थे। मेरे शेष दोस्त आर्मी के अफसर थे। पुंछ जाने वाली सड़क के दाहिनी ओर ब्रिगेड मुख्यालय है

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गलूटी गाँव में। हम मैस में पहुँचे। कुछ वीयर पीकर चन्द्र की मौत की कथा पूछी…हमें बताया गया कि ब्रिगेड दुश्मन से मुकाबला करने भिम्वर गली, रानियाँ और दूसरे महत्त्वपूर्ण स्थानों पर कम्पनी या बटालियन स्ट्रैंग्थ में लगा था। चन्द्र ब्रिगेड़ डियूटी पर था। मुख्यालय में अर्दली, एक आठ का एक आर्म्ड गार्ड और लांगरी-भिश्ती इत्यादि थे। दो बीस पर चन्द्र को खवर मिली कि गलूटी के ठीक सामने पाकिस्तानी फौज की तीन कम्पनियाँ ब्रिग्रेड हैड क्वार्टर पर कब्जा करने के लिए पहुँच चुकी हैं। चन्द्र अकेला अफसर था, एक नायब सूबेदार मैस इन्चार्ज था। खबर मिलते ही एमरजैंसी बिगुल बजाया। चन्द्र ने मैश मैंसेज डिव—हैड क्वार्टर भेजा कि वह स्वयं दुश्मन का मुकाबला करने 13 वेरमेन, एक जे० सी० ओ०, एक एन० सी० ओ० और 4 ओ० आर० लेकर अटैक के लिए जा रहा है। पाकिस्तानी इतनी नजदीक थे कि 45 मिनट में ब्रिगेड हैड क्वार्टर चला जाएगा। पुंछ या भिम्वर गली से मदद मिलना सम्भव नहीं थी, फिर भी एक वन टनर ट्रक अकेले ड्रायवर के साथ चन्द्र ने भिम्वर गली रवाना किया। ब्रिगेड मुख्यालय पर सिर्फ एक एन० सी० ओ० चार ओ० आर०, एक नर्स, एक मेल नर्स और तीन सिक रह गए।

चन्द्र के साथ जो जे० सी० ओ० था, वह हमें मिलवाया गया। उसने कहा, 'सर, हम कुल 20 लोग थे। दुश्मन तीन फुल कम्पनी स्टैंग्थ में था। कप्तान साहब ने हमें तीन टुकड़ियों में बाँटा और स्वयं ऐयरो हैड फार्मेशन में अपने साथ सात आदमी का सैक्शन लेकर बढ़े, मैं करीव चार सौ गज नीचे से कबर लिए अपनी सैक्शन के साथ बढ़ा। तीसरी सैक्शन सिर्फ चार आदमी की थी, इसे एल० एम० जी० और टू इंच मोर्टर देकर कैप्टन से पीछे रहने को आदेश थे। अगर कैप्टन की टुकड़ी मारी जाती तो यह टुकड़ी पिज्ड बैटल करती और मैं और मेरे आदमी वढ़ती हुई दुश्मन की फौज को पीछे से फायर में एंगेज करते। साहव, पूछिए मत, दुश्मन इतना नजदीक था कि कप्तान साहब के पास खुद अटैक के दूसरा रास्ता नहीं था। डिफैंस में आते तो हमारी कम फौज का भेद खुल जाता। हमारा टास्क था दुश्मन को भगाकर पीछे

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हटने पर मजबूर करना। भाग्य से मुख्यालय से हमें आठ एल०एम०जी० मिल गई थीं। कप्तान के पास चार एल० एम० जी० साथ थीं और अटैक हुआ। साहब भयंकर युद्ध हुआ। कप्तान साहब साक्षात जनरल लग रहे थे—फायर के हुकुम के साथ ही सब कोनों से गोलियाँ दन-दनाईं। हम भी जोश में फायर खोल बैठे। हमारे कारण पीछे की चार आदमी की टुकड़ी भी दाहिने से आगे बढ़कर चट्टानों के पीछे आ गई। दुश्मन की समझ में यह अटैक नहीं आया। उनका ख्याल था उन्हें हैड-क्वार्टर से पहले कोई रोकेगा नहीं। पर उनका अन्दाज गलत था। करीब तीस मिनट मुकाबला हुआ। मेरे सब आदमी मर गए। कप्तान के साथ एक आदमी जिन्दा था। दाहिने के चार आदमी कप्तान के साथ बरावर फायर सपोर्ट दे रहे थे। दुश्मन की केज्युलटी हमें बाद में पता चली। 169 मारे गए, 30 जखमी हुए। कप्तान साहब वहुत आगे बढ़ गए। उन्हें एक साथ छाती, बाईं पसली और माथे पर एल० एम० जी० के वर्स्ट लगे। अनगिनत गोलियाँ। उनके सपोर्ट के भी तीन साथी मारे गए। शेष बचे थे मैं और एक गनमैन। पर दुश्मन भाग गया। भयंकर युद्ध साहब, हमने कभी ब्रिगेड अटैक में भी इस तरह की केज्युलेटी नहीं देखी। इतने दुश्मन मारे कि साहब उन्हें गिनकर जब ब्रिगेडियर साहब ने खुद चैक किया तो वे सिर्फ एक वाक्य बोले थे 'माई सन चन्द्र, यू शुड हैव लिव्ड टू सी दैम डैड।'

पर कप्तान साहब ने मरते हुए कहा था 'भारत माँ की जय !' मैं अकेला जब उस रात अपनी रिपोर्ट दे रहा था तो साहब बात दिमाग से नहीं निकलती थी। कैप्टन साहब ने वो काम किया साहब जो कोई नहीं कर सकता। उन्हें परमवीर चक्र को लिखा गया था···वह डिजर्व करते थे साहब !'

हम सब दोस्त चन्द्र के मृत्यु स्थल पर गए थे। वहाँ एक चट्टान पर मैंने खोदा था···'चन्द्र हिल्ज।'

निर्मल मेरी बात सुनती रही···वह रो नहीं रही थी। उसके हाथ का गिलास बिना एक घूंट पिए भरा पड़ा था। मैं तो वहाँ था ही नहीं ···गलूटी के मैस में था···

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चन्द्र की मृत्यु का सदमा उसके माँ-बाप को बर्दाश्त नहीं हुआ। निर्मल के जीवन में जो हादसा हुआ उसके बारे में वह कहती है, 'रेडियो में खबर सुनकर हम यह मानने को तैयार नहीं थे कि हमारा चन्द्र ही अकाल मृत्यु का शिकार हुआ होगा। परन्तु एक आशंका जरूर हुई थी। हम उस रात खाना नहीं खा सके, मुझे रातभर नींद नहीं आई। दूसरे दिन अखबारों में कोई विवरण नहीं था। दो दिन पहले ही चन्द्र ने मुझे चिट्ठी लिखी थी। उसकी मृत्यु के दिन ही मैंने उसे पत्र लिखा था। तीसरे दिन चन्द्र के पिताजी का तार आया था—चन्द्र किल्ड आन फ्रंट—बस यह खबर मेरे जीवन की ऐसी खबर थी, जिसे सुनकर मेरे मुँह से कोई शब्द कई दिन नहीं निकले। मेरी आँखों में आँसू नहीं थे, मैं खामोश रहने लगी। इसके बाद चन्द्र की बहन मुझे मिलने आई थी। मेरे पिता उनके घर गए थे। शिष्टाचारपरक अफसोस जाहिर किया गया होगा। मेरे दिल की बात कोई नहीं जानता था। कुछ ही दिनों में सब शान्त हो गया पर मैं उसी में खोई रहती थी। बी० ए० कर लिया था, अब अगले स्तर में छोड़ी हुई पढ़ाई को फिर शुरू करने की योजना वनी। हमारे घर वालों की धारणा थी—अच्छा हुआ शादी पहले नहीं हो गई, वरना उमर भर निर्मला की माँग सूनी रहती।—कैसे निर्दयी माँ-बाप हैं ये ? क्या सिर्फ शादी की रस्में ही रिश्ते बनाती हैं ? तू बता न, बोल, मेरा-तेरा रिश्ता क्या शादी का है ? मैं चन्द्र को भूल नहीं सकती, सवाल ही नहीं उठता उसे भूलने का। जरूरत भी क्या है। हमारा साथ सोने का रिश्ता तब तक बना नहीं था, पर मैं उसकी मंगेतर थी, वह मेरी पसन्द था। तू तो उसे जानता था। जब तेरा दुःख ही इतना गहरा हो सकता है तो मैं तो औरतजात हूँ। क्या मुझे शराब, सिगरेट, सैक्स इस तरह अच्छे लगते हैं ? नहीं यार। तू मेरा गम समझता है। माँ-बाप का करोड़ों रुपया मेरे लिए उसे वापस नहीं ला सका। सालों से वर्फ बनी मैं तेरे सामने खुलती हूँ। मेरा पति मेरा क्या है ? माँ-बाप ने तलाश की। हाथ पकड़ा दिया। समाज की मान्यता मिल गई। सब है मेरे पास। तू कहता है मैं तुम्हारे लिए अँगूठी क्यों लाई ? बता न ? अब समझ आया तू क्या है मेरे लिए ? तू मुझे बदचलन कहो···कुछ भी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कह···मैं तो दुर्भागी हूँ। चन्द्र की माँ ने कहा था—घर आने से पहले मैंने उसके बेटे को खा लिया। देख न मैं विषकन्या हूँ ! मैं उसे खा सकती थी ? तू फैसला कर। देख मेरी चन्द्र से शादी हो जाती न तो मैं विधवा होती, फिर धर्म-कर्म, सती-साध्वी बनने की बात ठीक थी—अब मेरी शादी माँ-बाप ने मुझे बिना पूछे जहाँ चाहा कर दी। इनके साथ भी निभा रही थी···तुम मिले तो मुझे वर्षों बाद साक्षात चन्द्र अपने सामने खड़ा महसूस हुआ। तुमसे पहली बार मैं भाटियाज के घर डिनर पार्टी पर मिली थी। फिर तुम्हारी बहुत चर्चाएँ सुनीं। यह भी सुना कि तुम दुनिया भर की औरतों में उलझे रहते हो। तुम्हें देखते ही मुझे उस इन्सान की याद आई जिसे मैं खो चुकी हूँ। सिलसिला शुरू हुआ। आज उस सिलसिले में चन्द्र आ गया। मैं तुम्हारे'और उसके मित्र होने की कल्पना भी नहीं कर सकती थी।'

मैं कहता हूँ, 'निर्मल, पूरा जीवन एक युद्ध है, हम प्रतिक्षण एक-दूसरे की भावनाओं को हनित करते हैं। तुम भी इस युद्ध की भागीदार हो। जीवन-मृत्यु से ऊपर है एक विश्वास—तुम मुझमें जिस वीर पुरुष का प्रतिरूप पाती हो वह मैं नहीं हूँ—मेरी एक भावना है जिसे तुमने जीत लिया है। आज मैं महसूस करता हूँ कि प्यार ठीक वैसा ही है जैसा तुम कहती हो। प्यार का कारण होता है, आधार होता है। मेरा और तुम्हारा रिश्ता कभी टूटेगा नहीं, उसका स्वरूप बदल जाएगा। तुम्हारे होंठों पर मुझे अपनी भाषा की प्रतिध्वनि मिलती है।'

'देख चन्द्र, तू जिस प्रतिध्वनि की बात करता है न—वह तुम तक लौट नहीं सकती। हमारा आठ वर्ष का सम्बन्ध है। उस सम्बन्ध के पीछे पूरा इतिहास है। भारत-पाकिस्तान का सन् 1965 का 22 दिन का इतिहास। इस 22 दिन के युग का एक दिन मेरा है !' उसने गिलास से एक लम्बा घूंट ह्विस्की का पी लिया। फिर बिस्तर में मेरे पास लेटकर मेरे शरीर को सहलाती रही। फिर कहती है, 'तुम ईश्वर को मानते हो ?'

'मानता हूँ, जो मेरे नियन्त्रण से बाहर है, उसे कोई दूसरा पूरी तरह नियन्त्रित करता है। यह विधान है, ईश्वर विधाता है—मानता हूँ।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'मैं नहीं मानती। इसलिए नहीं मानती कि मुझसे सारी दुनिया हमेशा सब छीनती रही है—मैं हमेशा किसी शब्द की प्रतिध्वनि बनकर जीना अच्छा नहीं मानती।'

मैं कहता हूँ, 'निर्मल, सुबह मैं यहाँ नहीं रुकूंगा। तुमसे कभी बैठकर बहुत कुछ कहना चाहूँगा। आज की इस रात ने हमें बहुत नजदीक ला दिया है। एक मृतात्मा हम दोनों के बीच मुस्करा रही है। उसकी मुस्कराहट में स्वीकृति है···मैं···एक बात बताऊँ—जब चन्द्र ने मुझे तुम्हारे साथ दिसम्बर में होने वाली शादी की बात कही थी तो जानती हो मैंने क्या कहा था—कहा था—'भाभी का पहला चुम्बन मैं लूंगा'।'

'सच कहा था···'

'हाँ कहा था, अगर वह जिन्दा होता, तुम उसकी पत्नी होतीं तो हमारा रिश्ता कितना मजबूत होता। वर्ष में हम एकआध बार मिलते। पुरानी बातों के सिलसिले कभी खत्म ही नहीं होते। हम दोस्त लोग शादी पर इकट्ठा होते। भाँगड़ा नाचते, खुश होते—तुम्हें भाभी कहते!'

'जो हो नहीं सका वह नियति का विधान है। यह सत्य है कि तुम्हारा और मेरा यह रिश्ता भाग्य द्वारा निर्धारित था···हमें जो भी मिला वह हमारा भाग्य था।'

पूरी रात उनींदी काटी। सुबह हम अपने-अपने घर ब्रेकफास्ट के बाद पहुँचे। ब्रेकफास्ट पर हम बहुत कम बोले थे। पर सारा समय निर्मल के चेहरे पर एक मुस्कराहट रही। एक रहस्यमयी मुस्कराहट···उसमें न खुशी थी, न दुःख, कोई गुप्त बात थी···वह उस बात को अपने मन में छिपाए रही। मेरे भीतर तक उस मुस्कराहट का भेद जाकर सो गया है। मैं और निर्मल दो क्रास हैं, समीप, समीप, कब्रिस्तान में अपना-अपना दफनाकर हम दोनों मूर्त्त हो गए हैं, स्मृति चिह्न बन गए हैं। एक-दूसरे को देखते हैं। साथ-साथ रहते हैं। वर्षा की सौंधी-सौंधी गन्ध हमारे लिए नशा देती है, हमें एक-दूसरे तक पहुँचने के लिए उकसाती है पर हम अडिग हैं—बस खड़े हैं और हमेशा इसी तरह खड़े रहेंगे।

सुबह ग्यारह बजे घर पहुँचा तो सितारा ने पूछा था, 'तुम तो आज नहीं आने वाले थे।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'बम्बई में कुछ तबीयत बिगड़ गई थी···वापस लौट आया !'

'नाश्ता लोगे ?'

'नहीं, मैं सोना चाहता हूँ। बहुत थक गया हूँ।'

मैं दो घण्टे खूब गहरी नींद सोया था। जब नींद खुली तो स्निग्धा सिरहाने बैठी थी। धीरे-धीरे मेरे बालों को उँगलियों से सहला रही थी। मेरी आँख खुलते ही पूछती है, 'अब कैसी तबीयत है ? मैं घबरा गई थी। डा० पुरी को बुलाया था, उन्होंने तुम्हारी नब्ज देखकर कहा—कुछ नहीं है, थकावट है, हवाई सफर की। आराम करने से ठीक हो जाएँगे।'

'हाँ, मैं सचमुच थक गया था !'

'उठो, खाना खाओ।'

मैं उठता हूँ। हम खाना खाते हैं। मैं कहता हूँ, 'स्निग्धा, अगर मैं मर गया तो क्या तुम दूसरी शादी कर लोगी ?'

'शर्म करो, कैसी बात करते हो।'

'यूँ ही कह रहा था।'

'मेरी कुण्डली में ऐसा दुर्भाग्य नहीं लिखा है !'

हम चुपचाप बैठे हैं। स्निग्धा बहुत शान्त है !

'हमारी जिन्दगी एक खेल है, हम इस खेल के महत्त्वपूर्ण और आवश्यक खिलाड़ी हैं, खेल खेलना हमारी अनिवार्यता है। हम जीत भी सकते हैं, हार भी सकते हैं। पूरा जीवन आपसी सूझ-बूझ, समझौता और आदान-प्रदान पर टिका है।' उपर्युक्त शब्द किसी ऐसे लेखक के हैं जिसका नाम लाख प्रयत्न करने पर याद नहीं आ रहा है।

शामा की शादी पर मेरी और दीक्षित जी की मुलाकात हुई। कमल एक हँसमुख आदमी है। आर्य समाज में शादी के समय शामा की कुछ सहेलियाँ और मेरे दफ्तर के लोग भी थे। विवाह पद्धति में लिखित

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मन्त्र पढ़कर पण्डितजी ने बाकायदा एक रजिस्टर पर शामा, कमल तथा हम दोनों के हस्ताक्षर लिए। हस्ताक्षर करते समय शामा अपने नाम के आगे दीक्षित लिख गई जो दीक्षित जी की नजर में पड़ा तो उन्होंने बताया। शामा ने उसे काट दिया। कमल की उपजाति भारद्वाज थी अर्थात् शामा फिर एक ब्राह्मण कुमार से शादी कर बैठी।

शादी के बाद हम सब जनपथ होटल में गए। वहाँ पूरा रैस्तोराँ खाली था। कुछ टेबल इकट्ठे कर हमारा काफिला इकट्ठे बैठा। सबसे पहले दीक्षित जी ने चुप्पी तोड़ी। बोले, 'फ्रैण्ड्स, दिस इज़ एन हैप्पी आकेज़न। टू डे आई एम फाईनली रिलीव्ड एण्ड एब्जाल्वड आफ आल माई पास्ट सिन एण्ड ग्लोरी। आई हैव हैपिली मैरिड आफ माई ओल्ड वायफ टू दिज यंग मैन। आई प्रोपोज़ हिम हैपीनैस इन हैल।' हम सबने तालियाँ बजाईं। वे फिर बोले, 'दिस पुअर थिंग मिस्टर भारद्वाज इज़ यंग एण्ड ही हेज़ माइल्ज एण्ड माइल्ज ऑफ हैपी फ्यूचर। मे गॉड द आल माइटी गिव हिम स्ट्रेंग्थ टू कैरी द बर्डन ऑफ दिस वूमैन। चीयर्ज थ्री चीयर्ज।"

पार्टी शुरू हुई। सुबह का नाश्ता जल्दी में लिया था, मुझे भूख लगी थी। दीक्षित एक रोचक आदमी लगा मुझे। हमारी कुछ बातें इस प्रकार हुईं। 'क्या आप भी कभी शामा के लिए केन्डीडेट रहे हैं?' वे मुझसे पूछने लगे।

'इस सेंस में तो नहीं।'

'ओह, समझा। आपकी बीवी आप पर नजर रखती हैं। भाग्यशाली हो।' मैं चुप रहा। भारद्वाज ने कहा, 'दीक्षित जी, मैं आपका आभारी हूँ जो आप आए। यदि आपसे मुलाकात न होती तो सारी उमर शामा अपने पहले पति के गुण गाती रहती और मुझे सब सुनना पड़ता। अब यह अपने पहले पति की डफली सोच-समझकर बजाएगी!'

'बड़े समझदार हो बर्खुरदार! अरे हाँ शामा, तुम्हारे लिए एक छोटा सा प्रैजेन्ट लाया हूँ।' शामा ने पार्सल उसके हाथ से ले लिया, उसे शीघ्रता में खोला। उसके भीतर भी पार्सल था, फिर पार्सल पर पार्सल खोलती गई, अन्त में एक छोटी-सी डिबिया थी। दीक्षित ने कहा, 'तनिक

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सँभलकर खोलना । नाजुक चीज है।' डिब्बी में एक अँगूठी थी । प्लेटु-नम में जड़ा छोटा-सा हीरा था । शामा बहुत खुश हुई । उठकर दीक्षित के पास आई और गाल पर चूमते हुए बोली, 'आपने मेरा बहुत ख्याल रखा । धन्यवाद !'

दीक्षित जी बोले, 'धन्यवाद तो मुझे करना चाहिए । आपने शादी किसी दूसरे से की और शादी के बाद का प्रथम चुम्बन मुझे दिया । मैं कितना भाग्यशाली हूँ । भारद्वाज साहब, देख लीजिए आपकी बीवी की करतूत । अगर मेरे गाल पर लिपस्टिक लगा हो तो कोई सफेद रूमाल से उसे पोंछ दे ।'

काफी अच्छा माहौल था । दीक्षित एक जिन्दादिल व्यक्ति है ।

मेरा और दीक्षित का परिचय हो गया था । मैं इस आदमी से मिलकर लम्बी बातचीत करना चाहता था । फोन नम्बर ले लिया था ।

हम सब, प्रायः सभी यह चाहते हैं कि हमें कोई प्यार करे, हम किसी को प्यार करें । प्यार का आदान-प्रदान एक आनन्द है, एक सुखद अनुभूति है । प्यार ही है जो जिन्दगी की संकीर्ण कटुताओं को काट-छाँटकर समाप्त करता है । हमारी सबकी जिन्दगी में व्यक्तिगत अच्छाइयाँ होती हैं, अजीब वैयक्तिक आदतें होती हैं, कमियाँ होती हैं और जब तक ये हैं प्यार में गलतफहमियाँ रहेंगी, होंगी । प्यार के कारण हम सब कुछ अनदेखा कर सकते हैं । यदि प्यार क्षीण हो जाए तो नफरत, कुढ़न, चिढ़ जैसी आदतें प्रमुख हो जाएँगी । यह चेतावनी प्राप्त करने की स्थिति है । दीक्षित और शामा के जीवन में यही क्षण गलतफहमियों में बदल गए । रिश्ता खत्म हो गया । इतना सजीव आदमी चेहरे पर बिना शिकन के आज सबके सामने अपने व्यक्तित्व को समाप्त कर गया । मुझे ताज्जुब नहीं होगा अगर शामा कुछ अरसे बाद फिर दीक्षित के पास लौटना चाहे ।

दीक्षित से मेरी दूसरी मुलाकात हुई थी । उसका कहना था कि 'किसी दूसरे व्यक्ति के साथ जीवन काटने के लिए एक निश्चित कार्यक्रम होना चाहिए । प्यार के रिश्ते को पालना पड़ता है, उसकी देख-रेख

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करनी पड़ती है, उसमें रुकावट आ जाए तो उसे सुधारना पड़ता है, पुराना-पन आ जाए तो उसका नवीनीकरण करना होता है। यह वह पौधा है जिसे लगातार सींचकर जिन्दा रखा जा सकता है। उसमें सुन्दर फूल तभी आएँगे जब सब जंगली पौधे काट दिए जाएँ या जड़ से उखाड़ लिए जाएँ।'

'आप जंगली पौधों की बात सिर्फ अपने बचाव के लिए कर रहे हैं ?'

'नहीं। जब हम क्रियाहीन हो जाते हैं अर्थात् जब 'पैसिव इन-रशिया' या 'एक्टिव नेगलैक्ट' आ जाए तो हमारे सम्बन्ध टूटने लगते हैं। ये दो जंगली पौधे हैं, एक साथ भी उगते हैं, पृथक्-पृथक् भी। किल दैम ! अन्यथा जीवन एक उबाऊ रुटीन बन जाएगा।'

'आप यह कहना चाहते हैं कि रिश्ते की प्यार को शून्यता से बचाए रखना चाहिए।'

'एक्जैक्टली ! अब देखिए शामा जीरो सैक्स बिन्दु पर मुझसे अलग हुई। जीरो सैक्स बिन्दु पर इस नये पति से जुड़ी। कुछ ही दिनों में आनन्दविहीन खाली भूख—ग्रास निगलने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी, पानी के घूंट पीए बिना गले से नीचे कुछ नहीं उतरेगा।'

'आप ठीक ही कह रहे हैं। मैं यह मानता हूँ कि रिश्ता दोनों तरफ से बनाए रखने के प्रयास होने चाहिए। अपने शरीर-सौन्दर्य के प्रति सतर्क रहना चाहिए। पति या पत्नी को अपने रिश्ते को जिन्दा रखने के लिए तीसरे व्यक्ति की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए। वे एक-दूसरे के लिए जब मुरझा जाएँ या मात्र साए बन जाएँ तो अवश्य है जंगली पौध उगेगी। एकमात्र पुष्प वृक्ष पर धोखे के कीड़े आ जाएंगे। प्यार भी कीड़ा बनकर हमें खा जाएगा या पागल कर देगा।'

'एक्जैक्टली। हम आपसे सहमत हैं। शामा हमेशा चाहती है कि हम सिर्फ उसी से बँधे रहें—उसे प्यार करें। उसकी इच्छाएँ कोई कब तक पूरी कर सकेगा। वह पगला गई है। मेरे बारे में उसके अजीबो-गरीब विचार हैं। इस तरह के साथी के साथ रहना एक यातना है, पूरी स्थिति परे परिवेश में असफलता भर जाएगी, वह दूसरे को गुलाम बना-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कर रखती है। उसे प्रत्येक स्थिति को रिजैक्ट करने की आदत है।'

'दीक्षित जी, आप की एप्रोच ठीक है, पर आप यह नहीं सोचते कि शामा में चाइल्ड पेरैंट कम्पलैक्स है। वह प्यार दे ही नहीं सकती ?'

'एग्जैक्टली। प्यार चाहता है मेच्युरिटी। आदान-प्रदान। आपसी भरोसा, आत्मनिर्भरता और एक-दूसरे के प्रति आदर। पति-पत्नी के बीच प्रजातांत्रिक समझौता हो सकता है। मान लिया मैं उसके अयोग्य था, पर उसने मुझे अपने योग्य बनाने के लिए क्या किया ? कुछ नहीं। वह मुझमें अपने पिता का आदर्श ढूंढती होगी। मैं उसमें किसी आदर्श की तलाश नहीं करता था।'

'दीक्षित जी, मैं तो समझता हूँ अनमेल जोड़े विवाह दिए जाते हैं तो उन्हें नेगेटिव सम्बन्धों को चलाना होता है। कभी-कभी ऐसे विवाह सफल भी होते हैं। आपका और शामा का विवाह भी अनमेल था और कमल और शामा का विवाह भी अनमेल है। अनमेल होते हुए भी विवाह की सफलता असफलता पर भविष्यवाणी करना सम्भव नहीं। वे खुश रह पाएँगे या नहीं या उनके खुश रहने के लिए कोई फार्मूला हो, यह कहना भी उचित नहीं। कुछ विशेष आदर्शों की तलाश के कारण विवाह असफल हो जाते हैं।'

दीक्षित जी ने अपनी सिगरेट निकाली, जलाई, मुझे आफर करना भूल गए थे, आफर की, जलाई। फिर कुछ देर चुप रहे। नौकर चाय ले आया। हाँ मैं यह बताना भूल गया कि यह मीटिंग मेरे घर पर चल रही थी। हम चाय पी रहे हैं, दीक्षित जी कहते हैं, 'शामा है न, बड़ी अच्छी औरत है, पर उसके पीछे जो अभावों के कम्पलैक्स हैं, वे एक विशेष इमेज से ऊपर उसे उठने नहीं देते। मेरी और शामा की सामाजिक पृष्ठभूमि भी समान नहीं है, हमारी शारीरिक और आधिभौतिक आवश्यकताएँ भी मेल नहीं खाती थीं। मैं दब्बू आदमी नहीं हूँ, वह मुझे दब्बू बनाना चाहती थी। हमारा रिश्ता इस वजह से भी असफल रहा।'

मैं दीक्षित की बात सुन रहा था, वह मेरी अपनी रुचि के विषय पर बड़े विस्तृत कैनवास पर गम्भीर बातें कर रहा था। कुछ देर चाय पीते-पीते हम चुप रहे। फिर दीक्षित ही बोले, 'देखिए शामा मेच्यूर औरत

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं है। अपने बारे में मैं डींग नहीं हाँकता, पर मैं उससे पृथक् हूँ। उसकी प्रेरणा उसका बचपना है और वह प्यार, विवाह रिश्ते को भी बचपने की कच्ची आधारशिला पर बनाए रखना चाहती है।'

'शेक्सपीयर ने कहा है न प्यार बदलता नहीं है जो बदलता है वह प्यार ही नहीं। परिवर्तन की स्थिति पाकर वह बदलता नहीं है।'

'एग्जैक्टली, यही घुण्डी है। प्यार बदलता है। वह स्थाई नहीं है। इस पौधे के रखरखाव, कटिंग, प्रूनिंग, सिंचाई सब पर इसका बदलना आश्रित है।'

'प्यार नहीं, भावनाएँ बदलती हैं।'

'एग्जैक्टली, प्यार भी एक भावना है। जिन्दगी में वातावरण और प्रकृति के साथ समझौता करते हुए हम इस बदलते प्यार को स्थाई मान लेते हैं। उस स्थिति के साथ मिलकर चलते हैं।'

'सही है, हमें दूसरे व्यक्तियों के साथ समझौता करना ही पड़ता है, अन्यथा समाज जी ही नहीं सकता। हमें अपने वातावरण को सुधारना पड़ता है तभी हम जीवित रह सकते हैं, अस्तित्व बनाए रख सकते हैं, जिन्दगी में तरक्की कर सकते हैं। यह बदलाव लगातार चलता है, व्यक्ति और उसका समग्र वातावरण, दक्षता और लचकता इस ढंग से मिल जाते हैं कि उनके आधार पर हम अपने जज्बातों की, खुशी की मात्रा तय कर सकते हैं।'

मिस्टर दीक्षित कहते हैं, 'एग्जैक्टली ऐसा होगा ही। पर शामा का मन घर में नहीं रहता, वह वहिर्मुखी है। अतः स्वाभाविक है जिसे घर कहते हैं, शामा के लिए उसका अस्तित्व नहीं है।'

'जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण अलग प्रकार के होते हैं, हमारी अपनी व्यूह रचना रहती है। हम हर चीज के नाम निर्धारित करते हैं। वैल्यु जजमैंट के आधार पर अच्छा, नैतिक, सही, उपयोगी, उचित, वांछित जैसे शब्दों में सब कुछ मापने लग जाते हैं। आपकी पूर्व पत्नी में जीवन के प्रति अनिच्छा है, वह पलायनवादी है, ऐसा मुझे लगता है।'

'एग्जैक्टली, वह पलायनवादी है, वह भावनात्मक पार्थक्य की शिकार है। परन्तु वह कमजोर दिल की औरत है। बाहरी शोखी एक दिखावा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। वह अपनी कमजोरी को बहादुरी कहती है। उसका व्यवहार उसे तबाह कर रहा है। वह अपनी इमेज बनाए रखने के लिए दूसरे की इमेज के प्रति आक्रामक रुख अपनाती रही है। वह अपने स्व को ही महत्त्वपूर्ण मानती है। अहं के कारण वह अपने को मुझसे या आपसे या किसी से भी अपने को महत्त्वपूर्ण मानती है। हमें अपने अतीत और वर्त्तमान दोनों के प्रति तर्कसंगत रुख अपनाना चाहिए। वह मेरी या आपकी यौन प्रतिक्रियाओं के प्रति जागृत है, क्यों, मैं बताता हूँ—उसकी अपनी सैक्स भावनाएँ ग्रन्थियों से लदी हैं। वह हमें हीन मानती है, यह कम्प्लैक्स उसे हीन बनाता है।'

शामा ने जिस मिस्टर दीक्षित का मानचित्र मेरे सामने पेश किया था, यह मिस्टर दीक्षित उस खाके में कहीं फिट नहीं बैठते थे। वस्तुतः शामा पलायनवादी है, यही पलायन वास्तविकताओं को नकारने का आधार है। वह दीक्षित जैसे गम्भीर व्यक्ति के साथ रह ही कैसे सकती थी। शामा का संसार फैंटेसी का संसार है, कल्पनालोक। वह मेरे सामने एक निरीह औरत बनकर, मिस्टर दीक्षित को कन्डम करके मेरी सहानुभूति पाती है। ऐसा करना एक मकसद विशेष के कारण है, हीरोपने के कारण वह अपने प्रति कल्पित अन्याय को आश्रय बनाती है। अपने को महत्त्वपूर्ण बनाने के चाहने के कारण उसे दीक्षित कम्प्लैक्स है।

दीक्षित जिन्दगी की चुनौती को स्वीकार करता है। वह जड़ता या अस्तित्वहीनता से पृथक् एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी भावात्मक जिन्दगी में सुरक्षित है। भावनात्मक असंपृक्तता के कारण आदर्शवादी भी नहीं है। मोहभंग या बुद्धिवाद की अतिशयता भी उसमें नहीं दीखती। परन्तु उसमें मुझे एक कमजोरी दिखी, वह मन लगाकर समस्या का समाधान नहीं कर सकता। अन्यथा वह आज भी शामा का पति होता। परन्तु उसमें व्यक्तिगत खुशी और सन्तोष की भावनाएँ हैं। और शामा इस आदमी के ठीक विपरीत थी।

'दीक्षित जी, आप शादी क्यों नहीं करते फिर से ?'

'बहुत हो गया, शामा दस औरतों के बराबर थी, वैसे मैं शादी करूँगा कभी जरूर शादी करूँगा, परन्तु एक मेच्यूर औरत से। किसी ऐसी औरत

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

से जो मोहभंग की स्थिति के बाद जिन्दा हो और जीने की तमन्ना रखती हो। मुझे लगता है शामा का भी मोहभंग होगा। पर मैं उसके लिए नहीं हूँ, कम से कम दूसरी बार उसे नहीं भुगतूंगा— वह स्वयं भुक्ता है।'

'दीक्षितजी, एक बात पूछूं, आपने शामा को प्रेजैंट क्यों दिया ?'

'ओह !' वे हँसते हैं। कहते हैं 'यार, क्यों भीतर तक खोदते हो ? मन हुआ प्रेजेन्ट दिया जाए, दे दिया, यकीनन इसमें कोई रहस्य नहीं है।'

'शामा आपसे इतनी दु:खी क्यों हो गई थी ?'

'मेरी गलती है, उस औरत को शुरू से ही मैं ठीक लगाम नहीं दे सका। उसकी प्रतिक्रियाएँ एकांगी थी, वह हमेशा नादान बने रहना चाहती थी। शुरू-शुरू में तीन एबार्शन करवाए। फिर बच्चा चाहती थी। एबार्शन्ज के कारण कुछ खराबी आ जाने से फिर गर्भ नहीं टिका, मिसकैरिज हुए। यह मेरा दोष था क्या ?'

मुझे वस्तुतः शामा का व्यक्तित्व काँच के तिड़के हुए गिलास की तरह लगा। क्रैकिंग। दीक्षित शेर कहते हैं, बात-बात में शेर कहते हैं। न जाने किस प्रसंग पर मुझे कह गए—

'जो तेरे गेसुए पुरखम से खेल भी न सकीं,
उन उँगलियों से सितारों को छेड़ सकता हूँ।'

मैं पूछता हूँ 'किसका शेर है।'

'फिराख गोरखपुरी साहब का।' दीक्षित जी सिगरेट पर सिगरेट पीते हैं। धूएँ के छल्लों से छल्लों को मिलाते हैं। एक दिन दीक्षित मुझे एक मित्र से मिलवाने ले गए। ये मित्र अपनी प्रकार के एक ही व्यक्ति थे। उनके कुल छः मित्र थे। इन सबने मिलकर एक क्लब बनवाया था। एक बहुत बड़ा प्राइवेट क्लब। दीक्षित भी इसके सदस्य थे। एक खूबसूरत बगीचा, लम्बा आयताकार लॉन। एक बाररूम जिसमें शेर के मरे हुए सिर दीवारों पर थे। गलीचों की जगह जानवरों की खालें थीं। वायसन का दीर्घकाय वस्ट बार के ऊपर से झाँक रहा था। पेंथर की आठ फुट चार इंच लम्बी खाल पूरे आकार में दीवार पर मढ़ी हुई थी। बार से लगा एक शयनकक्ष था जो मिस्टर अल्बर्ट (क्लब सचिव) के लिए

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

था। पूर्व में इसे घुड़साल के लिए बनवाया गया था। सचिव भी छः सदस्यों में एक थे। अल्बर्ट एक जिन्दादिल आदमी थे। हमारा स्वागत ह्विस्की से करते हुए बोले, 'यह क्लब हिन्दुस्तान में अपनी किस्म का एक मात्र क्लब है। भीतर लांज था, काडं रूम था। तलघर में बिलयर्ड रूम था, पुस्तकालय था। मिस्टर अल्बर्ट का निजी शस्त्रागार था और शस्त्रागार के ठीक सामने थे क्लोज क्वार्टर बैटल और शार्टरेंज हथियारों के लिए आधुनिक आटोमेटिम इन्डोर पचास मीटर लम्बी रेंज। इस प्रकार की रेंज मुझे अमेरिका में देखने को मिली थी। भारत के लिए ऐसा क्लब कितने सौभाग्य की बात है। पर मिस्टर अल्बर्ट कहते हैं, 'मुझे हथियारों का शौक है। पहले फार्यरिंग कम्पीटीशन में भाग भी लेता था। परन्तु एक्युनीशन की कमी के कारण हम आगे नहीं बढ़ पाए। प्रेक्टिस और प्रदर्शन के लिए यह रेंज है—पर जिस उद्देश्य से इसे बनवाया था, वह पूरा नहीं हुआ।'

मैं पूछता हूँ, 'किस उद्देश्य से बनवाया था ?'

'शूटिंग, खेलकूद में रुचि के कारण बनवाया था और इस समय हम कोई भी इन गतिविधियों से जुड़े हुए नहीं हैं।'

'शस्त्रागार का क्या उपयोग है ?'

'कभी-कभी मैं इस रेंज पर शूटिंग करता हूँ। प्रायः शिकार में मेरी ज्यादा रुचि है। जब भी कामकाज से फुर्सत होती है, मैं शिकार पर निकल जाता हूँ। कहीं किसी जंगल में टेंट गाड़ देता हूँ। इधर सौ किलोमीटर तक जंगल का नामोनिशान नहीं है। छुट्टी पर हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश या मध्य प्रदेश के जंगलों में निकल जाता हूँ।'

'पर शिकार करना तो अवैध है ?'

'मेरे लिए कोई अपराध नहीं है। बड़े-बड़े सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देता हूँ, शराव पिलाता हूँ। वे सब प्रबन्ध कर देते हैं।'

मैं अल्बर्ट की बातें सुन रहा था। शिकार करने से मुझे बेहद नफरत है। कभी भी हिंसा पर मेरा विश्वास नहीं रहा।

अल्बर्ट कहते हैं, 'शिकार के पीछे जंगलों में भागना, शिकार का
Funding by IKS-MoE
बन्दूक या तीर से बींधना, मारना एक अद्भुत अनुभव है। हिमाचल में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पिज का शिकार क्या बढ़िया आखेट है ! उसका भुना हुआ मांस क्या आनन्द देता है। बैरा ! बैरा।' अल्बर्ट जोर से चिल्लाता है। एक कुर्त्ता-पाजामा पहने युवक 'जी सर, जी सर' कहता हुआ आता है।

'सुनो, कुछ केन्ड पिज फ्लैश है।'

'जी सर !'

'थोड़ा कोयले पर भूनकर लाओ। तीन प्लेट भी लेते आना। दीक्षित, तुम्हारे दोस्त आज हमारे गेस्ट हैं—क्या बताया, क्या करते हैं ?'

मैं कहता हूँ, 'एक फर्म में महाप्रबन्धक हूँ !'

'किस चीज की फर्म है ?'

'फोर्जिंग की।'

अल्बर्ट जोर से ठहाका लगाता है, 'फोर्जिंग, फोर्जिंग ! व्हाट।'

'आयरन फोर्जिंग।'

'ओह, मैं समझा करैंसी फोर्जिंग करते हैं। दीक्षित यार, एक बड़ा पैग और बनाओ। अच्छा ठहरो !' वह स्वयं उठता है। बोतल उठा लाता है। बैरा रामस्वरूप को सोड़ा लाकर रखने को कहता है। मेरे लिए पैग बनाकर देता है, फिर दीक्षित को पैग देता है और अपना पैग सामान्य से बड़ा बनाता है। शराब इन्सान में दोस्ती की भावना भी उत्पन्न करती है, दुश्मन बन जाने पर एक अति के लिए विवश भी करती है। जीवन की ऊहापोह, आपाधापी, दौड़धूप से थककर हम चूर हो जाएँ तो शांति या राहत भी देती है और उस दौड़धूप के लिए सक्षम भी बनाती है। छोटे-बड़े का भेद मिटा देती है। होशोहवास बदल देती है। जिन्दगी का एक रुख बन जाती है। एक सिलसिला बनकर उलझा भी देती है, सिलसिला तोड़ भी देती है। मुझे सारी जिन्दगी का बोझ शराब में मिलकर वायुमय हो जाता है—भारहीन। मस्तिष्क की शिराओं में रक्त-कोशों को छूकर सीम-असीम से दूर हमें विचरण करने देती है। पर इन कड़वे घूंटों में जिन्दगी की असलियत कहीं छिप जाती है। एक झूठा सहारा सामने आकर हमें और सम्बलहीन बना देता है।

दीक्षित की क्लब में मुझे आकर्षण मिला। जीने के क्रम में व्यस्तता का एक आधार मिला। शराब के तीसरे पैग के बाद मैं कहता हूँ,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'अल्बर्ट साहब, मुझे भी क्लब का सदस्य बना लोजिए।'

'यह फैसला मैं अकेला नहीं कर सकता। सभी छः सदस्यों की उपस्थिति आवश्यक है!'

'क्यों ?'

'यह क्लब हमारी व्यक्तिगत सम्पत्ति है। यह जमीन, बिल्डिंग हम सबकी है। आपको पार्टनर बनाने के लिए विधान बदलना होगा। सरकारी दफ्तरों में आपके हिस्सेदार होने के लिए रजिस्ट्री होगी। आपको कुल लागत और साजोसामान का सातवाँ हकदार बनाना होगा। आपसे रुपया-पैसा लेना होगा। ऐनीवे, पहले हम आपको अपने दूसरे दोस्तों से मिलायेंगे। फिर फैसला करेंगे।'

दीक्षित की जिन्दगी के मुझे कई पहलू देखने को मिले। धीरे-धीरे मैं उसकी मंडली में सम्मिलित हो गया। मुझे क्लब का सदस्य बनाने में किसी को एतराज नहीं था परन्तु काफी सोच-विचार के बाद मैं सदस्य—औपचारिक सदस्य बनने का विचार छोड़ चुका था। मैं अपनी जिन्दगी को सिर्फ सात लोगों की मंडली में सीमित नहीं करना चाहता था। क्लब सार्वजनिक जीदन का व्यक्तिगत चरित्र है, इसीलिए चेम्सफोर्ड क्लब का सदस्य बना रहना ही पर्याप्त था।

अल्बर्ट, दीक्षित, साहनी, जोशी, बलबीर सिंह और मिस्टर पुरी इस क्लब के स्थाई सदस्य थे। अल्बर्ट विधुर थे, दीक्षित डायवोर्स्ड, साहनी अविवाहित, जोशी संतानहीन, बलबीर सिंह की दो पत्नियाँ थीं और मिस्टर पुरी पत्नी-वत्नी रखरा पसन्द न करते हुए अविवाहित रहकर परिवार चला रहे थे। उनके बच्चे थे, बच्चों की माँ थी परन्तु विवाह पर उन्हें विश्वास न था। मेरा उस कम्पनी में जाना चाण्डाल चौकड़ी को और अधिक मजबूत करना था क्योंकि इन छः महापुरुषों के संयुक्त जीवन में जो कमी थी वह मेरे चरित्र के बहुआयामी रूप से पूरी हो सकती थी।

हमारा आपसी रिश्ता उस दायरे का था जहाँ हम सातों मिलकर पूरे समाज का निर्माण कर सकते थे। इस क्लब में सप्ताह में छः दिन औरत का नाम लेना निषिद्ध था। सातवें दिन प्रत्येक शनिवार को समस्त

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

परिवार पूल डिनर लेते थे। वह दिन परिवार की संस्था पर विश्वास बनाए रखने के लिए पर्याप्त था। मैं एक केज्युल सदस्य के रूप में पाँच माह तक क्लब आता रहा। स्निग्धा भी फेमिली डे पर आती थी। उस शूटिंग रेंज पर फायरिंग का शौक था। मिस्टर अल्बर्ट एक अच्छे कोच थे। कुछ अन्य महिलाएँ भी शनिवार शूटिंग करती थीं। बच्चों की चहल-पहल, शोर-शराबे से बगीचा चहक उठता था, लॉन में किलकारियाँ भरते बच्चे, केनल में बँधे कुत्तों के भौंकने की आवाज की नकल करते थे।

दीक्षित के व्यक्तित्व में, एक विशेष आकर्षण था। वह शामा का नाम भूल नहीं पाता था। कहता था, 'शामा हमारे क्लब की जिन्दगी थी। उसके बिना बार का एक कोना आँखमुंदा है, डैड-सा है। मिसेज जोशी गजल गाने की शौकीन थीं, उनका नाम जयश्री था। सिर पर साड़ी का पल्लू हमेशा ओढ़े रहती थीं। मिसेज बलबीर सिंह नम्बर एक का नाम अजीत था, दूसरी का नाम अमृता। दोनों सुन्दर थीं और भारी आकार, कदकाठी की थीं। अजीत मुर्गमुसल्लम बहुत अच्छा बनाती थी और अमृता तंदूरी परांठे और दमआलू लाजवाब बनाती थी। बलबीर-सिंह की दोनों बीवियाँ खुशमिजाज थीं। दोनों के तीन-तीन बच्चे थे। कुल चार लड़के दो लड़कियाँ, पर मुझे यह कभी ज्ञात नहीं हो पाया कि कौन किसका बेटा या बेटी थी। लड़के बलबीर सिंह जैसे थे, उन्होंने सिर पर गूंजा बनाया था, पटके बाँधे थे, चारों लड़के मैरून रंग का पटका बाँधते थे। पुरी की वह—अच्छी थी परन्तु उमर में पुरी से बड़ी लगती थी, उसका नाम था नुसरत मसीह। यांनी वह मुसलमान से ईसाई बनी थी और पुरी से निभाकर हिन्दू धर्म भी उसे रास आ रहा था। जब भी मैं उसे देखता मेरा मन उसे 'त्रिवेणी' कहने को होता। वस्तुतः दीक्षित ने यह नाम प्रचारित भी कर दिया था। त्रिवेणी नुसरत मसीह उर्फ पुरी की वह बहुत चंचल थी। आँख मटकाना, बार-बार दाँतों में जीभ काटना, मटकना, मुंह गोल कर आँखें तरेरना, पलकें झपकना—सब गुण-दुर्गुण उसमें थे। स्निग्धा से साथ उसकी पटती थी, असलियत यह थी कि अगर मैं क्लब का सदस्य बन जाता तो यह भाई भाव मेरे साथ अवश्य जुड़ जाता।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दीक्षित एक मिलनसार, जिन्दादिल और खर्चीला आदमी है। शामा ने ऐसे आदमी को किस आधार पर अस्वीकार किया। मैं जो नहीं जानता वह है दीक्षित की व्यक्तिगत सैक्स गाथा। वह झूठ कह गया है या शामा, इसका निर्णय उतावलेपन में मैं दीक्षित का साथ देकर कर सकता था। परन्तु इस क्लब ने मेरी कुछ मान्यताओं को झकझोरा है। परिवार की पूर्णता, उन्मुक्त वातावरण, बलबीर की पत्नियों का खुलापन सब एक नई कथा है। मैं भी इन लोगों की तरह जीवन में कुछ विशेष बन्धन क्यों नहीं पाल लेता। जिन्दगी के रस्सी के खम निकालते-निकालते मैं उसमें बँध गया हूँ। खूँटा तोड़कर भागने की प्रक्रिया में खूँटे का बोझ और बढ़ गया है।

स्निग्धा मुझे बदलने की प्रोसैस में खुद बदल गई है। घर, गृहस्थी में मेरा मन नहीं लगता। एक आवारा साँड की तरह कब तक घूमता रहूँगा ?

दीक्षित कहता है, 'शामा के जाने के बाद सितारों को छेड़ने की बात स्वयं नकार देता हूँ। मुकद्दर में हैं ठंडी चादरें, बिस्तर की सफेदी, गुमाँ से भरा मैं, झूठी शोखी में या जजबात की लहर में डूबकर उतर रहा हूँ। शामा साथ थी तो उसकी कर्कश आवाज सुनता था—तुम सोते क्यों नहीं हो। लाइट ऑफ करो।···बिस्तर में शामा का बार-बार आज नहीं ···आज नहीं···कहना रातों को बेहद बोझिल बना देता था। शामा और मेरे बीच एक सीधी लकीर थी···लीक नहीं, सिर्फ लकीर—सीधी-एक समतल से गुजरती थी। उस लकीर को शामा ने टुकड़ों में बाँट दिया था। उन टुकड़ों से मैं सम-द्वि-बाहु त्रिकोण बनाता रहा था, त्रिकोणों की कल्पना में समानान्तर रेखाओं को भरकर अपने दिल में रख लेता था। अपने होशोहवास में शामा को एक पतंग की तरह उड़ने दिया। एक पारदर्शी पतंग, पोलीथीन की तरह बेबाक, नंगी उड़ान भरकर शामा ने मुझे हमेशा चुनौती दी। मैं हाथ में डोर लिए अपनी ही पतंग को दूसरों की समझ कन्नी मारता रहा। पतंग डोर तोड़कर चल दी—मैं आज तक डोर लपेट रहा हूँ। मेरी मुहब्बत मेरे जज्बात से अजनबी बन गई।'

Funding by IKS-MoE

वस्तुतः दीक्षित को गहरा आघात लगा है। वह भीतर, कहीं बहुत

CC0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भीतर थक तो गया है पर अपनी थकान को वह महसूस नहीं करता हो यह मैं नहीं मानता।

हमारी चांडाल चौकड़ी में चर्चा के मुख्य विषय शिकार, शूटिंग कार, दौड़, शराब, बागवानी थे। सण्डे घुड़दौड़ में भी हम प्रायः जाते थे। इस मित्रमंडली में शामिल होने से पूर्व मुझे घुड़दौड़ में रुचि ही नहीं थी। हम कभी भी हाई स्टेक नहीं खेलते थे। वस्तुतः मुझे घोड़े कभी भी अच्छे नहीं लगे। काश्मीर में गुलमर्ग जाते हुए जरूर टंगमर्ग से टट्टू ले लिए थे। खिलनमर्ग भी टट्टू से गए थे परन्तु मेरी कल्पना में घोड़े और टट्टू का अन्तर ज्यादा नहीं था। रेसकोर्स ने न केवल घोड़ों के प्रति मुझे ज्ञान दिया वरन् मैं तीन माह में घुड़दौड़ एक्सपर्ट बन गया। स्निग्धा भी घोड़ों में रुचि लेने लगी, मैं जितना जीतता था, स्निग्धा उतना हार भी जाती थी, परन्तु यह नया चस्का हमारे रविवार को खूब व्यस्त रखता था। शुरू-शुरू में 'विन' या प्लेस में अन्तर ही समझ नहीं आता था।

रेस का चस्का बाद के वर्षों में मुझे पूर्ण, बम्बई बंगलौर तक ले गया। दीक्षित भी रेसफेन था। उसे स्टडफार्म बनाने का शौक था। घोड़ों की ब्रीड, उनकी पैतृक व मातृक हिस्ट्री, रंग, वजन, चाल सब अध्ययन के अलग-अलग विषय थे। रोचक, दीक्षित की प्रेरणा से मैंने एक रेसहार्स खरीदा। इस खरीदी में कुल मिलाकर दो लाख रुपये खर्च हो गए।

सियूनिया फार्म भोपाल शहर के समीप भदाभदा रोड पर थोड़ा भीतर जाकर है। फार्म की बायीं ओर लगी विस्तृत भोपाल ताल की सीमा है और झील के उस पार कोह फिज़ा कालोनी और बैरागढ़ के उपनगर दिखाई देते थे। फार्म पर जाते ही हमारा सामना फार्म मैनेजर की मैना से हुआ। 'हैलो डार्लिंग ! हैलो डार्लिंग' कहती हुई मैना का भारीभरकम स्वर मनुष्य का भ्रम पैदा करता था।

मैं मैना से पूछता हूँ, 'मैनेजर साहब कहाँ हैं ?'

'बाजार गए हैं।' भारी स्वर में वह बोली।

'क्या हम अन्दर जा सकते हैं ?'

'आप चले जाइए अन्दर। कोई बात नहीं।'

Funding by IKS-MoE

पक्षी का मानव रूप ! स्निग्धा तो इस मैना पर मंत्रमुग्ध थी, वस्तुतः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उसने मैनेजर की इस मैना में जितनी रुचि दिखाई उतनी शायद मुझमें भी रुचि नहीं दिखाई होगी।

हमें एक आयरिश ब्रीड की घोड़ी पसन्द आई। घोड़ी दिल्ली ट्रक द्वारा पहुँचाई गई। उसे रेस के लिए रजिस्टर्ड करवाया। चार साल की यह घोड़ी बेय कलर की थी। चुस्त थी। शुद्ध विदेशी माँ-बाप से जन्मी थी। दिल्ली रेस क्लब में उसे पंजीकृत करवाया। फिर वहीं मुहम्मद खाँ ने उसे प्रशिक्षण देना शुरू किया परन्तु बिना रेस दौड़े ही अचानक बीमार होकर घोड़ी मर गई। इन्शोरैंस करने के कारण धन नाश नहीं हुआ। परन्तु स्निग्धा को यह नाश अच्छा नहीं लगा। उसका मन रेस-कोर्स से उचाट हो गया। स्निग्धा मेरे जीवन को प्रत्येक स्थिति में प्रभावित करते रहने का प्रयास करने की आदी हो गई थी।

एक बार पुणे रेसकोर्स पर मैं त्रिप्पल नोमीनेशन में करीब छयासठ हजार रुपये जीत गया। स्निग्धा ने यह सारा रुपया मुझसे ले लिया। हम ब्ल्यू डायमैंड पाँच सितारा होटल में ठहरे थे। उस होटल में खाना काफी महँगा था।

इस होटल में बहुत से विदेशी, गेरुआ कपड़ा पहने हमें प्रायः मिलते थे। वस्तुतः ये गेरुआ दल सारे पुणे नगर में साइकिलों पर घूमते, पैदल घूमते या गोरे गाँव क्षेत्र के आसपास खड़े बातें करते रहते थे। रजनीश आश्रम गोरे गाँव में था। स्निग्धा रजनीश के दर्शन करना चाहती थी। होटल में एक शिष्ट और सम्भ्रान्त दीखने वाले विदेशी से हमने बात की। उसने दूसरे दिन आश्रम में आने का निमन्त्रण दिया।

अगले दिन स्निग्धा के साथ मैं रजनीशाश्रम पहुँचा। सुन्दर नक्काशी से बना लकड़ी का बड़ा दरवाजा खुलते ही हम भीतर की दुनिया में पहुँचे। गेट की दाहिनी ओर स्वागत कक्ष था। उसकी इन्चार्ज श्रीमती पाटिल ने हमारा स्वागत किया। पूछताछ की। जब उसे पता चला कि हम साबुन से नहाकर आए हैं और मैंने आफ्टर शेव लोशन भी लगाया है तो हमें बताया गया कि भीतर नहीं जा सकते। नहाते हुए साबुन का प्रयोग वर्जित था। 'भगवान' कोई भी सैंट या खुशबू सहन नहीं करते। अगले दिन फिर जाना पड़ा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तथाकथित भगवान आज दर्शन नहीं देंगे। हमें डांसिंग फ्लोर की ओर ले जाया गया। वहाँ देशी-विदेशी भगत और भगतनियाँ सूफी नृत्य कर रहे थे। सूफी नृत्य में अपनी इच्छानुसार नाचना, हू हू, हे हे, करना शामिल था। सूफी शब्द जायसी के पद्मावत में बहुत पहले पढ़ा था। ऊनी वस्त्र और ऊनी टोपियाँ लगाने के कारण तत्कालीन भगत सूफी कहलाए थे, सूफ यानी ऊन। परन्तु रजनीश आश्रम के ये भक्त गेरुए रेशमी या सूती वस्त्र पहने थे। हाल का उन्मुक्त वातावरण, साफ-सुथरा फर्श और लोगों का नाचना अच्छा लगा।

फिर हमें आश्रम का भीतरी भाग, आवासीय भाग दिखाया गया। लकड़ी और फूस की बनी एक झोंपड़ी मुझे अच्छी लगी। रजनीश के आवास का गेट बन्द था। भगत-भगतिनें स्वतन्त्र इधर-उधर घूम रहे थे। एक-दूसरे को आलंगित कर रहे थे, चुम्बित कर रहे थे। कोई दौड़ रहा था, कोई सीढियों पर अपनी प्रेमिका या अपने प्रेमी के बाहुपाश में बन्द था। अश्लीलता तो नहीं थी परन्तु एक विदेशी ने जिस प्रकार एक लडकी को दोनों हाथ खोलकर बाहुपाश में बाँधकर चुम्बित किया उससे उस लड़की की विवशता प्रकट होती थी, उसे वह अच्छा नहीं लग रहा था।

सब रजनीश की फोटोयुक्त कण्ठमालाएँ पहने हुए थे। फिर हमें वर्कशाप दिखाई गई। वहाँ लकड़ी का काम, साबुन बनाने का काम, ब्रैड पकाने का काम और वस्तुतः एक सैल्फकन्टेन्ड यूनिट के लिए आवश्यक सभी सामान उपलब्ध था। खाना पकाने के लिए बहुत बड़ा किचन था, उसकी छत पर ट्रांस्पेरैंट ग्लास लगा था। आँगन में एक पेड़ था जिसके ऊपरी तने के साथ छत गोलाकार में थे और वह वृक्ष की शाखाओं को स्वतन्त्रता देती थी, परन्तु जड़ को इतना नियंत्रित करना प्रकृति की स्वतन्त्रता छीनने के बराबर था। कम से कम आक्सीजन को भीतर आने से तो अवश्य रोका गया था। वर्कशाप में शान्ति थी, अनुशासन था, विवशता थी।

भगवान साहब से मुलाकात की इच्छा थी, पूर्ण नहीं हुई। जातीय, देशीय, नाम और विशेषणों से रहित रजनीश का यह धर्म विदेशी था,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विदेशियों के लिए उपयोगी था, यह धर्म पैसे से नियंत्रित था। ऐसे धर्म मृत होते हैं। खुले वातावरण के नाम पर बन्द प्रवेश द्वार, भीतर भगवान के बन्द दरवाजे···मैं नहीं मानता कि जीवन इतना सीमित है। मैं नहीं मानता कि ईश्वरीय भगवान, मानवीय रजनीशनीय भगवान नहीं, अदृश्य असीम भगवान इन विदेशियों के शरीर-सुखों की वजह से जिन्दा है।

जो देखा वह जीवन से पलायन था। ऊँची फीस देकर एक अनाड़ी मनोवैज्ञानिक से अपना इलाज करवाना मात्र क्या विश्व को बदल देगा? मिसेज पाटिल अपने पति और एकमात्र बच्चे का मोह त्याग कर इस नये मोह से ग्रसित थीं। वही क्यों—भीतर के सभी लोग दुर्नाम पीड़ा से ग्रसित थे, स्वयं रजनीश भी एक अस्वस्थ व्यक्ति लगे। स्निग्धा ने सब रुचिपूर्वक देखा।

हम आश्रम के डिपार्टमैंटल स्टोर पर भी गए, परन्तु कुछ भी नहीं खरीदा। स्निग्धा को यह वातावरण तो पसन्द आया परन्तु अस्थाई तौर पर एक आध दिन के जीवन के लिए। मुझे वह भी नहीं जँचा। हमारी विजिट के एक वर्ष बाद श्री रजनीश अमेरिका पलायन कर गए। वहाँ रजनीश धाम बसाया। पुणे में सुना था वे गुजरात में आश्रम बनाएँगे! एक भगवान अमरीकी हो गया। अगर मैं भगवान होता तो हिमालय के उत्तुंग शिखर पर माला जपता, ठंडी बर्फानी हवाओं में उन्मुक्त विचरता। विश्व के सर्वोच्च शिखर पर से जनकल्याण के मंत्र वायुमंडल में बिखेरता। स्निग्धा भी मात्र एक अणु बनकर रह जाती। मैं अनाम होता, अदृश्य होता, निर्लिप्त होता पर सम्पूर्ण मानवता मुझसे पृथक् न होती। विश्व मेरा मन-कण होता, सृष्टि मेरा श्वास। मुझ तक पहुँचने के लिए बन्द दरवाजे न होते—मात्र होता एक मार्ग। परन्तु उस सबके बावजूद मैं ब्रह्मांड के भीतर अपने को भी एक अणु मानता।

असत्य से पृथक् मैं अपने में आ गया हूँ। स्निग्धा कहती है, 'जीवन की गति को प्यार और परिवार से स्थायित्व मिलता है। हम-तुम उसी में व्यक्त हैं।'

बहुत दिनों बाद मुझे ज्ञात हुआ कि दीक्षित और शामा भी रजनीश आश्रम में कुछ समय रह चुके हैं और शायद उनकी टूटन, उनका बिख-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राव उस 'उन्मुक्त बन्धन' से अनेक टुकड़ों में टूटकर चूर हो गया। कच्चे नारियल-सा पूरा सुन्दर जीवन सड़ाँध में दब गया। उसकी बू सारे जीवन में भरकर वे दोनों अपने जीवन में जिन्दा रहते ही मर गए।

उस दिन मुझे लगा कि स्निग्धा के भीतर कुछ मर गया है। वह एक अजनबी लग रही थी। हमारी लड़की का नाम इमा था, वह जब पाँच वर्ष की हुई उसे ताराहाल कान्वैंट शिमला भेज दिया गया। बेटा अबु जब पाँच का हुआ उसे दून स्कूल देहरादून भेज दिया गया। बच्चों की शिक्षा के विषय में सब निर्णय स्निग्धा के थे। मैं मन्त्र सहमति व्यक्त कर सकता था। शायद वह बच्चों के भले के लिए उन्हें इस तरह की शिक्षा देना चाहती थी। शुरू में इमा के जाने के बाद अबु के कारण वातावरण सामान्य रहा। मुझे इमा का अभाव अच्छा नहीं लगता था। एक आध बार मैंने कहा था कि दिल्ली में दिल्ली पब्लिक स्कूल या सैंट मेरी कान्वेंट इत्यादि में उसे भेज सकते हैं, पर स्निग्धा को शिमला की धुन सवार थी। उसे शिमला जाना अच्छा लगता था। बच्ची को लाने छोड़ने के बहाने साल में शिमला के चक्कर पाँच-छः बार लगाने पड़ते, शुरू शुरू में मुझे भी यह आउटिंग, यह तफरीह अच्छी लगती थी। दिल्ली से कार द्वारा शिमला पहुँचने में अधिक से अधिक आठ घण्टे लगते थे।

अबु को दून स्कूल में डालने के निर्णय का आधार क्या था, मैं समझ नहीं पाया। शायद स्निग्धा का मंसूरी से लगाव था, वह कहती थी कि शुरू के छः वर्ष की शिक्षा उसने मंसूरी में पाई है। बच्चों का घर पर न रह पाना मेरे लिए बोझ बन गया।

उस दिन वह अबु को देहरादून छोड़ने जाने वाली थी। सामान तैयार हो रहा था। अबु उदास था। मेरे पास आया। बोला, 'डैडी, हम नहीं जायेंगे, हम घर पर रहेंगे।'

Funding by IKS-MoE

'बेटे पढ़ने तो जाना ही पड़ता है।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'हम पढ़ने को जाएँगे, दिल्ली में पढ़ेंगे।'

'क्यों ?'

'क्यों ? डब्बू यहीं पढ़ता है, सुम्मा यहीं पढ़ती है, पूपी भी पढ़ती है, हम भी पढ़ेंगे।'

'बेटे, देहरादून में बहुत अच्छा स्कूल है !'

'अच्छा नहीं है। आप हमें प्यार नहीं करते !'

'न वेटे, ऐसा मत कहो। हम तुम्हें बहुत प्यार करते हैं।'

'हमें कोई प्यार नहीं करता, मम्मी भी नहीं, आप भी नहीं।' वह रोने लगता है। मोटे-मोटे आँसू वहाता है। मैं उसे पुचकारता हूँ, बातों में टालता हूँ, पर वह टुस्क-टुस्क कर रोए जा रहा है।

मैं कहता हूँ, 'अबु चलो, हम तुम्हें चॉकलेट लाकर देते हैं। मेरा प्यारा बेटा चाकलेट खाएगा !'

'मेरा प्यारा बेटा। आपका वेटा नहीं हूँ। खाऊँगा नहीं। आप भी गन्दे हैं, मम्मी भी गन्दी हैं।'

'पर चॉकलेट तो अच्छे होते हैं।'

'नहीं होते। स्कूल में गन्दे चॉकलेट देते हैं। खाना भी गन्दा देते हैं। हम नहीं पढ़ेंगे।'

'पढ़ेंगे नहीं तो क्या करेंगे ?'

'घर का काम करेंगे, किरपाराम बनेंगे !'

'किरपाराम कौन है ?'

'स्कूल में घंटी बजाता है, छुट्टी कर देता है। मैं भी बड़ा होकर किरपाराम ही बनूंगा !'

'अच्छा, ठीक है, थोड़ा पढ़ लो, फिर जो बनना हो, बन जाना।'

'पढ़कर किरपाराम कैसे बनूंगा ?'

'जाओ अपनी मम्मी से बात करो, जो वह कहेगी वही हम कर देंगे।'

'मम्मी डरती है, वह हमारे साथ नहीं सोती है। वह आपकी मम्मी है, मेरी मम्मी नहीं है।'

'अच्छा भाई कुछ और बात करें, पोइम सुनाओ। इनाम दूंगा।' अचानक वह हँसता है। कहता है, 'पहले इनाम दो फिर पोइम सुनाऊँगा।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं उसे दस रुपये देते हुए पोइम सुनाने को कहता हूँ। वह सुनाता है—

'देक एण्ड दिल
वैंट अप द हिल,
देक पेल हाऊन
द फेल आप वाटर
दिल टेल डाऊन
अप केम टर्मलिग आपटर।'

'सारी पोइम गलत है। लाओ मेरे रुपये !' वह टुकुर-टुकुर मुझे देखता है तभी स्निग्धा की आवाज आती है, 'क्यों बच्चे को बिगाड़ रहे हो ?' वह आँधी की तरह कमरे में आती है। अबु को आते ही थप्पड़ मारती है, कहती है, 'चुप नहीं रह सकता, चबड़-चबड़ करता है। उसे घसीटती हुई दूसरे कमरे में ले जाती है ! मैं सिगरेट पीता हूँ। खामोश हूँ···स्निग्धा का बच्चों के साथ बड़ा रूखा व्यवहार है। दूसरे कमरे से अबु के चिल्लाने की आवाज आ रही है। साथ-साथ वह यह भी कहता जा रहा है कि 'नहीं पढ़ूँगा। स्कूल नहीं जाऊँगा।'

'देखती हूँ, कैसे नहीं जाता।' वह उसे और मारती है।

'हम पढ़ेंगे नहीं तो फेल हो जाएँगे। आप रोएँगे···देख लूंगा।'

मुझे हँसी आने को होती है। बच्चों की बातें मजेदार होती हैं, स्निग्धा फिर भी कठोर बनी हुई है। शायद संयुक्त परिवार में ऐसा नहीं होता होगा, परिवार की सुगठित इकाई होता है, परन्तु विदेशी और विशेषतया पाश्चात्य प्रभाव ने हमें अलगाव दे दिया है। मुझे लगता है स्निग्धा अकेलेपन के बोझ से पीड़ित है। वीणा द्वारा बनाया हुआ घर-बार उसे धरोहर में मिला। शायद शुरू से उसे इस घर को बनाने-बसाने का अवसर मिलता तो स्थिति और होती। सारा दिन उसका घर में बने रहना उसे एक बीमारी की तरह खुरदरा करके धीरे-धीरे तोड़ रहा है। उसे मित्र बनाने में रुचि नहीं है। वह घर में मस्त तो रहती है, पर उसकी मस्ती में एक मजबूरी भी है। जिस तबाही या आत्मलगन से वह अपने को घेरे हुए है, उससे वह आत्मतोष से वंचित हो गई है। यौन का ठंडा सागर उसे कंपा रहा है, यह सिहरन भीतर तक सालती है। ठंडापन

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थाई हो गया है, परत-दर-परत वह बोझिल होती गई है। वह कहीं अपनेपन की, अपने होने की, बने रहने की भावना से प्रताड़ित है, चोट खाए है, उद्देश्यहीन, घटनाविहीन जिन्दगी है उसकी। उसकीभावनाओं में कुछ अतिरिक्त अस्थिरता है, अपने को तुच्छ समझने का दोष है, अकारण-हीनता है, मनोरंकता है। भावनाओं के भटकते रहने से आई थकावट से उसमें विदेशीपन आ गया है।

इस वातावरण में बच्चे प्रभावित हुए हैं, उनकी समृद्धि ही उनकी अस्थिरता का कारण बन जाएगी, उन्हें स्निग्धा ने जन्म दिया है। चार-पाँच वर्ष के होते-होते वे बोर्डिंग में चले गये हैं, उन्हें उनके हालात पर छोड़ दिया गया है, बोर्डिंग में जिन अध्यापकों और वार्डनों का उन पर प्रभाव पड़ेगा, वह एकांगी होगा, दूसरे बच्चों के सम्पर्क से जरूर उनमें स्वतन्त्रता की भावना जगेगी, परन्तु स्निग्धा के तनाव का भी स्पष्ट प्रभाव बच्चों पर है। भावनात्मक दबाव के कारण बच्चे मेरी तरह न हो जाएँ! नहीं, कहीं स्निग्धा की तरह न हो जाएँ? स्निग्धा की भावनात्मक शक्ति क्षीण हो रही है, या शायद वह ऊब से उत्पन्न थकावट बनाए रखने का अभि-नय कर रही है।

मैं बच्चों को घर पर रखने का पक्षपाती हूँ—इसलिए कि बच्चे हमारे मैत्री सर्कल के राजदूत हैं। हमारे दायरे को विस्तृत करते हैं। मेरे और स्निग्धा में उत्पन्न हुई दूरी भी बच्चों के घर में न रहने के कारण है! मुझे लगता है उसमें मातृत्व भावना की कमी है। अगर वह ऐसी ही रही तो मुझे बच्चों के लिए नई माँ लानी होगी। हम जिस व्यवहार के कारण औरत का माँ या पत्नी का स्वरूप प्रदान करते हैं, स्निग्धा उससे पृथक् हो रही है। उसमें अपने को सहज नहीं रखती। सहजता में विश-दता रहती है, शायद माँ बनकर भी वह माँ का स्वरूप स्वीकार नहीं करती। वह अज्ञान, भय और मुगालतों से पीड़ित है, आक्रान्त है, इस स्थिति ने उसे झूठे अहं, शान और मेरे प्रति बदले की भावना से भर दिया है। वह अपने बनाए हुए विश्वासों के संसार में रहती है और विश्वास चाहे काल्पनिक हों, वह उन्हें तथ्य कहती है। वह भावुक है। कमजोर मनज है, वह मुझे भी अपने संसार का, अपने कल्पित विश्वासों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के संसार का एक भाग मान बैठी है। यह जानकर कि वह एक वकील रह चुकी है—मैं उसकी स्त्रीगत भावुकता को बनावटी मानता था, पर वस्तुतः उसकी स्त्रीसुलभ कोमलता, व्यक्तित्व की क्षणिक गरिमा, कभी-कभी गम्भीर होकर बातें करने की आदत—यह सब उसे दूसरी औरतों से अलग जरूर करती है, पर यह सिर्फ उसके अस्तित्व का एक अंश है। स्निग्धा और मेरी—हमारी सैक्स लाइफ बुरी नहीं है। हमारे जीवन में खुशी की कमी है। विवाह के समय मैंने किसी से वायदा नहीं किया था, वह भी अंग्रेजी में कि हर रात स्निग्धा ओरगेजम का आनन्द भोगेगी। विवाह संस्कार पद्धति में भी ऐसा कोई प्रावधान नहीं है।

स्निग्धा की चाहत और उसकी उच्च आकांक्षाएँ ही हमारी गलतफहमियों का कारण है। मोहभंग, कुण्ठाएँ और दु:खद स्थितियाँ इन गलतफहमियों के कारण हैं।

उस शाम हम दोनों लॉन में बैठे चाय पी रहे थे। बातों में बात निकली तो स्निग्धा चिढ़ गई। कहने लगी, 'पुरुष को ईश्वर ने ही शक्तिशाली बनाया है और हम औरतों को हीन—तुम शासक हो, हमें तुम्हारे बिस्तर और बच्चों और घर की देखभाल करनी है। तुम...'

मैं बीच में हँस देता हूँ और कहता हूँ, 'इन्दिरा गांधी सन् 1966 से 77 तक प्रधानमन्त्री रहीं, अब फिर 1980 से प्रधानमन्त्री हैं। उन्होंने तुम्हारी बात सुन ली तो तुम पर हँसेंगी।'

'तुम हर बात टालते हो!' वह बोली।

मैं कहता हूँ, 'स्निग्धा, तुम्हारी अकल तुम्हारी चुटिया में चली गई है। वैसे तुम्हें मालूम है आदमी के ब्रेन से औरत का ब्रेन कुछ ग्राम कम होता है। पर जिन तंतुओं में अकलजाल रहता है, उनकी संख्या बराबर ही होती है। तंतु लम्बाई में छोटे होते हैं इसलिए औरत जल्दी सोचती है, उसकी प्रतिक्रियाएँ भी जल्दी होती हैं।'

वह खुली हँसी बिखेरती है। कहती है, 'मैं औरत को दिमागी रूप से कभी पुरुष से छोटा नहीं मानती।'

'फिर तुम्हारा माँ या पत्नी का जो भी रूप है उसका तुम सही अर्थ में विस्तार क्यों नहीं करतीं। औरत पुरुष का काउण्टर फाइल है। जो

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुममें नहीं है वह मुझमें है, जो मुझमें नहीं है वह तुममें है। और तुम और मैं श्रद्धा और मनु हैं, हम या हमारे जैसे लोग ही संसृति चलाते हैं।'

बच्चों की पढ़ाई के बारे में स्निग्धा ने मेरी बात नहीं मानी।

एक समय था जब मुझे शादी से चिढ़ थी, नफरत थी, मैं अविवाहित रहना चाहता था। आर्यसमाज का प्रचारक बनना चाहता था। आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्म शिक्षा की परीक्षाएँ भी मैंने पास की थीं। मैं जन-सेवा करना चाहता था। शादी एक बन्धन है। मैं उन्मुक्त रहना चाहता था। भावनात्मक और भावुक सम्बन्धों से मैं बचना चाहता था। परन्तु यौन भावना मेरे दिमाग में थी, सभी के होती है। शरीर में पौरुष की जुम्बिश थी। सुन्दर लड़की को देख मन में विकार आते थे। एक स्वामीजी तो यहाँ तक कहते थे 'जानते हो मैं स्वामी क्यों बना ? सेवा करने की भावना से। संन्यास से पूर्व मेरा एक आध रोमांस भी हुआ, शारीरिक सम्बन्ध भी हुआ। यौन पर नियंत्रण नहीं होता, मन पर नियंत्रण होता है। साधु बनकर भी मेरा मन भटकता है, शरीर चाहता है, पर यह याद करके कि जो पहले भोगा था वह कोई खास असाध्य वस्तु नहीं थी। बस इसी से विकार मरते हैं, मरते रहते हैं, जन्मते हैं, फिर मरते रहते हैं।'

मैं उनसे प्रभावित हुआ था। शारीरिक शुद्धि जरूरी है, आत्मा शुद्ध है तो सब सुख है। पर मैं आत्मा की बात पर असहमत था। शरीर जो चाहता है, वही करो, मुझमें यह दृढ़ विचार थे। आर्यसमाज के युवक कैम्प में जो ब्रह्मचर्य के विचार थे वे शीघ्र गायब हो गए। फिर देवदासी प्रथा, हेनरी विशप आफ लैह् ज की 65 अवैध सन्तानों की कहानियाँ पढ़ीं--मुझे लगा कि ढोंग से ऊपर मैं जो भी बन सकूँ वही बना रहूँगा।

धर्म क्या है, क्यों है, ये सब प्रश्न मेरी जिन्दगी से बाहर हो गए। मुझे लिनियार्डो डी० विंसी के अतिरिक्त कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसके पास सैक्स में डूबे रहने के अवसर होते हुए भी, स्वेच्छा से सैक्स से मुक्त रहने का प्रमाण हो। धर्म, सैक्स, विंसी सब गडमड हो गए हैं। स्निग्धा एक औरत है और एक अपूर्ण औरत है। मेरी सामान्य सैक्स गति-विधि भी उसे पर्वर्स दिखाई देती है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक दिन कह रही थी, 'मुझे ओरगेजम् समझाओ !'

'इट इज सिम्पल थिंग, इन मेन इजेकुलेशन आफ सीमन एण्ड इन वूमेन ए सीरिज़ आफ कन्ट्रेकशन्ज आफ द विजाइना कॉज आइगेजम् ।'

स्निग्धा एक हसद से भरी औरत है। उसे हमेशा लगता है कि मुझ पर उसका पूर्ण अधिकार नहीं है। अवश्य ही कोई दूसरी औरत मुझे उससे पृथक् कर देगी, छीन लेगी। वह सामाजिक शिष्टाचार और मैत्री को हसद में बदल देती है। किसी सुन्दर औरत से परिचय होने पर वह खुश नहीं होती, उसके चेहरे पर मुस्कराहट तक नहीं आती। वह अपने सौन्दर्य का प्रभाव बनाए रखना चाहती है। उसे लगता है कि कोई भी परिचित-अपरिचित सुन्दर औरत उसके पति चन्द्र यानी मुझे उससे अलग कर देगी। यह भावना भय से जन्मी है, उसे हर नई औरत, सुन्दर औरत भय देती है। कभी-कभी वह अकारण ईर्ष्यालु हो जाती है। महीने में दो बार वह ब्यूटी पार्लें जाती है। दो बार घर में फेशियल करती है। महीने में एक बार पूरे शरीर का ब्लीचिंग करती है।

वह प्यार देना नहीं जानती। दोस्ती और प्यार से अनभिज्ञ वह दूसरों से अपनी प्रशंसा पाने की उत्सुकता दिखाती है। लगातार प्रशंसा पाने की इच्छा, सिर्फ उसे ही प्यार करते रहने की इच्छा के कारण शायद वह हमारे बच्चों से भी ईर्ष्या रखती है। शायद यह ईर्ष्या भावना यौन की अति की ओर संकेत देती है। मुझे लगता है कि स्निग्धा अपनी कुढ़न से, अपनी हसद से धीरे-धीरे अपने को समाप्त कर रही है।

मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ, उसके अहं को दूसरे लोगों की त्रुटियों पर टीप कर पुष्ट करता हूँ। वह दूसरी स्त्रियों से मैत्री नहीं कर पाती। वह संदेहों से भरी रहती है। मुझे हमेशा दुखी करती है।

स्निग्धा के इस स्वभाव का कारण है। उसने मुझसे विवाह करने के लिए वकालत छोड़ी। वह पाँच हजार रुपया मासिक कमाती थी। मुझसे शादी करने से पूर्व उसने पुनर्विवाहित व्यक्ति की पत्नी होने पर विचार किया होगा। उससे एक स्थाई ग्रन्थि तो बनी ही होगी। इस शादी से उसका स्वतन्त्र व्यक्तित्व लुप्त हो गया। वह आर्थिक एवं भावनात्मक कारणों से मुझ पर आश्रित हो गई। यौन बन्धन पाने के लिए उसने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अपना अस्तित्व मुझे सौंप दिया। मैं सैक्स के अनुभवों से प्रौढ़ था। स्निग्धा सैक्स की नवीनता में अस्थिर-अप्रौढ़ थी। उसने यौन सम्बन्धों की स्वतन्त्रता का उपयोग मेरी तरह नहीं किया।

विवाह एक सांस्कृतिक मूल का समझौता है। वह एक स्थाई वातावरण बनाता है। भावुकता या भाव-प्रवणता से पृथक् एक समझदारी से भरी चुनौती इस रिश्ते में आती है। स्निग्धा ने मुझसे शादी करके अपने लिए स्वयं बन्धन स्वीकार किया है, इसमें मैं अधिक दोषी नहीं हूँ। मैं विवाह की संस्था को आवश्यक मानता हूँ। विवाह सामाजिक वृत्तों की पुष्टि एवं वृद्धि के लिए आवश्यक है। मैं स्त्री की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का पक्षी हूँ परन्तु अपनी पत्नी को मैं दूसरे की बाँहों में नहीं देख सकता। दूसरों की बीवियाँ मेरी बाँहों में रहें यह दूसरी बात है। मेरे जैसे हर व्यक्ति के मानदण्ड दुहरे होते हैं। वस्तुतः पुरुष के लिए विवाह एक आशावादी संस्था है। दिनभर के काम-काज, थकावट-झल्लाहट के बाद वह अपने घोंसले में सुख पाता है। मैं स्निग्धा से यही सुख चाहता हूँ। मेरे दूसरे सम्बन्धों का प्रभाव मेरे परिवार पर नहीं पड़ता। अन्यथा वीणा के बाद शामा, नंदिता, शोभा कोई भी मेरे घर की, मेरे हालात की मालिक होती। स्निग्धा ने मुझे नियंत्रित या व्यवस्थित नहीं किया, उसने अपने को भी सँभाला नहीं। वह मेरी और अपनी स्वतन्त्रता को भी समझ नहीं सकी।

वस्तुतः मेरा विवाह के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण है। यह एक स्वस्थ, परम्परागत और समृद्ध स्थाई संस्था है। बच्चे इसकी नींव हैं। इमा और अवु इसका आधार हैं। उनका विकास-विस्तार इस संस्था का आकाश है। स्निग्धा कहती है कि 'जो हम अपने माँ-बाप से संस्कार में पाते हैं या उनके एक-दूसरे के प्रति व्यवहार से सीखते हैं—वही हमारे पारिवारिक जीवन को बनाता-बिगाड़ता है।' मैं इसे सीमित अर्थों में मानता हूँ। हम अपनी शक्ति-सामर्थ्य और समझ के आधार पर जो गृहीत करते हैं उसका प्रभाव महत्त्वपूर्ण है। हम गलत तरीके से स्वयं को प्रभावित होने दें तो स्थिति अच्छी नहीं हो सकती। स्निग्धा अगर पुरातनपंथी होती और परम्परा को बनाए रखकर मुझे घर का प्रमुख मान लेती तो

Funding by IKS-MoE

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तनाव कम होता। वह आधुनिकता और पुरातनता को बिना समझे अपनाती है, वह घर की समस्याएँ मुझ पर लाद देती है। स्निग्धा अपने सौन्दर्य के प्रति जागृत नहीं है। जिस सुन्दर चेहरे से मेरी शादी हुई थी, उसका कुछ रूप बच्चों ने बदल दिया, कुछ स्निग्धा की सुस्ती ने।

स्निग्धा की बौद्धिकता एक गुण है। मैं उसे हमेशा अपने बराबर समझता आया हूँ। पर उसे अपनी रुचियाँ घर से बाहर ले जानी चाहिए।

मैं एक साधारण आदमी हूँ। मेरे इसी सीधेपन ने मुझे दूसरी औरतों से बाँध दिया। जान-बूझकर नासमझी कर बैठना मेरी आदत है।

स्निग्धा ने घर को अपनी प्रयोगशाला बना रखा है। घर का प्रत्येक कार्य वह एक कोर्ट रूम की संजीदगी से निभाती है। स्वयं ही जज बनकर, स्वयं वकील और मुवक्किल बनकर। मुझे अपने घर आना कभी-कभी अपने अजनबीपने का आभास देता है।

वीणा के साथ मैं शुरू के वर्षों में अपने जीवन को प्रसन्नता दे सका था, हम एक-दूसरे का जीवन बाँटते थे। स्निग्धा के प्रकरण में ऐसा नहीं होता। वीणा शुरू-शुरू में मेरी राजदार थी, यह रहस्य बाँटना मुझे बाद में महँगा पड़ा। यही कारण है कि स्निग्धा से मुझे बहुत कुछ छिपाना पड़ा।

स्निग्धा अपना दिल खोलकर अगर मुझसे बात कर ले तो तनाव खत्म हो जाते हैं। वह परिवार को वैयक्तिक सम्बन्धों से अलग एक सामाजिक संगठन, चार प्राणियों का संगठन मान ले तो अधिक उचित रहे।

अबु और इमा के लिए हमारे साथ रहना इसलिए आवश्यक है कि वे हमारे व्यवहार, सम्बन्धों और आदतों को देखें। इन्हें देखते हुए भी स्वतन्त्र रहकर बढ़ें। स्निग्धा और मेरे लिए भी जरूरी है कि हम एक-दूसरे की इज्जत करें। हमें आपस में खुली बातचीत करनी चाहिए, झगड़े छोड़कर बच्चों के विकास के लिए ईमानदारी से प्रयत्न करना चाहिए। हमारा अपना रहन-सहन बच्चों पर स्थाई प्रभाव छोड़ता है। बच्चों के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भविष्य के बारे में स्निग्धा प्राय: मुझसे असहमत रहती है, इसका प्रभाव बच्चों पर गलत पड़ रहा है। बच्चों के लिए माँ-बाप आदर्श हैं। हमारी आपसी थोथली बहसों का बच्चों पर कुप्रभाव पड़ता है।

अबु और इमा का व्यवहार अच्छा है। वे अनुशासित हैं। परन्तु स्निग्धा का बार-बार मुझे कोसना अबु को दब्बू बना रहा है। बच्चे हमसे जीवन मूल्य और व्यवहार प्राप्त करते हैं, वे हमारे रुख को विश्वास से ग्रहण करते हैं। बच्चे जो तरीके और भावनाएँ हममें पाते हैं, उन्हें अपना लेते हैं। जीवन के प्रारम्भ में हम जो पाते हैं वह जीवनपर्यन्त हमें प्रभावित करता है। इनसे अहं का साम्राज्य बनता है, विशदता की धारणा बनती है।

बच्चों के बिना घर खाली है। बच्चे जब पैदा नहीं हुए थे तो भी घर खाली था। स्निग्धा क्यों नहीं समझती कि बच्चों का हमारे साथ रहना जरूरी है। अगर उसे शिमला या मसूरी ही जाना है तो हर वर्ष हम बच्चों के साथ जा सकते हैं, छुट्टियाँ बिता सकते हैं। जो अतिरिक्त धन बच्चों के बोर्डिंग-लार्जिंग में जाता है, उससे घर में आर्थिक खुशहाली आ सकती है। बच्चों की जिन्दगी भरी-पूरी रह सकती है।

किस तरह स्निग्धा को बच्चों के प्रति जागृत करूँ? कैसी स्थिति पैदा करूँ जिससे बच्चे साथ रहें? अगर बच्चे साथ होंगे तो मुझे भी घर में रहने का, बच्चों के साथ व्यस्त रहने का अवसर मिलेगा। बच्चे हमारे साथ रहना चाहते हैं—उनकी अपनी इच्छाएँ हैं। उनकी भावनाएँ हैं। वे भी अपने ही घर में मेहमानों की तरह रहें यह कहाँ का न्याय है?

स्निग्धा उस शाम घर पर नहीं थी। इमा और अबु के साथ मैं ड्राइंगरूम में बैठा था।

इमा कहती है, 'मैं भी बोर्डिंग हाउस में नहीं रहूँगी क्योंकि मुझे अकेले अच्छा नहीं लगता, हम बोर होते हैं।'

अबु कहता है, 'मैं तो जाऊँगा ही नहीं।'

'अगर तुम्हें जबरदस्ती भेज दिया जाए तो।'

Funding by IKS-MoE

'हम रोएँगे, पढ़ेंगे भी नहीं, बैठे रहेंगे, खाना भी नहीं खाएँगे। वहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हमारा कोई दोस्त भी नहीं है। लड़के पत्थरों से खेलते हैं, चोट लगती है। मुझे यहीं रहना अच्छा लगता है। वहाँ नहाने का टब भी नहीं है। गद्दे ठीक से बिस्तर पर नहीं आते, तख्ते चुभते हैं।'

बीच में इमा कहती है, 'हमारा सामान लड़कियाँ चुरा लेती हैं। कुछ भी खाने को नहीं मिलता। रोज लौकी की सब्जी मिलती है। बिना घी की रोटी मिलती है। आइसक्रीम नहीं मिलती।'

'आंटी खूब डाँटती है।' अबु कहता है।

'कौन आंटी !'

'जो हमें सुबह उठा देती है, ठंडे पानी से नहलाती है। अगर हमें पता होता, वो कौन आंटी है तो हम उसके अंकल से नहीं कहते ? उसे मार पिटवाते।'

बीच में टोकती इमा कहती है, 'मुझे वास्केटबॉल खेलने को नहीं मिलता। दीदियाँ खेलती हैं, हम पिट्ठू खेलते हैं !'

'मुझे तो कोई खिलाता ही नहीं, मैं रोता रहता हूँ।' अबु कहता है।

'वहाँ कलर टी. वी. भी नहीं है। टेप रिकार्डर भी नहीं। डिस्को भी नहीं है।' इमा कहती है।

'मेरे पाजामे का नाड़ा कोई नहीं बाँधता। शूज भी खुद पहनने पड़ते हैं। तिलू अपने बिस्तर में सू-सू कर देता है।' अबु कहता है।

'इससे तुम्हें क्या ?'

'मुझे क्या, वह मेरे कमरे में रहती है। बदबू आती है।...'

'हर काम मैं करता हूँ, फुटबाल लाना पड़ता है। पैर में चोट लगती है !'

'तुम्हें डैडी की याद आती है ?'

'बहुत आती है। मम्मी अच्छी है।' अबु कहता है।

'अभी तो तुमने कहा था मम्मी गन्दी है ?'

'कहा था। वह गन्दी है, पर आंटी से अच्छी है !' अबु कहता है।

Funding by IKS-MoE

'वहाँ कामिक्स भी नहीं मिलते।' इमा कहती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'अगर तुम्हारे लिए नई मम्मी लाएँ तो खुश रहोगे ?'

'नहीं, यही मम्मी ठीक है !' अबु कहता है।

'यह मम्मी सुन्दर है। मुझे तो नहीं मारती है। अबु को मारती है। अबुश रारत करता है। मेरे बाल खींचता है।' इमा कहती है।

'अच्छा यह बताओ—आइसक्रीम खाओगे ?'

'हाँ' दोनों कहते हैं।

मैं उन्हें आइसक्रीम खिलाने गाड़ी में ले जाता हूँ।

'मैं चॉकलेट लूँगी।' इमा कहती है।

'मैं बनीला खाऊँगा।' अबु कहता है।

'हम केक भी खाएँगे।' इमा कहती है।

'हमें टोफियाँ भी चाहिए।' अबु कहता है।

मैं उनकी सब फरमाइशें पूरी करता हूँ। तब हम घर पहुँचते हैं। घर पर स्निग्धा आ चुकी थी। हमें देखकर कहती है, 'कहाँ गए थे ? बच्चों को क्यों बिगाड़ रहे हो। क्या घर में केक नहीं बन सकता था !'

मैं कहता हूँ, 'बन तो सकता था !'

उन दिनों मैं दिल्ली युनिवर्सिटी में पढ़ता था। मेरे पास अपनी कार थी। इस कार के कारण मैं प्रायः मुश्किलों में पड़ा हूँ। हंसराज कालेज से मोरिस नगर बस स्टाप तक राश्ते में किरोड़ीमल कालेज, दिल्ली स्कूल आफ इकोनोमिक्स, रामजस कालेज और लेडी दौलतराम कालेज पड़ते थे। दिल्ली स्कूल आफ इकोनोमिक्स से लगा सैंट स्टीफन और हिन्दू कालेज थे। किशोरावस्था थी, ड्राईविंग लाइसैंस नया-नया लिया था। तेजी से कार चलाकर किसी के पास से गुजर जाना, अत्यधिक स्पीड पर मोड़ काटना। अचानक ब्रैक लगाकर कार रोकना आदत बन गए थे।

प्यार का बसन्ती पौधा दिल की उमंगों से सिंचित हो रहा था। उन दिनों के प्यार, उन दिनों के परिचय कहाँ हैं ? तलाश कर पाना सम्भव

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ही नहीं। एक सशक्त, शुद्ध खिलवाड़ था वह प्यार। नई भावनाएँ, नई उमंगें, नये शारीरिक आकर्षण-छुआव, प्रतिक्रियाएँ और अनुभव थे, भविष्य के प्रति स्वप्न थे, वर्त्तमान के प्रति आस्थाएँ, प्रतिबद्धता, आशाएँ। न कोई समाज था न संस्कृति। सारा माहौल व्यक्तिपरक था। मैं था और सिर्फ मैं था। एक अहं था, एक अहं की चेतना थी।

सैक्स के प्रति नई चाह थी, जिज्ञासा थी, अनुभव स्थिर करने के लिए ललक थी। टेलीफोन बूथ में छिपकर चुम्बन के रस से लेकर बैंगर्ज या कॉफी हाउस में हाथों के स्पर्शों का सुख था। लड़कियों के प्रति लगाव शरीर और मन को बाँधे हुए था। न कोई धार्मिक विचार थे, न सामाजिक बन्धन। प्यार के अवसर मुझे अधिक मिले क्योंकि मैं अपने परिवार से पृथक् एक स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में बड़ा हुआ था। यौन की खोज और उसमें जिज्ञासा मेरे स्वतन्त्र व्यक्तित्व का अंग थे। मैं इन विषयों में सिर्फ व्यक्ति बना रहा। अपने अनुभवों में मैं दूसरों से आगे था। मेरी प्रेमिकाओं की संख्या अधिक थी, मेरे मिलन-स्थल अनेक थे। युनिवर्सिटी की आर्ट्स फैकल्टी के मोरिस नगर की ओर के गेट से लगे भवन की लाल पत्थर की सीढ़ियों पर सुदेश का हाथ पकड़कर बैठे रहने या लॉ फैकल्टी के पास के कॉफी हाउस में मिस कुशवाहा के साथ डोसे खाने में सुख था···वह भी क्या वक्त था।

मिस शांति के ओठों को छूकर जो तृप्ति मिली थी वह युगों तक कहीं नहीं मिली। चुम्बन से भयभीत मिस चौधरी का कहना कि 'किस मत करो, इससे बच्चे हो जाते हैं, कितना मासूम था। मुझे भी ज्ञान था कि नहीं कह नहीं सकता। मिस अग्रवाल की काले रंग की सलवार मुझे पसन्द नहीं थी। मिस मून ओवर रोमांटिक और बचपने से भरी थी। माँ-बाप की परवाह न करने वाली मिस चोपड़ा हमेशा कहती थी, 'मेरे पिता इतने सख्त हैं कि हमेशा कहते हैं कि अगर मैंने किसी से प्यार किया तो वे उसकी टांगें तोड़ देंगे। तुम्हारे बारे में बताऊँ उन्हें।' सैक्स के बारे में चोपड़ा सबसे आगे थी। वह अपने शरीर के किसी भी भाग को छूने देती थी। मिस मीताली सिन्हा का प्यार करने का अन्दाज अलग था, वह तभी प्यार की स्वीकृति देती थी जब कोई उससे विवाह का वायदा करता था।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझसे पहले जुलका, गोयल, मित्तल और पार्थो भी उससे शादी के वायदे कर चुके थे। मिस आजाद सिर्फ सफेद कपड़े पहनती थी, उसके नैन-नक्श सुन्दर तीखे थे। सुरेश रंगवाला मिस नारंग के पीछे पागल होकर कहीं भाग गया था। रघुनन्दन मिस विरमानी के चक्कर में घूमता था। उसकी बिहारी धोती झक सफेद होती थी। श्रीमती गायत्री को क्लास रूम में गश आ गया था। बाद में पता चला वह प्रेगनेंट थी।

मैं क्लास में प्रश्न बहुत पूछता हूँ—सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता था। मिस चन्द्रकान्ता की माँ मुझे अपना जामाता बनाने के चक्कर में मेरी खूब खातिर करती थी। कान्ता मेरे साथ कुछ भी करने को स्वतन्त्र थी। उसकी माँ के सामने मैं कान्ता को घण्टों चुम्बित करता था, बाँहों में बाँधे रहता था। बीच में कान्ता प्रेगनेंट हो गई थी। पर यह मेरे रोमांस का नतीजा नहीं था। कान्ता की माँ को जब अपनी बेटी का आचरण पता चला तो उसने उसे बहुत पीटा था। घर से निकाल देने की धमकी दी थी। मुझे अच्छा लड़का कहा था। उस दूसरे हरामजादे की जान निकाल देने की धमकी दी थी। कुछ दिनों बाद कान्ता का गर्भ गिर गया था। मैं तब उसके घर जाना बन्द कर चुका था।

वस्तुतः किसी भी लड़की के साथ मैं शादी की बात तक नहीं सोचता था। मेरी कार में लिफ्ट लेने और मेरे साथ कॉफी पीने कोई भी जा सकता था। युनिवर्सिटी में अनुभवी लड़कियाँ काफी थीं। मिस विमी उस रात भीग गई थी, टैक्सी में मैं उसे छोड़ने मीराण्डा हाउस गया था। वह मेरे हास्टल रूम में सोना चाहती थी, मैं सहमत नहीं था।

प्रोफेसरों के साथ फँसने वाली लड़कियों को हम माताजी कहते थे। डा० तरजिन्दर बिना किसी लड़की के साथ सोये उसे फर्स्ट क्लास मार्क्स नहीं देते थे। मिश कमलेश के रोमांसों की चर्चा, उनकी असफलता की चर्चा सब करते थे। जब वह मेरे चक्कर में आई तो एक दोस्त ने कहा था—किस कोठेवाली के जाल में जा रहे हो, यह छोकरी सौ चूहे खाकर हज कर चुकी है, तुझे सीधा निगल जाएगी। युनिवर्सिटी में वह सिर्फ पैसा कमाने आती है। मुझे याद है उसने एक बार मुझसे तीस रुपये माँगे थे।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुझे मेरे बचपन में किशोरावस्था में यौन के सबक स्वयं पढ़ने पड़े परन्तु उनसे जो मैंने सीखा उस सबसे मुझे एक अस्थाई जीवन मिला।

उस आयु में मुझे यौन सम्बन्ध जिन्दगी से पलायन प्रतीत होते थे। पढ़ाई-लिखाई के बोझ, मानसिक दबावों से मुक्ति। यही धारणा इस विषय में जिन्दगी के आज के पड़ाव तक मौजूद है। पलायन उस पवित्र धरती पर ले जाता था जहाँ कोई बाधा न हो, व्यवधान न हो। पलायन अनिश्चितता की स्थिति से उत्पन्न होता है। मनुष्य अपने प्रति आशंकित रहता है। भ्रमजाल की उत्पत्ति भी पलायन से होती है। मैं अपनी त्रुटियों के लिए, अपनी कमजोरियों के लिए अपने को कभी जिम्मेदार नहीं मानता। कुछ बड़ा होने पर औरतों के साथ सिगरेट और शराब भी जुड़ गए।. सशक्त पलायन। शराबखानों में शराब पीना, होटलों में खाना खाना, सिनेमाघरों में घुसे रहना सब अपनी भावनाओं और अपने विचारों से बचने के लिए मुझे जरूरी लगा। वस्तुत: यह स्वाभाविक था, उतना ही स्वाभाविक जितना पुस्तक पढ़ना या टेलीविजन देखना। यादों और अतीत में खोना भी सुखद पलायन है। अपने माज़ी के तसव्वुर से हिरासाँ हूँ मैं, मेरे माज़ी को अँधेरे में दबा रहने दो, मेरा माज़ी मेरी जिल्लत के सिवा कुछ भी नहीं—साहिर लुध्यानवी, यह नज्म भी पलायन के लिए पलायन है।

सबकी जिन्दगी में पलायन के अवसर आते हैं। गम्भीर से गम्भीर व्यक्ति भी अपनी जिन्दगी का बहुत कुछ छिपाने की कोशिश करते हुए दूसरे की जिन्दगी जानने का प्रयास करता है। यह प्रयास भी अपनी जिन्दगी से पलायन है। मैं उन्नीस वर्ष से पलायन में उलझा हूँ, डूबातरा हूँ।

दिल्ली में बीते शिक्षा काल में मैं एक गम्भीर विद्यार्थी होते हुए भी अगम्भीर व्यक्ति बना रहा। मेरे प्यार-मुहब्बत के किस्से प्रसिद्ध थे। मेरे प्रति आकर्षणों के सहज कारण थे। मैं उन हरफनमौला लोगों में था जो कहीं भी मौजूद थे। खेलों में आगे, हाकी, क्रिकेट, बैडमिन्टन, शार्ट स्प्रिंट्स में मुझे ख्याति मिली। डिबेट, डेकलेमेशन, कविता पाठ में पुरस्कार मिले। ड्रामा, स्टोरी राइटिंग में अन्तर्विश्वविद्यालय के पुरस्कार पाए। कालेज

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पत्रिका का सम्पादन किया। होस्टल का सचिव रहा। स्टुडैंट यूनियन का कन्वीनर रहा। और यह सब होते हुए भी मैं हमेशा जिन्दगी से भागा। भागकर सैक्स में डूबा।

दूसरों की सैक्स लाइफ जानने की इच्छा के कारण मुझे अनेक सुविधाएँ मिलीं। क्लबों या पार्टियों में मैं अधिक आकर्षण बना रहा। मुझे दूसरों की औरतों को अवैध सम्बन्धों में जकड़े देखकर एक विशेष सुख मिलता। शायद बचपन में मास्टर कपूरसिंह की बीवी को दिनदहाड़े मास्टर बलदेव सिंह के साथ सोए हुए देख लेने के कारण मैं अधिक जागृत हो गया था। पर इसका यह अर्थ नहीं कि मैं गलत कम्पनी में पड़ गया था, नहीं, मैं अपनी कम्पनी स्वयं था, मेरे संसर्ग, मेरी खोजें, मेरी आदतें सर्वथा निजी थीं। मैं कभी किसी औरत से भयभीत नहीं हुआ। मुझमें जो कम्पलैक्स बचपन से आए होंगे उनके विषय में कोई भूमिका या आधार नहीं मिला, पर ग्रन्थियाँ अवश्य ही आईं। यह अलग बात है कि औरतों के मामले में मैं भाग्यशाली रहा, सफल रहा।

मेरे सम्पर्क में आई औरतों ने सैक्स भावना का स्वतन्त्र प्रदर्शन किया है। मुझसे अपने रहस्यों की बातें की हैं। अपने पतियों की त्रुटियों पर बातचीत की हैं। मेरे लिए यौन एक प्राकृतिक स्वाभाविक प्रौसेस के कारण एक स्थिति मात्र था। धीरे-धीरे यह इच्छा स्वयं दबती गई। दूसरों के संसार से पृथक् मैं अपनी दुनिया बनाता गया।

समय के साथ-साथ मैं अपने सम्बन्धों के दायरे संकुचित करता गया। पक्षियों और जानवरों की तरह मैं भी अपनी टेरीटरी अपने क्षेत्र को निर्धारित करता रहा। जिन्दगी में कौन आएगा, कौन आएगी⋯यह निर्णय मैं स्वयं करता रहा। मेरी सीमा क्या है? मुझे कितने सम्बन्ध एक साथ बनाए रखने हैं, यह सोच-विचार मेरा निजी था। अपनी जिन्दगी, अपना शरीर मैं एक दायरे विशेष में रखता रहा हूँ।

अजनबियों से भरी दुनिया में मेरा अपना कितना है, इसकी पहचान करता हूँ, उस पहचान के बाहर दूसरों का जो है, उसे स्वीकार करता हूँ। पर जो लावारिस हैं, जिसे दूसरे रख नहीं पाते उनके प्रति मैं सतर्क व्यक्तिवादी हूँ, उन परायों में कौन अपना होगा, यह देखता हूँ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
जीवन की मूक भाषा है जो मुझे अपनों के पास ले जाती है और जो पूर्णतया अपने नहीं हैं जो 'दूर के' हैं, उनके साथ सम्पर्क नहीं होने देती। शरीर की भाषा के गहन सामीप्य ने मुझे प्यार दिया है, पत्नी दी है, बच्चे दिए हैं, शामा, शोभा, निर्मल और नंदिता दी हैं। मेरा कद अधिक लम्बा नहीं है परन्तु लम्बे कद की औरतों ने मुझे घेरा है। कुछ पलम्वी प्रेमिकाएँ भी जिन्दगी में आई हैं।

विवाह के बारे में एक बार वीणा ने कहा था, 'शादी आपस में बाँटने का रिश्ता है। दो प्राणियों की एक-दूसरे के प्रति प्रतिबद्धता है, कमिटमैंट है।'

वीणा के साथ अनबन का एक कारण यह भी था कि मुझे ऑफिस से घर आकर घर में घुसे रहना पसन्द नहीं था। वीणा घर पर अकेली सारा दिन बोर होती होगी, इसका भी कभी मैं ध्यान न रख सका। रात देर घर लौटना मेरी आदत बन गई। वह अपने प्रति दया-भावना या आत्मदया से भर गई। मुझे दूसरे लोगों का साथ अच्छा लगता था। घुल-मिलकर रहना अच्छा लगता था। दूसरों के हाव-भाव, व्यवहार अच्छे लगते थे। दूसरे लोगों का संग उत्तेजक लगता था, उसमें एक आनन्द था। दूसरों के सामने हम अपना हृदय भले ही न खोलें पर बातों के आदान-प्रदान, हाथ या शरीर के स्पर्श एक चेतना उत्पन्न करते हैं, वह चेतना सामाजिक सम्बन्धों की प्रतीक हो जाती है।

कुछ औरतों के साथ मेरे सम्पर्क सम्बन्ध भावना के स्तर पर थे। उस आकर्षण में पलायन था, पलायन में आनन्द था। वीणा को न मेरे स्त्री मित्र पसन्द थे न पुरुष दोस्त। मैं अकेलेपन से हमेशा डरता रहा हूँ, पलायन में अकेला हो जाना जरूरी नहीं है। मेरे अनेक मित्र थे परन्तु कोई अत्यन्त विश्वसनीय या परममित्र हो, ऐसा नहीं था। वीणा हमेशा चाहती थी कि मैं अपने मित्रों को छोड़ दूं। शायद वह मेरे मित्रों से भय-भीत थी, कारण यह भी हो सकता है कि मेरे पुरुष मित्र वीणा में कुछ तलाशते थे। वीणा के कारण घर पर मित्रों का आना कम हो गया। फिर भी मेरे बाहर का संसार अपना था। हमारे घर का बेगानापन, अजनबीपन मुझे खाने लगा था।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्निग्धा में संदेह भावना है। वह दूसरों की मैत्री के बिना भी प्रसन्न रह सकती थी। मैं प्यार से न वीणा को सँभाल पाया और न ही स्निग्धा को सँभाल पा रहा हूँ। स्निग्धा हमेशा अधिक आयु की औरतों को पसन्द करती है। उन्हें माताजी, भाभीजी, चाचीजी कहकर खुश होती है। हमारे मित्र सांझे नहीं हैं। हमें अपने मित्र अलग-अलग चुनने पड़ते हैं। स्निग्धा मेरे मित्रों को पसन्द नहीं करती। वह कभी-कभी कुछ ज्यादा हाइब्रो हो जाती है, हमारा विवाह एक आवश्यकता के लिए हुआ था। हम दोनों ने उसे चुना था, यानी हमारी सहमति से हुआ है। परन्तु समय ने हम दोनों को एक टूटन दी है, थकावट दी है। मैं तो वैसे ही एक बिखरा हुआ इन्सान हूँ। स्निग्धा मेरे लिए समस्याएँ पैदा करने में खुश रहती है। मैं जिन्दगी के विस्तार के लिए अपनी दोस्ती को प्रायः बढ़ाता रहा हूँ। यदि स्निग्धा मेरे मित्रों या उनकी पत्नियों के प्रति उचित व्यवहार रख पाए तो शायद विवाहित जीवन के कुछ तनाव खत्म हो जाएँ। एक बड़ी समस्या यह है कि स्निग्धा लखनऊ से दिल्ली आई है। उसका कोई भी पुराना लखनवी सम्पर्क दिल्ली में नहीं है। वह इतनी अधिक घर में घुसी रहती है कि एक-दो बूढ़ियों को छोड़ उसका दायरा नहीं बना। कुछ महिलाओं से मैंने परिचय करवाया था, उनके साथ भी वह सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाई।

यह विवाह टूटेगा नहीं, पर इसकी सफलता के लिए हमें अपनी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को समझना होगा। स्निग्धा विचारों में प्रौढ़ है परन्तु हमारी आपसी अनमेल विचारधाराएँ हैं। भावनात्मक रूप से हम दोनों स्थिर हैं। एक-दूसरे का हम आदर करते हैं, मैं स्निग्धा की बात प्रायः मानता हूँ। हम दोनों एक-दूसरे से नफरत भी करते, हमारी भावना एक-दूसरे पर कुछ हद तक अन्योन्याश्रित हैं। इस सबके बावजूद हमारी शादी सफल विवाह नहीं है।

स्निग्धा शायद बचपन में स्वप्रेम में पड़ गई होगी, उसे लगता है लड़कों की तरह पाला गया होगा। यह ठीक है कि मैं घर में रहना पसन्द नहीं करता। दफ्तर से लौटकर थककर घर आऊँ तो पत्नी का सूजा हुआ मुंह देखने की मेरी हिम्मत नहीं रहती। स्निग्धा मुझे टोक सकती है,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
अपने बारे में बात करके समझा सकती है, परन्तु नहीं, वह हसद पसन्द है, भय, गुस्सा, चुप्पी, सन्देह उसे घेरे हैं। कभी-कभी वह मुझे अपमानित कर देती है।

हम सब प्यार करना चाहते हैं और हम दूसरों द्वारा हमें प्यार किया जाना पसन्द करते हैं। इससे हमारा जीवन समृद्ध होता है, हमारे मन में खुशी की भावनाएँ भर जाती हैं। मेरे दूसरी औरतों के साथ सम्बन्धों का मूल कारण यह हसद, चुप्पी, गुस्सा, भय और सन्देह का वातावरण रहा है। मैं किसी के लिए भी अपने को घुल-घुलकर जलाने या खत्म करने के पक्ष में नहीं हूँ। मुझे साथी चाहिए, वे पुरुष हों, स्त्रिया हों, कोई फरक नहीं पड़ता। स्निग्धा मुझसे सब छीनकर मुझे नियन्त्रित करना चाहती है, पर सब छोड़ने के बाद भी वह मुझे अपना सामान्य व्यवहार दे पाएगी ? अपनी आदत तोड़ पाएगी ? नहीं, वह ऐसा नहीं करेगी। वह और चुप्पा हो जाएगी। वह और कुढ़ेगी।

जब कभी मेरे मित्र हमारे घर आते हैं, हम इकट्ठे बैठते हैं, हँसते हैं, बातें करते हैं, मजाक करते हैं, खुश रहते हैं, सहज रहते हैं, परन्तु स्निग्धा बराबर अपना चिर-परिचित तनाव बनाए रखती है। स्निग्धा के सामने मेरे स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है। मैं असहज हो जाता हूँ। वह मेरी हर मैत्री को अपने प्रति एक धमकी मानती है। उसमें सहन-शक्ति नहीं है। काश मैं उसे खुश रख पाता !

मेरा दोस्तों या औरतों के साथ समय काटना स्पष्ट करता है कि मुझमें और स्निग्धा में खींचतान है। मेरा स्निग्धा के साथ रोमांस किसी पागलपन से नहीं जन्मा था, एक सामान्य कारण से हम एक-दूसरे से जुड़े हैं। स्निग्धा मेरी आवश्यकताएँ नहीं समझती। वह अप्रसन्न रहती है, क्यों, उसे चाहिए मुझसे पूछे। बातचीत द्वारा सुलझाने का प्रयास करे। क्या यह सही नहीं कि उसकी अपनी प्रतिक्रियाएँ तर्करहित हैं, अस्वाभाविक हैं। वह स्वयं अपने जीवन को एकांगी बना रही है। क्यों नहीं वह अपने हमउम्र मित्र ढूँढ़ती ? अपने लिए चित्रकला या एम्ब्रायड्री इत्यादि के शौक क्यों नहीं पालती। घर में घुसे रहने से आदमी बाहर के वातावरण में अस्वस्थ हो जाता है। स्निग्धा एक अस्वस्थ औरत है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बगीचे में वह नये पौधे नहीं उगाती। कभी सोफों या बैडशीट्ज़ के लिए शापिंग पर नहीं निकलती।

विवाह के रिश्ते में हमारा प्यार नहीं गूढ़ हुआ, हम एक-दूसरे के अधिक समीप नहीं हो पाए, सिर्फ कामचलाऊ समझौते से जिन्दगी की गाड़ी हम ठेलते चले जा रहे हैं। ठेलते रहेंगे। शादी इसलिए नहीं बिखरेगी कि हमारे बच्चे हैं, मैं उन्हें प्यार करता हूँ। अन्यथा स्निग्धा तो अनेक वार अटैची केस बाँधकर घर छोड़ने के लिए तत्पर हो जाती है। ऐसे अवसरों पर मैं झुका हूँ। बच्चों की खातिर या शायद स्निग्धा के प्रति दयाभावना के कारण।

एक बार इस विषय पर स्निग्धा से चर्चा की तो कहने लगी, 'तुम यह समझते हो कि मैं तुम्हें समझती नहीं। तुम अपनी औरत मित्रों से क्या प्लेटोनिक सम्बन्ध रखते हो ? एक पुरुष और औरत में विना सैक्स को बीच में लाए वर्षों तक दोस्ती नहीं चल सकती। घनिष्ठता और विश्वास के कारण तुम जो करते हो, वह मैं भी समझती हूँ।'

मैं चुप नहीं हूँ सुन रहा हूँ। स्निग्धा सच कह रही है पर मुझे अपना बचाव करना भी आता है। मैं कहता हूँ, 'पर हर वक्त शक की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। यह सही नहीं है कि यौन सम्बन्धों के बिना स्त्री-पुरुष एक-दूसरे से जुड़ ही नहीं सकते।'

मैं प्राय: मन में कुछ प्रश्न उत्पन्न करता हूँ, उनके उत्तर देता हूँ। ये प्रश्न हैं—प्यार का अर्थ क्या है ? प्यार की प्रकृति क्या है ? प्यार का स्वरूप क्या है ? मैत्री क्या है, यौन के रिश्ते क्या हैं, क्यों हैं ? क्या स्त्री-पुरुष वस्तुत: प्लेटोनिक प्यार का रिश्ता नहीं रख सकते ? वैसे मैं तो कहूँगा कि शारीरिक सम्बन्ध हो जाना कोई गम्भीर बात नहीं है। पर रिश्तों का बोझ नहीं होना चाहिए। दोस्ती में जब हम दिली बातें कह देते हैं, दोस्ती हमेशा लव अफेयर नहीं होती जैसाकि स्निग्धा सोचती है। सैक्स का रिश्ता भी जरूरी नहीं है कि लव अफेयर हो। दोनों अलग-अलग चीजें हैं। दोस्ती में स्वामित्व की भावना नहीं होती। एक-दूसरे को समझने और उनकी समस्याओं के प्रति सहानुभूतिपरक रुख होने की भावना होती है। मित्र एक-दूसरे पर आश्रित नहीं होते !

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'पर, तुम्हारी कौन-सी दोस्त तुम पर आश्रित नहीं है ?' स्निग्धा कहती है, 'उन सबकी समस्याएँ तुम्हारी समस्याएँ हैं ।'

'देखो स्निग्धा, कुछ के साथ मेरे जो भी ताल्लुकात हैं, वे तथाकथित प्रेम सम्बन्धों से बहुत गहरे हैं ।'

'दोस्ती और सामाजिक आधुनिकता के नाम पर तुम जो भी करते हो, वह एकतरफा नहीं है। शारीरिक भूख किसी भी तरह बीच में आएगी। शारीरिक इच्छाएँ मन से प्रेरित होकर गतिशील होंगी, फिर श्लील-अश्लील का धैर्य टूटेगा। समय की सीमाएँ टूटेंगी ।'

'तुम मनोविज्ञान के सिद्धान्तों को बिना समझे सब पर लागू करती हो ! हमारे सैक्स आर्गन हैं, वे चंचल हो जाते हैं। हमारा मन है, भटक जाता है । और कभी-कभी हमारी चेतना झंकृत हो जाती है। परन्तु सब रिश्तों की परिभाषा बन जाए, खाने बन जाएँ, जालीदार सिलसिले तैयार हो जाएँ—यह थ्योरी है। दोस्ती, प्यार, सैक्स इन कोटियों में नहीं रखे जा सकते । उनका विकास अबाधरूपेण होता है । मनोभावना स्वेच्छा से चलती है। इसीसे रिश्ते बनते हैं। मैं यह कह रहा हूँ कि जब तक मनोभावनाएँ नियन्त्रण में हैं; दोस्ती और सैक्स पृथक्-पृथक् होंगे। पर उनके जुड़ जाने के लिए, एक होने दिए जाने के लिए परिस्थिति आएगी तो हम कुछ नहीं कर पाएँगे। पर्वतीय झरने की तरह भावनाएँ उमड़ पड़ेंगी ।'

स्निग्धा कहती है, 'तुम मेरी ही बात कह रहे हो। प्लेटोनिक प्यार हो ही नहीं सकता। यह भले ही ठीक हो कि परिचित स्त्री-पुरुष यदि चाहें तो प्यार और मैत्री को सैक्स से पृथक् रख सकते हैं ।'

मैं कहता हूँ, 'प्यार, दोस्ती, सैक्स अपने में एक सम्पूर्ण वातावरण लिये रहते हैं। अलग-अलग व्यक्तियों के लिए उनका अलग-अलग अर्थ हो जाता है । वे शब्द पर्यायवाची या समानार्थक नहीं हैं ।'

'तुम सैक्स को प्रधानता देते हो, वह एक शक्तिशाली भाव है। प्यार एक कृति है, वह नया जीवन बनाता है। यह कृति ही प्रेरणा है। यह कृति…'

मैं कहता हूँ, 'तुम गलत कह रही हो। प्यार की स्थिति से एक सृजन

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जन्मता है। उसी प्रकार का सृजन जैसा कविता, कला या साहित्य में होता है। वह अश्लील, सत्य, शिव और सुन्दर भी है। भौतिक, आधि-भौतिक भी है। वह शरीर से ऊपर है। आनन्द की स्थिति है। दूसरी ओर यह यौन एक शारीरिक आवश्यकता है अनिवार्य विकृति। इसमें संसार को चलाए रखने के लिए सन्तानोत्पत्ति भी शामिल है, अगर यह प्यार है तो उसमें एक गर्व है, परिपूर्णता है। प्यार त्याग है, भक्ति है, पाप है, पुण्य है, अपराध है, खुशी है, ज़ज़्बाती आजादी है। भय है, विजय है, युद्ध है, शान्ति है, जन्म है, मृत्यु है। प्यार ईश्वर है, सेवा है, प्यार मानवता है।'

'तुम हमेशा शब्दों के जाल में सारी फिलासफी को एकरूप करते हो। तुम्हारी इसी योग्यता की मैं कद्र करती हूँ।'

'यौन भावना शरीर से सम्बन्ध रखती है। शरीर का विकास वातावरण और अनुभवगत ज्ञान पर आश्रित रहता है। यह एक ग्रहण किया हुआ स्वाद है, हमारे अनुभव से उत्पन्न होकर हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यक्तिगत स्वरूप पर टिका है। जन्मतः हमें सिर्फ प्रकृति मिलती है, उसकी आकृति, उसका स्वरूप, उसकी आवश्यकता, मात्रा हम स्वयं सीखते हैं। हमारी भावनाएँ और स्थितियाँ उन्हें नियन्त्रित करती हैं।'

'स्त्री और पुरुष की दोस्ती में भावगरिमा और स्वाभाविक यौनाकर्षण के कारण सैक्स लाइफ आ ही जाती है।' स्निग्धा अपने प्वाइंट पर फिर बल देती है।

'मैं मानता हूँ दोस्ती से पुरुष की पुरुष के साथ दोस्ती का अर्थ ज्यादा व्यापक है। औरत और मर्द में 'वह भावना' आ जाती है। हारमोन्ज हैं, सौन्दर्य है, एकान्त है, स्थितियाँ है···बाहर बरसात हो रही है, बिजली चमक रही है, भीतर स्त्री-पुरुष मित्र रहकर ही बात करते रहेंगे ? यह सम्भव ही नहीं—पर स्थिति का चित्रण दर्शनीय है। या फिर अकेलापन है, बुझा हुआ मन है, अस्तित्व की अर्थहीनता सामने है, खालीपन का बोझ है। हर चाहना यौन की माँग करती है। शरीर का स्पर्श, स्पर्श का सुख अवश्य ही प्राप्य स्वाभाविकता है।

स्निग्धा चुप है। मैं कहता हूँ, 'स्निग्धा, क्यों न हम तीसरी सन्तान के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
विषय में सोचना शुरू करें।'

'तुम्हारे ये दो ही बच्चे हैं, यह मैं स्वीकार नहीं करती। जिस तरह तुम्हारा अतीत रहा है। तुम्हारी मैत्रियाँ, तुम्हारे प्यार, तुम्हारे सम्पर्क कभी गिने ही नहीं जा सकते। शादी भी दो बार की। प्यार के रिश्ते भी बनाए रखे, अब भी बनाए हुए हो—तुम्हारे जीवट की मैं भी प्रशंसक हूँ। तुम अपनी तरह के अकेले आदमी हो, न झूठ, न फरेब।'

'मैं अपनी ओर से तुम्हारे प्रति जितना वफादार हो सका हूँ, उतना वफादार रहा हूँ। मैं वस्तुत: बहुत कम औरतों से रिश्ता रखे हूँ—तुम जानती हो, मुझे सब औरतें आकर्षित नहीं करतीं। मेरे जीवन की अपनी ग्रन्थियाँ रही हैं, मैं उन्हीं औरतों में उलझता हूँ जिनमें मेरी तरह की कोई अपूर्णता है। अन्य के प्रति मैं अपनी भावनाओं को दबा लेता हूँ। तुमसे झूठ नहीं कहूँगा स्निग्धा। तुम मेरी पत्नी हो। दस वर्ष के लगभग हमें साथ रहते हो गए हैं। मेरे किसी भी सम्बन्ध ने आज तक तुम्हें प्रत्यक्ष प्रभावित नहीं किया। किसी प्रकार की भावात्मक मुसीबत तुम्हारे लिए मैंने पैदा नहीं की। आज तक किसी दूसरी औरत ने मेरा घर नहीं तोड़ा। वीणा ने जो किया, उसके लिए तुम जिम्मेदार नहीं हो। तब तुम्हारा अस्तित्व मेरे आकाश में नहीं था। मैं कभी कुछ छिपाता नहीं हूँ।'

'मैं जानती हूँ चन्दर तुम कुछ नहीं छिपाते, इसीलिए मैं तुम्हारे साथ, एडजस्ट करने की कोशिश करती हूँ। हम अलग नहीं हो सकते।'

'जानती हो, पुरुष-स्त्री की दोस्ती का आधार प्यार सम्बन्ध होता है परन्तु शीघ्र ही समझदारी से ये सम्बन्ध हमारे चरित्र को उदात्त भी बनाने लग जाते हैं। शारीरिक आकर्षण बुझ जाते हैं। कभी-कभी की बेवफाई क्षणिक आवेग के कारण आती है। हमें दोस्तों की आवश्यकता रहती है, हम सहानुभूति, सहयोग और विश्वास के बिना आगे नहीं बढ़ सकते। मैं अपने यौन व्यवहार को अपने पूरे व्यक्तित्व से पृथक् नहीं देखता। मित्र और प्रेमी केवल धारणा और व्यावहारिक चरित्र पर आश्रित हैं। तुम्हें जो अन्याय लगता है, उस पर मुझे तुम कुछ कहकर, मुझसे स्थिति का स्पष्टीकरण लेकर, चर्चा करके अच्छा वातावरण बना
Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सकती हो ?'

'अभी तुम तीसरी सन्तान की बात कर रहे थे। आर यू सीरियस ?'

'तुम बताओ।'

'पहले दो के लिए तुमने मुझसे पूछा था ?'

'वह जवानी का जोश था !'

'तुम अभी चालीस के भी नहीं हुए, अपने को बूढ़ा क्यों कहते हो ?'

'तुम्हारी गम्भीरता ने मुझे बूढ़ा बना दिया है।'

स्निग्धा मुस्कराती है। कहती है, 'तुम्हें देखकर शेर कहने को मन होता है !'

'सुनाओ कुछ !'

'पहले तुम्हारे लिए ह्विस्की और अपने लिए नींबू पानी का प्रवन्ध कर लूं !' वह भीतर चली जाती है। ट्रे लिये आती है। सधे हुए हाथ से मेरे लिए ह्विस्की डालती है !

'सुनाओ स्निग्धा, कुछ शेर सुनाओ !' मैं अपने दोनों पैर टेबल पर टिका देता हूँ और आरामकुर्सी पर अधलेटा-सा बैठ जाता हूँ।

वह कहती है, फैज़ का शेर है—

'यूँ ही गाता रहूँ
गाता रहूँ तेरी खातिर,
गीत बुनता रहूँ, बैठा रहूँ
तेरी खातिर।'

मेरे मुँह से स्वाभाविक वाह-वाह निकलती है। वह और सुनाती है—

'फूल चुनना भी अबस, सैरे बहाराँ भी अबस
दिल का दामन ही जो, क़ाँटों से बचाया न गया।

यह शेर जज्बी साहब का है। ताज नाम के शायर फरमाते हैं—

तुम्हारे नाम ही पर जीने वाले
तुम्हारे नाम पर मर रहे हैं।

इन्हीं का दूसरा शेर है—

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शमा दहलीज पर रोशन रखो
क्या अजब है कि वो आ ही जाए।

फैज जी का शेर सुनाती हूँ—

आखिरी बार है लो मान लो इक यह भी सवाल
आज तक तुमसे मैं लौटा नहीं मायूसे जवाब !

शाकी साहब का एक शेर है—

ख्याल आया जब अपनों का, तो रफ्ता याद आए,
कभी ताने, कभी शिकवे, कभी रूठे हुए चेहरे।

मजाज साहब का एक शेर अर्ज़ है—

जी में आता है कि अब अहदे वफा भी तोड़ दूँ,
उनको पा सकता हूँ मैं ये आसरा भी छोड़ दूँ।

सुनो शायद यह भी ताज का शेर है—

मैं सारी जिन्दगी नाकाम ठहरा
मगर इसमें जरा-सा नाम ठहरा।'

मैं दूसरा पैग भरता हूँ। उठकर धीरे-से स्निग्धा के ओठ चूम लेता हूँ। फिर कहता हूँ 'स्निग्धा, अगर तू यह वातावरण बनाए रखे तो मैं तुम्हारे पास रात-दिन बैठा रह सकता हूँ। तुम मुझे सहेजो और भटकने से बचाओ !

'तुम तीसरे बच्चे की बात कर रहे थे !' वह खिलखिलाकर हँसती है। उसके चेहरे पर खुशी है, वह बख्श कर रही है। जिन्दगी कभी भी शुरू की जा सकती है।

बच्चों के स्कूल जाने के बाद से स्निग्धा और मैं पुनः जीवन के प्रारम्भिक विवाहित दिनों में लौटना चाहकर भी लौट नहीं रहे थे, लौट नहीं पा रहे थे। एक अविकसित व्यक्ति के लिए यह कठिन स्थिति होती, परन्तु स्निग्धा या मेरे लिए यह मुगालतों की शुरुआत थी। स्निग्धा के साथ जिस तरह जिन्दगी शुरू की थी, वह जल्दबाजी थी या गलती, कहना मुश्किल है। हमारा परिवार सीमित था इसलिए सामाजिक दायित्व भी सीमित रहे। हम एक संस्थागत, रूढ़िगत समाज के सदस्य तो नहीं ही बन पाए। व्यक्तिवादी अति की ओर बढ़ते हुए हम एक प्रत्येक निर्णय

Funding by IKS-MoE

असावधानी से, नाबूझी से लेने के आदी हो गए थे। दूसरी बार त्रुटि करना शायद नाबूझी हो, न अन्धा प्यार था, न हमारा विवाह लाटरी या सट्टा था, दो प्रौढ़ व्यक्तियों का अप्रौढ़ निर्णय था या कुछ और कह नहीं सकता। हमारे जैसे विवाह परिवार की संस्था के लिए आतंक हैं, हम इस संस्था की जड़ें काट रहे हैं। हम या सिर्फ मैं ? शोभा ने कहा था उस सुबह, सेवाय होटल के रात के बाद की सुबह, 'विवाह एक जीवन दर्शन पर आधारित होकर, परन्तु हमारे देश में उस दर्शन को दो व्यक्तियों के सविवेक प्रयास से उत्पन्न नहीं कहा जा सकता, औरत की उपयोगिता खत्म होने के बाद उसे उतार फेंकना अनुचित है।'

मैं कहता हूँ, 'शोभा, आदर्श खुशी की खोज या खुश रहकर रोमांस को सफल रख पाना यथार्थ में नहीं होता। जरूरत है एक सफल साझेदारी की, आपसी सम्मान, प्यार और परिवार को बनाए रखने की भावना की।'

'क्या पूरी जिन्दगी फार्मूलों में बाँधी जानी चाहिए ?'

'नहीं। पर भावनात्मक स्थिरता, आत्मविश्वास, एक-दूसरे के प्रति विचारों में स्थिरता, दोस्ती, समर्पण की भावना जैसे कई शब्द हैं जो फार्मूले तो नहीं कहे जा सकते परन्तु इन्हें फार्मूलों की तरह आजमाया जरूर जाया जा सकता है।'

'तो भी शारीरिक आधार या संतोष और क्या कहते हैं—कम्पेरेबिलिटी की आवश्यकता रहेगी। कहीं तो संतुलन रखना होगा। जो मैं और तुम नहीं रख पाए हैं, जो हमारी त्रुटियाँ हैं उन्हें खूबियों में बदलना होगा।'

मैं हँसता हुआ कहता हूँ, 'तुम अपनी पराजय के साथ मुझे क्यों एक पराजित व्यक्ति मान रही हो ? मैं जिसे चाहता हूँ, जिसके प्रति चाहना रखता हूँ, जिसे समझता हूँ, उसे अपनत्व के दायरे में लाता हूँ। देखो, मैंने दो शादियाँ कीं, मेरे अनुभव अपने हैं, पर स्निग्धा और मैं एक-दूसरे के लिए ही बने हैं, यह मैं नहीं मानता। शादी की सफलता की कोई गारंटी कहीं नहीं होती। सफलता के लिए एक जीवन्त कोशिश भर की जा सकती है। चेतना के निभृत क्षणों में लिये गए निर्णय त्रुटिपूर्ण भी हो

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सकते हैं।'

मैं अधपके बालों वाला अधेड़ भले ही नहीं हूँ परन्तु उमर में एक छोकरा भी नहीं, मेरे अपने व्यवहार में कमी है। सामाजिक अवरोधों की मेरे जीवन में कोई कीमत नहीं रही। प्यार को कभी मैं भावनात्मक निर्णय में कसकर नहीं बाँध सकता। पूरी जिन्दगी दीवानगी नहीं है। मेरे लिए विवाह धर्म भी नहीं रहा, बन्धन भी नहीं। मैंने कभी दूसरों के विवाहों को तोड़ने कीकोशिश नहीं की, मेरे सम्बन्ध रहे हैं, उनके लिए मेरे पास कोई व्याख्या भी नहीं है। विवाह की असफलता के कई कारण हो सकते हैं, कभी जब विवाह एक संस्था न बनकर एक व्यक्तिगत तजुर्बा हो जाता है तो दरार आ जाती है। आर्थिक चिन्ताएँ, संयुक्त परिवार अथवा यदि परिवार बहुत सीमित हो, तो, 'यह सीमित' होना ही कारण बन सकता है। कदाचित मेरे जीवन में यह निर्बन्धता, उन्मुक्ति या मेरा अकेलापन सम्बन्धों के टूटने का कारण रहा है। परन्तु मेरे जीवन की सर्वाधिक बाधक बात है कि मेरे और मेरी पत्नियों की रुचियों में कभी साम्य नहीं रहा। मैंने दूसरी औरतें भी चुनीं, उनमें भी रुचि विभिन्नता की बीमारी रही। शोभा, शामा और कुछ हद तक नंदिता में तो सतही साम्यता भी नहीं थी। निर्मल, उसके पुराने प्रेमी के मेरे महरूम दोस्त होने के कारण जो साम्यता पैदा हुई थी वह भी सामान्य प्रकृति की साम्यता नहीं थी।

पुंसत्व या उसका विपरीत या यौनाचरण की गति या वेग मुझे कभी चिन्तित नहीं करते परन्तु जीवन में हमेशा ऊब से उत्पन्न तनाव बने रहे या समृद्धि से आगत बीमारियों ने मुझे प्रभावित किया। सम्बन्धों का बासी हो जाना भी अपना महत्त्व रखता है। मेरे लिए यौनेच्छाओं की पूर्ति के लिए कभी कोई मानसिक दवाव नहीं पड़ा। जो मुझे मिला, मुझे उससे अधिक की चाहना व्यक्ति विशेष से कभी नहीं रही। शामा निम्फोमीनिया से पीड़ित थी परन्तु मैं कभी सैटायरेसिस या अतिवासना से पीड़ित नहीं रहा। कुछ समय तक मुझे स्निग्धा में अतिवासना देखने को मिली। फिर उसमें ठंडापन अचानक आ गया। स्निग्धा की इच्छाएँ सामान्य थीं, मेरी अपनी यौनेच्छा सामान्य है या नहीं, कहना सादी बात

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं। मेरे स्वार्थ ही मेरी सीमा हैं।

शामा ने दीक्षित को छोड़ा था तो मैंने वीणा को। वीणा अधिक सोने की आदी थी, शायद इसी कारण वह मेरी सैक्स इच्छाओं से सहमत न हो। उसके शरीर का वजन लगातार कम होता जा रहा था। जब हमारी शादी हुई तो वह स्वस्थ थी, ताजगी से भरी थी। यौन के प्रति मैं दिन में अधिक से अधिक दो बार पर विश्वास रखता था और माह में कुल मिलाकर तीस बार। शामा मेरे ऐसे हिसाब-किताब पर हँसती थी। साठ और तीस में भी कोई तुक है?

स्निग्धा सुस्त है, मैं अतिशय चुस्त, शायद हमारे सम्बन्धों में यही बाधक तत्त्व हो। उसने अपनी समस्याओं की मुझसे चर्चा क्यों नहीं की? मुझमें क्या कमी है? स्निग्धा की भावनाओं की मैं कद्र करता हूँ। उसे डाक्टरों से राय लेनी चाहिए क्योंकि पूर्वानुसार वह स्वेच्छा से सैक्स सम्बन्धों के प्रति समर्पित नहीं है। वह मुझे सामान्य प्यार देना भी भूल जाती है। वह जिन्दगी के सात साल जी चुकी है। सैक्स पर पाश्चात्य सिद्धान्त पढ़-पढ़कर वह अपना दिमाग खराब कर रही है।

कभी-कभी सोचता हूँ कि इस रिश्ते को भी काट दूं। परन्तु बच्चों से उनकी माँ को अलग करने का विचार अच्छा नहीं लगता। स्निग्धा के साथ बौद्धिक चर्चा करना कभी-कभी अच्छा लगता है। परन्तु जब वह अपने नाम के विपरीत आचरण करती है और मुर्दानगी भरी चुप्पी का कफन ओढ़ लेती है तो एक खीज से भरकर मैं जिन्दगी के नये आवरणों और आयामों की खोज करता हूँ। मैं अपनी कमियों से परिचित हूँ। परन्तु सबकुछ होने के बावजूद मेरे समस्त रिश्ते रिक्ति और आवश्यकता से जन्मते रहते हैं। इन रिश्तों की शुरुआत भी औरत है, मध्य और अन्त भी। वह एक लकीर की तरह सीधी चलती चली जाए, एक मेज (Maze) न बने और स्पष्ट सपाट समता पर आधृत रहे तो जीवन का सुख अमृत हो जाता है। तनहा जिस्म, रूहें, आरज और खामोश निगाहों के रिश्ते लाजमी हो जाते हैं। अपने दूसरे की पहचान मिट जाती है। सम्पूर्ण रिश्ते आधिभौतिक होकर मान्यताओं से ऊपर हो जाते हैं। मुझमें ऐसी क्या विशेषता है जो मुझे अपने को भटकन और भटकावों से

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

टकराकर सफलता दिलाती रही है। मेरा हर रिश्ता एक अपराध रहा है, हर रिश्ते का हर अंश अपराध रहा है परन्तु मेरे मन में अपराध भावना नहीं रही है। सहज सामाजिक विश्रृंखलन अपराध न होकर एक बीमारी भी तो हो सकता है। हाँ, पर नहीं, यह एक जिन्दगी का तरीका है मेरे लिए।

स्निग्धा कहती है, 'आपने मुझे क्या सुख दिया है ?' 'सुख ? स्निग्धा सुख एक पलायन है, संघर्षों से, चुनौतियों और टकरावों से भागना मात्र सुख देखा जाता है दुःख के अनुपात में, अनुभव की तुलना में। तुम जिस मिराज के पार के ओयासिस के लिए तरसती हो, सुख के मिराज के लिए, उस तक पहुँचने के लिए रेगिस्तान और कँटीले रास्तों से लम्बी यात्राएँ करनी पड़ती हैं—फिर मिराज मिलता है रेगिस्तान की मृगतृष्णा—अप्राप्ति और फिर प्रयास करना पड़ता है मिराज को ओयसिस में बदलने के लिए। रेत के टीले पार करने पड़ते हैं, उनसे गुजरते हुए इन सेण्ड डियून्ज का सौन्दर्य याद नहीं रहता···सुख मिराज के उस पार का ओयसिस है। सोनचिड़िया है, उसे देखना क्षणिक तृप्ति तो देगा पर स्थाई प्राप्ति नहीं होगी।'

स्निग्धा कुछ क्षण चुप रहती है। फिर कहती है, 'मैं एक ऐसे पति की कल्पना करती थी जो बहुत बड़ा वकील हो, जिसकी शोहरत हो, घर किताबों से भरा हो। कानून पर बहसें होती हों, तहसील-कचहरी से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक जो अपने नाम से दूसरों को चौंका देता हो।'

'और तुम्हें मैं मिला।'

'कुछ ऐसा ही हुआ, तुम अच्छे इन्जीनियर हो, बड़ी नौकरी है, पार्टनर शिप में बिजनैस है, पर तुम वो तो नहीं हो जो मैं चाहती थी।'

'स्निग्धा, परिवार है न, बड़ी छोटी यूनिट है, इसे भी मैनेज करना आसान नहीं, तुम अगर तर्क पर न जाओ तो बात तुम्हारी समझ में आएगी···यह मैनेजमैंट व्यक्ति के लिए भी जरूरी है, समष्टि के लिए भी—मैं हूँ न, तुम मुझे नहीं समझतीं···वीणा थी न, वह भी नहीं समझती थी। मुझे खीजकर बात करना पसन्द नहीं। तुम्हारे एक क्षण की खीज मुझे दो सप्ताह तक विचलित करती है। मन भटकता है, तुम्हारे प्रति

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

द्वेष और अनिश्चय की भावना पैदा होती है, फिर मुझे दूसरों की जरूरत पड़ती है, तुम मुझे दोष दोगी पर यहाँ तुम तर्क लाओ तो बात स्पष्ट होगी··· ।'

'हाँ, पर यह बात तो मुझ पर भी लागू होगी। मुझे भी तुम्हारी तरह का हो जाना होगा ।'

'हिम्मत की बात है, तुम कह रही हो, करोगी तो मेरी तरह नहीं हो पाओगी। वीणा ने किया था न एक प्रयास। मैंडन अपीरैंस में विकेट खो गई। तुम भी ट्राई करो···।'

'मैं तर्क की बात कर रही थी। मैथेमेटीकल लाजिक। ए, वी, सी तक सब सीमित करके वीणा जैसी स्थिति नहीं होगी।'

'यही मैं कहता हूँ, प्रेक्टीकली मैं जिस यातना से गुजरता हूँ, वह मेरा ही अनुभव है। इन रिश्तों से मैं तुम्हारे प्रति अन्याय करता हूँ, वह अलग बात है।'

स्निग्धा अनायास फूट पड़ती है, उसे रोना आ जाता है। मैं उसकी आँखों से आँसू पोंछता हूँ और कहता हूँ, 'क्या बात है ?' वह कुछ भी नहीं कहती। मैं बार-बार कहता हूँ 'स्निग्धा क्यों रोती हो···बताओ न।' वह रोती रहती है।

'तुम क्यों रो रही हो···आखिर कोई कारण तो होना चाहिए।'

वह धीरे-धीरे कहती है, 'कारण···हाँ कारण तुम पूछते हो, तुम हर बात की तह तक जाते हो, गहराई तक जाकर उसका अर्थ ढूंढते हो। तुम बुद्धिवादी हो, पर तुम्हें अपनी जिन्दगी को इस तरह गला-गलाकर खत्म करने की जरूरत क्यों है ? तुम्हारी सच्चाई क्या है ? तुम क्यों हो यह सब ?'

जिन्दगी में पहली बार मुझे इस प्रश्न का सामना करना पड़ा। मैं जानता था इस प्रश्न का कभी न कभी उठना सम्भव होगा, मुझे उत्तर देना पड़ेगा। पर अभी, इसी क्षण यदि उत्तर दे दिया तो—मुझे झकोरते हुए स्निग्धा कहती है, 'मुझे तुम उत्तर दो। बोलते क्यों नहीं हो ? बोलो।'

'स्निग्धा, जिन्दगी एक नदी है, उसके बहाव में पवित्र-अपवित्र सभी बहता है, यह कहूँ तो तुम्हें सन्तोष होगा ?'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'नहीं, यह बात टालना मात्र होगा।' उसके आँसू थम गए हैं।

'यही सही, तुम्हारा प्रश्न मुझे याद है, समय पर…'

'मैं दोषी हूँ, मेरे माँ-बाप ने तुम्हारे बारे में बारीकी से छानबीन की होती तो शायद मैं तुम्हारी पत्नी नहीं होती।'

मैं हँसते हुए कहता हूँ, 'एक अच्छा वकील अपने केस का मूल मुद्दा भूल सकता है यह मैं पहली बार देख रहा हूँ। हमारी शादी प्रेम विवाह ही तो थी। क्षण में बहकर तुम या मैं या हम दोनों त्रुटि कर गए या सही फैसला कर बैठे यह निर्णय मैं और तुम नहीं कर सकते। और शादी के सात-आठ साल बाद मूल सुधार करना लाभदायक भी तो नहीं।'

'तुम हर चीज को अपने वाग्जाल में बाँध लेते हो, कह देते हो, तुम दुराव-छिपाव नहीं करते, स्पष्ट कह देते हो, मैं इससे तुम्हारा आदर करती हूँ।'

'और ?'

'और तुम्हारी पत्नी हूँ इस नाते तुम्हारे हित की बात भी सोचती हूँ।'

'यानी तुम…'

वह बीच में ही बात काटते हुए कहती है, 'यानी-वानी नहीं, मैं जो हूँ वह दूसरी नहीं होगी। सात फेरों के बन्धन के कारण।'

'फेरे सात होते हैं या चार ?'

'सात ही होते हैं। क्यों ?'

'ये फेरे-वेरे कुछ नहीं, सिर्फ भ्रमजाल है, बाँधने मात्र के लिए।'

'चलो, आज कोई पिक्चर देखते हैं।'

'कौन-सी पिक्चर ?'

'कोई भी, हिन्दी-अंग्रेजी किसी भी भाषा की पिक्चर।'

'अखबार लाओ, देखें क्या-क्या, कहाँ-कहाँ लगा है।'

वह अखबार लाती है। एक बहुत पुरानी अंग्रेजी फिल्म है—दि ग्रेट डिक्टेटर—चार्ली चेपलिन की। मैं कहता हूँ, 'ठीक है, शीला में पूछते हैं अगर किसी शो का टिकिट मिल जाए तो।' शीला में फोन लगाकर टिकिट छः से नौ के लिए बुक करवाता हूँ।

Funding by IKS-MoE

स्निग्धा कहती है, 'आज डिनर मैकडो में लेंगे…चाईनीज खाना।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'ठीक है, पर फिल्म शुरू होने में बयालीस मिनट हैं, तुम्हें तैयार भी होना है।'

'मैं तैयार बहुत जल्दी हो जाती हूँ···बस, तुम भी कपड़े बदल लो। तुम्हारी आज पीने की छुट्टी।'

'मैं पहले भी कहाँ बहुत ज्यादा पीता हूं।'

वह तैयार होने चली जाती है। मैं सोचता हूँ—औरत है न, बहुत जल्दी पिघलती है, कभी सामान्य नहीं होती। अभी आँसू थे···अभी प्रश्न थे और अभी पिक्चर की बात। मेकेडो में डिनर की बात···रात घर लौटेंगे तो फिर वही पत्नी का कोमल रूप या 'आज नहीं' की रटन, वही रुटीन···पर स्निग्धा के साथ मैं कभी-कभी अन्याय तो करता ही हूँ, उसके प्रश्न का उत्तर मुझे आज नहीं तो जल्दी ही देना होगा।

गर्मियों की छुट्टियों में अबु और इमा दिल्ली की गर्मी में आ गए हैं। हमारे घर के बाहर सड़क के उस पार एक मैदान है। मैदान के एक कोने में इन दोनों ने टटीहरी के अण्डे देख लिए हैं, कुल चार अण्डे हैं। दोनों ने उन पर बैठी टटीहरी देखी है। यह पक्षी सारा दिन 'डिडयू डू इट, डिडयू डू इट' जैसे आवाज निकालता है। जिस छोर पर अण्डे दिए हैं उधर पार्क का वह हिस्सा है जहाँ झाड़ियाँ हैं। एक टटीहरी झाड़ियों के पीछे पहरा देती है, एक अण्डों पर बैठती है, दूसरी सामने की ओर रहती है। अबु और इमा ने अपनी खोज में इन पक्षियों का व्यवहार अध्ययन कर लिया है। जब वे दोनों बैठने वाली टटीहरी के पास जाते हैं तो टटीहरी उठ जाती है। इन्हें कुछ नहीं कहती, परन्तु आगे वाली टटीहरी आसमान पर उड़ते हुए इनके सिर का चक्कर लगाती रहती हैं। कुत्ते, बिल्ली, पशु या अन्य पक्षी यहाँ फटक भी नहीं सकते। अबु और इमा अण्डे उठाकर हमारे घर के लॉन में ले आए हैं। साथ ही तीनों टटीहरियाँ भी आ गई हैं। दो घण्टे वे चिल्लाती रहीं। अबु और इमा द्वारा चुना हुआ स्थान इन्हें पसन्द आ गया है शायद। फिर वही पुरानी रुटीन शुरू हो गई है। 'डिडयू डू इट' की आवाज सारा दिन-रात आती रहती है। शुरू-शुरू में रात के समय इस तीखी आवाज से हमारी नींद में खलल आने लगा। बच्चों को इस पक्षी का व्यवहार बहुत

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रोचक लगता है। वे हमें शाम को इनकी सारे दिन की गतिविधि का विवरण देते हैं। कैसे आगे दाली टटीहरी ने उड़कर कुत्ते का कान नोंच डाला, किस प्रकार अन्य सभी पक्षी क्षेत्र से भाग गए हैं। बिल्ली दुम दबाकर भाग खड़ी होती है। यह पक्षी बड़ा दबंग किस्म का है, सारा दिन गुण्डागर्दी करता है, आतंक फैलाता है। चार अण्डों की रक्षा के लिए इतना शोर करता है। अबु और इमा का दखल देना इन्हें ज्यादा पसन्द तो नहीं है परन्तु शायद बाहर मैदान से अधिक सुख-सुविधाएँ इन्हें हमारे घर के लॉन में मिल रही है। बच्चे इन पक्षियों की गतिविधियाँ बड़े ध्यान से देखते हैं। कभी-कभी अण्डों को हाथ भी लगा लेते हैं। अबु पूछता है, 'डैडी इन अण्डों से क्या होगा ?'

मैं बताता हूँ, 'अण्डे फूटकर कुछ दिनों के बाद इनसे बच्चे निकलेंगे।'

इमा और स्निग्धा हमारे डायलॉग बड़े ध्यान से सुनती हैं। अबू कहता है, 'डैडी, एक बात बताओ !'

'पूछो !'

'क्या मैं जिस अण्डे से निकला था, वह अण्डा भी ऐसा ही था ?'

हम खूब हँसते हैं। अबु को हमारी हँसी समझ नहीं आती है, वह फिर अपना प्रश्न दोहराता है। मैं कहता हूँ, 'बच्चे अण्डों से पैदा नहीं होते, वे हस्पताल में मिलते हैं।' इमा हमारे वार्तालाप में हस्तक्षेप करती है, कहती है, 'बच्चे हस्पताल से टेस्ट ट्यूब में बनते हैं !'

'कैसे ?' स्निग्धा पूछती है।

'नर्सें मांस का एक छोटा टुकड़ा, चिची उँगली से भी छोटा टुकड़ा ट्यूब में रख देती हैं, फिर उसमें ड्रग्ज और केमीकल्ज डालते हैं। टुकड़ा जब कुछ बड़ा होता है तो उसे शेप देकर हाथ-पैर बनाते हैं।'

'तुम्हें कैसे पता ?'

'मुझे मालूम है, मेरी फ्रैण्ड आरती है न, उसकी मम्मी प्लास्टर ऑफ पैरिस के बच्चे बनाती है पर उसे उनमें जान डालना नहीं आता। क्या इन बच्चों में जान डल सकती है ?'

'भगवान जान डालता है !' स्निग्धा कहती है।

Funding by IKS-MoE
'पर डैडी यह बताओ कि बच्चे ट्यूब से बनते हैं तो फिर अण्डों से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चिड़िया के बच्चे कैसे निकलते हैं ?'

पन्द्रह दिन के बाद इमा और अबु खबर देते हैं, 'डैडी एक अण्डा फूट गया है, उसमें से एक क्यूट सा बच्चा निकला है !' वे हमें बच्चा दिखाने ले जाते हैं। टटीहरी (टिटैया) आवाज करती है। चिल्लाती है पर अबु इमा पर झपटी नहीं है। आधे घण्टे बाद अबु काफी उत्तेजित सा आता है। और कहता है, 'डैडी अब तीन बच्चे हो गए हैं। मैंने अण्डा फूटता देखा है, चिड़िया उस पर चोंच मारती है तब बच्चा निकलता है। क्या ट्यूब को मम्मी ने तोड़ा था ?'

इमा बच्चे देखने बाहर चली जाती है। उसकी खुशी का भी ठिकाना नहीं है। अबु और इमा आपस में सलाह-मशविरा करते हैं फिर भीतर आकर स्निग्धा को कहते हैं, 'मम्मी, सब बच्चे अण्डों से निकल रहे हैं, हम भी अण्डों से निकले हैं, किरपाराम कहता हैं।'

'किरपाराम कहता है हाथी का अण्डा तरबूज कहलाता है !' इमा कहती है। फिर दोनों टिटैया की आवाज सुनकर बाहर जाते हैं। चौथा बच्चा भी निकल आया है। वे हमें बाहर बुलाते हैं। टिटैया बच्चों को बड़ी मुस्तैदी से सुरक्षा दे रही है। हमारे बाहर जाने पर भी चिल्लाती है।

थोड़ी देर बाद चारों बच्चे अपनी टाँगों पर चलने लगे हैं। एक कुछ ज्यादा छोटा है। अबु निडर होकर एक बच्चा उठा लाता है, टिटैया चिल्लाती है पर अबु को कुछ नहीं कहती। बच्चा बहुत सुन्दर है। काला चित्र विचित्र और सफेद रंग का। मुर्गी के चूजे जैसा, पर उस तरह का गोलमटोल नहीं है। फिर मेरी डाँट खाकर अबु बच्चे को वहाँ छोड़ आता है। टिटैया चिल्लाती रहती है।

कुछ दिन अबु, इमा, जहाँ तक कि मैं और स्निग्धा भी इन पक्षियों में खूब रुचि लेते हैं। हमारा पामेरियन कुत्ता भौंकता है तो टिटैया उसका प्रत्युत्तर देती है। हम कुत्ते को घुमाने ले जाते हैं तो टिटैया कुछ ऊँचाई पर उड़ती है। कहीं से एक नीलकण्ठ पेड़ पर बैठ गया है। तीनों टिटैया उस पर आक्रमण करती हैं, वह उड़ जाता है और कई दिनों तक फिर दिखाई नहीं देता। एक दिन एक बाज बच्चों पर झपटता है,

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक टिटैया बच्चों को पंखों से ढकती है, दो उड़कर बाज पर झपटते हैं, बाज कुछ देर चक्कर लगाता है, टिटैया के भयंकर शोर और आक्रमण का वह सामना नहीं कर पाता, टिटैया उसे दूर तक खदेड़ती हैं। एक चील कहीं से इन बच्चों की गन्ध पाकर मँडरा रही है। टिटैया ने बच्चे एक झाड़ी के नीचे छिपा दिए हैं, वे दिखाई नहीं दे रहे। चील घण्टा भर मँडराती है, तीनों टिटैया इक्ट्ठी झपटती हैं, चील विवश होकर उड़ जाती है। इस पक्षी की दबंगता, निर्भीकता और समर्पण की भावना अद्वितीय है।

बच्चे पन्द्रह दिन टिटैया के पीछे-पीछे घूमते हैं, टिटैया दो हैं जो क्षेत्र में उड़कर या बैठकर या छोटी उड़ानें भरकर बच्चों को संरक्षण दे रही हैं। अबु और इमा से उनकी दोस्ती है, इन पर वे झपटती नहीं हैं, पर किरपाराम पर मँडराती हैं, वेचारा डरता है।

मैं और स्निग्धा भी इनकी 'डिडयू डू इट' 'डिडयू डू इट' पर फिदा हैं। इनका बच्चों को पालने का ढंग, उनकी रक्षा करने का ढंग मनुष्य से अधिक भिन्न नहीं है।

अबु इमा स्कूल लौटते हैं तो टिटैया भी शायद उन्हें ढूंढ़ती हैं। हमारे घर की पोर्च या बरामदे में उनका विचरण होता है। हमारे कुत्ते से भी उनकी दोस्ती है, कुत्ता उन्हें कुछ नहीं कहता, वह हमारी 'नो' की आवाज की भी अब आवश्यकता नहीं समझता। रात को अगर उसके भौंकने की आवाज टिटैया न सुनें तो बरामदे में आ जाती हैं, चिल्लाती हैं और जब कुत्ता भौंकता है तो आश्वस्त होकर लॉन में चली जाती हैं। इस पक्षी की एक विशेषता यह है कि रात भर यह जागता है। दिन को बच्चों की सुरक्षा करता है। शायद सोता भी नहीं है, पर इनका क्षेत्र कुछ बढ़ गया है, गेट के बाहर के मैदान पर भी इन सात पक्षियों ने अधिकार जमा लिया है। बच्चे अब हल्की उड़ानें भी भरने लगे हैं। इस पक्षी का अंग्रेजी नाम है लेप्स विंग।

लगभग बच्चे एक माह से कुछ अधिक दिनों में अपने माँ-बाप के बराबर हो गए हैं। एक बच्चा शायद मर गया है, वह दिखाई नहीं देता। एक मादा टिटैया भी गायब है। कुछ [illegible] परिवार है। गिलेहरियों

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
से इन्हें कोई शिकायत नहीं है। कभी-कभी गौरेया को भी क्षेत्र में आने दिया जाता है। अब बच्चे पहचाने नहीं जाते हैं, एक नर है इनमें और दो मादा हैं शायद, उनके आकार के कारण ऐसा सोचा जा सकता है।

इमा और अबु स्कूल से हमें चिट्ठियाँ लिखकर इनके हाल-चाल पूछते हैं। हम विस्तृत उत्तर भेजते हैं। इमा ने अपनी क्लास के सब बच्चों को इन पक्षियों से परिचित करवा दिया है।

स्निग्धा में टिटैया परिवार के कारण कुछ नयापन आ गया है। इन पक्षियों की युनिटी के कारण वह परिवार की संस्था को एक गम्भीर एवं महत्वपूर्ण संस्था के रूप में ले रही है। इस परिवार के सदस्य एक-दूसरे के साथ कभी लड़ते हुए नहीं देखे गए। कभी चोंच तक एक-दूसरे को मारते नहीं देखे गए। उनकी सैक्स लाइफ पूर्णतया गोपनीय है, संयुक्त परिवार सरीखा इनका मेलमिलाप है, अपनों के प्रति अनुराग है, अंतरंग में सब जुड़े हुए हैं। सामूहिक प्रयास इनके परिवार का आधार है। इनका चीखना, चिल्लाना, बच्चों को सँभालना एक-दूसरे को अपने पास बुलाना सब सहज है।

'स्निग्धा कहती है, 'डार्लिग, ये पक्षी हमें कई नई बातें सिखाते हैं!'

'जी हाँ, क्यों नहीं, गत तीन वर्ष बाद आप हमें डार्लिग कहकर सम्बोधित कर रही हैं। कहो क्या खिदमत करूँ।'

'तुम बात मत टालो, मैं कहती हूँ इन पक्षियों का चौकन्ना परन्तु तनावरहित जीवन अनुकरणीय है।'

'स्निग्धा' दरअसल ये पक्षी हमारी तरह नहीं हैं। जब हमारे बच्चों की तरह इनके बच्चे होस्टल में रहने लगेंगे तो ये भी तुम्हारी-हमारी तरह हो जाएँगे!'

'तुम्हारी बात कुछ सही है, पर पक्षी अपने बच्चों को बड़ा करके स्वतन्त्र छोड़ देते हैं, हम ऐसा कहाँ करते हैं?'

'तुम बस अपने इर्द-गिर्द तक सीमित हो। मेरे-तुम्हारे माँ-बाप मुझे-तुम्हें बड़ा करके अपने दरबे में क्या अब भी रखे हुए हैं? तुम्हारे माँ-बाप ने तो तुम्हारा यह अपना घर भी नहीं देखा आज तक। तुम्हारी चिट्ठियों से उन्हें कुशलक्षेम मिलती होगी। हम कहाँ भिन्न हैं किसी अन्य
Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जीव से ? इन पक्षियों की तरह हम भी एक युनिट हैं। मोह-माया, ममता-प्यार की सीमा होती है। हम तभी तक इनकी अतिशयता से प्रभावित रहते हैं जब तक हम अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त न हो जाएँ। घर में जवान बेटी एक जिम्मेदारी है, बोझ है, एक शिक्षारत पुत्र भी जिम्मेदारी है, हमारे जीवन में उन्हें पढ़ाना-लिखाना, नौकरी पर लगाना, ब्याह-शादी कर उन्हें सैटल करना आवश्यक बातें हैं, और फिर हम जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाते हैं। कुछ वर्ष हम बदले में अपने बच्चों से कुछ नहीं माँगते, फिर माँ-बाप बूढ़े होते हैं, वे अपने बच्चों पर आश्रित हो जाते हैं, बच्चों से सेवा की आशा रखते हैं। यह एक सिलसिला है। तुम्हारे और मेरे माँ-बाप का हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण कालांश में कोई दखल नहीं रहता !'

'हाँ, सो तो है, पर···' मैं बीच में बात काटता हूँ।

'स्निग्धा, सन्तान मोह है, यौन-सुख मोह है, पर इन सब मोह भावनाओं या गतिविधियों का आधार है, आशा ! जीने की आशा, पाने की आशा ! हम घर बनाते हैं, यह जानकर भी घर बनाते हैं कि हमारी आयु शेष ही कितनी है ? क्या है यह ? मोह न !'

'हाँ, सही है पर हमारे जीवन में यह आशा कहाँ है ?'

'किस मायने में ?'

'तुम्हारी जिन्दगी के मायने में, तुम अपने लिए क्या करते हो ? चंद लमहे सुख भोगना तो तुम्हारे जीवन का लक्ष्य नहीं, यानी अन्तिम लक्ष्य नहीं ?'

'कह नहीं सकता।'

'यानी तुम मुझसे नहीं कह सकते ? या शायद तुम जानते नहीं ?'

'जानता हूँ, नहीं भी जानता हूँ, कह सकता हूँ, तुमसे भी कह सकता हूँ, नहीं कहता हूँ, यह भी सत्य नहीं, नहीं कह पाऊँगा, यह भी सत्य नहीं।'

'अर्थात् !'

'तुम कभी-कभी मेरे लिए रुकावट बन जाती हो, मैं एक इन्जीनियर नहीं बनना चाहता था, मैं एक म्यूजिशियन बनना चाहता था, एक कवि

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
बनना चाहता था, एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व बनना चाहता था, पर क्या बना ? एक इन्जीनियर, एक प्रोज राइटर, एक परतन्त्र, आश्रित मनुष्य !'

'तुम कहीं कन्फ्यूज्ड हो !'

'नहीं, मैं स्पष्ट हूँ। बहुत पहले मैं एक···हाँ एक बात याद आ गई। दस-बारह वर्ष पुरानी बात है। उस आदमी का नाम बजरंग बहादुर अस्थाना था। वह एक वकील था। उसकी आयु 90 वर्ष की थी···वह एक बौद्धिक आदमी था। कभी किसी ने परिचय करवाया था उससे। किसी हाईकोर्ट में वकील रह चुका था, अब अकेला एक कमरा लेकर रहता था। उसके बच्चे उससे नफरत करते थे, उससे मिलने भी नहीं आते थे। वह शराबी था, पीकर सारी दुनिया को गाली देता था, पर वह पैसा माँगकर नहीं पीता था, कमाकर पीता था। रोज कचहरी जाता था, थोड़ा-बहुत काम दूसरे वकीलों के सहयोग से उसे मिल जाता था, रोज रिक्शा में बैठकर कलाली में जाता था, कच्ची-पक्की, देशी, अंग्रेजी शराब की कोई भी बोतल पी लेता था। खाना बनाने के लिए रिक्शा वाला उसकी मदद करता था, रोज कोर्ट जाना, रोज रिक्शे में बैठकर पीना। एक दिन वह मेरे पास आया, बोला—क्या आपने साउथ ईस्टर्न क्वेश्चन पर जजमैंट की किताब पढ़ी है ? 'नहीं' मैं कहता हूँ। उसके दूसरे हाथ में वह किताब है, मुझे किताब देते हुए कहता है—'इसे आप पढ़ लीजिए। इसमें 123 जजों की ज्यूरी थी। एक जज ने डायसैंटिंग जजमैंट दिया, शेष ने एक सा, आप पाएँगे कि वह एक जज मेरी तरह का आदमी था, अकेला, आजाद, बन्धनरहित, निर्भय। अच्छा आप यह पुस्तक ले लीजिए, मुझे सिर्फ दस रुपये दे दीजिए, पीने के लिए अद्धा लेना है।' मैं उस बूढ़े की ईमानदारी से प्रभावित था। मैं कहता हूँ, 'वकील साहब, आज मैं आपके लिए पीने का इन्तजाम कर दूँगा।' वे बोले, 'नहीं साहब यह नहीं, मैं मुफ्त की नहीं पीता, आपकी शराब सिर्फ उसी शर्त पर पी सकता हूँ कि आप भी कभी मेरे साथ मेरे यहाँ बैठकर पीएँ।' मैं कहता हूँ, 'वकील साहब, आज आप हमारे मेहमान हैं। हमारी पीजिए !' वे बोले, 'नहीं साहब, इस किताब के बदले मुझे आप दस रुपये दे दीजिए या दस रुपये की जगह शराब की बोतल, ले लूँगा, पर अपनी ईमानदारी नहीं
Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छोड़ूँगा।' मैंने उसे एक बोतल ह्विस्की दे दी, उन दिनों 28-30 रुपये की आती थी। उसने वह ले ली। किताब की कीमत 25 रुपये थी, नई किताब थी, एक महीना पहले छपी किताब। मैंने वह पुस्तक पढ़ी थी और आज भी कहीं वह किताब है मेरे पास और हमेशा मुझे बजरंग बहादुर अस्थाना जी की याद दिलाती है। वह एक ईमानदार आदमी था। उसकी बीमारी जिन्दगी को अपने ढंग से चलाए रखने की बीमारी थी। तुम इसे समझो, यह एक रेलेवेंट कहानी है। मैं कन्फ्यूज्ड नहीं हूँ, अपनी जिन्दगी को अपने ढंग से चलाए रखने या चलाने की बीमारी से पीड़ित हूँ। समझी, यह दृष्टांत है जिन्दगी को अपनी औकात और अपनी कमाई से जीने का। मैं भी अपनी साँस, हर साँस अपनी तरह से लेता हूँ, जीता हूँ।'

'पर अपने को अपने लिए भी इतना इन्वाल्व करना क्या जरूरी है।' स्निग्धा कहती है।

'कह नहीं सकता कि तुम इन्वाल्वमैंट किसे कहती हो। मेरी जरूरत को या मेरे जीने के तरीके को ? मैं कभी अपना अतीत किसी के सामने खोलकर नहीं रखता, वह एक सपना बनाकर, सुबह की धूप के साथ सुखाकर वाष्प बनाकर समाप्त कर दिया था मैंने, मेरे पास है एक सच्चाई, अपने प्रति वफादारी, तुम्हें प्यार करता हूँ तो दूसरों का दखल उसमें नहीं पाता, दूसरों के पास जाता हूँ तो वहाँ तुम नहीं होतीं।'

'पर, कभी-कभी तुम्हारी शक्ल से मजबूरी और फरेब दोनों स्पष्ट दीख जाते हैं ?'

'माने ?'

'इसके माने तुम अपने से पूछो, मैं तुम्हारी औरत हूँ, तुम मेरे खाबिन्द हो, हम एक-दूसरे को बाँटने के लिए बने हैं।'

'नहीं स्निग्धा, हम एक-दूसरे को यह अहसास दिलाने के लिए बने हैं कि हम अकेले नहीं हैं। हमारा जीवन बजरंग बहादुर अस्थाना से इसी अर्थ में पृथक् है !'

'क्या तुम मुझसे भर गए हो ?'

'इस प्रश्न का उत्तर देना जितना आसान है उतना दुस्साध्य भी है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक तो तुम मेरे लिए जिन्दगी भर साथ रहने की शर्त हो, यानी तुम मेरे घर में, मेरी जिन्दगी में पूरी उमर के लिए आई हो, दूसरे हमारे बच्चे हैं। तीसरे तुम एक खूबसूरत औरत हो, भले ही तुम अपने को बद-सूरत बनाए रखने के लिए भरसक प्रयास करती हो !'

'मैं जान-बूझकर कभी ऐसा नहीं करती।'

'कैसा नहीं ?'

'असुन्दर बनना या लापरवाह बनने का !'

'तुम कपड़े पहनने की लापरवाही करती हो। सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग नहीं करती हो। पहले सब करती थीं—सब, तुम्हारी वह अपने प्रति सक्रिय सतर्कता कहाँ गई ? तुम रात को बिना मुँह धोए या बिना मेकअप साफ किए कभी नहीं सोती थीं, अब...'

'अब' स्निग्धा हँसते हुए कहती है, 'अब आधी उमर निकल गई, बच्चे बड़े हो रहे हैं, घर की देखभाल करनी होती है, रोमांटिक बने रहने के लिए उमर होती है—बीत गई। अब एक रुटीन, शरीर को चलाए रखने की रुटीन, शरीर को तुम्हारे साथ बाँटने की रुटीन, सुबह होती है, ब्रेक-फास्ट लंच, इवनिंग टी, टी. वी. डिनर फिर बिस्तर, वहाँ कभी तुम्हें पाती हूँ, कभी नहीं पातीं !'

'यह शिकायत है ?'

'नहीं, मैं गिला नहीं करती, इसमें गिले की क्या बात है, तुम जिस प्रकार के बिजनैस के प्रबन्धक हो वहाँ रात-दिन तुम बीवी की बाँहों में बँधे नहीं रह सकते, मैं कभी कुछ कहती हूँ तुम्हें ? और दूसरे मुझे भी अपना हक है, मैं अपने घर में रहती हूँ, तुम्हारे लिए वकालत छोड़ी थी, घर-बार अपनाया था, मैं सन्तुष्ट हूँ !'

'एक बात कहूँ, तुम वकील क्यों बनी थीं ?'

'ओह ! मैं वह सपना भूल गई। मैं जज बनना चाहती थी। सीधे हाई कोर्ट की जज, फिर हाई कोर्ट की चीफ जस्टिस, फिर सुप्रीम कोर्ट में...पर अब वह सपना टूट गया। हाई कोर्ट में जूनियर वकील से जिन्दगी शुरू की थी—उद्देश्य पाला था !'

'अब पछतावा क्यों ?'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'कोई पछतावा नहीं रहा, बच्चे हैं, तुम हो, घर है, तमन्नाएँ नहीं रहीं !'

'अगर मैं कहूँ कि तुम फिर वकालत शुरू कर दो तो तुम मान जाओगी !'

'नो पास्ट इज डेड। अब क्या है—आई हैव मैयर्ड और माई लाइफ विद् कॉफी स्पून्ज !'

'इलियट ?'

'हाँ टी. एस. इलियट, कितनी सच्चाई है ! फिलिप लेवाइन की एक पोइम् है—फार सेवन एम्पटी ईयर्ज़ आई लुक्ड फार हर, डस्ट थिक आन माई फीट।'

'अच्छी पंक्ति है, कभी-कभी ऐसी बातें अच्छी लगती हैं।'

'हाँ···मालूम नहीं किसने कहा था चन्दर···कहा था···आई हैव गोन मिल्यन्ज ऑफ माइल्ज आउट ऑव माई वे—बस यही यात्रा है लम्बी, गलत रास्ते पर, इतनी दूर आ गए हैं हम कि समय, युग, वापिस हमें उस शुरू के बिन्दु तक, स्टार्टिंग प्वाइंट तक नहीं ले जा पाएँगे—दसों लाख मील···लाखों मील पीछे है वह मंजिल जिसके बाद हम चलते-चलते गुम-राह होकर और भी आगे बढ़ आए हैं।'

मैं कहता हूँ, 'तुम कहती जाओ। मुझे अच्छा लग रहा है।'

स्निग्धा कहती है—

जिन्दगी तनहा राहों में बढ़ती गई है, इसे भटकन मत कहो,
कुछ भी कह लो मुझे, हाँ कह लो, अलविदा न कहो, न कहो।
मैं खामोश थी, ख्वाबों से भरी थी, ख्याल थे मेरे गिर्द,
बस तेरी बाँहें थी, कशिश थी, तेरे लहू की जुम्बिश और थे अपने लम्हे
पर मैं बेवफा न थी, गैर न थी, अजनबी मत कहो मुझे
कुछ भी कह लो मुझे, हाँ कह लो, अलविदा न कहो, न कहो॥

मैं ताली पीटता हूँ। कहता हूँ, 'वाह स्निग्धा···क्या बात है, किसका लिखा है ?'

'मेरा लिखा है, मैंने अपने लिए लिखा है।'

'आज तक सुनाया क्यों नहीं ?'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'तुमने मुझे वक्त ही कब दिया !'

खलील जिब्रान ने कहा था शायद 'तुम चाहती हो मैं तुम्हें प्यार करू पर मुझे प्यार करने के लिए वक्त तो लौटा दो !'

'पतिदेव, यह जिब्रान का नहीं है, ब्रह्मदेव का गद्य गीत है !'

'तुम वस्तुत: यह सब पढ़ती हो ?'

'पढ़ती थी, मौसी ने आपके लेखकपने की तारीफ की थी। जनाब कहानीकार थे, एक उपन्यास छपा चुके थे, अंग्रेजी में लेख भी लिखते थे, बस इन्हीं तारीफों से आपसे, मोहित हो गई, शादी कर ली ! सोचा था आपके पास रहकर कुछ अपनी आदतें बरकरार रखूंगी।'

मैं ठहाका लगाता हूँ। शाम के सात बज रहे हैं। मैं कहता हूँ, 'स्निग्धा आज हम तुम्हारी शायरी पर खुश होकर रायल स्ल्यूट ह्विस्की पीएँगे, लाओ !'

स्निग्धा भीतर जाती है। बोतल लाती है। मैं उसमें से एक पैग उँड़ेलता हूं, स्निग्धा को बोतल देकर भीतर रख आने को कहता हूँ और कोई दूसरी स्काच लाने को कहता हूँ 'यह बोतल तो सजावटी है, इसका पैग खुशी का टोकन है।' स्निग्धा कहती है, 'यही पी लो, तुम्हें एक ऐसी बोतल मैं खरीद दूंगी।'

'कीमत जानती हो ?'

'जानती हूँ, चीफ एग्जीक्टूटिव की बीवी हूँ। पन्द्रह सौ रुपये की बोतल पहचानती हूँ, उसका स्वाद तुम जानते हो !'

'आज बात क्या है ?'

'कुछ खुश हूँ, अकारण खुश हूँ। अपने वर्तमान में खुश हूँ। तुम भी तो खुश हो ?'

मैं कहता हूँ—

'मैं खुश हूँ तेरी खुशबू से, तेरे आईने की इबादत से।

मुझे आजादी मिली है, सिर्फ आज की रात, कानून बनाने की ?'

स्निग्धा कहती है, 'आप शेर अच्छें कह लेते हैं, आपकी आवाज बहुत उम्दा है, पर एक बात बताओ क्या हमारी जिन्दगी इतनी हल्की-फुल्की नहीं हो सकती ? क्या हम दोनों मौजमस्ती नहीं कर सकते !'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'तुम मसूरी जाती हो, शिमला जाती हो, साल में तीन-तीन बार जाती हो, तुम्हें मैं तो बाँधे नहीं रख सकता ? न बाँधे रखे हुए हूँ !'

'मैं जाती हूँ, तुम तो मेरे साथ नहीं होते। बच्चों को लाने ले जाने की ड्यूटी है, वह निभाती हूँ !'

'लगता है तुम फिर लड़ने के मूड में हो !'

'नहीं जी, मैं लड़ने के मूड में नहीं हूँ। समझौते के मूड में हूँ। आपने ही एक बार नहीं कई बार कहा है कि बच्चों को यहीं दिल्ली में पढ़ाएंगे, आर यू सीरियस ?'

'हाँ, मुझे यह अच्छा लगेगा। घर भरा-भरा-सा लगेगा। मुझे तुम्हारे सिवा इसी घर में दूसरों के साथ उठने-बैठने, बात करने, खेलने-कूदने, शोर करने और अपने को बिजी करने का अवसर मिलेगा !'

'ठीक है, तुम बच्चों को यहीं अच्छे स्कूलों में दाखिल करवा दो !'

'यह तो मैं आज ही कर लूंगा, तुम दोनों को दिल्ली पब्लिक स्कूल भेजना चाहोगी ?'

'यहां एडमीशन हो सकेगा ?'

'हाँ, प्रिंसिपल साहब मेरे दोस्त हैं, आर. के. पुरम में उनका स्कूल जब बन रहा था तो हमारी फर्म ने उनकी काफी सहायता की थी, आर्थिक सहायता भी, दूसरी भी, सारे एस्टीमेट फ्री बनाए थे, आर्किटैक्ट प्लान फ्री दिया था, फाउण्डेशन निर्माण में जैन से कहकर काफी छूट दिलाई थी···हो जाएगा।'

'पर एक शर्त है ?'

'क्या ?'

'मुझे तीसरा बच्चा चाहिए !'

'स्निग्धा, यह क्या ?'

'हाँ, यह ठीक है, मैं तीसरा बच्चा चाहती हूँ !'

'इस शर्त का पालन पहले होगा या बच्चों के एडमीशन के बाद ?'

'जब चाहो !'

'तो मुझे मंजूर है, हम दोनों बच्चों को लेने साथ तो नहीं जा सकते, तुम देहरादून से अबु को ले आओ, मैं शिमला से इमा को ले आऊँगा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वहाँ मौसी को भी मिल लूँगा। चार वर्ष से नहीं मिल पाया हूँ।'

'मंजूर, स्कूल की बात यहाँ निश्चित कर लो !'

'कल सब तय हो जाएगा।'

स्निग्धा में यह परिवर्तन किन कारणों से हुआ, मैं सोच रहा हूँ। मेरे भीतर तक एक कहानी भर गई है। यह कहानी मेरी अपनी है। मैं स्निग्धा और बच्चों के साथ कहीं जाना चाहता हूँ, कहीं भी जहाँ कुछ दिन मैं अपने बारे में न सोच सकूँ, कहीं भी जहाँ पुराना इतिहास मेरा अपना न होकर दूसरों का हो। वह जगह कहाँ है ? मैं वहाँ किस तरह पहुँच सकूँगा···कहाँ है वह जगह जहाँ मुझे अपना अतीत न काटे ? स्निग्धा से पूछता हूँ, 'कहीं पन्द्रह दिन घूमने का कार्यक्रम बनाया जाए, बताओ कहाँ चलोगी ?'

'अभी नहीं, जब बच्चे यहाँ सैटल हो जाएँगे, उनकी छुट्टियों में चलेंगे, काश्मीर या नैनीताल-कोसानी, कहीं भी यहाँ तुम पहले नहीं गए हो ?'

'यह शर्त क्यों ?' मैं कहता हूँ।

'शर्त कहाँ है ? जो जगहें हम पहले देख चुके होते हैं न वहाँ पुरानी बातें याद आ जाती हैं, फिर नई जगह देखने में उत्सुकता बनी रहती है, नये के प्रति प्यार उमड़ता है !'

'हाँ, स्निग्धा तुम सही हो। बाद में कभी देखेंगे, फिर सोचेंगे कि कहाँ जाना है, नई जगह कौन-सी है वह जिसकी तलाश हम दोनों को हो ?'

'तलाश नहीं है, मैं तो बस पुरानी जगहों में नहीं जाना चाहती।'

'पुरानी जगहें और पुरानी चीजें हमेशा याद आएँगी, चाहे हम उन्हें दूर करते जाएँ, टालते जाएँ, वे भुलाई नहीं जा सकतीं, भूलना चाहकर भी हम उन्हें नहीं भूलते। तुम मसूरी जाती हो—तुम्हें नहीं लगता कि हर बार वहाँ परिवर्तन हो जाता है। घर भी वही, सड़कें भी वही, पहाड़ और जमीन भी वही पर एक परिवर्तन है, हमारे गिर्द जो परिचित-अपरिचित चेहरे होते हैं, उनमें नवीनता आती है, हम स्वयं बदले हुए लगते हैं। जून में दिल्ली में स्वेटर नहीं पहना जा सकता, मसूरी में पहनना

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पड़ता है। मद्रास में समुद्र हर क्षण रूप बदलता है। दीघा में सागर शान्त है और तट गीला, यह गीलापन हर सुबह नया लगता है। सागर में उगता हुआ सूरज रोज नया होता है, उसे तुम पुराना कैसे कह सकती हो ? खैर तुम नयापन चाहती हो, फिर बात करेंगे इस विषय पर !'

दूसरे दिन बच्चों के स्कूल एडमीशन की अनुमति प्रिंसीपल ने दे दी पर साथ ही सलाह भी दी कि लड़के को दून स्कूल में ही रहने देना अच्छा होगा। मैं उनकी सलाह इसलिए नहीं मानना चाहता था कि बड़ी कठिनाई और अनेक तनावों के बाद बच्चों को दिल्ली में पढ़ाने की अनुमति मिली है—अन्यथा स्निग्धा को मना पाना आसान कहाँ था।

निर्णय यह हुआ कि इस माह की बीस तारीख को बच्चों को दिल्ली ले आया जाए।

स्निग्धा का व्यवहार इतना बदल गया था कि मैं उसे पहचान भी नहीं पा रहा था। मूल कारण क्या था कभी समझ नहीं आया पर एक कारण शायद मेरे द्वारा निर्मल की कहानी उसे सुना देना था। वह निर्मल से मिलना चाहती थी। स्निग्धा कहती है, 'निर्मल को सँभालना पड़ेगा। कहीं वह बर्बाद न हो जाए।' दूसरा कारण शायद दीक्षित था जो प्रायः हमारे यहाँ आता था और असंख्य शेर, नज्में कहकर शाम को ड्रिंक्स पर रौनक लगा देता था। अपनी पूर्व पत्नी शामा के किस्से चटखारे लेकर करता था। कहता था, 'उससे छुटकारा लेने के लिए अगर उसका कन्यादान भी मुझे करना पड़ता तो कर देता। जनकल्याण की भावना से किए गए कार्य महान् होते हैं।'

'पर यार तुम कन्यादान कैसे करते, वह तुम्हारी बीवी थी ?'

'बीवी थी, येस थी। फिर डायवोर्स हुआ, येस हुआ। फिर वह मेरी कुछ भी नहीं रही, येस, कुछ भी नहीं। अब अगर मैं उसका गार्जियन बनकर उसका निकाह किसी से करवा देता तो मेरे लिए क्या था, बताओ भला, हाँ, येस—कन्यादान से भी क्या फर्क पड़ता। हम तो शीशे में जिन्दगी उतारने वालों में हैं, पी लिया, पिला लिया, सब एक है—एक बात है। शामा न शादी के पहले मेरी थी, न शादी के बाद और अब तो क्लिच-कट, वह कन्नी कटवा गई पतंगनी।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'पर यार दीक्षित, शामा ने अपनी उमर से इतने छोटे आदमी के साथ शादी क्यों की ?'

'मैं जानता हूँ, उस साली के बच्चे नहीं हुए, शौहर नहीं उसको बेटे की तलाश थी, उसका यह पति उसका बेटा ही लगता है। बहुत-सी औरतें अपने बाप की उमर के आदमी से शादी सिर्फ इसीलिए करती हैं कि उन्हें एक सुरक्षा यन्त्र, सुरक्षा छाता मिल जाए। यह ब्रदर-फादर कम्पलैक्स है यारो...' वह पैग उँडेलता था, सोडा मिलाता है और लम्बे-लम्बे घूंट भरकर पीता है।

शेरोशायरी के दौर में मैं एक नज्म सुनाता हूँ। स्निग्धा शेर कहती है। दीक्षित हर बात पर शेर कहता है। हर शेर पर बात कहता है। शायद स्निग्धा के बदलाव में यह तत्व भी हो क्योंकि दीक्षित वस्तुतः औरत से नफरत करता है, हर औरत से क्योंकि वह एक बेवफा माँ का बेटा था और एक बेवफा औरत का खाविन्द ! उसकी बदनसीबी या खुशी यही थी कि वह न अपनी माँ को याद करता था और न अपनी बीवी को।

स्निग्धा कहती है, 'भाई साहब, दूसरी बार शादी क्यों नहीं कर लेते ?'

'देख स्निग्धा बहन, अप्पन हैं शौकीन आदमी, पान-तम्बाकू, सिगरेट शराब और अच्छे कपड़े चाहिए हमें, बीवी हो तो वह भी शौकीन तबीयत हो। एक शौकीन तबीयत शामादेवी थीं, दूसरी ले आया न तो मेरी खोपड़ी पर जितने बाकी बाल हैं सब उड़ जाएंगे !'

'उड़ेंगे या झड़ जाएंगे ?' मैं टोकते हुए कहता हूँ।

'दोनों बातें ही हो सकती हैं। खैर साहब अब शादी तो नहीं करूँगा। शायरी करूँगा। शामा देवी पर महाकाव्य लिखूंगा।'

'लिखिए साहब, आप अपना महाकाव्य पूरा कर लें तो उसके बाद मेरी हो चुकी और होकर चुकी बीवी पर भी कोई खण्डकाव्य लिख दें !'

'आर्डर बुक कर लिया जनाब आपका—जरूर लिखेंगे।' कभी-कभी शामें इस तरह गुजरती रहीं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब बच्चों की एडमीशन का तय हो गया तो मेरे मन में अपने को बदलने के लिए कशमकश शुरू हुई। निर्मल की अधूरी कहानी को भी मैं एक छोर पर नहीं छोड़ सकता था। पर निर्मल के प्रति मुझे बहुत ज्यादा सहानुभूति थी, भटका और भोगा हुआ जीवन आज के साथ साम्य नहीं पा रहा था। स्निग्धा के साथ रहना आवश्यक था, तीसरी बार जिन्दगी शुरू करने की हिम्मत नहीं थी।

उस दिन सुबह-सुबह शोभा का फोन आया था, कह रही थी, 'लिज टेयलर सातवीं शादी कर रही है'। मैं कहता हूँ 'वह जब आठवीं शादी के लिए तैयार होगी तो उस समय उसके आठवें पति के लिए मैं अपनी सेवाएँ प्रस्तुत करूँगा।'

'वह तुम्हारी तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखेगी !'

'यह नहीं हो सकता, जानती हो, मैं उसे दो बार मिल चुका हूँ।'

'झूठ।'

'मत मानो, पर यह सच है, पन्द्रह वर्ष पूर्व जब वह 35 वर्ष की थी तब इटली में जिस होटल में मैं ठहरा था वहीं रिचर्ड बर्टन और लिज भी थे।'

'कम आन चन्द्र, यह कहानी झूठी है !'

'तुम्हारी कसम सच्ची है।' इसी बीच टेलीफोन में कहीं किसी अन्य का नम्बर भी मिल गया था, उधर से आवाज आती है, "साहब आप हमें सुनाइए, हम सुनेंगे। बीच में टेलीफोन लग गया है तो सुना दीजिए !'

'तो साहब आप भी सुन लीजिए। रोम में रहना में मुझे पसन्द नहीं आया तो मिलान में होटल बुक करवाया। वहीं ये दोनों भी ठहरे हुए थे। उस शाम में रिसैप्शन से बाहर सीढ़ियों पर खड़ा था कि ब्लेक पिंक कोट में ढकी एक औरत कार में बैठ रही थी। कार की फ्रण्ट सीट का ड्राइवर कुछ बोला तो यह महिला गुस्से से भड़भड़ाती उतरी और कहा—आई वोंट गो विद् यू—उस आदमी ने कार स्टार्ट की तो मैंने देखा वह रिचर्ड बर्टन था, अकेला कार लेकर चला गया। औरत लिज टेयलर थी।

Funding by IKS-MoE

'फिर क्या हुआ ?' टेलीफोन पर दो आवाजें इकट्ठी आयीं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैं कहता रहा, 'वह औरत होटल की ओर मुड़ी तो सामने मैं था, वह एक थकी हुई, बोरियत की मुस्कान बिखेरती हुई एक कदम आगे कार में बढ़ी ही थी तो मैंने कहा—आरैंट यू मिसेज बर्टन ?—यैस—उसने कहा ! मैं बोला—वांट यु हैव ए ड्रिंक विद् मी—उसने कहा—इट इज टुअर्ली फार ए ड्रिंक—वह रुककर बढ़ा हुआ कदम हटाकर सीढ़ी पर मेरे साथ आ गई। मैं उसके साथ सीढ़ियों से नीचे उतरा, वह थोड़ी बदली हुई थी, चेहरे पर बोरियत कम हुई। फिर बोली—आई होप आई एम नॉट डिलेपिंग यू फ्राम समथिंग—मैं कहता हूँ—आपसे बात करने के लिए तो एक उमर और पानी पड़े तो भी कम है।—वह मुझे उत्सुकता से देखती है—कहती कुछ नहीं है।

होटल का स्टाफ, मैनेजमैंट के लोग कुछ दूरी पर पीछे खड़े हैं। लिज का बाडीगार्ड थोड़ी दूर पर है। वह कहती है, 'क्या तुम मेरे साथ लांग ड्राइव पर चलोगे ?' मैं कहता हूँ—'हाँ, हाँ, मैं बिल्कुल फ्री हूँ।'

शोभा टेलीफोन पर कहती है, 'क्यों फाँक रहे हो ?'

टेलीफोन पर दूसरी आवाज कहती है, 'इन्हें बोलने दीजिए !'

शोभा—'क्या तुम और लिज हिन्दी में बात कर रहे थे ?'

'मैं कहता हूँ नहीं संस्कृत में !' दूसरी आवाज हँसती है।

'अच्छा आगे बताओ।' शोभा कहती है। मैं शायद स्वप्न में हूँ।

मैं कहता हूँ, 'लिज ने गनमैन को बुलया। ट्रांस्पोर्ट लाने को कहा—गनमैन ने मैनेजर को हुकुम दिया। दस सैकण्ड में गाड़ी हाजिर थी। मैं लिज के साथ पीछे की सीट पर था, गनमैन आगे शाफर के साथ। लिज ने कहा था—दिस इज माई मैन—रिचर्ड हैज नथिंग टू डू विद् हिम। गाड़ी पहाड़ी सड़कों पर दौड़ने लगती है।

वह मुझे पूछती है—यू आर फ्राम इण्डिया ? मैं हाँ कहता हूँ।—उस देश में हिमालयाज हैं—वह कहती है—सम डे आई विल विजिट हिमालायाज—फिर पूछती है—तुम यहाँ घूमने आए हो ?—नहीं—मैं कहता हूँ—फिर ?—वह कहती है—मैं कभी-कभी अपने देश में बोर हो जाता हूँ, विदेश चला आता हूँ ! वह कहती है—क्या काम करते हो ? यह पूछते ही उसका कन्धा मेरे कन्धे से टकराता है—मैं कहता हूँ, 'आई

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वर्क इन माई आफिस—आई रन एन इण्डस्ट्री !' लिज की अँगूठी का हीरा चमकता है। एक नदी का पुल आ गया है। वह गाड़ी रोकने को कहती है। हम दोनों उतरकर नदी के किनारे जाते हैं। कुछ दूरी पर गन मैन इलाके का सर्वे करता-सा खड़ा है। लिज पानी से खेलती है। कोट उतारकर एक चट्टान पर रख देती है। फिर हम दो छोटे पत्थरों पर बैठकर कुछ देर बातें करते हैं। वह कहती है, आओ कुछ खेलें—एक पत्थर के छोटे से टुकड़े से वह जमीन पर क्रास और जीरो का खेल खेलने के लिए खाना बनाती है। मैं बिन्दी लगाता हूँ, वह क्रास लगाती है, पहली गेम में एक लाइन में किसी के भी तीन क्रास या बिन्दु नहीं कटे, गेम बराबर रही। अगली गेम मैं जान-बूझकर हार गया। लिज तीसरी गेम जीत गई, उसकी बच्चों जैसी खुशी देखने के काबिल थी। लगभग आधा घण्टा हम खेलते रहे, फिर चट्टानों पर घूमते रहे। लिज ने अपने गनमैन से पूछा कि कहीं पास में कोई स्नेक्स-ड्रिक्स-बिक्स मिल जाएँगे। गनमैन का नाम सीमर्ज था। उसने इधर-उधर देखा, फिर चुपचाप कार की तरफ चला गया। लिज पूछती है, 'तुम शादीशुदा हो।' मैं कहता हूँ—नहीं—एक तरह से नहीं—मैं लिज को अपने शरीर से चिपका लेना चाहता हूँ परन्तु मन गवाही नहीं देता···गनमैन का डर था लिज के व्यक्तित्व का आतंक···कुछ भी···पर मुझे लिज एक साधारण औरत लगी !

'फिर ?' शोभा पूछती है।

'फिर तुम मिलोगी तो बताऊँगा।' मैं कहता हूँ।

दूसरी आवाज कहती है, 'और मुझे कैसे पता लगेगा यह आवाज मैं कहना भूल गया था, एक अपरिचित महिला की आवाज थी।

मैं कहता हूँ, 'आप दोनों बाकी कथा सुनने के लिए कल मेरे घर शाम छः बजकर ग्यारह मिनट पर आ सकती हैं।' मैं फोन रख देता हूँ। फोन पर इतनी लम्बी कहानी सुनाने से जैसे मैं थक गया था।

वस्तुतः मेरा उस दिन लिज से मिलना मेरे लिए एक ऐतिहासिक घटना थी। नदी पर वह अपने बारे में मुझे काफी कुछ बताती रही, बहुत कुछ, यह भी कि वह बर्टन से नफरत करने लग गई है, 'जिस एनटनी से मेरी शादी हुई थी वह फिल्म का एनटनी था, मैं उसे ओवर रोमांटिक

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
नजरों से देखती रही थी पर असलियत में वह मेरे लिए नहीं बना है, तुम एक अजनबी हो। उमर में मुझसे बहुत छोटे हो। अगर मैं वस्तुतः वैसी औरत होती जैसी मुझे लोग कहते हैं, मैं किसी भी मर्द को अपने पास खींच लेती हूँ, मैं डायन हूँ, ओवर सैक्स हूँ—यह गलत है।'

'हाँ मिसेज बर्टन, यह गलत है, आप बिल्कुल सीधी-सादी, सहज औरत हैं।'

'ऐसा मत कहो ! मैं सहज औरत नहीं हूँ, तुम एक अजनबी दोस्त हो, तुम्हें मैं अपना प्रशंसक भी नहीं कह सकती, दोस्त भी नहीं, तुम एक सफर में, एक क्षण में मेरी जिन्दगी में आए हो, अगर रिचर्ड सामने होता तो उसे सताने के लिए मैं तुम्हारे साथ उच्छृंखल प्रेम जताती। तुम्हें कैसा लगता ?'

मैं चुप रहता हूँ। विश्व की अद्वितीय सुन्दरी मुझसे जो प्रश्न पूछ रही है उसका उत्तर मैं क्या दे सकता था ? मुझे उत्तर देना चाहिए था ? लिज फिर कहती है—'अगर ऐसा होता तो तुम्हें कैसा लगता।' मैं कुछ क्षण मिट्टी पर आड़ी-तिरछी लकीरें बनाता रहा, फिर बोला 'मैं पागल हो जाता, मैं सपनों में खो जाता।'

लिज मेरे बहुत पास बैठी है, वह अपनी ठुड्डी जिस अन्दाज में उठाती है, उससे मुझे एनटनी बन जाना चाहिए था—उस क्षण के लिए एक विश्वयुद्ध की चुनौती स्वीकार कर लेनी चाहिए थी। मैं खामोश हूँ, नजर ऊपर उठाता हूँ। लिज कहती है, 'तुम्हें आज की मुलाकात की यादगार में क्या दूं ?'

'एक और दिन···एक और मुलाकात।'

'यह मुमकिन होता, काश !'

'पर हम आज साथ हैं, हमारे आज की अभी शुरुआत हुई है—मैं एक और मुलाकात गलत माँग रहा हूँ।'

'हूँ' वह हँसते हुए कहती है 'तुम भी मुझे प्यार करने न लग जाओ।'

'तुम्हें दुनिया में कौन प्यार नहीं करेगा।'

'मुझे बहुत नफरत मिली है जिन्दगी में।'

'मुझे मिस्टर बर्टन से ईर्ष्या हो रही है !'
Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'सच ?'

'हाँ मिसेज बर्टन...'

'तुम मुझसे शादी करोगे ?'

'मैं शादी...आप से...?'

'घबरा गए ? मैं हर नौसिखिए प्रेमी से यही कहती हूँ।'

'पर मैं आपका प्रेमी नहीं हूँ।'

वह मेरी तरफ गुमांभरी निगाह उठाती है। मैं निर्भीकता से उसका सामना करता हूँ...वह हँसती है। तभी गनमैन खाने का सामान ले आता है और वह कैन्ड फ्रूट के टिन से मुझे तश्तरी में फल देती है।

मैं कहता हूँ 'मैं कैन्ड फ्रूट नहीं खाता।' लिज के सामने दो ताजे सेब हैं, एक पर उसने अपने दाँत गड़ा दिए हैं, दूसरा मेरी ओर बढ़ाती है। मैं सेब ले लेता हूँ और 'ईब ने आदम को भी एप्पल देकर भटका दिया था !' लिज हँसती है, बेबाक हँसी, उन्मुक्त हँसी, मुझे लग रहा है वह मुझे अपना नन्हा दोस्त मानकर सब कह रही हैं।

फिर मुझे पूछती है, 'तुम जिन्दगी में सबसे कीमती चीज पाना चाहो तो वह क्या होगी ?'

'सच कहूँ—एन्तोनैलो की पेंटिंग मेडोना, पेलेरमो के राष्ट्रीय म्यूजियम में यह तस्वीर है।'

'आई रियली एडोर यू ...आई लव देट पेंटिंग माई सेल्फ।'

'मुझमें और आपमें फर्क है न। आप वह पेंटिंग खरीद सकती हैं, मैं नहीं खरीद सकता।'

'गलत, वह पेंटिंग म्यूजियम में है, बिकेगी नहीं, तुम और मैं दोनों विवश हैं, पर यह बताओ तुम एन्तोनैलो को इतना पसन्द क्यों करते हो ?'

'कला में क्यों का क्या मतलब। आपकी फिल्म क्ल्योपेट्रा देखी थी, गलीचों में लिपटी और खुलती हुई आपकी आकृति देखी थी, आपकी गुमांभरी निगाहें एनटनी यानी मिस्टर बर्टन का सामना करती हुई देखी थीं, आज वही गुमांभरी आँखें मेरे सामने हैं, मुझे देख रही हैं, एनटनी के लिए आप एक तोहफा थीं, मेरे लिए एक राहगीर हैं, इटली में यहाँ मुलाकात हुई, एन्तोनैलो की मेडोना और आपमें एक फर्क है—मेडोना

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
की मैं पूजा कर सकता हूँ, उसे चाह नहीं सकता, आपको चाह सकता हूँ, पूजा नहीं कर सकता। जो मैं चाहता हूँ वह आप नहीं दे सकतीं, जो आप चाहती हैं वह शायद मेरे पास नहीं है...इस सड़क के कुछ मील आगे एक सड़क दाहिने को मिलती है, वह सड़क वेनेस की ओर जाती है, वहाँ सन् 1475 में एनतोनेलो रहा था, मेडोना यहीं चित्रित की गई थी। सन् 1476 में वह मिलान के डियूक को वेची गई थी। इससे भी अधिक खूबसूरत है मैसीना के राष्ट्रीय म्यूजियम में सुरक्षित आल्टर पीस जो 1908 के भूकम्प में खराब हो गया है।'

लिज कहती है 'सुनो, यू आर गोईंग टू वी माई गेस्ट फार ए वीक। वी विल विजेट सम आर्ट गैलरीज। आई रिस्पैक्ट यूअर सैंटीमैंट्स।'

'स्वागत, पर मिस्टर बर्टन एतराज करेंगे।'

'हमारे रास्ते एक-दूसरे से अलग हो गए हैं, आपके सामने उन्होंने मुझसे मिसबिहेव किया। आपने देखा न मुझे छोड़कर वह चला गया। कोर्ट में आप...।'

'हाँ, यह तो हुआ।' वह मेरा हाथ अपने दोनों हाथों में लेती है और कहती है, 'तुम्हारा एहसान होगा मुझ पर, तुम्हारी गवाही से मेरी जिन्दगी बदल जाएगी।'

'मैं तैयार हूँ।'

'सच बोलने के लिए मैं तुम्हें वेलेन्तीय नामक पेंटर का एक चित्र उपहार दूंगी।' मैं चुप हूँ। लिज ने 13 कैरेट हीरे की अँगूठी अपने दाहिने हाथ की अनामिका में पहन रखी है, मैं उसकी चमक देख रहा हूँ।

'मैं यह पसन्द नहीं करूँगा। कुछ देकर आप मुझे खरीदेंगी, यह अनुचित है। आप मुझे गवाह बनाएँ, मैं कानूनी फर्ज पूरा करूँगा, मुझे आपसे बखशीश नहीं चाहिए। यू कांट परचेज मी।'

वह मेरी ओर देखती है और कहती है, 'बुरामान गए, भूल जाओ। आओ कुछ और बात करें।'

मैं खामोश संजीदगी में सोच रहा हूँ। हर खूबसूरत औरत खरीदो-फरोख्त पर विश्वास रखती है। हम फिर एन्तोनैलो के बारे में बातचीत कर रहे हैं। एन्तोनैलो एक ऐसा चित्रकार था जिसने इटली में आइल

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पेंटिंग सर्वप्रथम प्रचलित की। इस कलाकार के बारे में सिसली की आर्काइव्ज में पूरी महत्वपूर्ण जानकारी है। उसका बचपन मेजीना नामक कस्बे में बीता। फिर दक्षिणी इटली में वह वेनीस में रहा और वहाँ सेन के सियानो आल्टर पीस बनाया। मिलान में वह कोर्ट पैंटर नियुक्त हुआ पर वहाँ उसका मन नहीं लगा और शीघ्र ही मेजीना लौट आया। उस पर फ्लेमिश चित्रकला का प्रभाव था। मध्ययुग में इटली में कला के लिए एन्तोनैलो जैसे कलाकार उस क्षेत्र ने दिए यहाँ चित्रकला दबी पड़ी रही, वहाँ का क्षेत्र पिछड़ा हुआ था, विशेषकर फ्लोरैंस या रोम के मुकाबले। सिसली के मेजीना कस्बे में उत्पन्न यह चित्रकार वस्तुतः स्पेनिश और फ्रांसीसी प्रभाव में अधिक रहा।

एन्तोनैलो के गुरु का नाम कोलेन्तोनियो था। शुरू-शुरू में एन्तीनेलो फ्लेण्डर्ज में रहा और उस पर फ्लेमिश चित्रकला का प्रभाव पड़ा। स्वभावतः तत्कालीन मास्टर चित्रकार रोजरवान दरवेडेन का भी उस पर प्रभाव पड़ा।

लिज इस चित्रकार के बारे में मुझसे भी अधिक जानती है। कहती है, 'एन्तोनेलो पर नेपल्ज़ के कलाकारों का प्रभाव था, तुम्हें नेपल्ज दिखाऊँगी। प्रत्येक आदमी को मौत से पहले नेपल्ज़ एक बार अवश्य देख लेना चाहिए।'

मैं कहता हूँ, 'मैं दो बार देख चुका हूँ।'

वेनिस भी अच्छी जगह है। मैं जाना चाहता हूँ परन्तु लिज के साथ नहीं, या लिज के इस तनाव भरे झगड़े के दिनों में नहीं। चित्रकला के इस महारथी ने वेनिस में रहकर खूब काम किया है, वहाँ इसकी चित्रकला का गहन प्रभाव है। लगभग 49 वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु हुई। उसके पुत्र जैकोवेलो ने भी इनसे चित्रकला सीखी थी।

मुझे लिज के बारे में, उसकी शोहरत के बारे में, उसके चरित्र के बारे में जो कुछ भी पहले से मालूम था, उसके कारण यह सोच भी नहीं सकता था कि वह भी दूसरी घरेलू पढ़ी-लिखी औरतों की तरह कला जैसे विषय पर चर्चा कर सकती है। मैं कला को अपने जीवन का अंग मानता हूँ और हर कलामर्मज्ञ के प्रति आदर भाव रखता हूँ—परन्तु इस

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.
औरत में कुछ ऐसा अवश्य है जो इसे दूसरों से अलग एलिजाबैथ टेयलर बनाता है। इसमें सौन्दर्य है, सौन्दर्य को सँभालने की योग्यता है, पर मुझे लगता है वह भी मेरी तरह भटकन का शिकार है, एक डर की वजह से या जिन्दगी को अनुभवों से लादने के लिए कुछ करने की लालसा के कारण।

मैं जो भी हूँ, स्वयं अपना आप हूँ और जानता हूँ कि लिज अगर मुझे अपने शरीर का स्पर्श भी दे देगी तो मैं अपना आप नहीं रहूँगा। मेरा संपूजित अहं टूट जाए और यही वजह है जो मुझे इस तरह के सम्पर्क, सीमा की याद दिलाते हैं। मुझमें अब तक न कोई ग्रन्थि रही है न कोई ऐसी महत्त्वाकांक्षा जो मुझे मेरे अपने व्यक्तित्व को विस्मृति की खाई में दफनाने दे। अहं मेरा है, मैं जिसे चाहूँगा उसी के साथ इस अहं का बँटवारा दे करूँगा या विस्तार करूँगा पर हर जगह, हर सेब खाने के बाद हर ईव के वक्षस्थल में मैं आश्रय नहीं ढूँढूंगा।

लिज वापिस मिलान जाने के लिए उठ खड़ी होती है। हम कार में हैं। वह कहती है—आज का दिन खूबसूरत था—मैं कहता हूँ—यैस मिसेज बर्टन—वह कहती है—कल मैं पैरिस जाऊँगी, तुम साथ चल ही रहे हो, मजा आएगा, तुम्हें कला का जो ज्ञान है वह प्यार करने के लिए तुम्हें सारी दुनिया की खूबसूरत चीजें दे सकता है—मैं कहता हूँ—मैं माँगकर कुछ भी लेना पसन्द नहीं करूँगा और हाँ मैं पैरिस नहीं जा पाऊँगा। वह कहती है—क्यों? तुम तो मेरे साथ सात दिन काटने का वायदा कर चुके हो। मैं कहता हूँ—वह वायदा अब भी है पर सिर्फ इटली में घूमने के लिए। मैं इटली देखना चाहता हूँ, पैरिस या लन्दन नहीं। वह कहती है—पर मैं तो कल सुबह पैरिस जाऊँगी और जो सात दिन तुम्हारे साथ काटने थे उनमें स्वीडन में स्टोकहेलम नीदरलैण्ड में एमेस्टरडम और इसी तरह की जगहों के लिए पहले से निश्चित है···मैं इटली में नहीं रुक सकती।—मैं कहता हूँ—मुझे अफसोस है मिसेज बर्टन, मैं आपके साथ नहीं चल सकूंगा, मेरी जिन्दगी में सात लोकों की सुन्दर परी के साथ घूमने का मौका आया था पर भाग्य कुछ और चाहता है। मिसेज बर्टन हमारी आज की मुलाकात एक यादगार है—यह भूलूंगा नहीं।—मैं
Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिज की डायरी में अपना पता लिख देता हूँ और कहता हूँ—जब भी कभी आपका मन दुनिया की दूसरी चीजों से ऊब जाए आप मुझे पत्र लिखकर आज के दिन को जिन्दा करती रहें।—वह हँसते हुए कहती है—मैं किसी भी चीज को स्थाई प्यार नहीं करती, आज बर्टन मेरा पति है, कल वह मेरे लिए भीड़ का एक आदमी हो जाएगा। मैं कहता हूँ—पर दूसरा पक्ष भी तो आपकी तरह सोचेगा ?—वह कहती है—हाँ, उसे भी हक है पर मुझे जिस किसी ने एक बार पाया है वह मुझे कभी भूल नहीं सका—मैं कहता हूँ—आपकी व्यक्तिगत जिन्दगी में तो मैं दखल नहीं दूंगा पर क्या वस्तुतः आप मिस्टर बर्टन को छोड़ रही हैं, छोड़ने का ठोस कारण भी होगा ?—वह कहती है,—आप चलिए न मेरे साथ, सात दिन में आप मेरी जिन्दगी जान जाएँगे। मैं कहता हूँ—मुझे वस्तुतः अफसोस है, नहीं जाऊँगा।—वह मेरी तरफ देखती है, गम्भीरता से देखती है—शायद मेरे—नहीं जाऊँगा—कहने के कारण। होटल आकर हम अपने कमरों में चले जाते हैं। रूम बैरा ने मुझे बताया कि मिस्टर बर्टन आए थे, वे अपना सामान लेकर चले गए हैं। मैं सोचता हूँ मुझे लिज के कमरे में जाना चाहिए, उससे बात करनी चाहिए। इस वक्त वह थकी होगीं, मन से भी, शरीर से भी···पर नहीं मैं अपने कमरे में चला जाता हूँ। आधे घण्टे में नहाकर दूसरे कपड़े बदलकर बैठ जाता हूँ, सोफे पर और कमरे का निरीक्षण करता हूँ। कमरे में रखे रिफ्रीजीरेटर से ह्विस्की की बोतल निकालता हूँ और धीरे-धीरे पीता हूँ। पीते हुए बहुत कुछ सोच रहा हूँ।

घर पर मेरी पत्नी वीणा है। संतानहीन वीणा। यहाँ एक हूर है जिसके मोहपाश में बँधने के लिए मुझे इसी क्षण उसके दरवाजे पर दस्तक देने की जरूरत है। लिज एक ऐसी औरत है जिसे किसी भी कीमत पर कोई भी पाने के लिए द्वन्द्व युद्ध तक कर सकता है, इसके सौन्दर्य को नजदीक से देखने के लिए लोग बैरियर तोड़ देते हैं। मैं कमरे में रखा फोन उठाता हूँ। होटल एक्सचेंज से लिज के कमरे का नम्बर माँगता हूँ। उधर से रिंग जाने की आवाज आ रही है, थोड़ी देर में फोन उठाया गया, एक मर्दाना आवाज है, वह कहता है आप कॉलिंग पार्टी का नम्बर दे दीजिए

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैडम दो-तीन मिनट में बात करेंगी।

मेरे वे दो-तीन मिनट एक कल्प बन गए हैं। उन क्षणों में मैंने क्या-क्या नहीं सोचा। वीणा के परित्याग से लेकर देशत्याग तक। लिज से लेकर सुनहरे बालों वाले बच्चों तक। जमीन के हर खूबसूरत देश पर, चाँद के बारे में सोचा और अपना एक घर वेनिस से चौदह किलोमीटर दूर एन्तोनेलो के घर तक। मिलान से मोडेना होते हुए एनकूना के समुद्री तट तक-रोम से नेपल्ज तक के खूबसूरत समुद्रतटीय शहरों के बारे में। समुद्र तटों के सौन्दर्य, टारेन्तो की खाड़ी, केतेनिया के सुन्दर नगर, विस्तृत टीरेहनीयन सागर, लेगुरीयन समुद्र के तटों। वेनिस की खाड़ी—वेनिस नगर में अनेक आकार काटकर आए हुए सागर—मैं पहले भी यहाँ आया था, यह सब देखा था, आज भी देखने आया हूँ। वेनिस में शायद कोई पुरानी पेंटिंग मिल जाए, कोई आर्ट पीस मिल जाए।

तभी घण्टी बजती है—टेलीफोन मैं उठाता हूँ। 'हैलो, दिस इज लिज' उधर से आवाज आती है। मैं कहता हूँ, 'मैंने फोन किया था इस-लिए···' वह बीच में बात काटती है 'छोड़ो, तुम इस समय क्या कर रहे हो? कम ऑन फार ड्रिंक्स।' मैं कहता हूँ 'कब तक आऊँ?' वह कहती है 'अभी-अभी आओ।' और वह फोन रख देती है।

मैं लिज के कमरे में जाता हूँ। गनमैन सेल्यूट की मुद्रा में सावधान हो जाता है और मुझे भीतर जाने को कहता है। मैं भीतर जाता हूँ। अभिवादन करता हूँ। सफेद लैसदार गाउन में लिज बैठी जिन हाथ में थामे हुए है। मुस्कराती है। कहती है, 'मैं तुम्हें एक अच्छी खबर दे रही हूँ, रिचर्ड ने मुझे तलाक के लिए लिखा है—यह पढ़ो—एक नोट छोड़ गया है।' मैं कहता हूँ 'मुझे कुछ ऐसा आभास हुआ है। होटल में ऐसी कानाफूसी है, इसीलिए फोन किया था।'

'अच्छा किया। तुम अच्छे लड़के हो। मुझे आज किसी ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जो मुझे सहारा दे। तुम आ गए हो, यही सहारा है। मैंने अपनी सब एंगजमैंट कैंसिल कर दिए हैं और सुबह रोम होते हुए लास-एंजलेस के लिए चल दूंगी। बर्टन से मैंने बेहद प्यार किया है, पर मेरा प्यार एकतरफा था। वह हमेशा अफवाहें फैलाता है, अपना कैरियर आगे

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बढ़ाने के लिए ।'

मुझे वह अपने सामने करीब छः फुट की दूरी पर बैठाती है । 'आज अगर तुम साथ न होते तो ईश्वर जाने कैसा दिन निकलता । अब शाम हो गई है । रात आ रही है । मैं बहुत निराश हूँ ।' मैं उसकी बातें सुनता हूँ । कहता हूँ—'जिन्दगी है, चलती रहेगी । आप डायवोर्स तो लेंगी ही फिर नई जिन्दगी शुरू कर सकेंगी ।' वह कहती है—'मेरे साथ यह एक मुश्किल है, मैं नई जिन्दगी शुरू करती हूँ पर पुरानी जिन्दगी को काट नहीं पाती ।' मैं कहता हूँ—'काटने की कोशिश करनी चाहिए, नई जिन्दगी शुरू करने से पहले सोचना चाहिए···मुझे आपने नन्हा दोस्त कहा है, यकीन रखिए मैं दोस्ती को निभाऊँगा पर आप···' वह मुझे टोकती है, कहती है —'तुम इटली घूमो, खूब घूमो, फिर कभी मुलाकात होगी, तुम अच्छे आदमी हो, खुश रहो—लिज को याद करना, लिज तुम्हें याद करेगी । शायद केस में तुम्हारी गवाही की भी जरूरत नहीं होगी । बर्टन खुद ही शुरू कर रहा है ।' वह गनमैन को आवाज लगाती है—हल्के से दरवाजा खोलकर वह भीतर आता है । लिज कहती है—आस्क फार डिनर फार माई गेस्ट टू ।— वह चुपचाप चला जाता है । उस शाम लिज ने मुझे बहुत कुछ बताया और मुझसे शपथ ली कि उस शाम की कोई भी बात किसी को न बताऊँ—यानी डिनर आर्डर करने के बाद की कोई भी बात ।

आज तक मैंने कोई भी बात किसी को नहीं बताई, न बताऊँगा । लिज की पाँचवीं शादी के बाद मैं एक बार कनाडा गया था, टेलीफोन पर उससे सेन फ्रांसिसको में बात हुई थी । कनाडा के एक डाक्टर दोस्त ने किसी तरह हालीवुड, न्यूयार्क, वाशिंगटन न जाने कहाँ-कहाँ फोन लगाकर वह नम्बर लिया था । लिज के साथ वह शाम शुरू हुई थी डिनर पर लिए ड्रिंक्स से और खत्म हुई थी दूसरी सुबह उसे होटल की पोर्च से विदा करते हुए । इस मुलाकात के दो भाग थे, इसीलिए ये दो मुलाकातें थीं । वह एक अच्छी औरत थी, एक भावुक—समझदार औरत···विदा के समय उसने मुझे कहा था, 'मेरी जिन्दगी में आई आज तक की दुनिया में तुम अकेले आदमी हो जिसने मुझसे न कुछ माँगा और न मेरे देने पर स्वीकार किया, काश मैं तुम्हारी बराबरी कर सकती । अलविदा !' वह

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चली गई थी, मैंने हाथ हिलाया था जब तक, तीन-चार सैकेण्ड तक वह ड्राइववे में दिखती रही—मुझे साहिर की एक पंक्ति याद आ रही थी—अगले दिल हाथ हिलाते हैं, पिछली प्रीतें याद आती हैं।

मिलान एक ऐसा नगर है जिसे जिन्दगी से भरा हुआ कहा जा सकता है। यह व्यापार का और उद्योग का केन्द्र है। इन सबसे बढ़कर यह शहर संस्कृति और इतिहास की समृद्धि से युक्त है। सोलहवीं शताब्दी में बना भव्य महल केसलो सेफोरजेस्को दर्शनीय है। यह महल सफोर्जा परिवार द्वारा बनाया गया था। इस भवन की वास्तुकला, कलात्मक सौन्दर्य तथा भव्यता प्रशंसनीय है। लिज के चले जाने के बाद मैं नगर में घूमता हूँ। फिलेरेट टावर प्लाजा द' अर्मी—सेना का परेड मैदान, आर्कीयेलोजीकल म्युजियम तथा कलावीथिका दर्शनीय हैं। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है माइकलएंग्लों की कृति पाइता रोंदानीनि, लिनार्दो द विंसी की 'लास्ट सप्पर' जैसी कृतियाँ वर्षों की साध के बाद देखने को मिली हैं। सेंट एम्बरोजिओ का सुन्दर गिरजाघर लोम्बार्ड रोमनैस्क की वास्तुकला को सजीव प्रस्तुत करता है। केपेलापोर्तीनरी चेप्पल के माइकलोज्जो द्वारा बनाए गए भित्ति—फ्रेस्को दर्शनीय हैं। यह चैप्पल कोर्सो द पोर्ता तिसिनीज का भाग है, सेंट एस्तोरीजिओ का गिरिजा बहुत ही खूबसूरत बना है। बहुत से चैप्पल साथ-साथ बने हैं। इन चैप्पल्ज के बाद भव्य भवन ओसपीडेल मेज्जीऔरे है, इसका 17वीं शती का प्रांगण विशाल है और प्याजा फोन्तना की दूसरी ओर है राजमहल। इसी राजमहल में नेपोलियन प्रथम की केनोवा द्वारा बनाई गई वक्षान्त मूर्ति है। सारा नगर सुन्दर संगमरमर की कृतियों से भरा है। डियूनो गोथिक केथउरल है जिसकी ऊँचाई 324 फुट है, इसी में है चमकदार मूर्ति मेडोनिना। दूसरा दर्शनीय चर्च सेन सिपोलकरो है। यह रोमनैस्क चर्च एम्ब्रोसियन लाइब्रेरी और आर्ट गैलरी से संयुक्त है। लिनियादो द विंसी की कृतियों के अतिरिक्त लोम्बार्ड विनिसियन तथा फ्लेमिश शैली की कृतियाँ—पेंटिंग्ज हैं। कल का दिन लिज के साथ व्यर्थ गँवा दिया। इस शहर में सारे संसार की कला है। प्लेजो बोरोमियो भवन कला का उत्कृष्ट आवासीय केन्द्र है। यह मूलतः 15वीं शती में बने भवनों से युक्त है। भवनों पर असंख्य फिरेस्को बने हैं। इन

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चित्रों में खेल-कूद, शिकार, उस युग के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अंकण है। मिलान नगर की वास्तुकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है पियाजा दाइ मरकेन्ती जो वस्तु भवन निर्माण कला का सागर है। मैदान के चारों ओर सुन्दर महल हैं, इनमें रोमनेस्क प्लेज्जो डेला रेजीअन, 17वीं शती का प्लेज्जो दाइ जिऊरीकान सुल्ती, प्लेटाइन स्कूल्ज और 15वीं शती का लोजिया डेजली ओसाई भवन हैं। सब भव्य, मध्ययुगीन कला के प्रतीक।

प्लाजा डेला स्काला में विश्वप्रसिद्ध अपिरा हाउस है, म्युजियम है, ओपेरा संगीत पर बहुमूल्य साहित्य यहाँ सुरक्षित है।

आज वस्तुतः घूमते-घूमते थक गया हूँ। होटल लौटता हूँ। मैनेजर कहता है—आज आप वहुत अकेले लग रहे हैं, थके हुए भी—इटली के लोग बहुत चतुर और चालाक होते हैं। पूरे स्टाफ के लिए जैसे मैं एक अजूबा हूँ। उन सबको मालूम है कि कल की रात मैं उस कमरे में उस औरत के साथ रहा हूँ जिसे सारा विश्व मुहब्बत की बाँहों में बाँध सकता है।

रात जल्दी डिनर लेकर सो गया हूँ। थोड़ी देर बाद नींद खुलती है, पिछली रात आँखों में लौट आती। फिर नींद आती है तो सुबह आठ बजे खुलती है। टैक्सी से सीधा प्लेज्जो क्लेरिसी पहुँचता हूँ। इन भवन में ताईपोलो द्वारा बनाए कोरसो देल सोल फ्रेस्को देखता हूँ। फिर वरेरा आर्ट गैलरी जाता हूँ और सुन्दर पोल्दी पैंजोली संग्रह देखता हूँ। दोपहर का खाना 'मेनजाआनी' नामक छोटे से रैस्तोराँ में लेता हूँ। फिर शहर की गलियों में भटकता हूँ। पुरानी गलियाँ यहाँ हर चीज इतिहास के रोमांस से जन्मी है। वाया मेनजोनी के पास ही 16वीं शताब्दी में निर्मित प्लेज्जो बगाती बेलसैच्ची के क्षेत्र में घूमता हूँ। भव्य फव्वारे, हरे-भरे लान, खूबसूरत महराबदार रास्ते—पर इन सबसे बढ़कर है असीम शांति जो इस बड़े शहर के लिए आश्चर्यजनक लगती है। मैं इस चुप्पी को भी उन कलाकारों की कृति मानता हूँ जिन्होंने इस शहर के हर पत्थर में रोमांस भर दिया है। इन्हीं पत्थरों में मुझे एक मोम की मूर्ति मिली थी जो रातभर पिघलती रही और मैं रात भर विना किसी आकृत भावना के उस मोम का पिघलना देखता रहा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं टेक्सी लेता हूँ। नक्सा और गाइडबुक खोलता हूँ और शहर से बाहर, शायद पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित एबी ऑफ चार्ले विले को देखने जाता हूँ, यह एब्बी 1135 ई० में सेंट वर्नर्ड ने बनवाई थी। यहाँ सिस्टेरसियन भवन निर्माण कला का विचित्र और मनमोहक रूप देखा। फिर मिलान आकर सरटोसा दी पेनिया नामक मस्जिद को देखने लगभग 17 किलोमीटर दूर गया। यह मस्जिद विस्कोंती परिवार ने बनवाई थी, यहाँ सुन्दर पेंटिंग्ज, मूर्तियों और पुस्तकों को संगृहीत किया गया है। शाम लौटता हूँ। खूब शराब पीता हूँ, पेट भरकर खाना खाता हूँ ताकि दूसरे दिन की यात्रा शुरू कर सकूँ।

इन दो दिनों में मिलान और उसके आसपास का जो सौन्दर्य देखा उसके आगे मुझे विश्व में वहुत कुछ देखा हुआ फीका लगा। अपने देश का ताजमहल, दिलवारा जैन मन्दिर और एलोरा अजन्ता को बहुत सुन्दर कहा जा सकता है परन्तु उनके आसपास पुराने ऐतिहासिक शब्दों के चरित्र लुप्त हो गए हैं। पर मेरी आँखों के सामने है सिर्फ लिज की सजीली आँखें जिन्हें मैं लगातार इस ऐतिहासिक नगरी में अपने दिल में रखे हूँ। और गोलाकार झरोखों में मूर्तियाँ खुदी हैं, उभरकर बाहर आने को हो रहीं हैं। दरवाजे के ऊपर एक चक्कर है जिसकी नक्काशी भव्य है। इसमें केन्द्र बिन्दु से सत्रह पत्तियाँ बनी हैं। इस भव्यता का आनन्द सिर्फ देखकर ही मिल सकता है।

मुझे लगता है केथेडरल के दोनों ओर बनी खिड़कियाँ खुलेंगी और कभी इस खिड़की से और कभी उस खिड़की से लिज मेडोना का रूप धारणकर बाहर देखेगी। पर तभी शोभा कहती है, ‘आपने मेरे सवाल का उत्तर नहीं दिया ?’ वह मुझे झकझोरकर पूछती है, ‘उत्तर देने की शक्ति तुममें कहाँ चन्दर, तुम एक छलिया हो पर यह भूल गए हो कि तुम स्वयं अपने बुने हुए जाल में इस तरह जकड़े हो कि अब निकल नहीं पाओगे ?’

‘मतलब ?’ मैं कहता हूँ।

‘कुछ नहीं यार, यूँ ही मजाक कर रही थी।’
Funding by IKS-MoE

‘तू मजाक कर रही थी ?’

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'हाँ, बता अब अगला वीकएण्ड कैसे और कहाँ कटेगा ?'

'अगला वीकएण्ड, शोभा हमारे बच्चे दिल्ली में स्कूल में आ गए हैं, अगला वीकएण्ड मैं उनके साथ काटूँगा।'

'और आज ?'

'आज में भंग से व्यथित हूँ। थक गया हूँ।'

'यानी ?'

'मैं तुम्हारी इच्छापूर्ति नहीं कर पाऊँगा।'

'चल न, क्लब चलते हैं ?'

'आज नहीं, फिर कभी चलूँगा।'

'चल न यार !' वह विनय पर उतर आती है।

'नहीं शोभा, प्लीज आज मुझे क्षमा करो, नहीं जा पाऊँगा।'

'हाँ जनाब, आज आप इसलिए नहीं जा पाओगे कि आप शोभा को नीचा दिखाना चाहते हैं।'

'शोभा, यह भी मत कहो। तुमने कभी धूमकेतु देखा है— पुच्छल-तारा—जब यह उदय होता है न तो विनाश होता है ?'

'पर इससे आपको चिन्ता क्यों ?'

'क्योंकि यह पुच्छलतारा एक नहीं अनेक बनकर मुझे आज तक घेरे रहा है, इसे मैं देखकर भयभीत हूँ—उपचार ढूँढ़ रहा हूँ।'

'मैं बताऊँ ?'

'हाँ बताओ।'

'तुम मेरे साथ एक सप्ताह के लिए इटली चलो, मैं तुम्हारा लिज से पैदा हुआ तुम्हारा भरम तोड़ दूंगी। तुम ढोंगी हो। तुम्हारा ढोंग तुम्हारी सच्चाई जानकर देखूंगी।'

'शट-अप' मैं जोर से कहता हूँ। मेरा दाहिना हाथ शायद शोभा को चपत लगाने के लिए उठ रहा था, मैं उसे सँभालता हूँ। फिर एक झटके से कुर्सी से उठता हूँ और यह कहते हुए बाहर चला जाता हूँ कि जीना हराम कर दिया है।

वह मेरी और शोभा की आखिरी मुलाकात थी क्योंकि कुछ दिनों बाद समाचार पत्र में पढ़ा था कि उसने आत्महत्या कर ली और उसे

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंचकुइयाँ रोड श्मशान पर जलाया गया। मुझे अफसोस सिर्फ इतना हुआ कि उसके अन्तिम संस्कार में शामिल नहीं हो पाया।

शोभा उसके दूसरे दिन मुझे मिलने आई थी और काफी देर तक मेरी कहानी के झूठ और सच पर बकती झकती रही। फिर उसे मैंने कहानी का बचा हुआ अंश बतलाया। कहने लगी 'तुम्हारे जैसा आदमी और किसी औरत के साथ सारी रात जागता हुआ कथा-कहानी सुनता रहे यह मानने योग्य बात नहीं है।'

'कुछ सीमा तक तुम सही हो। मेरे सामने कुछ मान्यताएँ तब थीं। तुम लोग मेरी जिन्दगी में तब नहीं आई थीं। वीणा के प्रति मैं शुरू-शुरू में बेवफा भी नहीं था। फिर लिज ने मुझे अपने साथ के लिए चुना था, सहवास के लिए नहीं। मैं अपनी गति जानता हूँ। अबकी घटना होती तो लिज भी तुम्हारी सूची में होती। पर मैं जिन परिस्थितियों में उसे मिला था, उसे और परेशान करना ठीक नहीं समझता था। वह विधर्मी थी, धर्म के प्रति तब मैं इतना उदार नहीं था। मैं कभी किसी की औरत की शर्तों पर चलकर उसके इशारों पर नहीं नाचता हूँ। मेरा अहं था। एक विदेशी नारी के साथ रिश्ता कायम करना, उस दृष्टि से, ठीक नहीं लगा। यह भी एक धारणा थी। फिर लिज मुझे अपने साथ घुमाने ले गई थी, उसने विश्वास किया था, उसका विश्वास भी तोड़ना नहीं चाहता था। बस एक सीमा बनाए रखने की जिद्द थी। लिज की नजरों में मैं एक पुरुष बना रहना चाहता था। उसने मुझे इज्जत दी। मैं कला-प्रेमी हूँ, कलाकार की भी इज्जत करता हूँ। उस नाटक में मैं सिर्फ एक पात्र था। क्लोपेट्रा सामने थी, मैं एनटनी नहीं था, मरा हुआ जुलियस सीजर था। बस।'

शोभा कहती है, 'तुम हो तो ठीक आदमी, पूरी बात सही और साफ ढंग से कह गए। अगर मैं लिज की जगह होती तो तुम्हारा दर्प चूर करने के लिए कुछ भी करती! स्वाँग रचती, हिन्दुस्तान आती।'

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'शोभा तभी तो ईश्वर ने तुम्हें जो बनाया है, तुम वही हो। जिस दर्प को तोड़ने की बात तुम कहती हो, क्या उसी दर्प की वजह से तुमने मुझे फाँसा है। क्या तुम मुझे अपने लिए सिर्फ इस्तेमाल का वस्तु मानती हो ? तुम मुझे अपने स्वार्थ के लिए मिलती हो ? मेरी उपयोगिता खत्म होने पर क्या मुझे काट दोगी ? तुम शोभा···तुम···'

वह मुझे बीच में टोकती है, 'गर्म होने की क्या जरूरत है। इस्तेमाल मैं कर रही हूँ आपको या आप मुझे इस्तेमाल कर रहे हैं ?'

मैं खो गया हूँ। मिलान में। खूबसूरत भवन आर्क आफ पीस के सामने मैं खड़ा हूँ। पार्किंग लाटकी गोलाई में असंख्य कारें खड़ी हैं और सामने है एक ऊँचे प्लेटफार्म पर आपने सामने बने दो भवन, जिनका पीछे का भाग भापाकार है। सामने बरामदे में एक ही पत्थर से तराशे हुए पिलर हैं, मध्यभाग की छत एक चकोर छत है जिसमें अर्द्ध चन्द्र की-सी चारों ओर स्काई लाइट है। दोनों किनारों से वृहदाकार दरवाजे हैं, वे भी आर्कशेप हैं। सामने चार खिड़कियाँ हैं। सफेद संगमरमर पर खुली खिड़कियाँ इतनी बड़ी हैं कि उनके भीतर से छोटी कार अन्दर फेंकी जा सकती है। इन दोनों भवनों से बराबर दूरी पर एक अन्य भवन है जो सामने दो भागों में दो-दो खम्भों पर टिका है। संगमरमर की छत सुन्दर है। यह अलग प्लेटफर्म पर स्थित है जो दूसरे दो भवनों के सामने के प्रांगण के पत्थरों से बराबर जुड़ी है। प्लेटफार्म का केन्द्रीय भाग चार वड़े पत्थरों और चार छोटे पत्थरों को जोड़कर बना है। छोटे पत्थरों का आकार इतना है कि वहाँ चार बसें एक साथ जोड़कर खड़ी की जा सकती हैं। बड़े पत्थर छोटे पत्थरों से तीन गुना बड़े हैं। पत्थरों को बड़ी सफाई से तराशा गया है। चारों ओर हरियाली है।

खूबसूरत मौंजा केथाडरल के सामने अकेला खड़ा हूँ, केथेड्रल के सामने चार बुर्ज हैं जो आकाश को छू रहे हैं, उन पर क्रास बने हैं। पाँचवाँ बुर्ज ठीक केन्द्र में है, उस पर भी क्रास है। ऊपर तीन चौरस तराशे हुए उभार हैं जिनमें केम्थो स्टाइल में खुदाई की गई है। ऊपर से ग्यारह हारनुमा आर्क केन्द्र में हैं। दो बुर्जों पर दोनों ओर ओर भी आर्क नीचे के पिल्लज तक आते हैं। ऊपरी पिल्लज के नीचे 9 लम्बे हराकार के खुदे हुए दरवाजे-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नुमा आकार हैं जो नीचे उतरते हुए छोटे होते गए हैं जैसे एक-एक आकार दो-दो टुकड़ों में बँटा हुआ। केम्यौ और एन्टीलियो टेकनीक का भरपूर प्रयोग हुआ है यहाँ, केन्द्रीय दरवाजे पर सुन्दर अर्द्धचन्द्राकार खुदाई है और दोनों मिलान के बाद मुझे पूरी इटली की यात्रा करनी थी। वीणा का आने का कार्यक्रम उसके बाद की अस्वस्थता के कारण अचानक स्थगित हो गया था। वस्तुत: इटली की यात्रा के लिए मिलानो से शुरुआत करना अधिक अच्छा रहता है। भारत से चलने से पूर्व ही मैं मिलान में दो-तीन दिन काटने की योजना बनाकर आया था और वीणा से कहा था कि मुझे वेनीस में मिले। रात वीणा का केबल आया है कि वह सोमवार की फ्लाइट से रोम आएगी और वहाँ से वेनीज पहुँचेगी। आज बुधवार है, अर्थात् मैं जीनोआ होकर ओस्टा और टोरिनो जाकर आराम से सोमवार 22 अगस्त को वीनीज पहुंच सकता हूँ। फ्लाइट एजेंट ने व्यवस्था एयर इण्डिया के द्वारा कर दी है और मेरे पास चार दिन हैं, वीणा के आने तक मैं काफी घूम लूंगा। मिलान से अगली सुबह टैक्सी लेता हूँ और ट्यूरिन के लिए रवाना होता हूँ।

17 अगस्त—मैं अपनी डायरी में लिखता हूँ ट्यूरिन एक खूबसूरत शहर है, उस आधुनिक शहर में अतीत का सौन्दर्य भी है और आधुनिकता की दृष्टि भी। 13वीं शती के केसलो के महल से शुरू होकर, प्याजा रील के समीप ही 17वीं शताब्दी में लगभग 16:8 में बना शाही महल देखा। शाही हथियार गृह के अलावा कला की अद्वितीय कृतियाँ देखीं। केथेड्रल में भगवान् यीशू के शरीर पर के वस्त्र यहाँ संगृहीत हैं, इन वस्त्रों में उन्हें मृत्यु के बाद लपेटा गया था।

आगस्तिन दीवार के प्लेटाइन टावर्ज तथा यहाँ के सुन्दर म्युजियम दर्शनीय हैं। इजीप्शियन म्युजियम और सेवाउडा गेलरी में सुन्दर ऐतिहासिक कृतियाँ हैं जिनमें वान ऐक, मेमलिंग, पान डैक तथा रेम्ब्रां की कृतियाँ बहुमूल्य हैं। इनके अतिरिक्त एंग्लीको, पोलेओलो तथा वोतीशैली की दर्शनीय कृतियाँ हैं। इन म्युजियमों में बहुत कम यात्री रुचि रखते हैं, बहुत कम भीड़ भाड़ थी।

Funding by IKS-MoE

वेलेन्तीनो पार्क पहुँचते हुए मुझे शाम हो गई थी। यह स्थान पो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नदी के किनारे है, मध्ययुगीन गाँव इस नदी के तट पर बसा है, यहाँ से करीब माउंट केपुसिनी से नगर का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है। कितनी अजीब बात है कि पिछले सोमवार इसी पो नदी के किनारे मैं सारा दिन रहा, इस पहाड़ी के समीप आकर लौट गया। लिज के साथ ने मुझे सब भुला दिया था अन्यथा रात-दिन इटली का नक्शा अपने साथ रखने वाला मैं कभी ऐसी त्रुटि नहीं करता।

दूसरे दिन मैं सूसा नगर देखने के लिए चला गया। यहाँ पुरानी प्रथम शताब्दी वी० सी० की रोमन दीवारें हैं, भव्य आर्क आफ कोरियस है और रोमनक्स केथेड्रल भी दर्शनीय है। टैक्सी की यात्रा में अत्यधिक मजा आता है। टूरिस्ट ब्यूरो का ड्राइवर मेरी भाषा नहीं समझता पर उसे यह जरूर मालूम है कि कौन-सा रास्ता कहाँ जाता है और कौन-सी जगह दर्शनीय है। उसी शाम एवरीया पहुँचा। धुँधलके से पहले 16वीं शती का एक महल देखा। एक बहुत पुराना केथेड्रल भी देखा, परन्तु किस केथड्रल और मीलान के केथड्रल में काफी समानता पाई। सिर्फ वक्त के थपेड़ों ने इसे कुछ वृद्ध कर दिया है। मैं डोरावालटी घाटी से होता हुआ, रास्ते में पड़ने वाले सुन्दर महलों को देखता हुआ इवरीया से करीब 26 मील दूर इसौन पहुँचा। यहाँ एलपीन्ज के दर्रों से नीचे ओस्ता घाटी का सुन्दर राजमहल है, इसका पूरा प्रांगण आर्कों से भरा है। 15वीं शताब्दी के सुन्दर फ्रेस्को हैं और महलों के अन्दर बहुत खूबसूरत फर्नीचर है। अँधेरा होने के कारण फेनीस कॉसल नहीं देख पाया। ओस्ता नगर पहुँचते हुए रात के साढ़े नौ बज गए थे। थक गया हूँ। ठहरने की व्यवस्था ठीक की गई थी। मेरे यहाँ लेट इवनिंग को पहुँचने की खबर समय पर मिलने से नहाने के लिए गर्म पानी और स्पेशल इटेलियन भोजन तैयार मिले। रात खूब नींद आई।

18 अगस्त : टैक्सी वाला सुबह आठ बजे आ गया था। पर मुझे नीचे उतरते हुए साढ़े दस बज गए। पुराने रोमन साम्राज्य के भग्नवशेष यहाँ देखने योग्य हैं। आर्क आप आगस्टस और पोर्ता प्रेक्टोरिया का थियेटर भी दर्शनीय है। एक मध्ययुगीन चर्च [illegible] सेंट ओरसो के नाम से प्रसिद्ध है, अच्छा है। परन्तु यहाँ केथड्रल की चुप्पी डरावनी है। कैथ-

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ड्रल और लेपर्ज टावर के अतिरिक्त अन्य कोई आकर्षण नहीं है। करीब डेढ़ घण्टे की यात्रा के बाद हम सर्दऋतु क्रीड़ा स्थल पर पहुँचते हैं। मैं ब्रांडी पीता हूँ और लंच में जो भी ऊटपटाँग समझ आया, मँगवाकर खाता हूँ। खाना अच्छा नहीं लगा। यह लीरा करन्सी का हिसाव कितावी एक लंच में पच्चीस-तीस हजार लीरा खर्च करा देता है। शराब का पैसा अलग। मुझे विदेशी मुद्रा की कमी नहीं है। मेरी अपनी कम्पनी की एजेन्सी पैरिस और रोम दोनों जगह है। दरअसल मेरे पास पैसा बहुत ज्यादा है। कुछ खरीदने के लिए निर्णय नहीं कर पाया हूँ इसीलिए जेब गर्म है।

बाद दोपहर कोरमोयुअर के मांऊट बलैंक के ग्लेशियर के ऊपर बने केवल में से दिग्दर्शन करता हूँ। एल्प पर्वतमाला का रमणीय दर्शन यहाँ से अच्छा लगा। ठीक नूरपुर या कांगड़ा से दिखने वाले धौलाधार की तरह। रात मुझे वेरसैली में काटनी है। लगभग चालीस मिनट की टैक्सी यात्रा के बाद यहाँ पहुँचा हूँ। यहाँ सैंट एण्ड्रयु का चर्च है। शाम हो रही है पर रात दूर है, चाँदनी रात है, मैं ओर्ता झील देखने निकल पड़ता हूँ। यह झील पहाड़ों के बीच में कटोरे की तरह फैली है और इस झील के ठीक बीच है सेन जयुलियो का जजीरा। पुराने रोमन साम्राज्य के चिह्न हैं पर चाँदनी रात में वे अधिक स्पष्ट नहीं लग रहे हैं।

19 अगस्त : सुबह जल्दी उठता हूँ। तैयार होता हूँ। झीलों और एल्प पर्वतमाला के सुन्दर दृश्यों के साथ-साथ में स्ट्रेसा नगर पहुँचता हूँ। यहाँ खुशनुमा मौसम है। कोट उतर गया है, हल्के पुल ओवर से यात्रा अच्छी लग रही है। झील मैगीओर के चारों ओर हरियाली का वातावरण है। यहाँ के पास ही किश्ती द्वारा हम आईसौला बेला और आईसौला दाइ पेस्केटोरी देखता हूँ। पूरा देहाती वातावरण है यहाँ। फिर झील के किनारे-किनारे यात्रा करते हुए अनेक सौन्दर्य स्थलों को मैं देखता जा रहा हूँ। मन नहीं भर रहा है। बेवैनो की सुन्दर खाड़ी, प्लांजा, इन्तरा, घीफा, केनारो से होते हुए, रास्ते में दूर दिखाई दे रहे पुराने रोमन खण्डहरों के साथ-साथ हम केनो बीयो नामक कस्वे में पहुँचते हैं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस कस्बे के घर सुन्दर हैं। घुमावदार रास्ते हैं, चापयुक्त पोतीको हैं, लौहो और लकड़ी की खुदाई का दर्शनीय काम सर्वत्र घरों पर मौजूद है। यहाँ लंच के नाम पर कुछ स्नैक्स लेता हूँ और अपनी अगली मंजिल की ओर चल देता हूँ।

कोमो एक छोटा परन्तु सुन्दर नगर है। इसी नाम की अविस्मरणीय सुन्दर झील है यहाँ। वैसे मेरा रात का बुकिंग होटल ड-एस्ट में है, यह होटल एक पुराना महल है। परन्तु मैं रात या तो मौंजा में काटूँगा या मिलान में, यह निश्चय कर लिया है और कोमो में बुकिंग कैन्सिल करने के लिए लोकल पेट्रोल पम्प से फोन कर दिया है। बड़ी मुश्किल से उन्हें अपनी बात समझा पाया हूँ। मौंजा से पहले लैको नामक कस्बा है, मौंजा पहुँचा तो पता चला पाँच बजे के बाद कैथड्रल नहीं देख पाऊँगा। इस कैथड्रल में लोम्बार्ड्ज़ का लौहे का ताज है, यह ताज चार्ल्स पंचम तथा नेपोलियन की ताजपोशी के लिए प्रयुक्त हुआ था। मोटर रेस ट्रेक में मेरी कोई रुचि नहीं थी, इसलिए रात मिलान में काटना जरूरी हो गया। रास्ते में सैस्टो सेन जीओबनी नामक छोटा औद्योगिक नगर था। मिलान में रात काटना अजीब-सा लगा। मैं इस शहर को लिज से जोड़ता हूँ। जिन्दगी भर इस शहर को भुला नहीं पाऊँगा। अगर मैं भी किसी केसल का मालिक होता और मेरे पास कोई माइकलैंग्लो जैसे बुत तराश होते तो लिज की एक अन्य मूर्ति बनाता और कोमो की झील में एक पहाड़ी बनवाकर उस मूर्ति को वहाँ रखता ताकि वह हमेशा रोमन खण्डहरों और भग्नावशेषों में आधुनिक क्लिपेट्रा के रूप में अतीत के सौन्दर्य को चुनौती देती—मूर्ति के नीचे लिखा होता—बीसवीं शताब्दी के द्वितीय चरण में, भारत देशवासी···ने जिस सौन्दर्य को पाने से इनकार कर दिया उस क्लियोपेट्रा की मूर्ति उसी भारतीय ने बनाई। क्यों ? वह भारतीय हर साल यहाँ आता है और मूर्ति के सामने कुछ क्षण खड़ा रहता है, लोग कहते हैं वह उस औरत से प्यार करता था—

20 अगस्त : मीलान छोड़ते हुए कुछ बुरा लग रहा है। पर मुझे 22 को वेनीज़ पहुँचना है, यहाँ मेरे जीवन की वास्तविक क्लियोपेट्रा वीणा आ रही है। वीणा जो कभी चेहरे पर हँसी नहीं लाती, जो हमेशा गम्भीर

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बनी रहती है। केसानी द एड्डा के रास्ते में यात्रा शुरू करता हूँ। यहाँ बोरोमियो भवन और सुन्दर महल देखा। आगे ट्रेविजलियो नामक कस्बा आया वहाँ एक कप कॉफी पी और सेंट मार्टिन का चर्च देखा। प्रसिद्ध चित्रकार एवं मूर्तिकार माईकलैंग्लो पैदा हुए थे केरावेजियो नगर में, और कुछ विशेष नहीं है इस जगह। बरगेमो का कस्बा मध्यकालीन भवनों और सेंट अगस्टाइन के चर्च के लिए जाना जाता है। एकाडेमिया केरारा में लोम्बार्डी आर्ट गैलरी में लोटो, कारपेकाशियो, वेलिनी, एग्लीको, दोरेक तथा ताईपोलो की विश्वप्रसिद्ध कृतियाँ देखीं।

इस्यो झील से पहले सीरीऐट नामक प्राचीन नगर पड़ता है। इसके समीप ही एण्डाइन झील तथा सेंट मेरी आफ नाइव्ज़ का प्राणी अभ्यारण्य देखा। इस्यो झील का क्षेत्र काफी बड़ा है। यहाँ से चलकर हम ब्रेशिया पहुँचे। यहाँ की मार्किट तथा पुराना राजमहल सुन्दर हैं। मुझे वेस्पेशियन के पुराने धार्मिक स्थानों में रोम का पुरातन अतीत मिला। इन खण्डहरों के समीप रोमन म्युजियम देखा। इसमें 'विंग्ड विक्ट्री' जैसी पुरातन भव्य मूर्ति देखी। यहाँ ब्रेशिया स्कूल के पुराने चित्र थे और रफैलो, टिनटोरेटा तथा क्लोअत द्वारा बनाई गईं पेंटिंग्ज देखीं। यहाँ अनेक पुराने चर्च हैं। वेनीशियन महल से एल्प पर्वत श्रृंखला का मनोरम दृश्य देखा। मध्य-युगीन म्युजियम में हाथीदाँत की कृतियाँ, जवाहरात, लौहे की कारीगरी का काम, मूर्तियाँ तथा जराबख्तर भी देखे। यहाँ आकर मुझे अपने आधुनिक युग में होने पर विश्वास ही नहीं होता है। सब पुराना, इतिहास से जुड़ा हुआ। यहाँ से इटली की सबसे बड़ी झील गार्डा करीब 21 किलोमीटर है। सरमियोनी टापू में पुराने रोमन खण्डहर देखे। मेनटुआ नगर में टावर्ज की बहुतायत है। यहाँ दोपहर का भोजन लिया। इस नगर का ड्यूकल पैलेस तिमंजिला है और उसके बरामदे में चापाकार पिलर लगे हैं। गोनजगा महल दूर से ही देखा, वहाँ शायद एक म्युजियम भी है। ड्यूकल महल में बड़े-बड़े हाल हैं, सुन्दर खुले रास्ते हैं। कहते हैं ओपेरा म्युजियम का जन्म इस राजमहल में हुआ था। यहाँ के संग्रहालय में एण्ड्रिया मेनटेगना की सुन्दर पेंटिंग केमरा डेगली स्पोसी बहुत सुन्दर है।

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैं अगली सुबह वेरोना में काटूँगा। शाम हो गई है। वेरोना में होटल बुकिंग है। टैक्सी वाले का नाम टिनटोरेता टेलिनो है। बड़ा मस्त आदमी है। खूब इटेलियन गीत सुनाता है, और उसकी उपयोगिता मुझे इसी में लगी कि वह देखने योग्य किसी भी जगह को मुझे दिखाए बिना नहीं मानता। गार्डा झील के पास बसे ब्रेशिया नगर के बारे में उसने मुझे किसी तरह समझाया कि छोटे होते वह वहाँ रहता था और उसे तैरना खूब आता है। इन सुन्दर जगहों को बिना अपने किसी घनिष्ठ साथी के देखना एक अपराध लगता है। कहीं हरी घास पर कुछ क्षण बैठना चाहता हूँ, कहीं तस्वीर खिंचवाना चाहता हूँ—पर अकेले यह सब बुरा लगता है। इटली का प्राकृतिक सौन्दर्य, पुरातन कला सब दिल और दिमाग पर छाए हैं और हमारी टैक्सी वेरोना की ओर बढ़ रही है—उसके साथ ही लिज के साथ बीती मिलान की शाम दूर होती जा रही है। संगमरमर की सुन्दर मूर्तियाँ देखूँ, पेंटिंग्ज देखूँ या पुराने महल अथवा झीलें—सर्वत्र मुझे लिज का ख्याल बाँधे है। जिन्दगी में एक नया वहम और पाल लिया। दिमाग के मेमोरी सेक्टर में एक उलझी हुई याद जमा कर ली।

वेरोना करीब साढ़े नौ बजे पहुँचे। अँधेरे के कारण रास्ते के सुन्दर दृश्य नहीं देख सका। वेरोना इटली का एक बहुत खूबसूरत शहर है।

21 अगस्त : आज सुबह बहुत जल्दी नींद खुल गई। होटल के कमरे की खिड़की खोलता हूँ तो खपरैलनुमा टाइल्ज वाले, तिमंजिले, आर्क्ड दरवाजों वाले, चूने और लाल ईंट से बने बड़े-बड़े घरों से सामना होता है। दरवाजे बढ़िया लकड़ी के हैं, तराशे हुए खुदाई के काम वाले दरवाजे-खिड़कियाँ पुरातन के बहुत करीब ले जाते हैं। मैं पैदल घूमने के मूड में निकल पड़ता हूँ। अनेक चर्च, रोमन, मध्ययुगीन और 18वीं शताब्दी के समय के भवन बाहर से ही मोह लेते हैं। होटल लौटकर, नहा-धोकर तैयार होता हूँ। टैक्सी से घूमना चाहता हूँ, पर होटल के मालिक मिस्टर वोनाकोलजी से भेंट होती है। बूढ़े आदमी हैं। अंग्रेजी समझते हैं। होटल में रहते हैं जबकि कामकाज उनके लड़के देखते हैं। बुढ़ापे में कोई साथी नहीं है। लड़के एक पुराने पैतृक विला में रहते हैं। वे मुझे अपनी कार

Funding by IKS-MoE

में घुमाने ले जाते हैं। उनकी कार 1950 माडल की फीएट है। नई से भी अधिक सुन्दर। इसके अलावा ग्यारह कारें उनके पास हैं पर शहर में फीएट का यह माडल अकेला है और लोग उन्हें तेज स्पीड वाला वोनाकोलजीओ कहते हैं। फीएट माने तेज स्पीड।

प्याजा वरा में पुराना वृहदाकार रोमन अखाड़ा जाते हैं। मेरे बुजुर्ग दोस्त उसका पूरा इतिहास बताते हैं। अब तक बिना गाइड के टैक्सी ड्राइवर से पूछकर सब देखा था। वोनाकोलजीओ के साथ यह सब देखने में आनन्द आ रहा है। अखाड़ा अपने आप में इतना बड़ा है कि 40000 लोग बैठ सकते हैं। आधुनिक स्टेडियमों से भिन्न, पर रखरखाव के बाव-जूद, पुरानेपन की गन्ध से भरकर भी आधुनिकता से अछूता नहीं। कोलोजियम स्टेडिया से थोड़ा छोटा है।

इसके बाद हम 14वीं शती में निर्मित केस्सलवेशियो नाम के पुराने किले के दर्शन करते हैं। यहाँ एक म्युजियम है जो सिविक म्युजियम या कुछ ऐसा ही कहलाता है। वेनिशन आर्ट गैलरी में मुझे परमेजियेनों की कोई पेंटिंग देखने को नहीं मिली जबकि पारमा में इसके दो चित्र देखे।

सेनजेनो (झेनो) चर्च मनोहारी है। वोनाकोलजीओ बताते हैं कि यह चर्च 5वीं शती में बनना शुरू हुआ था और बारहवीं शती में बनकर तैयार हुआ था। यहाँ शाश्वत से लगने वाले रोमनस्क स्टेचू हैं जिन्हें निकोलो ने बनाया था। मेरे मत में दो मूर्तियाँ गुगलेयो नामक मूर्तिकार ने भी बनाई थीं। एण्ड्रिया मेंटेग्ना ने भी इसे सजाया-सँवारा था।

हम प्याया दाय सिगनोरी पहुँचते हैं। मध्ययुग की कला और रैनासाँ (कला पुनर्जागरण) काल में यह प्याज़ा पूरा हुआ था। भारत में ग्वालियर के बाड़े की तरह है पर उतना गन्दा नहीं। इसी क्षेत्र में प्लेजो डेला रेजिनी और लोगिया क्षेत्र भी हैं। प्लाज़ा नगर के सुन्दरतम महल के समीप है। महल से लगी सड़क आर्क स्केलिगर में जुड़ा है जहाँ ला-स्काला परिवार के लोगों की कब्रें हैं। ग्वालियर की छतरियाँ या भारत में शिवपुरी की छतरियाँ भी कब्रें हैं। परन्तु वे मन्दिरों से प्रभावित हैं, यहाँ कि कब्रें संगमरमर या काले पत्थर से बनी हैं। ला स्काला शासकों ने वेरोना पर लगभग तीन सौ वर्ष राज्य किया। उन्होंने जो कुछ भी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बनवाया उसमें कला है, इतिहास है, मान्यता है।

जूलियट का नाम शेक्सपीयर में पढ़ा था। इस नगर में जूलियट का घर है, मैं एक रोमियो की तरह वहाँ खड़ा देख रहा हूँ। बूढ़ा मित्र मुझे पुराने रोमांस और साहित्य की जन्मदायिनी जूलियट का शब्दों में साक्षात्कार करवाता है।

सैंट पीटर की पहाड़ी के नीचे रोमन थिएटर देखा। यहीं साथ लगे आर्कियालोजिकल म्युजियम हैं—रोम का सारा अतीत यहाँ वेरोना में वर्तमान है। नगर में सेंट जार्ज का चर्च दर्शनीय है जिसमें वेरोनीज और टिनटोरेटो जैसे महान कलाकारों की कृतियाँ हैं। चर्च से कुछ आगे एक पुल पार करना पड़ता है, पुल के पार रोमन थिएटर के सामने से एक सड़क रोमनेस्क कैथड्रल और सैंट अनसटेशिया का गोथिक चर्च है। इस चर्च में पिसानिलो द्वारा चित्रित फ्रेस्को है। सुन्दर भित्ति-चित्र मन-मोहक हैं। गोथिक चर्च में आल्टर के बाईं ओर रखे प्यानो पर सुन्दर गुलदस्ते में ट्यूबरोज और गुलाब के मुरझा चुके फूल हैं।

लंच के बाद मैं टैक्सी में विसेंजा नामक नगर की ओर चल देता हूँ, वहाँ से मुझे अपने अगले पड़ाव वेनीज पहुँचना है। विसेंजा वेरोना से 48 किलोमीटर है। इस नगर में प्रसिद्ध कलाकार एण्ड्रिया प्लेडियो की कृतियों की बहुतायत है। समस्त भवनों पर, बाजारों में इसका प्रभाव है। एक सड़क नगर को दो भागों में बाँटती है। इस सड़क के दोनों ओर सुन्दर महलों की कतारें हैं। इन भव्यों महलों के मुकाबले नगर की अन्य इमारतें भी कम नहीं लगतीं। कोन्तरा पार्टी, गोथिक कासा, पोर्टो, सैकरोनी, तथा लेडियो नामक निर्माता के बनवाए प्लाजा वयगो, प्लेज्जो कोलियोनी पोर्टो, कासा त्रिसिनो, कासा पोर्टो तथा प्लेजो थाइन के सुन्दर भवन हैं। प्लेडियो द्वारा निर्मित प्याजा दाय सिगनोरी, तथा ओलम्पिक थिएटर तथा प्लेज्जो चेरीकटी जैसे दर्शनीय स्थल देखे।

चेरीकटी महल में आर्कीयालोजिकल म्युजियम तथा कलावीथिका हैं। कलावीथिका में व्रेशिया स्कूल, इटेलियन स्कूलों के अलावा विदेशी कला-कारों द्वारा बनाए चित्र दर्शनीय हैं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोथिक कैथड्रल समयाभाव के कारण नहीं देख पाया। आसपास का क्षेत्र भी देखने योग्य बताया गया, विशेषकर माउंटवेरिको तथा प्लेडियो का सुन्दर महल देखने की इच्छा शेष रह गई है। फिर कभी आया तो जरूर देखूंगा।

टैक्सी तीव्र गति से सिटाडेला की 14वीं शती की दीवारों से आगे निकलकर केसल फ्रैंको पहुँची। यहाँ प्रसिद्ध कलाकार जिओरजिओन का जन्म हुआ था, नगर के कैथड्रल में उनके द्वारा चित्रित मेडोना की कलाकृति देखी। ट्रेवीसो नगर पहुँचते-पहुँचते सूर्य की रोशनी हल्की पड़ने लगी थी, मुझे जल्दी से यह नगर देखकर अपने आज रात के पड़ाव वेनीज पहुँचना है, कल वीणा आएगी ! ट्रेवीसो शहर में सुन्दर नहरों का जाल बिछा है। नगर नहरों के कारण सुन्दर है। आर्ट गैलरी बन्द हो चुकी थी। गोथिक चर्च जिसे सेन निकोलो चर्च कहा जाता है, भी, बाहर से देखी। बुरानैल्ली नहर काफी बड़ी है। नहरों का रंग नीलिमा लिए हुए है।

बारह मील की अगली यात्रा में मेस्तेर के औद्योगिक कस्बे के बाहर निकलते ही वेनीज नगर के भवनों पर नजर पड़ती है ! धुँधलके में शहर की नीली, लाल, पीली रोशनियाँ ऊँची-नीची इमारतों के बाहर-भीतर अद्भुत छटा बिखेरती हैं। सवा आठ बजे हैं रात के। आज बेहद थका हूँ। इन खूबसूरत इमारतों में अतीत ही अतीत है, अतीत लुभावना है। जी होता है प्रत्येक कलाकार के जीवन के बारे में लाखों प्रश्नों के उत्तर इस देश के लोगों से माँगू। कलाकार कला के इतने दीवाने क्यों थे, उनकी छैनियाँ या कूचियाँ कहाँ हैं, वे क्यों संग्रहालयों में सुरक्षित नहीं हैं। उनके वंशज कहाँ हैं, क्या वे जानते हैं कि डेविड या मेडोना की मूर्ति घड़ना जन्म देने से भी ज्यादा मुश्किल है ? कोख में पला बच्चा जन्म तक दर्द देता है, फिर बड़ा हो जाता है, कला की प्रत्येक कृति शुरू से अन्त तक दर्द देती है। पत्थर के टुकड़ों से पूछो जो छैनी से पृथक् होकर इन मूर्तियों से विलग फेंक दिए गए हैं, उन टुकड़ों ने अपना अस्तित्व खोकर कंकर बनकर इस कला को पूर्णता दी है। वह कौन-सा घोड़ा है जिसकी पूंछ के बालों से लिनियादो—द—विंसि के ब्रश बने थे···? मैं थक गया हूँ।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शैम्पेन पीने को मन है। पर पहले नहाकर ताजगी चाहता हूँ। नहाने के बाद मैं कमरे में शैम्पेन बुलाकर पीता हूँ। शैम्पेन की दो बोतल पी गया हूँ। साढ़े दस बजे हैं। नीचे डायनिंग रूम है। एक अँधेरे कोने में बैठकर एक शैम्पेन और मँगवाता हूँ। तभी एक लड़की मेरे टेबल पर आती है—मुस्कराती है। बैठ जाती है। इतेलियन में कुछ कहती है। मैं समझ नहीं पाता। वह मुझे टेवल पर उँगली से कुछ बनाकर समझाती है, मैं फिर भी समझ नहीं पाता, शायद समझना नहीं चाहता। मैं सिगरेट जलाता हूँ, उसे आफर करता हूँ, वह सिगरेट पीती है। होटल का मैनेजर या शायद कोई अन्य अधिकारी है, वह कुछ देर बाद हमारे टेबल पर आता है। वह अंग्रेजी में कहता है, 'क्या यह आपके साथ हैं ?' मैं कहता हूँ 'नहीं'। वह उस महिला से इतेलियन में कुछ कहता है। लड़की सिर हिलाती है। शायद कुछ मना करती है। फिर कुछ बोलती है। वह आदमी कहता है—'यह रात को मसाज करने के लिए आपके कमरे में आना चाहती है।' मैं कहता हूँ, 'मैं तन्दरुस्त हूँ, मुझे मसाज की आवश्यकता है ही नहीं।' वह उस लड़की से फिर इतेलियन में कुछ कहता है और वहाँ से चला जाता है। लड़की कहती है 'पिस्ते···लिए···' मैं ध्यान नहीं देता हूँ। वह अपना अधपिया सिगरेट एशट्रे में रखकर उठ जाती है। मैं आराम से खाना खाता हूँ। स्वीटडिश में ब्राजिलन पुडिंग माँगता हूँ। मुझे बैरा बताता है कि सिर्फ लोकल-इटेलियन पुडिंग हैं—मैं एक स्वीट वाइन मँगाता हूँ। वाइन अच्छी है। धीरे-धीरे पीता हूँ। बिल पर हस्ताक्षर करता हूँ फिर उठकर अपने सूट में चला जाता हूँ। मुझे नींद आ गई है। वीणा आ रही है··· लिज जा रही है। कोई दरवाजे पर दस्तक देता है। मैं उठ नहीं पाता हूँ। फिर दस्तक बन्द हो जाती है। कुछ क्षण बाद टेलीफोन की घण्टी बजती है। मैं उठकर फोन उठाता हूँ। 'यैस···यैस···आई सी···सैंड इट····' मेरे लिए भारत से केबल है। भेजने वाली हैं वीणा। फिर दस्तक होती है, मैं दरवाजा खोलता हूँ। रूम ब्वाय ट्रे में कैबलग्राम रखे मुझे देता है। वीणा की दी हुई है। मैं दरवाजा बन्द करता हूँ। पढ़ता हूँ। वीणा नहीं आ रही है, पप्पा सख्त बीमार हैं, ··· ने, मुझे आने में जल्दी नहीं करने को कहा है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

22 अगस्त : तो वीणा नहीं आ रही है। साढ़े तीन बजे हैं। मैं फिर सोता हूँ। सपने में लिज कहती है—तुम मेरे साथ चलते तो कितना अच्छा लगता। मजा आता। बर्टन को जलाने में मजा आता। मैं स्वप्न में बहुत कुछ देख रहा हूँ, कर रहा हूँ। सफेद राजसी वैडिंग कपड़ों में लिज मेरे साथ है। हम दोनों विवाह के बाद सेन जेनो चर्च वेरोना की सीढ़ियों पर हैं। दुल्हन की वैडिंग ट्रेन मेरी ट्रेन से बहुत लम्बी है। मैं काले बन्द गले का कोट उसी रंग की पैंट के साथ पहने हूँ। कोट की ऊपर की पाकेट में क्रिमजन रंग का रूमाल है। मुझे पसीना आ गया है, मैं रूमाल से पसीना पोंछता हूँ...पर घबराहट और पसीने से वहाँ रुकना नहीं चाहता। लिज के हजारों प्रशंसक सीढ़ियों के नीचे खड़े हैं—तभी मैं जोर से चीखता हूँ...नींद खुल जाती है, सुबह की धूप खिड़की से छनकर भीतर आ गई है। पर यह सपना क्यों ? वीणा नहीं आ रही है...मैं वेनीज़ में अकेला घूमूंगा। नहा-धोकर तैयार होना है। टेलीफोन पर चाय के लिए कहता हूँ।

तैयार होते-होते दस बज गए हैं। नाश्ते के लिए कुछ खाने को मन नहीं है। फिर भी पेट भरकर नाश्ता करता हूँ। लंच नहीं लूँगा। आज ही यह निर्णय करना होगा कि आगे की यात्रा का क्या किया जाए ?

नगर देखने के लिए टैक्सी और गाइड सारा दिन के लिए हैं। भ्रम होता है कि गाइड वही लड़की है जो शायद रात मेरे टेबल पर बैठी थी। कोई और भी हो सकती है, स्लिम, सुन्दर, बिना मेकअप के। पिकासो की तस्वीरों की औरतों की तरह कन्धे के ऊपर तक बाल कटे हैं। लड़की अंग्रेजी बोलती है। भ्रम दूर हो गया। यह लड़की हंसती बहुत है। गम्भीर भी बहुत जल्दी हो जाती है।

नगर दर्शन शुरू होता है। हम प्याजा सेन मारगो पहुँचते हैं। नगर भ्रमण हेतु यहीं से दो रास्ते जाते हैं। किसी एक रास्ते से यात्रा शुरू की जा सकती है। इस सुन्दर शहर को स्वर्ग कहा जाए तो भी शायद ठीक नहीं। नेपोलियन इस नगर को संसार का सबसे सुन्दर नगर मानता था।

सैंट मार्क का वेनिशियन अपने में ठीक, मध्ययुगीन वायजेन्टाईन और टसकेन कला का समृद्ध नमूना है। इसके पास ही डोजेस महल है। इसकी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऊँचाई, भव्यता गोथिक शैली में अभिव्यक्त है। मेरी गाइड कहती है विश्व के आवासीय भवनों में कदाचित यह सब युगों का श्रेष्ठ भवन है। मैं इस भवन के भव्य द्वार पर हूँ। सफेद पत्थर और संगमरमर में सब कुछ तराशा गया है। मुख्य दरवाजा चोरस है। बाहर से ही फर्श पर लाल पत्थर बिछाया गया है जिसके स्लेब तीस-तीस फुट तक के हैं। चोरस गेट पर शेर की भव्य खुदी हुई मूर्ति है। इस गेट के दोनों पिलर ऊपर बने आर्कदार दरवाजे के ऊपर तक जाते हैं। आर्क के ऊपर का पंचकोण आकार है तथा दोनों पिलर मन्दिर के आकार के ऊपर उठे हैं। केन्द्रीय मूर्ति गोलाकार खुदे हुए पत्थर से जैसे बाहर निकल रही है। भीतर के महल तक जाने के लिए इसी प्रकार के वृहदाकार चार दरवाजे हैं। भीतर के गेट में सफेद मूर्ति इतनी ऊँचाई पर है कि बाहर दूर से दिखाई दे रही है। छतों पर उठते हुए मन्दिरों के आकार के बुर्ज मूर्तियों से बने हैं। मुख्य द्वार के दोनों ओर खुले आकार के तिमंजिले भवन शुरू हो जाते हैं। बाईं ओर से एक लकड़ी की सीढ़ी से एक बाल्कनी दिखाई दे रही है। वहाँ कोने में एक लम्बा बाँस टिका है। यह बाँस कदाचित बाहरी दरवाजे को सपोर्ट देने के लिए है। बाईं ओर भव्य डोमनुमा छत है जिसमें अनेक खिड़कियाँ हैं।

सर्वाधिक भव्य है भीतर का आवासीय भाग। नीचे की मंजिल में आर्क टाइप बारह दरवाजे सामने से ही गिने जा सकते हैं परन्तु ऊपर की मंजिलों पर दरवाजे अधिक हैं। पिलर्ज़ का पैटर्न भी पृथक् है। दरवाजों तथा खिड़कियों में लगी लकड़ी की चमक आज भी ताजा है।

इस भवन के भीतर कला का खजाना है। महान कलाकार जिन्होंने उसे बनाया है तथा जिनकी कृतियों से यह सजी है सजीव मौजूद हैं। प्रसिद्ध कलाकार कारपेशियो, जेनटाइल वेलिनी, तिजियानो, वेरोनीज, बासानो तथा ताइपोलो की मूर्तियाँ बनाने की कला अद्‌भुत ढंग से जिन्दा है। चित्रकला में वह युग और आज का युग दोनों जैसे मिल गए हैं। मेरी गाइड मेरे कला मोह पर मुग्ध है। वह यहाँ शोधछात्रा है और वेनीज़ कला का विश्वकला पर प्रभाव नामक विषय पर पी० एच० डी० कर रही है। कला के सौन्दर्य के सामने मुझे अपनी गाइड के सुन्दर होने

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का एहसास नहीं हो पाया।

इसके बाद हम इस भवन से लगे प्याज्जेटा से वेसीनो द सेन मास्को देखा जा सकता है। कभी यहाँ पुराने जमाने में व्यापारी जहाज आकर रुकते थे। सागर का सौन्दर्य वेनीज के अतीत को प्रामाणिक बनाता है। दूर सेन गिओरजियो माग्योरी की आईलैण्ड—टापू है, बाईं ओर लिडो, उसके आगे रिवा डेगली शियावोनी, दाहिनी ओर पुंटा डेला डोगाना हैं, डोगाना भूभाग पर वेंसिलिका डैला सेल्यूट बना है। ये समस्त भवन दर्शनीय हैं।

कीमती यादगारी भवनों में पियाजा स्थित पुस्तकालय है जिसमें विवल्योटेका मार्सियाना तथा प्रोक्युरेटी स्थित हैं। ये भवन पुराने समय में वेनीज राज्य के सरकारी दफ्तर थे। क्लाक टावर पर मूर्ज़ की प्रसिद्ध मूर्तियाँ वर्तमान हैं। और यहीं के कोरर म्युजियम में मेरे प्रिय चित्रकार एन्तोनेलो के बनाए बहुत से चित्र हैं। कारपेशियो द्वारा बनाई कुछ तस्वीरें बहुत सुन्दर हैं। एन्तोनेलो से मेरा प्रथम परिचय 'दी मास्टर्ज' सीरीज की 20वीं पुस्तक से हुआ था। यह किताब 1963 में फरेटेली फेबरी संस्करण से हुआ था। पूसल द्वारा छापा 1966 का संस्करण अभी भी मेरे पास है। एन्तीलो द मेसीना की तस्वीरों को प्रत्यक्ष देखकर मन खिल उठा, मेरे पास जो प्लेट हैं उनमें से मेडोना सर्वश्रेष्ठ लगती है परन्तु यहाँ जो तस्वीरें देखीं उनमें फ्लेमिश प्रभाव कम है, और आइल कलर के कारण चित्रों में निखार आया है। वस्तुतः इस कलाकार की सर्वाधिक इज्जत मेरे मन में मेडोना के कारण है, इस चित्र में ब्लू रंग और क्यूबिक फार्म है जो 470 साल बाद पिकासो में दिखाई देता है। पिकासो पर इस कलाकार का प्रभाव पड़ा है। यह तथ्य है परन्तु पिकासो के आलोचक यह देख नहीं पाए।

ग्रांड नहर के पार वेसिलिका डेला सेल्यूट पहुँचे। यह 18वीं शताब्दी का उत्कृष्ट स्मारक है जिसका निर्माण लौंगहना ने करवाया। यहाँ प्रसिद्ध कलाकारों, विशेषतया तिजियानों, जिनटोरेटो, लूका जिआरडियानों की कृतियाँ यहाँ वर्तमान हैं। कुछ दूर आगे सेन गरेगोरियो की गोथिक एब्बी है। पास ही रिवा डेले झिटरे है जिसके सामने गुईडेका तथा विनीशियन

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कला वीथिकाएँ हैं। जिस कला प्रेम में मैं भटकता रहा हूँ, वह इन वीथिकाओं में भरी पड़ी है।

लंच लेने को मन नहीं है। एक ड्राइवहन में वीयर और चिकिन स्नेक्स लेता हूँ। मेरी गाइड को कुछ ज्यादा भूख लगी है। वेचारी एक चिकन बरगर भी मँगाती है। मुझे यह खुशदिल, भावुक लड़की अच्छी लगी। बता रही थी गाइड के काम में कुछ पैसा मिल जाता है। रजिस्टर्ड गाइड है। उसका प्रेमी भी इसी नगर में है। वह जल्दी ही शादी करेगा।

इसके पश्चात् हम कला और वास्तुकला के अद्भुत भवनों की ओर बढ़ते हैं। का रेझोनिको तथा 18वीं शती की कला वीथिका जिसमें वेनीजियन कला के भण्डार हैं। सुन्दर केम्पो दी सान्ता मारघेरिता सेन रॉको का हाल महान् चित्रकार टिनटोरेटो की असंख्य पेंटिग्ज से भरा है। पूरे हाल में इस चित्रकार की कृतियाँ कतारबद्ध वर्तमान हैं। गोथिक चर्च सेन्ता मेरिया ग्लोरिओसा दाय फरेरी में टिरियन नामक मूर्तिकार की एजम्पशन नामक मूर्ति है। समीप ही पुरातन चर्च है जो सेन जेआकोमो के नाम पर रियाल्टो क्षेत्र में स्थित है और रियाल्टो का सुन्दर पुल एक ऐसा प्यारा स्थान है जहाँ से ग्राण्ड केनाल का दृश्य देखा जा सकता है।

हम पुनः प्याज़ा सेन मार्को पहुँचते हैं। यहाँ से दूसरा रास्ता अपनाते हैं। मैं सब दर्शनीय स्थल एक दिन में देख लेना चाहता हूँ। रोमांसपूर्ण आहों का पुल (ब्रिज आफ साइज) पार कर हम सेन जेकारिया का चर्च देखते हैं। यह पेनिशन पुनर्जागरण काल में बना था, केम्पो स्क्वेयर में सेन्ता मेरिया फार मोसा का छोटा-सा चर्च है जिससे कुछ दूरी पर दाहिनी ओर ऊपर की तरफ कला वीथिका गैलेरिया क्वेरिनी स्टेम्पपेलिया गए जहाँ वहुत सुन्दर वेनिशयन चित्र संगृहीत हैं। मुख्यतः ये चित्र 18वीं शती के हैं।

गोथिक काल का स्कूल आफ सेन जिआरजियो डेगली शिहआवोनी एक ऐसी जगह है यहाँ वेनीशियन कला का खजाना है। करेपेशियो द्वारा वनाए चित्रों के असंख्य केवास यहाँ मौजूद हैं जो कि यहाँ के प्रसिद्ध सैंट जार्ज की जीवन कथाओं पर आधारित हैं।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक अन्य चर्च है—नाम केम्पो पेओलो—या कुछ और लम्बा है। इसके अहाते में नगर के प्रतिष्ठित तथा प्रतिभावान लोगों के मकबरे हैं। वहीं केरोशियो द्वारा निर्मित एक वृहदाकार मूर्ति देखी।

हम ग्रांड केनाल के पास रिओ दाय मेंडीकांती क्षेत्र से होकर का द-ओरे नामक भवन को देखने गए जो स्वयं में गोथिक कला का सुन्दरतम भवन है। इसी में वेनीज़ की दूसरी प्रसिद्ध चित्र वीथिका है। इस गैलरी में मेनटेगना टितियन, लिप्पी तथा अनेक अन्य महान् चित्रकारों व मूर्तिकारों की कृतियाँ हैं। आगे जाकर प्लेजो लेविया में ताइपोलो द्वारा निर्मित सुन्दर फ्रेस्को हैं।

मुझे सेंट मार्कस वेसलिया के चर्च के बाहरी भाग के स्लेटी रंग के पत्थरों के गोल खम्वे, वृहदाकार खम्वे जो तीन आर्कों से युक्त दरवाजे के दोनों ओर पाँच-पाँच की संख्या में हैं, उनके ऊपर दोनों ओर तीन-तीन खम्वे हैं और खम्बों पर टिके एक वृहदाकार अर्द्धचन्द्र नुमापत्थर पर सुन्दर फ्रेस्को में सैंट क्राइस्ट तथा अन्य लोगों के चित्र हैं। रंगों में नीला और पीला रंग ज्यादा हैं। कला पर गोथिक और वेनीशियन दोनों स्कूलों का प्रभाव है। पत्थर केम्यो फार्म में काटे गए हैं।

शाम हो रही है। हम थक रहे हैं। सेन जिआर जियो की आईलैण्ड या मुरेनो, वुरेनो के आई लैण्ड देखने को मन था पर अब कहीं कुछ पीना चाहता हूँ। बहुत सागर देखे हैं। मेरी तो अपनी जिन्दगी भी आई लैण्ड है। मैं गाइड के साथ होटल लौटता हूँ, उसका प्रेमी रिसेप्शन में बैठा है। प्रतीक्षारत कमरे में पहुँचता हूँ। वेनीज में यह मेरी दूसरी रात है। वीणा का नहीं आना बुरा लगा। बहुत देर तक शराब पी। कमरे में खाना खाया और सो गया।

23 अगस्त : सुबह 6 25 पर नींद खुल गई है। मैं फैसला नहीं कर पा रहा हूँ कि मुझे आगे की यात्रा अकेले जारी रखनी चाहिए या नहीं। वीणा तो आ नहीं रही। औरत की जरूरत कभी-कभी बहुत ज्यादा महसूस होता है। मैं सोचता हूँ। अपने एजेंट के लिए कॉल बुक करता हूँ। कॉल मिलने पर अपनी यात्रा कैंसिल कर मुझे आज रात को किसी भी तरह पेरिस के लिए रवाना होना चाहता हूँ अन्यथा लन्दन के लिए या दिल्ली

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के लिए कोई फ्लाइट हो तो वहाँ से कनेक्टिंग फ्लाइट दिल्ली के लिए ले सकता हूँ। एक घण्टे बाद मुझे सूचित किया गया कि मुझे वेनीज से वाया रोम, कैरो, करांची-बम्बई फ्लाइट आज बाद दोपहर 2.20 पर मिलेगी अथवा रात ग्यारह तीस पर रोम-तेहरान-फ्लाइट मिलेगी। मैं दिल्ली लौटने के लिए रोम-तेहरान के रास्ते से जाने के लिए सहमत हूँ। वेनीज से रोम की यात्रा दिन की है, सिर्फ तीन घण्टे की होपिंग बोइंग फ्लाइट है यानी मैं आकाश से इटली का कुछ और भाग देख सकूँगा। फ्लाइट वाया पेरुजिया जाती है। मुझे रोम के लिए 2-20 बाद दोपहर जाना है। मैं टैक्सी में एक चक्कर पूरे वेनीज का लगाता हूँ, ग्रांड केनाल से लगून देखता हूँ। इतिहास के अतीत की सोचता हूँ। होटल लौटकर सामान बाँधता हूँ और वेनीज ऐयरपोर्ट से रोम के लिए उड़ लेता हूँ। तनहा जिन्दगी का तनहा रूप लिए। वीणा को खबर नहीं की है, उसे मेरे लौटने पर आश्चर्य होगा। रोम से दिल्ली पहुँचने में 11 घण्टे का समय लगेगा यानी 24 अगस्त सुबह ग्यारह बजे से पहले दिल्ली पहुँच जाऊँगा। एक घण्टा पालम में कस्टम क्लीरैंस में लग जाएगा और फिर बीस मिनट में घर वीणा की बाँहों में।

लंच बहुत हल्का लेता हूँ, हालाँकि लंच ऑन बोर्ड का टिकिट का लिया है पर प्रायः मैं हवाई यात्रा में बहुत कम खा पाता हूँ। वीनेज छोड़ते हुए दिल में दर्द था, दर्द इस बात का कि वर्षों से पूरी इटली देखने की तमन्ना थी, पूरी हो रही थी तो पत्नी के पिता बीमार हो गए, पत्नी साथ नहीं आई। भाग्य की बात है। समुद्र घिरा मैं एक अति लघु टापू हूँ या आकाश में स्वच्छन्द विचरण करता काल विहग ? रोम में पाँच-छः घंटे का समय है। मैं टैक्सी और अपने एजेंट के आदमी के साथ नगर भ्रमण के लिए निकल पड़ता हूँ। सामान साथ ले लिया है अतः होटल इत्यादि जाने के झंझट से छुट्टी है। सीधे एयरपोर्ट चला जाऊँगा। एजेंट का आदमी टिकिट ले आया है, वता रहा था अगस्त में वहुत कम टूरिस्ट तेहरान या भारत से आते हैं इसलिए आसानी से टिकिट मिल जाता है।

दिन की रोशनी अभी दो घंटे और शेष है। मैं सीधे प्याजा आफ द केपीटल जाता हूँ जो शहरी वास्तुकला का श्रेष्ठ उदाहरण है, इसका

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

डिजाइन माइकल एंग्लो ने बनाया था। इसके साथ अन्तिम छोर पर है, भव्य प्लेज्जो सेनाटोरियो और दूसरी है साथ ही सम्पृक्त से हैं प्लेज्जो दाय कंजरवेटोरी तथा दूसरी ओर कैप्टोलाइन म्युजियम। इस म्युजियम के बन्द होने का समय हो रहा था परन्तु फिर भी सुन्दर मूर्तियाँ और चित्र देखने के लिए मुझे बीस मिनट का समय पर्याप्त था। यहाँ मारकस ओरिलियस की कांस्य प्रतिमा दर्शनीय है। इसके वाद जूलियस सीजर फोरम तथा टराजन फोरम देखे, टराजन मारकेट के पीछे वहुत वड़े आकार का मिलिशिया टावर देखा, आगस्टस फोरम, नेरवा फोरम देखे और बाहर से धुँधलके में टोरी दाय कोंटी का किला देखा। जल्दी-जल्दी प्लेटाइन हिल पहुँचे और वहाँ आर्क आफ कान्सटेन्टाइन और कोलोस्यिम स्टेडिया देखे। चौमंजला कोलिस्यिम गोलाकार है और उसकी आर्कशेप निकास व्यवस्था और दरवाजे भव्यता के प्रतीक हैं। बाहर फैले हुए घास के विस्तृत लॉन हैं। चारों तरफ हरियाली है।

शाम की रोशनियाँ जल उठी हैं और रोम नगर नववधू-सा सज गया है, अनेक संगमरमरी भवनों की चमक, पूजास्थलों, आर्कस तथा अन्य भवनों में रोशनी और अँधेरे का मिश्रण दिव्य है। प्लेटाइन के वृक्षाच्छादित चुप, स्तब्ध खामोश मलबे और खंडहर उसे अतीत की कहानी रात की खामोशी में कह रहे हैं जहाँ किसी समय सारे सभ्य विश्व के भाग्य का निर्णय हुआ करता था। मैं इस दृश्य को चुपचाप देख रहा हूँ और अपने दिल के भीतर सारी खामोशी को सहेजता जा रहा हूँ। रात की रोशनी में आर्क आफ कान्स्टेनटाइन के पास खड़ी घोड़ागाड़ियों के लाल पहिए चमक उठते हैं। आर्क पर बनी मूर्तियाँ दिखाई तो पड़ रही हैं पर इन्हें दिन की रोशनी में देखने का आनन्द और ही होता।

मैं रात के अँधेरे में सेंट पाल गिरजा जाता हूँ वहाँ से ओरेलियन दीवारों और सेसटियस का पिरामिड देखने जाता हूँ—यहाँ आने की मेरी इच्छा थी क्योंकि प्रोटेस्टेंट कब्रगाह में शेली और कीट्स की कब्रें हैं। टार्च की रोशनी में मैं इन दोनों कब्रों तक जाता हूँ। चौकीदार होश्यार है। वह मेरी भावना समझता है। मैं शेली की कब्र पर अपना पेन और कीट्स की कब्र पर बाल प्वाइंट पेन रखकर, उन्हें छुआकर वापिस अपनी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जेब में रख लेता हूँ। यह मेरी भावुकता है या कुछ और कह नहीं सकता।

टैक्सी में घूमकर सैंट एंग्लो पुल, प्याजा नवोना के रीवर्ज फाउंटेन देखता हूँ। दो भव्य पुरुष मूतियाँ संगमरमरी देह से इस फव्वारे का आकर्षण बढ़ा रही हैं। रात की रोशनी में मूर्तियाँ सुन्दर हैं, आँखें देखते नहीं अघाती हैं। आधुनिक प्याजा वार वेरिनि और विया वेनेतो का वातावरण चहल-पहल से, आधुनिक वेशभूषा से जगमगा रहा है। मेरे पास रोम देखने के लिए समय नहीं है। एजेंट का आदमी कहता है—यह शहर कम-से-कम तीन दिन लगाकर देखा जा सकता है। दस बजे तक ऐयरपोर्ट पहुँचना है, इसलिए जल्दी-जल्दी कुछ खाना चाहता हूँ, पर एजेंट का आदमी एयरपोर्ट पर ही खाने की सलाह देता है। माइकल एंग्लो का प्रसिद्ध डोम वेसिलिका के ऊपर है, वहाँ आर्ट गैलरी है, पोप का आवास देखना था। लास्ट जजमैंट में माइकल एंग्लो की संघर्षपूर्ण कला देखनी थी, नदी के पार एवनटाइन की पहाड़ी, असंख्य गिरजे, पुराना और मध्यकालीन रोम देखना था। खैर अभी तो सीधे एयरपोर्ट पहुँचता हूँ। डायरी की यह पंक्ति एयरपोर्ट के रैस्तोराँ में भोजन का इन्तजार करते हुए कर रहा हूँ। एजेंट का आदमी पैसंजिर लिस्ट में मेरा नाम चैक कराने गया है। वीणा के लिए मैं एक लाकेट एयरपोर्ट स्टाल से खरीदता हूँ, उसमें तीन छोटे-छोटे मोती हैं और केन्द्र में एक छोटा-सा पुखराज—यैलो सैफायर—गोल्ड सैटिंग में। उस लाकेट पर बहुत बारीक अक्षरों में लिखा है—क्लयोपेट्रा के लिए। दस लाख सत्तावन हजार लीरा खर्च किए।

बोईंग 747 एयर इंडिया का हवाई जहाज है। भारतीय चेहरे दिखाई देते हैं। हाथ जोड़े साड़ी पहने तीन एयर होस्टेजिज मौजूद हैं, कहीं से हिन्दी के शब्द। यहाँ ग्यारह तीन बजे हैं रात के, भारत में प्रात: चार बजकर उनतालीस मिनट का समय होगा। अर्थात् मैं दिन को नहीं शाम साढ़े छ: बजे से पहले अपनी क्लयोपेट्रा वीणा को यह लाकेट नहीं दे पाऊँगा। तरहान में दो घंटे का रुकना है। रोम से ही उड़ान बीस मिनट देरी से चली है…मैं सो गया हूँ। जहाज में प्राय: मुझे नींद आ

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाती है। यात्रा लम्बी लग रही है, लिज, मिलान, वेनीज बहुत पीछे रह गए हैं। वीणा से वायदा किया था कि उसे इटली दिखाऊँगा, दोष मेरा नहीं, वह ही नहीं आ पाई; फिर कभी जरूर दिखाऊंगा !

24 अगस्त : वह लाकेट पहनकर कितनी खुश होगी ? उसे लिज के बारे में बताऊँगा। नई दिल्ली पालम इन्टर नेशनल टर्मेक पर जहाज रूपमती एयर इंडिया सात बजकर तीन मिनट पर पहुँचा। तहरान में साढ़े तीन घंटे से भी ज्यादा रुके, लंच वहाँ एयरपोर्ट पर लिया, सभी पैसैंजरज लंच पर गए। नई दिल्ली एयरपोर्ट पर करीब डेढ़ घंटा लग गया। घर पहुँचकर दोनों हाथों में वी. आई. पी. सूट को उठाए बरामदे में आता हूँ। दरवाजा बन्द है, बैडरूम की हल्की रोशनी जल रही है। काल बैल बजाता हूँ, वीणा दरवाजा खोलती है, उसके बदन पर सिर्फ नीला आसमानी गाउन है जिसके बटन वह जल्दी-जल्दी में लगा रही है, मैं इसे सहज समझता हूँ। वीणा से लिपटकर उससे चिपटता हूँ, उसमें स्वागत का जोश नहीं है। मैं अपने बैडरूम के बाहर हूँ। भीतर से आवाज आती है, 'विन्नी डार्लिग कौन है ?' मेरे घर में यह आवाज ? वीणा खामोश है, उसकी निगाहें झुकी हैं। मैं बैडरूम में जाता हूँ और अपने बिस्तर पर नंग-धड़ंग जिसे पाता हूँ···उसे देखकर एक क्षण माथे पर बल पड़ते हैं, फिर बाहर आकर वीणा से कहता हूँ 'ये तुम्हारे बीमार पिताजी हैं ?' वह कुछ नहीं कहती। मेरी पत्नी का प्रेमी कपड़े पहनकर बाहर जा रहा है। मैं जोर से चिल्लाकर कहता हूँ 'आप अपनी माँ को भी अपने साथ ले जाएँ।' वह सुनता है या नहीं, कह नहीं सकता। वीणा कहती है, 'गलती मेरी है, मैं···क्या करूँ···मैं तलाक ले लूँगी··· पहली बार ऐसा हुआ।' वह फूट पड़ती है। जहाज पर ली स्काच की बोतल खोलता हूँ। गिलास उठाकर पानी का घूंट पीता हूँ। बड़ा, या बड़े से भी बड़ा पैग पानी मिलाकर पीता हूँ—और पीता हूँ—मैं अभी तक कपड़े नहीं बदल पाया हूँ। लाकेट अभी भी जेब में है। वेनीज की उस काल गर्ल के बारे में सोच रहा हूँ। लिज के बारे में सोच रहा हूँ—पाकेट में रखे भारतीय मुद्रा में 1057 रुपये में खरीदे लाकेट के बारे में सोच रहा हूँ। बोलने को कुछ शेष नहीं है। कहते हैं अँधेरे में कब्रिस्तान

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं जाना चाहिए—मैं गया था—कहते हैं रोम त्रासदी का शहर है, मैं उस त्रासदी को पीछे छोड़ आया हूँ और अपने घर में एक कमेडियन की तरह आ गया हूँ। चेहरे पर कभी विवशता के भाव लाने की कोशिश करता हूँ तो एक मुस्कान मुझे रोक लेती है—यह मुस्कान मेरे भीतर से जन्मती है।

मैं अपनी पत्नी के लिए आज की रात क्या हूँ कह नहीं सकता। दरवाजा खुला होता तो शायद अपनी पत्नी और उसके प्रेमी को इटली की कोई कलाकृति मानता—शायद बहुत कठिन शब्द है। मेरी सारी भावुकता कलाप्रियता खो गई है। शराब की बोतल आधी से भी ज्यादा खत्म है। मैं अपने घर लौटा हूँ जबकि आज मुझे इटली में ग्रेडो या टरायस्टी में होना चाहिए था। मुझे नींद आ गई है। सुबह उठकर घर से बाहर आ जाता हूँ और चाय पीने के लिए मैदान के उस पार टहलते हुए चाय के खोके पर जाता हूँ, दो गिलास चाय पीकर घर लौटता हूँ। हाँ घर ही लौटता हूँ। मेरा एकान्त मेरे साथ है। शब्द भी नहीं, अहं भी नहीं, जीवन भी नहीं, मृत्यु भी नहीं—एक बेउम्मीदी का उन्माद है—न यह जहर है, न अमृत—पर है यह जो भी सिर्फ मेरा है, मेरे लिए है…मैं एक अच्छा इन्सान हूँ न…उसका यही बदला है ? नहीं मुझे यह कटुता नहीं पालनी चाहिए—कलाकार किसी पत्थर को तराशकर अगर बुत बनाने के प्रयास में पत्थर को टूटकर बिखर जाने दे तो सृजन के लिए नया पत्थर ढूंढ़ना पड़ता है।

नंदिता के प्रति मेरा अनुराग कभी नहीं रहा। वीणा ने जिस तरह मुझे झटका दिया था, उससे मुझे कोई सदमा नहीं लगा। मैं जानता हूँ यह सब हो सकता है, हो जाता है। पर मैं बदल गया। वीणा मेरा घर छोड़ गई। इटली से लौटता, पत्नी को लाकेट देता, उसे लिज की कथा सुनाता पर यहाँ आकर मुझे अपनी ही पोथी बांचनी पड़ी। मुझे वीणा का आवेग

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समझ नहीं आया। वह कभी भी ऐसी नहीं हो सकती थी, पर सच्चाई यह थी कि वह वैसी पाई गई। परिस्थिति का चक्षुदर्शी गवाह होने के कारण कोई अर्थ नहीं रह जाता। वीणा मुझे सन्तान दे नहीं सकी, पर क्या मैं उसे सन्तान दे पाया? शायद वह मेरे प्रति सोचती हो। परपुरुष अनुरक्ति वियोग तो नहीं ही है।

वीणा के बाद बहुत कुछ हुआ। स्निग्धा ने उस शाम मुझसे जब पहली पत्नी की चर्चा की तो उसे उस परिस्थिति पर दुख हुआ। पर मुझे समझाते हुए बोली, 'इसका अर्थ यह भी नहीं कि आप सब विवाहित औरतों से बदला लो।' मैं नहीं जानता क्या ठीक है, क्या ठीक नहीं है। पर निर्मल की कथा ने स्निग्धा को जैसे हिला दिया, भीतर तक। शायद उसमें भय भावना है। शायद वह मेरे और निर्मल के सम्बन्ध में गहराई देखती है, उससे डरती है। स्निग्धा में आया बदलाव रोमांटिक है।

इमा और अबु को दिल्ली में स्कूल में दाखिल करवा दिया है। घर शोर-शराबे लड़ाई-झगड़े से भरा रहता है। सब जगह इन अबोध बालकों का साम्राज्य है। कभी पैन टूटता है, कभी पैंसिल नहीं है, कभी ड्राईंग बोर्ड की फरमाइश है, कभी कलर बाक्स चाहिए। अगर केमल कलर लाकर दो तो गिटार कलर की माँग होती है, गिराट लाकर दो तो विदेशी कलर की माँग उठती है। रबर, शार्पनर, कापी, किताब, कवर पेज, नेम चिट सब लम्बी फेहरिश्तें शाम को हमारे सामने रख दी जाती हैं। मेडम ने स्कूल में इमा से ऊन मँगवाई है, दूसरे दिन अबुजी ऊन की फरमाइश करते हैं। वे कहते हैं, 'हमारी माम सिलाई पर स्वेटर नहीं बुनती, उँगलियों पर बुनती है।' हम कहते हैं 'लड़के स्वेटर नहीं बुनते।' तो अबु जी फरमाते हैं 'हम स्वेटर नहीं बुनेंगे हम ऊन के घर बनायेंगे।' इमा दस नम्बर की सलाई माँगती है, अबु अपनी डिमाण्ड 30 तक ले आते हैं।

इमा कामिक पढ़ती है, अबु उनकी तस्वीरें देखते हैं और एक दिन में सब फाड़ फेंकते हैं। कापियाँ फट रही हैं। रोज फटती हैं। इनके लिए स्निग्धा बाजार रोज शापिंग के लिए जाती है।

टी०वी० की सब फिल्में देखना दोनों का परम धर्म है। अबु को शबाना आजमी से शादी करनी है—वह फैसला कर चुका है। हम उसे रोज

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

छेड़ते हैं। कहता है—'हम शादी करेंगे—क्या हुआ जो वह मुझसे 25 साल बड़ी है, मैं उसके बच्चों के साथ खेलूंगा !' स्निग्धा कहती है, 'जा शादी कर ले !' अब्रु फरमाते हैं, 'हम दूल्हा बनकर, घोड़े पर बैठकर जाएंगे।'

मुझे मजा इस बात का है कि स्निग्धा की सुबह-शाम परेड हो रही है। बच्चों को उठाना, नहलाना, नाश्ता देना, स्कूल के लिए तैयार करना और फिर शाम की फरमाइशें सुनना, झल्लाना, गुस्सा करना सब सहज रूप से आ गया है। वह दो बच्चों की माँ लगती है।

हमारा घर नई खुशी दे रहा है। किरपाराम और अबु मियाँ खूब अच्छे दोस्त हो गए हैं। टिटैया के बच्चे बड़े हो गए हैं और कभी-कभार उड़कर अपनी पुरानी जागीर को देखने आ जाते हैं।

मैं शाम को घर आकर इमा के माडर्न मैथ्स के प्रश्न हल करता हूँ। शराब पीना-पिलाना भी काफी कम हो गया है। बच्चे कभी पिक्चर कभी पिकनिक और कभी अपने लड़ाई-झगड़ों के कारण हमें व्यस्त रखने लग गए हैं। तीसरे बच्चे वाली बात भी अब कोई अर्थ नहीं रखती। ये दोनों ही काफी हैं। स्निग्धा कभी आफिस में फोन नहीं करती थी, अब प्रायः फोन पर मुझे बाकायदा आदेश दिए जाते हैं। इमा और अबु अपने स्कूल की पूरी यथा-कथा, तथा कथा फोन पर कहते हैं।

निर्मल से मिलना मैं बन्द नहीं कर पाया हूँ। उसकी पूरी कथा स्निग्धा से कह दी है। स्निग्धा चाहती है कि मैं इस सम्पर्क को जल्दबाजी में न काटूँ क्योंकि निर्मल का रिश्ता भावुकता पर टिका है और मेरे पूर्व मित्र की प्रेमिका होने के कारण और भी नाजुक हो चुका है। स्निग्धा कहती है 'निर्मल के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए एक ही तरीका है, वह है स्निग्धा और निर्मल एक-दूसरे को अच्छी तरह जान जाएँ, स्निग्धा इसमें मुझे थर्ड पार्टी भी बनानी नहीं चाहती। उसका ख्याल है निर्मल स्वयं सँभल जाएगी क्योंकि उसे न सिर्फ पुरुष के प्यार की जरूरत है वरन् उसे अपने बराबर के दोस्तों की जरूरत है। जिस क्लब के सिर्फ छः परिवार सदस्य थे, स्निग्धा ने मुझे उस क्लब का सदस्य नहीं बनने दिया। दीक्षित प्रायः हमारे यहाँ आते हैं परन्तु उनका जीवन काफी

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साफ-सुथरा है ।

मैं वस्तुत: अपना प्रतिबिम्ब भी नहीं रह गया हूँ । एक मशीन और आदमी—दोनों के तत्त्व मुझमें आ गए हैं । मेरी और स्निग्धा की कोई समस्याएँ रह ही नहीं गई हैं । बच्चे हमारी समस्याओं का समाधान कर लेते हैं, वे मम्मी-डैडी को लड़ने-झगड़ने नहीं देते । अगर कुछ क्षणों के लिए भी मेरा और स्निग्धा का तकरार होता है तो बच्चे दखल देते हैं या मुँह फुलाकर बैठ जाते हैं ।

हर आदमी के जीवन की कहानी होती है, मेरे जीवन की कहानी नहीं है—मेरे जीवन में जो भी घटा है वह घटना मात्र है । अनेक घटनाएँ भी एक कहानी नहीं बनातीं—उनमें कोई सूत्र होना जरूरी है । मैं स्वयं सूत्र जरूर हूँ परन्तु वे घटनाएँ मुझ अकेले से जुड़ी हुई नहीं हैं । मेरा क्या है, पराया क्या है, यह पृथक् नहीं कर सकता, पृथक् किया नहीं जा सकता । परन्तु···हाँ रोम में खरीदा हुआ लाकेट मैं आज भी स्निग्धा को नहीं दे पाया हूँ । दे भी नहीं पाऊँगा । जिन्दगी में आज तक जो भी हुआ, जो भी किया उसके लिए न कोई निधि है न न्यास । शक है तो सिर्फ अपने होने पर शक है, अपने पारदर्शी वर्तमान पर शक है, मैं इसमें कोई ग्रन्थि नहीं चाहता । हाँ, एक बात और—जिस बैडरूम में रोम से लौटकर वीणा के प्रेमी को देखा था और जिसमें मैं और स्निग्धा आज तक सोते आए थे, उसे स्टोर रूम में बदल लिया है और अपना बैडरूम बच्चों के कमरे के साथ जुड़े कमरे में बना लिया है । यह क्यों किया, कह नहीं सकता । पर इतना जरूर है कि हर पाप को गंगाजल से धोने पर मैं विश्वास नहीं करता ।

स्निग्धा कुछ दिनों के लिए लखनऊ चली गई थी, बच्चों के साथ । जब लौटकर आई तो मेरे लिए चिकन कढ़ाई के कुर्ते लेती आई और उसने मुझे एक खूबसूरत तोहफा दिया—यह था टारटाइज शैल का बना सिगरेट केस । यह सिगरेट केस उसके नाना का था जो किसी जमाने में रईस माने जाते थे और अब्दुल्ला 77 गोल्ड टिप सिगरेट पीते थे । ये

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सिगरेट काले रंग के प्लेट आकृति के होते थे। मुझे टारटाइज शैल सिगरेट केस देते हुए कहा था, 'यह तुम्हें इसलिए दे रही हूँ कि तुम्हें हमेशा मेरी याद आए, तुम बाहरी आकर्षणों से कछुए की तरह अंग सिकोड़कर अपने को बचाए रखो, तुम्हें कोई हानि न पहुँचे !'

बच्चे छुट्टियों में अगले वर्ष का कार्यक्रम बनाते हैं। मुझे प्राय: न्यूयार्क जाना पड़ता है। सोचता हूँ स्निग्धा को इटली, फ्रांस और अमेरिका की सैर कराई जाय। उसकी नियाग्रा प्रपात देखने की वर्षों से इच्छा है। इस प्रपात के नाम में एक विशेष रोमांस है। मैं दो बार पहले भी वहाँ जा चुका हूँ। प्रकृति और आधुनिक सुविधाओं से भरा ओनटेरियो का नयाग्रा प्रपात एक वर्ष में लगभग एक करोड़ यात्री आकर्षित करता है।

मैं अमेरिका की यह यात्रा बच्चों के साथ करूँगा, यह एक नई तरह की खुशी है। अगले वर्ष की गर्मियों में हम 20 दिन का विदेश यात्रा का कार्यक्रम बनाते हैं।

बच्चों के साथ रहते समय निकलते कुछ पता ही नहीं चला। बच्चे पढ़ाई में अच्छे हैं। इमा 91 प्रतिशत अंक लेकर थर्ड आई है, अबुजी 99.5 प्रतिशत लेकर द्वितीय हैं। वे अपने परीक्षा परिणामों से अत्यधिक प्रसन्न हैं।

न्यूयार्क की हवाई यात्रा वाया लन्दन करना अधिक सुविधाजनक है। जाती बार सीधी फ्लाइड ली है। लन्दन में छ: घण्टे का स्टाप है। न्याग्रा के कनेडा स्थित होलीडे इनमें ठहरने का प्रबन्ध है। हम रात की जगमगाती रोशनियों में रात के समय न्याग्रा पहुँचते हैं। हमारे कमरे के भीतर तक प्रपात की आवाज भर गई है। यह होटल काफी सुविधाजनक है। प्रपात के समीप स्काईलान टावर, पिरामिड पैलेस और इमैक्स थियेटर से लगा हुआ होने से काफी पापुलर है। हमारा कमरा खुला और बहुत बड़ा है। कमरों में लिनिन, सोफे और पर्दे सुन्दर हैं। कमरों के

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साथ स्काई लाइट बाथ बनाए गए हैं। डाईनिंग रूम खुशनुमा है और पहली रात जो खाना हमने खाया, उसकी तारीफ अबुजी भी कर रहे हैं। उन्हें यहाँ के बच्चों के लिए स्पेशल मीनो से खाना चुनने में मजा आया। यह होटल भरे स्ट्रीट बुशानन स्ट्रीट में है।

हम न्याग्रा नदी साइट सीइंग पेकेज टुअर अपनाते हैं क्योंकि अधिक से अधिक सुविधाजनक है और केनेडियन हार्सशू फाल्ज से क्वीन्स्टन हाईटस तक घूमने में आनन्द आता है।

रात को क्वीन्ज विक्टोरिया पार्क से फाल्ज की रंगीन रोशनियाँ देखने में आनन्द आता है। कनेडियन हार्सशू फाल्ज की ऊँचाई 176 फीट है और लम्बाई 2200 फीट। जबकि अमेरिकन साइड के फाल्ज की ऊँचाई 184 फीट ज्यादा है और 1060 फीट लम्बे हैं ये प्रपात।

टेबल राक टन्नल अत्यन्त सुन्दर हैं। टन्नल में जाने का रास्ता टेबल राक हाउस से जाता है, कनेडियन हार्सशू से लगा हुआ है। रेनकोट और बूट पहनकर एलीवेटरे से 125 फीट नीचे जाना और 650 फीट तक पैदल चलना पड़ता है और भूमिगत टन्नल से जाकर बाहर प्रपात के तीन पृथक्-पृथक् सुन्दर दृश्य देखने को मिले।

और हम नदी की सतह से 25 फीट ऊपर खड़े हैं और सामने हमारे है प्रसिद्ध न्याग्रा हार्सशू। अनिर्वचनीय सुख, आनन्द देता हुआ। पानी न हो जैसे दूध को मथा जा रहा हो, मक्खन जैसे ऊपर तैर रहा हो। चारों तरफ धुन्ध उड़ रही है, थोड़ी देर के लिए सूरज के निकलते ही इन्द्रधनुष की भव्य छटा भी हमने देखी। यहाँ से प्रपात देखने में मजा आता है। प्रपात के नीचे का पानी 180 फुट गहरा है जबकि प्रपात की पूरी ऊँचाई भी लगभग उतनी ही है।

दूसरी जगह जहाँ से प्रपात का सौन्दर्य देखा जा सकता है, सुन्दर टेबल रॉक रेस्टोरैन्ट टेवरन है। टेबल रॉक घर की दूसरी मंजिल पर स्थित है और यहाँ से हार्सशू प्रपात का पूरा व्यू हमने देखा। तेज धाराओं का सौन्दर्य परन्तु यहाँ पानी हमें भिगोता नहीं है। दृश्यों की विशदता यहाँ की निधि है। हार्सशू फाल्ज इन्कलाइन रेलवे से यात्रा का आनन्द ही अपनी प्रकार का पृथक् और अकेला है। सुन्दर दृश्यों से

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

होकर टेबल रॉक हाउस तक यह ट्रेन ले जाती है। मेड ऑफ मिस्ट नामक किश्तियों तक पहुँचने के लिए हम मेड ऑफ मिस्ट इन्कलाइन रेलवे से गए। धीरे-धीरें सहजता से किश्ती तक पहुँचने के लिए यह यात्रा आवश्यक भी है और अपने आपमें एक अनुभव भी। न्याग्रा प्रपात के गहरे जल में यात्रा के लिए मेड ऑफ मिस्ट किश्ती से हम पहुँचे। यह जहाजनुमा विशालकाय किश्ती सैकड़ों लोगों को एक साथ ले जाती है। हुडयुक्त बरसाती पहने सब लोग इस अनुभव विशेष के लिए उत्सुक रहते हैं। अमेरिकन प्रपात से होकर हार्सशू प्रपात तक जाने और पूरी यात्रा में लगभग 30 मिनट का समय लगा। हार्सशू फाल्ज की गर्जना कानों को झकझोरती-सी बार-बार भय और आश्चर्य से हमें भरती है। पानी की ताजा बूंदें क्या आनन्द देती हैं। झरने बादलों की तरह ऊपर से जैसे मेड ऑफ द मिस्ट को निगल जाने के लिए बढ़ते चले आ रहे हों, आसमान से उतरकर हार्सशू फाल्ज पर सतरंगे इन्द्रधनुष अजब-सा सौंदर्य बिखेरते हैं। इस यादगारपूर्ण यात्रा के बाद आस-पास का क्षेत्र देखना भी एक अनुभव है। क्वीन विक्टोरिया पार्क के विशाल उद्यान हैं। बगीचे में सुनहरी रंग के लाखों डेफोडिल के फूल खिले हैं। टयूलिप्स, मेंगो-लिया, गुलाब और अनेक अन्य पुष्प यहाँ की छटा को बढ़ाते हैं। जून माह के प्रारम्भ में लाल, सुनहरी और संतरी रंग से जगमगा रहा है। बच्चे किलकारियाँ भरते दौड़ते हैं। स्निग्धा भी बच्चों के साथ दौड़ती है, उसमें नया अल्हड़पन आ गया है।

पुराने क्लिफटन होटल के स्थान पर अब ओक्स गार्डन थियेटर बना है। इसके भवन की वास्तुकला भव्य है। थियेटर पुराने रोमन और ग्रीक शैली के मिश्रण से बना है। आधुनिकता के कुशल मिश्रण से नवीनता आ गई है। पंखे की आकृति का थियेटर सुन्दर तराशी और नक्काशी-युक्त दीवारों से घिरा है।

बगीचे, ढलानदार टेरिस, राक गार्डन इत्यादि इस क्षेत्र को बहुत सुन्दर बनाते हैं। प्राकृतिक वातावरण से युक्त से स्थान प्रपातों का भी अनुपम दृश्य प्रस्तुत करती है।

Funding by IKS-MoE

विक्टोरिया पार्क का ग्रीन हाउस भी हमें बहुत पसन्द आया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हार्सशू फाल्ज से आधा किलोमीटर की दूरी पर स्थित, मौसमी पुष्प, क्षेत्रीय पौधों और नर्सरी के रूप में यह बगीचा सुन्दर है। हमने ट्यूलिप के कुछ बाल्ब खरीदे हैं, शायद किसी तरह दिल्ली में उगाना सम्भव हो, हालाँकि ऐसा नामुमकिन है। वस्तुतः मेरी श्रीमती जी इस बगीचे पर मोहित थीं। ग्रीन हाउस के सामने रोजगर्ल की मूर्ति भी सुन्दर लगी, यह मूर्ति कांसे की बनी है। यहीं 'स्प्रिट आफ द पार्क हाल' फव्वारा है। बहुत सुन्दर।

फिर हम डफरिन आईलैन्ड गए। प्रपात के दक्षिण में लगभग आधा मील दूर—यहाँ जाने के लिए पेडल वोट का प्रयोग करना पड़ा। इस क्षेत्र में जीवन रक्षा के लिए तैराक तैनात थे। यहाँ पानी का दृश्य सुन्दर है और धरती के छोटे-से टुकड़े पर टहलने में बड़ा मजा आता है।

हार्सशू और अमेरिकन प्रपातों के बीच विक्टोरिया पार्क रैस्तोराँ में हम कुछ स्नेक्स लेकर फिर घूमने निकले। पहली मंजिल पर बने माडर्न केफ्टेरिया में खाने का सामान काफी अच्छा था।

नियाग्रा प्रपात से उत्तर की ओर लगभग 13-14 मील का पार्क वे है, यहाँ से हम लेक आनटेरियो तक जाते हैं। स्टील के बने महराबदार पुल के नीचे से हम आबादी वाले क्षेत्र में आते हैं, यहाँ से निचली महराव और तेज धार क्षेत्र से लगभग 3 मील नीचे की ओर आते हैं, ग्रेट गार्जट्रिप और नियाग्रा डेयर डेविल प्रदर्शन स्थल पर आकर हम पुराने समय में जिन बैटल्ज पर नदी पार की जाती थी, वे आज भी मौजूद थीं। उनका रोचक इतिहास भी हमने सुना। कुछ देर हम नदी के तट पर घूमते रहे। नदी इस तंग चैनल से बड़ी तेज गति से बहती है। जल के तीव्र प्रवाह के भयावह दृश्य से दिल दहल जाता है।

इसके बाद स्पेनिश एयरोकार में यात्रा की। ग्रेट गोरज से लगभग एक किलोमीटर दूर केवल कार से नियाग्रा जलभ्रमर के ऊपर से गुजरना भी एक अनुभव है। कार में ऊपर हवा में तैरते हुए हम नीचे के दृश्यों के सौन्दर्य के बीच लगभग एक मील की आकाशीय यात्रा 10 मिनट में पूरी करते हैं। स्निग्धा का सिर घूम रहा है। मैं और इमा आनन्दित होकर अबु मियाँ को छलाँग लगाने को कहते हैं। दूसरी ओर यहाँ यह

Funding by IKS-MoE

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कार रुकती है, एक स्नेक बार से बच्चे पापकार्न खरीदते हैं और कोका-कोला पीते हैं।

आगे जाकर नियाग्राक गोल्फकोर्स है, लगभग दो किलोमीटर आगे। बड़ा सुन्दर स्थल है। कई लोग गोल्फ खेल रहे हैं। गोल्फकोर्स से आधा मील आगे जाकर अच्छे पिकनिक स्थल हैं। हम दूसरे दिन यहाँ आकर नीचे नदी के तट तथा गोरज तक घूमने गए थे। तीन-चार किलोमीटर की यह यात्रा सुखद और ताजगी देने वाली थी। चट्टानें, पेड़, पौधे, पर हमें यहाँ कोई ऐसा गाइड नहीं मिला जो पूरे क्षेत्र का परिचय दे पाता। नियाग्रा ग्लिनगिफ्ट शाप से हम कुछ छोटे-छोटे सामान खरीदते हैं। कैमरा के लिए फिल्म भी ली। आगे जाकर हार्टीकल्चर स्कूल आता है। लगभग सौ एकड़ के बगीचे और स्कूल क्षेत्र में पेड़, पौधे, फूल भरे पड़े हैं। लगभग दो मील आगे चालीस फुट व्यास की पुष्पघड़ी है इसे 25000 पौधों से बनाया गया है। यह घड़ी नियाग्रा फाल कमीशन द्वारा बनाई गई है।

हमारे भाग्य से लिलक गार्डन में लगभग अढाई सौ प्रकार की लिलक पुष्प श्रेणियाँ खिली हुई थीं। लगभग मई के अन्त में लिलि आनी शुरू होती है और जून के द्वितीय सप्ताह तक फूलों की छटा दर्शनीय रहती है। लगभग एक किलोमीटर आगे क्वींस्टन हाईटस पार्क में क्रीड़ा क्षेत्र में मैदान, घुटने-घुटने पानी के तालाब, तथा रैस्तोराँ इत्यादि हैं। ब्राक्स मानुमैंट तथा बैण्डशैल अन्य आकर्षण हैं। यहाँ का शाम तीन से पाँच बजे तक का फ्री बैण्ड कन्सर्ट बच्चों के लिए मनोरंजक लगा।

यहाँ से नियाग्रा मार्ग उत्तर की ओर मुड़ता है। लेक पर स्थित नियाग्रा नगर सात मील दूर है। नगर से लगभग एक मील पहले पुराना ऐतिहासिक मैक फारलैण्ड हाउस है जो ऐतिहासिक जोर्जियन शैली का है। इंटों का बना यह बहुत सुन्दर घर है। इसके कमरे, फर्नीचर इत्यादि बहुत सुन्दर हैं। समस्त सामान एन्टीक है। बड़े-बड़े कार्पेट, वुडन फ्लोर। ड्राइंग तथा डायनिक रूम का रखरखाव बहुत अच्छा लगा। वस्तुतः यह एक अच्छा पिकनिक स्थल है तथा इसी भवन में अच्छा रिफ्रेशमैंट स्थल है। बाहर बैठने का स्थान है।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लेक नगर में किला है तथा हम शॉ थियेटर भी देखने गए। लगभग 100-150 वर्ष पुरानी अनेक इमारतें यहां मौजूद हैं। यहाँ भी एक गोल्फ कोर्स है। यहाँ रात को भी गोल्फ खेला जाता है। यहाँ का एक पुराना भवन जिसे ओक हाल ऐस्टेट मेसन कहते हैं, काफी बड़ा है। इस भवन में नियाग्रा प्रपात पर बनी अनेक पुरानी पेंटिंग्ज तथा लिथोग्राफ भी संगृहीत हैं। यहाँ से थोड़ा आगे जाकर स्प्रिंग्ज रोड से पुनः दाहिनी ओर नियाग्रा पार्क वे की ओर मुड़कर हम इन्टरनेशनल कन्ट्रोल वर्क्स तथा पानी को रोकने और उसकी निकासी के लिए बनाए गए दो कन्ट्रोल गेट देखने गए, यहाँ से पानी जुड़वाँ इन्नलज में जाता है। और उसे एडम बैक जेनरेटिंग स्टेशन तक पहुँचाया जाता है, टन्नलज लगभग 9 किलोमीटर लम्बी हैं। इस स्थान से हम किंग्ज ब्रिज पार्क देखने गए, यहाँ तैराकी का प्रबन्ध है। यहाँ एक छोटा रैस्तोराँ है, हैम बर्गर और आइसक्रीम खाई।

यहाँ से कुछ आगे चलकर दक्षिण की ओर रास्ता पोर्टेज रोड की तरफ जाता है। एक रास्ता छिपावा गाँव की ओर जाता है जो आगे जाकर पुनः नियाग्रा पार्क वे के साथ मिल जाता है। नदी के किनारे-किनारे रास्ता आगे बढ़ता है, यहाँ से 29 किलोमीटर तथा अत्यन्त मनोरम रास्ता नदी के साथ-साथ फोर्ट ऐरी तक जाता है। मण्डी से कुलु जाते हुए हिमाचल प्रदेश में व्यास नदी के साथ-साथ चलती सड़क इससे ज्यादा सुन्दर है। यह नदी शांत है, वाटर स्की, किश्ती चालन तथा मछली पकड़ने की व्यवस्था कई स्थानों पर की गई है। रास्ते में कई होटल देखने को मिलते हैं। इसी रास्ते पर मिल्लरज क्रीक पार्क आता है यहाँ टेंट और कैम्प लगाने की सहूलियतें हैं। क्रीक से सात मील दूर पुराना किला है। बच्चों और हमें यह किला बहुत अच्छा लगा। किले में गार्ड उन्नीसवीं शती की पोशाकें पहने घूमते हैं। अंग्रेजी सेना की आठवीं रेजीमैंट ने यह किला बनवाया था, उसकी रक्षा की थी। सन् 1812-14 के युद्व में किले से हुई हानि की मरम्मत कर दी गई है।

गार्डों ने हमें ड्रिल, संतरी ड्यिटी तथा तोपें चलाकर दिखाईं। हम एकदम पुराने युग में पहुँच गए। स्निग्धा के बदले रूप को इस यात्रा

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ने और वदल दिया और वह काफी रोमांटिक हो गई है ।

यहाँ से नियाग्रा प्रपात की ओर जाते हुए हम क्वीन एलिजाबैथ मार्ग से चलते हैं । रास्ते में चार्लस डेले पार्क आता है जो अच्छा कैम्पिक क्षेत्र है । यह कैम्प झील ओनटेरियो के किनारे है । कैम्प साफ-सुथरा है ।

हेमिल्टन के समीप बैटल फील्ड घर है जो अमेरिकन रेवोल्यूशन के समय का है । इसका रखरखाव अच्छा है और इसमें उन्नीसवीं शती के शुरू की एन्टीक फर्नीचर है । यह भवन सुन्दर है और इसका क्षेत्र 30-35 एकड़ जमीन में फैला हुआ है ।

तीसरा दिन धूप भरा था । हम हार्सशू फाल्ज तक एक बार फिर गए । हार्सशू प्रपात से हम मेरीनलैण्ड पहुँचे । यहाँ बच्चों के मनोरंजन के लिए काफी कुछ मिला । एकुआ थियेटर में काण्डू और मूटका नाम दो ह्वेल मछलियाँ हैं । पानी में कूदतीं, पानी में खेलतीं, गेंद पकड़ने को उछलतीं, जीभ निकाल कर एक महिला के मुँह को चाटती ये किल्लर ह्वेल अद्-भुत आकर्षण हैं ।

ह्वेलज के पश्चात् डोलफिन्ज ने बच्चों का मन मोह लिया । अबु मियाँ तो डोलफिन पालने के लिए अपनी गुल्लक का सारा पैसा खर्च करने को तैयार हैं । डोलफिन मनुष्य की तरह हँसती-सी प्रतीत होती हैं । वे अपनी पूंछ के बल नाचती हैं । उछल-कूद करती हैं । बच्चों ने समुद्री शेर, हाथियों का नृत्य और अन्य अनेक जानवर देखकर आनन्द प्राप्त किया । मेरीन लैण्ड के गेम फार्म में वायसन के झुण्ड, असंख्य हिरन भी देखे । उनके लिए नियाग्रा आना एक अद्भुत अनुभव था । भालू का ब्राउन नाक स्निग्धा को भी क्यूट लगा ।

अमेरिकन बफलो नगर क्षेत्र से नियाग्रा लगा हुआ है । प्रपात की अमेरिकन साइड में बना स्काई लॉन 775 फीट ऊँचा है, यहाँ से प्रपात तक लिफ्ट जाती है । ऐसा लगता है हम उड़ रहे हैं और ऊपर उड़ते जा रहे हैं, नीचे जाते हुए क्षणभर के लिए भय की भावना भर जाती है । एलीवेटर में खिड़कियाँ बनी हुई हैं ।

रिवाल्विग डायनिंग रूम में खाना खाना भी एक अनुभव है । इस सुन्दर डायनिंग यात्रा से मन नहीं भर रहा है । स्निग्धा कहती है अगली

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बार आए तो बुफे लंच यहाँ लेंगे। इस बिल्डिंग में अनेक रैस्तोराँ हैं। यहाँ का इन्डोर एयरकन्डीशन्ड एम्यूजमैंट पार्क भी बहुत सुन्दर है। वृहदाकार चक्कर पर चढ़ना और रस्सियों से लटके घोड़ों पर घूमना बच्चों को अच्छा लगा।

यहाँ से कुछ मुमेंटो भी हमने खरीदे। नियाग्रा फाल का सौन्दर्य ऊँचाई से देखने पर और भी बढ़ जाता है।

पिरामिड प्लेस में इमैक्स थियेटर में सिनेमास्क्रीन का बृहद आकार छः मंजिला ऊँचाई के बराबर है। उसी अनुपात में चौड़ाई है। इस पर बैली सर्कस फिल्म बच्चों को बहुत अच्छी लगी। बच्चों का पार्क भी काफी अच्छा है। मेजिक शो देखने के लिए हम समय नहीं निकाल पाए। बच्चों के लिए कार रेसिंग गेम, मोटर वोट रूम और स्किलगेम्ज रूम भी अच्छे लगे। एक स्थाई मेला-सा सर्वत्र दिखाई दिया।

हमारे पास अधिक समय नहीं था अन्यथा हंगेरियन रेक्स रैस्टोरैंट में जिप्सी म्यूजिक जरूर सुनने जाते। इस रैस्तोराँ की काफी प्रशंसा सुनी थी।

मेपललीफ बिलेज टावर से नियाग्रा के अमेरिकन फाल और कनेडा के हार्सशू फाल के दोनों दृश्य एक साथ देखे। यह टावर 350 फीट ऊँचा है। बच्चों को पेरैट पैराडाइस भी दिखाया। पक्षी रोलर स्केटिंग करते हैं, साइकल चलाते हैं। नियाग्रा में इतना कुछ देखने को है कि मन नहीं भरता। वस्तुत: बच्चों के साथ कुछ चीजें नहीं देखी जा सकीं। नाइट लाइफ नहीं देखी। नाइट लाइफ के लिए लिल्लीलैंगट्री रैस्तोराँ भी नहीं जा पाए।

मेप्पल लीफ बिलेज पार्क भी अपने में अच्छी जगह लगी। अढाई एकड़ में फैला यह पार्क अनेक प्रकार की सवारियों से युक्त है। झूले हैं, फिशिंग राड हैं, गुड़िया हैं और बड़े आकार का पहिया है। रात की रोशनी में नियाग्रा जागता है। फेडिड ब्ल्यूज नामक शाप से बच्चों के लिए जीन्स खरीदी। मैं स्निग्धा के लिए जीन्स लेने की जिद्द कर रहा था, वह इस शर्त पर सहमत हुई कि मैं भी जीन्स खरीदूं। मुझे उसकी खातिर सहमत होना पड़ा।

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

टू साऊडज वैक्स म्युजियम क्लिफटन हिल पर है। इसमें मोम की असंख्य मूर्तियाँ बिक्री के लिए नहीं हैं। वे सजीव लगती हैं। इसके साथ ही रिप्लेज विलीब इट आर नाट म्यूजियम भी देखा। यहाँ नई पुरानी 500 चीजें हैं। अनेक ऐसी वस्तुएँ हैं जो हमने पहले कभी नहीं देखी थीं।

पैनासोनिक सैंटर आठमंजिला है। यहाँ से फाल्ज का अच्छा दृश्य दिखाई देता है। मछली गृह भी बहुत सुन्दर है। रंगीन मछलियाँ बच्चों के लिए बड़ी रोचक चीज थीं। यहाँ कें रैंस्तोराँ में कुछ स्नेक्स लिये।

मिनियेचर वर्ल्ड में लगभग 20 देशों की 75 अद्भुत इमारतें हैं। हूबहू प्रतिकृतियाँ। ओनटेरियो लेक के बहुत समीप हैं। मिनियेचर ट्रेन, एराऊण्ड द वर्ल्ड ट्रिप देती है। बच्चों के लिए मिनियेचर पशुओं का जू भी है। मिनियेचर घोड़ा तो देखने योग्य है। इसे टिबोली मिनियेचर वर्ल्ड कहते हैं।

हमारे एजेंट ने हमारा नियाग्रा के ऊपर हैलीकोप्टर से उड़ान भरना चौथे दिन की सुबह के सरपराइज कार्यक्रम में रखा था। वेन एयर हेलीकाप्टर पूरे क्षेत्र का चक्कर लगाते हैं। जो कुछ भी जमीन से देखने में विशाल लगता था, वह आकाश से लघु हो गया पर ऊपर से देखने पर प्रत्येक चीज का सौन्दर्य और बढ़ गया। नियाग्रा से विदा होने में हमें दुःख जरूर हुआ। एक स्मृति थी···और हाँ जब हम नियाग्रा के बाद योरुप के अन्य देशों में गए तो स्निग्धा ने एक रात मुझे बताया कि वह माँ बनने वाली है, नियाग्रा में थकावट के कारण या शायद अधिक रोमांटिक हो जाने के कारण वह गोलियाँ लेना भूल गई थी और·· और चन्द लम्हे जो प्रकृति के इस भव्य प्रपात के प्रांगण में हमने काटे उनकी यादगार हमारे दोनों के लिए हनीमूनिंग कप्पल्ज से कम नहीं रही।

मेरी हर यात्रा एक कहानी की शुरुआत रही है। यह यात्रा मेरी और स्निग्धा की कहानी की ~~संभवतः~~ शुरुआत थी।

●●●

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya
130 1306
Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ओंकार 'राही'

ओ० सी० शर्मा नाम से प्रसिद्ध ओंकार 'राही' का जन्म 20 मई, 1940 को होशियारपुर (पंजाब) में हुआ, पर लालन-पालन कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) में। एम० ए०, प्री० पी-एच० डो० तक की शिक्षा दिल्ली में। दिल्ली विश्वविद्यालय से। कुछ समय तक प्राध्यापन। फिर फिल्म-क्षेत्र में। 1963 में आई० पी० एस० के लिए चयन।

लेखन के अतिरिक्त सम्पादन, चित्रकला और खेल-कूद में गहरी रुचि। विशेषकर हाकी, क्रिकेट, एथे-लेटिक्स में। सम्प्रति, मध्य-प्रदेश में पुलिस अधिकारी।

प्रकाशित पुस्तकें—

खड़ी बोली का स्वरूप (प्रबन्ध)
रिश्तेदार (कहानी-संग्रह)
शवयात्रा (उपन्यास)
किनारे के लोग (,,)
मेरा अनन्य (,,)
सम्पर्क (,,)

Funding by IKS-MoE

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

Funding by IKS-MoE